

आलय सब संपत्तियों के दाता देव रूप को परा भक्ति से नमस्कार कर
रता हूँ वेद भी उस जगदात्मा के स्वरूप को इस प्रकार कहता है ५.६

अभि विष्टुष्टु चषणां वयो धामैर्द्रोषिणो मवाव
शन्ते वाणीः वनो वसनेनो वरुणानि सिन्धु विरे
त्नधा दयते वायो णि ७

भूमि अन्तरिक्ष स्वर्ग नाम एए वाले षष्टि कर्त्री अन्नधारक विराट् देह
में वसने वाले पुरुष को वेद वाणी चाहती हैं वह रत्नधारक पुरुष का
म्यधनों को स्तोताओं के लिये देता है जैसे वरुण और समुद्र जलों
को धारण करते रत्नों को देते हैं ७

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सी मतेः सुरुचो
वेन श्रवः सवुध्या उपमा शस्य विष्टोः सते श्र
योनि मसत श्रविवः ८ ॥

पहिले सृष्टि की आदि में प्रादुर्भूत सूर्य रूप ब्रह्म ने ब्रह्माण्ड के मध्य
इन शोभन लोकों को अपने प्रकाश से विवृत किया वह कामनीय
मेधावी सूर्यश्रवकाश वान और इस जगत की विविधिरूप दिशाओं
को तथा मूर्त्त घट पट आदि और अमूर्त्त वायु आदि के प्रभव ब्रह्माण्ड
को प्रकाशित करता है ८

महानारायणो देवो भूतानां रक्षणाय वै ब्रह्म
विष्णु महेशानां रूपैः प्रादुर्भव ह ९

महानारायण देवता प्राणियों की रक्षा के लिये ब्रह्मा विष्णु महेश
रूप से प्रकट हुआ ९ -

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक

आसीत् सदा धार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवा
यहा विषा विधेम १०

प्रपंच की उत्पत्ति से पूर्व ब्रह्म ज्योति रूप गर्भ वाले ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए अकेले उत्पन्न होते ही सब जगत के स्वामी हुए वे इस पृथ्वी स्वर्ग को धारण करते हैं उस प्रजापति देवता के लिये हम महवि देते हैं

विषाः कस्मीणि पश्यते यतो ब्रतानि पस्पशे
इन्द्रस्य युज्यः सखो ११

श्रीविष्णु के स्तुति पालन संहार आदि चरितों को देखो जिस कारण यजमान के संयोग योग्य सखाने यज्ञ कर्मों को भक्तों की मोक्ष के लिये निर्माणा किया ११

याने रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी तयान
स्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचा कशीहि १२

हे कैलासवासी रुद्र जो आपकी मंगल रूप सौम्य पुण्य फलदाता शक्ति है उस परमानन्द रूप देहा कारके द्वारा हमको देखो १२

उत्पत्तिं पालनं नाशं कर्त्तारो जगतश्च ये तेषां

पाद रजं स्पृष्ट्वा प्रणामामि मुहुर्मुहुः १३

जो विदेव जगत की उत्पत्ति पालन नाश को करते हैं उनकी पाद रज को स्पर्श करके वारम्बार नमस्कार करता हूँ १३-

वैवस्वतस्य नौकायः समुद्रे समधारयत् वेदोद्धार
रञ्च कृतवान्तस्मै मत्स्यात्मने नमः १४

जिसने वैवस्वत मनु की नाव को समुद्र में धारण किया और वेदों का उद्धार किया उस मत्स्य रूप के लिये नमस्कार १४-

म्मिमतेन गावः परीणासङ्कुणुते तिग्म ष्टङ्गो दिः
वा हारिर्दृष्टेनक्तमृजः ॥ २० ॥

वह वाराह जी विष्णु की गति को अपनी देह में युक्त करते हैं इन्द्रियां उस माया रूपसे जीडा करने वाले को नहीं जान सकतीं वह तीक्ष्ण ष्टंग वाला पृथिवी को बहु पदार्थ बनी करता है दिव अर्थात् देवसं चार काल में विष्णु रूप दीखता है और रात्रि अर्थात् असुर संचार काल में वराह रूप दीखता है ॥ २० ॥

रक्षाञ्च कारभक्तस्य प्रहादस्य स्वरूपतः हि
रायकाशिपुं हत्वा तस्मै नृहरये नमः २१

अपने रूपसे हिरण्यकाशिपु को मारकर महालादभक्त की रक्षा की उस नृसिंह जी के लिये नमस्कार ॥ २१ ॥

श्रौत्वा सोमस्य गल्दयो सदा याचन् नृहृज्या ।
भूर्गिं स्मृगन्नसर्वेनेपुचुकुर्धकई शाननेया
चिषत २२

हे परमेश्वर वराह और नृसिंह रूप तुमको योग यज्ञों में आत्म प्रति- विंव सम्बंधी महावाक के द्वारा सदा याचना करता में क्रोधित हुआ जिस कारण क्षय शील बुद्धि से युक्त कामने तुम ईश्वर को याचना नहीं किया ॥ २२ ॥

वामनं रूपमास्थाय त्रैलोक्यं विक्रमैः स्वकैः वले
गृहीतं तं वध्वा तस्मै ब्रह्मात्मने नमः २३

वामन रूप होकर बलि को बांधकर अपने तीन पैँड से तीनों लोक लिये उस ब्राह्मण रूप के लिये नमस्कार ॥ २३ ॥

इदं विष्णुं विचक्रमे त्रैधा निदधे पदम् समूढम्
स्य पाथं सुतैः २४

शमरेश त्रिविक्रमावतारवामन जी इस विष्वको उलंघन करते हैं
तीन पग रखते हैं एक भूमि पर दूसरा अन्नरिक्ष में तीसरा स्वर्ग में इ-
सका चरन चतुर्दश भुवन मय ब्रह्मांड में सम्यक् अन्नभूत होता है २४

सहस्र बाहुं हत्वा यो देवा हृतो महाबलः वीर्यं
प्रकाशयामास तस्मै रामात्मने नमः २५

देवताओं से बुलाये हुए जिस महाबली ने सहस्र बाहु को मारकर
अपने बल को प्रकाशित किया उस परशुराम रूप के लिये नमस्कार

शोपिवन् कैद्रुवः सुतमिन्दुः सहस्रबाहुर्तत्रो
दादिष्ट पाथं स्यम् २५

परशुराम रूप परमेश्वर ने सहस्रबाहु के लिये क्रोध को धारण कि-
या उस समय उनका पराक्रम प्रदीप्त हुआ २६-

भद्रया सहितो भद्रो रावणं लोका रावणम् । स्व
लंघात यामास तस्मै रामात्मने नमः २७

श्री सीता सहित रामचन्द्र जी ने लोक के रुलाने वाले रावण को
सेना सहित मारा उन श्री रामचन्द्र जी के लिये नमस्कार २७

भद्रो भद्रयो संचेमानं शो गौत स्व सारज्जौरो
संभ्याति पञ्चात सुप्रकेतं द्युभि रग्नि विनिष्ठे नु
षोद्धि वीणो रग्नि रग्ने मस्थ्यात् २८

श्री रामचन्द्र जी श्री सीता जी के साथ प्रकट होते हैं तब रावण अ-
धियों के रुधिर से उत्पन्न होने के कारण अपनी वहन सीता को हर

ताहें फिर अन्त काल पर क्रोध से प्रज्वलित रावण सन्मुख होकर कुंभंकरण आदि के सुद्धज्ञानी जीवात्माओं के साथ श्री राम की सामिप्य को प्राप्त करता है ॥ २८ ॥

भूभारहरणा यैव प्रादुर्भूतो महाप्रभुः । देवारी

न्नाशया मास तस्मै कृष्णात्मने नमः २९

महाप्रभुने भूभारहरण के लिये असुरों का नाश किया उस कृष्णरूप के लिये नमस्कार २९-

इ^३नो^२ र^३ज^३न्^३ र^३तिः^३ सा^३मि^३द्धो^३ र^३द्रो^३द^३सो^३य^३ सु^३षु^३मो^३थं
अ^३दा^३शि^३ चि^३कि^३द्वि^३ भा^३ति^३ भा^३सो^३ वृ^३ह^३ता^३ सि^३क्रो^३मे^३ति
रु^३श^३ती^३म^३ पौ^३ज^३न् ३०

हे दीप्यमान ब्रह्माग्ने तुम अवतार लेते राग भून्य ईश्वर कृष्ण रूप होते हो वह आपका रूप कुंभ आदि का भयंकर और ज्ञानी पिता के लिये सुन्दर दीखता है सर्वस्तुम वैष्णव तेज से प्रकाश करते हो फिर वैष्णव तेज को अन्तर्धान करते कृष्ण रूप को प्राप्त करते हो ३०

कृ^३ष्णा^३ य^३दे^३नी^३ मा^३भि^३व^३प^३सा^३ भू^३ज्ज^३न^३ य^३न्यो^३षां^३ वृ^३ह^३तः^३
पि^३तु^३ज्ज^३ाम् । ऊ^३र्द्ध^३म्भानु^३थं^३ सूर्य^३स्य^३स्त^३भा^३यो^३न्दि^३
वी^३व^३सु^३भि^३र^३र^३ति^३ वि^३भा^३ति ३१

जब महानारायण की शक्ति महा माया को नन्द गृह में प्रगट करते और जन्म शील गमन स्वभाव रूपावर्ण देह रूप प्रकृति को अपने तेज से प्राप्त करते हो तब मानस सूर्य के आत्मा को ऊंचा धारण करते अर्थात् योग निष्ठ होते धन देहाभिमान से भून्य होते नाना रूप से प्रकाश करते हो अर्थात् भक्तों पर अनुग्रह दृष्टि से और शत्रुओं पर क्रोध दृष्टि से ३१

सामभाष्यभूमिका

योमानु रूपदेशाय कापिलं रूपमास्थितः शास्त्रं
प्रवर्तयामास तस्मै योगात्मने नमः ३२

जिसने माना के उपदेशार्थ कापिल रूप धारण किया और शास्त्र बना
या उस कापिल रूप के लिये नमस्कार ३२

दशा नामैकं कापिलं समानं तं हि न्वन्ति कर्तव्ये
पार्य्याय गर्भं माता सुधितं वृक्षणा स्वर्वेनंतं
तुषयन्ती विभर्ति ३३

दशा वतारों के समान अद्वैत कापिल जी को परिसमाप्ति योग्य ब्रह्मयज्ञ के
लिये प्रेरणा करते हैं और माता जी प्रजापति द्वारा गर्भ में स्थापित निवास
वाहने वाले बाल को अपना उपदेशक जानकर प्रसन्न होती धारण करती
है ॥ ३३ ॥

अशक्तान्वेदज्ञाने तान्मत्वा देवहिताय वै देवा
रीन्वञ्च यामास तस्मै बुद्धात्मने नमः ३४

असुरों को वेदज्ञान में अपसमर्थ जानकर देवताओं के हितार्थ उन असु
रों को रगा उस बुद्ध रूप के लिये नमस्कार ३४

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमः
यजुः ३५

असुरों के बंचक दैत्याश भूत मनुष्यों के बंचक बुध रूप के लिये नमस्कार दे
तापिनरों को न देकर स्वयं भक्षण करने वाले जो मनुष्य हैं उनके स्वामी को
नमस्कार ॥ ३५ ॥

युगान्ते कलुषाकारे देवारीणां भवे सति आगमि
ष्यति भू भुद्धौ तस्मै कल्क्यात्मने नमः ३६

११
सामभाष्यभूमिका

कलुषं रूपयुगान्त में असुरों का जन्म होने पर भूभृद्धि के लिये आवेगा
उसकालिक रूपके लिये नमस्कार ३६

निषद्भिः एोककुभायस्तेनानांपतयेनमोनमः यजुः ३७
खड्गधारी महद्गर्ण और युगान्त परस्तेनभावप्राप्तभक्तों के स्वामी त्रिष्क-
लंकरूपके लिये नमस्कार ३७

याविद्यासर्वविद्यानांमहानिद्राचदेहिनाम् ।

यास्वयंमुखपद्मेनवेदेकथयतीदृशम् ३८

सर्वविद्याओं में जो विद्या रूप है और देहधारियों में महा निद्रा रूप है और
जो आपवेद में कमल मुखसे ऐसा कहती है ३८

अहमेवस्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुतमानु
षेभिः यंकामयेतंतमुग्रं कृणोमि तब्रह्माण्तमृ
षितंसुमेधाम् ३९

में ही देवता मनुष्यों से सेवित वेद को स्वयं कहती हूं जिसको चाहती हूं उ-
सको सबसे अधिक करती हूं उसको ब्रह्मा करती हूं उसको ऋषि करती
हूं उसको ऋषि बुद्धि वाला करती हूं ३९

अहमेववातं द्वा प्रवास्यारभमाणामुर्वनान्निवि
ष्वा परो दिवा पर एना पृथिव्यै तावती माहिना सं
वभूव ४०

सर्वभुवनों को उत्पन्न करती में ही वायु के समान चलती हूं स्वर्ग से परे और इस
पृथिवी से परे जो महा पुरुष है उतनी ही और उससे संयुक्त में माहिमा से ना-
नारूप वाली हुई हूं ४०

सर्वाधारां सर्वबीजां सर्वकारणाकारणाम् प्राञ्ज

लिः शुद्धभावेनतां देवीं प्रणतोऽस्यहम् ४१

वदं जली में शुद्ध भाव से उस सर्वाधार सर्वबीज सर्वकारणोंकी कार
णदेवीको नमस्कार करता हूँ ४१

शिवं भृगुञ्च च्यवनं भार्गवं राममेव च पञ्चमीं

कुलदेवीञ्च सद्गत्या प्रणामाम्यहम् ४२

में सद्गति सहित शिव भृगु च्यवन परशुराम और पांचवीं कुल देवी को
प्रणाम करता हूँ ४२

द्वावर्थौ ब्रह्मणाः स्वानौ ब्राह्मणेषु एथ क एथ क

आध्यात्मञ्चाधिदैवञ्च भोगमोक्षप्रदायकौ ४३

ब्राह्मणोंमें एथक २ अध्यात्म और अधिदैव नाम दो अर्थ कहे हैं जो कि
भोगमोक्षके दाता हैं ४३ ॥

यजुर्वेदस्य द्वावर्थौ ब्रह्मभाष्येरुतौ मया अधु

ना सामवेदस्य द्वावर्थौ कथयाम्यहम् ४४

मैंने ब्रह्मभाष्यमें यजुर्वेदके दोनों अर्थ किये अब मैं सामवेदके दोनों
अर्थ कहता हूँ ॥ ४४ ॥

नारि विद्या न बुद्धिर्मसमर्थं भाष्य कर्म्मरि

देवे नैवोपदिष्टो हं लिखामि प्रीति पूर्वकम् ४५

मेरी विद्या और बुद्धि भाष्यकर्ममें समर्थ नहीं है मैं देवता से उपदेश
किया हुआ प्रीति पूर्वक लिखता हूँ ४५

ये विप्रा गुणा सम्पन्ना ब्रह्मविद्या परायणाः तेऽ

मन्त्व परार्थं मे यो भवेदत्र लेखने ४६

जो ब्राह्मण गुण सम्पन्न और ब्रह्मविद्याके परायण हैं वे मेरे उस अप-

ग्रन्थको समाकरोजो यहां लिखने में होवै ॥ ४६ ॥

अथविनियोगसिद्धान्तः

यैर्महात्माभिर्मन्त्रार्थीज्ञानायद्वा मंत्रजपेन सिद्धिर्लब्धा त एव तेषां मंत्राणां मृषयश्चासन् । ऋते गुरोपदेशान्मन्त्रसिद्धिर्न लभ्यते विनियोगे ऋषितर्पणेन तन्सिद्धिः सुलभा तस्मात् विनियोगे गुरुतर्पणा यर्षिसंयोगः । पाठे जपे वा यच्छब्दोच्चारणमशुद्धञ्जातं तद्दोषपरिहारायैव छन्दो देवस्य तर्पणमावश्यकम् । पाठे जपे वा मनोस्वेष्टदेवध्यानादन्यत्र गच्छति तद्दोषशान्तये देवतर्पणमावश्यकम् । तस्माद्देवविनियोगः कर्त्तव्यः । येषु मन्त्रेषु आध्यात्मिकोऽर्थः कथ्यते तेषु जपपाठफलस्याभावात्केवलमननप्रधानत्वाच्च विनियोगस्य प्रयोजनं नस्तीति ॥

अथविनियोगसिद्धान्तः

जिन महात्माओं ने मन्त्रार्थको जाना अथवा मंत्रजपसे सिद्धि प्राप्ति की वेही उन मंत्रों के ऋषिद्वारा गुरु उपदेश के मंत्रसिद्धि प्राप्त नहीं होती है विनियोगमें ऋषितर्पण से वह सिद्धि सुलभ है उस कारण विनियोगमें गुरुतर्पणके लिये ऋषि का संयोग है । पाठ वा जपमें जो शब्दोच्चारण अशुद्ध हुआ उस दोषके निवारणार्थ छन्ददेवता का तर्पण आवश्यक है । पाठ वा जपमें मन अपने इष्टदेवके ध्यानसे अन्यत्र जाता है उस दोषकी शान्तिके लिये देवतर्पण आवश्यक है उसी कारण विनियोग कर्त्तव्य है । जिन मंत्रोंमें आध्यात्मिक अर्थ कहा जाता है उनमें जप

सामभार्यभूमिका

पाठ के अभाव और केवल मनन प्रधानता से विनियोग का प्रयोजन नहीं है ॥

अथ स्वरसिद्धान्तः

स्वरयोगैर्नानार्थाः सम्भवन्ति किञ्च पाठे जपे वा स्वरस्या शुद्ध्याऽर्थस्याप्यशुद्धिर्जायते तस्मादाधिदैवयज्ञे जपे वा फलाप्तये स्वरशुद्ध्या मन्त्रोच्चारणं कर्तव्यमेषु मंत्रेषु ऋतिप्रमाणेनाध्यात्मिकार्याः कथ्यन्ते तेषु क्वचित् स्वराधिदैवार्थपाठाद्विलक्षणा भवन्ति तत्र जप पाठ फलाभावात्केवलमनन प्रधानत्वं ज्ञातव्यं न पाठ फलमिति सर्वसिद्धान्तः ॥

अथ स्वरसिद्धान्तः

स्वरोंके योग से नाना प्रकारके अर्थ होते हैं और पाठ वा जप में स्वरकी अशुद्धि से अर्थकी भी अशुद्धि होती है उस कारण अधिदैव यज्ञ वा जप में फल प्राप्ति के अर्थ स्वरशुद्धिके साथ मन्त्रोच्चारण करना चाहिये । जिन मंत्रों में ऋति प्रमाणा से अध्यात्म अर्थ कहे जाते हैं उनमें स्वर कहीं अधिदैवार्थ पाठ से विलक्षणा होते हैं वहां जप पाठ फल के अभाव से केवल मननकी प्रधानता जाननी चाहिये न पाठ फल यह सर्वसिद्धान्त है

अथोभयार्थयोः सिद्धान्तः

यथा मनसि महाविष्णोर्ध्यानं तथैवाध्यात्मम्यथा पाषाणादेर्मूर्त्तीनां पूजनं तथैवाधिदैवम् । अधिदैवयज्ञे मन्त्रपठनमेवोचितं नार्थकरणं पाठे हि सिद्धि लाभत्वात् । न मन्त्रार्थकरणे सिद्धिस्तस्यासम्भवत्वात् । यथेन्द्रसोमयोरर्थाः ऋति कथिताः सोमो वै राजाय-

ऋः मजापतिः । तस्यैतास्तन्वो या एता देवताः शं० १२ ।
६ । २ । १ इन्द्रो वै सर्वदेवाः शं० १३ । ७ । १ । ४ सर्वहि सोमः
शं० ५ । ५ । ४ । १० प्राणः सोमः शं० ७ । २ । ४ । २ ज्योतिः
सोमः शं० ५ । १ । ५ । २८ तथाग्रिम मंत्रेषु परमेश्वरस्यैव
वर्धः सम्भवतेन सोमेन्द्रयोः

सोमः पवते जनिता मती माञ्जानिता दिवोजानि
ना एथिव्याः जनिताग्नेजनिता सूर्यस्य जनितेन्द्र
स्य जनिता तविषाः ॥ ५ ॥

अक्रोत्समुद्रः प्रथमं विधमज्जनं यन्प्रजाभुवनं
स्य गोपाः । वृषा पवित्रे अधिसानो अव्यवृहत्सो
मो वा वृधे स्वानो अद्रिः ॥ ७ ॥

येद्यावे इन्द्रते शते ७ शते भूमौ रुते स्युः । नेत्वा व
ज्जित्सहस्रं ७ सूर्या अनुनेजानमष्टरोदसी ॥ ६ ॥
प्रयो रिरिक्ष अजसा दिवः सदाभ्यस्परिनेत्वा वि
व्याचरेज इन्द्र पार्थिव मति विभ्वे ववाक्षिथ । १०

एवमेवान्यदेवानां मन्त्रेष्वपि परमेश्वरस्यै वार्थो घटते ।
आधिदैव सम्बन्धि मंत्रेष्वर्थ करणा मनुचितं निष्फलञ्च
यथा श्रुतिः देवाः परोक्ष मर्थ मन्यन्ते परोक्ष कामाहिदे
वास्तथापि पूर्वाचार्याणामिव मया द्वावर्थौ काथितौ य
त्राध्यात्म सम्बन्ध्ये कै वार्थो वर्तते तत्रपदै द्वितीयोर्थोऽ
पि ज्ञातुं सुलभ इति विद्वद्विज्ञीतव्यम् । सर्वमन्त्राः परमे
श्वरमेवस्तु वन्ति । देवाऽपि परमेश्वरस्यां शास्तस्मान्म

न्त्राः कल्पवृक्षवद्धृद्यसंयुक्ताः सन्तो देवानां स्तुता
वपि पठ्यन्ते ॥

दोनो अर्थका सिद्धान्त

जैसे मनमें महा विष्णु का ध्यान है वैसा ही अध्यात्म है और जैसे पाषाण
आदि मूर्तियों का पूजन है वैसा ही अधिदैव है अधिदैव यज्ञमें मंत्र पढ़
नहीं उचित है- न कि अर्थ का करना क्योंकि पाठ में ही सिद्धि होती है मं
त्रार्थ करने में सिद्धि नहीं है किन्तु असंभव है ऋतिप्रमाण से सोम का
अर्थ ईश्वर ब्रह्म के सिवाय सब प्राण और ज्योति है इन्द्र का अर्थ पर
मेश्वर और सब देवताओं में घटना है किन्तु पूर्वोक्त मंत्रों में केवल पर
मेश्वर का अर्थ ही घटना है न कि सोम और इन्द्र का इन मंत्रों का अर्थ
आगे आवेगा इस कारण यहां नहीं लिखा गया-

इसी प्रकार अन्य देवताओं के मंत्रों में भी ईश्वर का ही अर्थ घटना है
अधिदैव सम्बन्धी मंत्रों में अर्थ करना अनुचित और निष्फल है जैसे
ऋति कहती है देवता परोक्ष अर्थ को मानते हैं क्योंकि देवता परोक्ष
कामा हैं नौ भी मैंने पूर्वाचार्यों की समान दोनो अर्थ कहे जहां अ
ध्यात्म सम्बन्धी एक ही अर्थ है वहां पदों से दूसरा अर्थ जानना भी-
सुलभ है यह विद्वानों से ज्ञात व्यर्थ है सब मंत्र परमेश्वर ही की स्तुति
करते हैं देवता भी परमेश्वर के अंश हैं उस कारण मंत्र कल्पवृक्ष
की समान बहुत अर्थ से संयुक्त होने देवताओं की स्तुति में भी पढ़े
जाते हैं ॥

अथ मंत्रब्राह्मणयोः सिद्धान्तः

ब्राह्मणैः सहवेदा ब्रह्मवदादिमध्यान्त भूत्याः सृष्ट्या

रूपेसाकारब्रह्मणोपदिष्टाः ऋतिनामधेया भवन्ति ।
 मध्येब्राह्मणो ध्याचार्याणां मञ्जोत्तरवाक्यविशेषाः प्र-
 युज्जन्ति यथा व्यासप्रणीत महाभारते सूतशौनकवैशं-
 पायनादीनां वाक्यानि - तेषां वाक्यानां दर्शनादबहु-
 ऋताः शङ्कां कुर्वन्ति - ये ब्राह्मणो धितिहासावर्तन्ते ते
 षामर्थो गूढः परोक्षश्च यथा शतपथब्राह्मणो वृत्रासुर-
 व्याख्याने - एष एव वृत्रो यच्चन्द्रमाः श० १।६।४।२३ क-
 दूविनतयोरितिहासे च - वागेव विनता + वेदिर्वैसलिलं
 अग्निर्वा अश्वः श्वेतः ३।६।२ एवमेव सर्वत्र विचारः कर्त-
 व्यः । यः परमेश्वरस्त्रिकालज्ञः स यदि स्ववाक्ये भविष्य-
 वार्त्ता प्रवृत्त्यान्तत्र किमाश्रयं मनुष्ये धेवेदृश वाक्यान्व-
 सम्भवानि । परमेश्वरोऽनाद्यस्तर्हितस्य वचनमप्यना-
 द्यं । तस्यानादित्वे ब्राह्मणोक्तयज्ञविधेरप्यनादित्वं ।
 पूर्वकल्पेषु यज्ञविधेर्वर्तमानत्वात् स्पष्टे रनादित्वाच्च त-
 स्यानादित्वं सर्वथा सिद्धमेव । बहु ऋता विद्वांस एव त-
 ज्जानन्ति नान्ये वालतराजनाः । ऋतेः प्रमाणा मापि-
 विद्यते - यथर्क्या ब्राह्मणं श० १२।५।२।४ -

मन्त्रब्राह्मणकासिद्धान्त

ब्राह्मणसहितवेदब्रह्मकीसमानआदिमध्यअन्तसे ऋन्यहैं स्पष्ट
 के आरम्भपरसाकारब्रह्मसे उपदिष्ट ऋतिनामहोतेहैं मध्यकालमें
 ब्राह्मणोंके मध्यआचार्योंके मञ्जोत्तरवाक्यविशेषसंयुक्तहोजातेहैं
 जैसेव्यासप्रणीतमहाभारतमेंसूतशौनकवैशंपायनआदिकेवाक्य-

उन वाक्योंके दर्शनसे अबहु श्रुत मनुष्य शंका करते हैं —
 ब्राह्मणोंमें जो इतिहास हैं उनका अर्थ गूढ़ और परोक्ष है जैसा पूर्वोक्त
 श्रुतिका — इसी प्रकार सर्वत्र विचार कर्तव्य है — जो परमेश्वर विकाल
 स्रष्टै वह यदि अपने वाक्यमें भविष्य वार्त्ता को कहे उसमें क्या आश्चर्य
 है मनुष्योंमें ही ऐसे वाक्य असम्भव होते हैं परमेश्वर अनादि हैं तो उ
 सका वचन भी अनादि है उसके अनादि होनेमें ब्राह्मणोक्त विधि
 भी अनादि है पूर्व कल्पोंमें यज्ञ विधि के वर्तमान होने और सृष्टि के
 अनादि होनेसे उसका अनादि होना सर्वथा सिद्धि ही है। बहु श्रु
 त विद्वानही उसको जान्ते हैं न कि दूसरे वाल तर मनुष्य श्रुतिका प्र
 माण भी विद्यमान है जैसी ऋचा तैसा ब्राह्मण श० १२।५।२।४।

सूचना

सामवेदे ब्रह्म महा पुरुष पुरुष जीवात्म भक्ति योग
 ज्ञान बन्ध मोक्षाणां सिद्धान्तं यथावत् काथितं तस्मा
 दत्र तस्य कथनमावश्यकं नास्ति यदाऽनन्य भक्त योगी
 समस्तं वेदार्थं मनु भविष्यति तदैव कृत कृत्यो भविते
 ति ॥

सूचना

सामवेदमें ब्रह्म महा पुरुष पुरुष जीवात्मा भक्ति योग ज्ञान बंधन
 मोक्षों का सिद्धान्त यथावत् कहा है उस कारण यहां उसका कह
 ना आवश्यक नहीं है जब अनन्य भक्त योगी समस्त वेदार्थ को
 अनुभव करेगा तभी कृत कृत्य होगा ॥

सामवेदसंहिता

छन्दःआर्चिकः

अथ प्रथमप्रपाठके प्रथमार्द्धः

हरिः प्रोम

ॐ अग्नयायाहीत्यस्य भरद्वाजऋषिर्गायत्री

छन्दो वैश्वानरोऽग्निर्देवता

अग्नेऽयायाहि वीतये गृणानो हव्यं दातये नि

होता सत्सि वहिषि ॥ १ ॥ अत्र वहवोऽग्नयः यथा श्रुतयः

आत्मैवाग्निः श० ६।७।१।२० ब्रह्मवाऽग्निः श० ५।३।५

३२ प्राणोऽग्निः श० १०।२।६।१८ असौ वाऽग्नादित्य एपो-

ऽग्निः ६।४।१।८ सर्वेषामिषेव ह्ययते हविस्तस्माद्यो र्यो यत्र

संभविष्यति तमेव कथिष्याम इति-

(अग्ने) हे देव मुखाम्ने (गृणानः) यत्रो भविष्यतीति शब्दं कु

र्वाणस्त्वं। गृशब्दे (वीतये) हविषां चरुपुरोडाशादीनां भ

क्षणाय (हव्यं दातये) देवेभ्यो हविः प्रदानाय च (आयाहि)

अस्मद्युक्तं प्रत्यागच्छ यस्मान् (होता) देवानामाह्वता स-

न् (वहिषि) आस्तीर्णेर्धर्म (निषत्सि) निषीदसितत्कर्मत

वै वास्तीत्यर्थः अग्नेर्कर्म होतृत्वं दत्तत्वं च तत्र गृणान इति

शब्दाद्दत्तत्वं होतृ शब्दाच्च होतृत्वं सिध्यति १॥

यहां बहूत अग्नि हैं श्रुति कहती हैं कि आत्मा ब्रह्ममाण्ड सूर्य्य सब अग्नि ही हैं इस कारण जहां पर जो अर्थ संभव होगा उसको कहेंगे ॥

मंत्रार्थः १ हे देव मुख रूप अग्ने २ यज्ञ होगा यह शब्द करते तुम ३ चर
पुरोडाश आदि हविके भक्षण ४ और देवताओं को हविदानके लिये ५
हमारे यज्ञमें आश्रोजिस कारण ६ देवताओंके आह्वान कर्त्तानुम ७ कु
शासन पर ८ बैठते ही ॥ १ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (गृणोऽनः) योग यज्ञो भविष्यतीति दे
वेषु शब्दं कुर्वाणस्त्वं (वीतये) (व) वातः प्राणः (इ) चन्द्रो
मनस्तयोः प्राप्तये । इगतौ (हव्यदातये) महापुरुष पुरुषे
भ्यो हविः प्रदानाय (आयोहि) अनुभव गोचरो भव यस्मा
त् (होता) देवानामाह्वानासन् (वर्हिषि) दीप्ति युक्ते हा
र्दा काशे । वर्हदीप्तौ इ सुन् (निषत्सि) निषत्सो भवसि १
१ हे आत्माग्ने २ योग यज्ञ होगा यह शब्द करते तुम ३ प्राण मनकी मा
प्ति ४ और महा पुरुष पुरुषों को हविदानके लिये ५ अनुभव गोचर हूँ जि
ये जिस कारण ६ देवताओंके आह्वान कर्त्ता होने ७ दीप्ति युक्त हार्दा
काशमें ८ विराजमान होते हो ॥ १ ॥

अथाद्याः पूर्ववत्

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः देव
भिर्मानुषेजने

हे (अग्ने) (विश्वेषां) सर्वेषाम् (यज्ञानाम्) अग्निष्टोमात्य
ग्निष्टोमादीनां मध्ये (होता) होमनिष्पादनशीलः (जुहो
तेस्ता) छीलिकस्तृण यद्वा सर्वेषां देवानामाह्वानात् (त्वम्)
(मानुषे) (जने) मनोरपत्य भूते यजमानसमूहे (देवाभिः)

देवैः (छान्द सोभिस ऐस भावः) विद्वाद्भिर्ऋत्विग्भिः (हितं
निहितः गार्हपत्यादि रूपे संस्थापितो भवंसि ॥ २ ॥

१ हे अग्ने २, ३ अग्निष्टोम आदि सब यज्ञों के मध्य ४ होम निष्पादन शी
ल ५ तुम ६ मानव यज्ञमान समूह में ७ विद्वान ऋत्विजों से ८ गार्हपत्य
आदि रूपसे स्थापित किये जाते हों ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (विश्वेषां) (यज्ञानाम्) योग यज्ञानां
मध्ये (होतां) होम निष्पादन शीलः यद्वा महापुरुष पुरु
षाणा माह्वाना (त्वम्) (मानुषे) (जने) मनुष्य सम्बन्धा
त्मप्रतिविम्बे (देवेभिः) महापुरुष पुरुषैः (हितः) स्थापितो
ऽसि ॥ २ ॥

हे आत्मग्ने २, ३ सब योग यज्ञों के मध्य ४ होम निष्पादन शील ५ तुम ६
७ मनुष्य सम्बन्धी आत्म प्रतिविम्ब में ८ महापुरुष पुरुषों के द्वारा ९
स्थापित हो ॥ २ ॥

काएव पुत्र मे धानिधिर्ऋषिश्छन्दो देवते पूर्ववत्
अग्निं न्दतं वृणां महं होतारं विश्वं वेद सम्भ्रस्यै
यज्ञस्य सुकृतम् ॥ ३ ॥

(दत्तम्) देवानां दौत्ये विनियुक्तं (होतारम्) देवानामाह्वान
तारं (विश्वं वेदसम्) विश्वं सर्वं वेदो धनं यस्य तं सर्वं धन
वन्तं (बहु व्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् (६, २, १०, ६) इति पू
र्वपदान्तोदात्तत्वम्) (अस्य) प्रवर्तमानस्य (यज्ञस्य)
(सुकृतम्) निष्पादकत्वेन शोभन कर्माणां (अग्निम्)

देवं (वृणीमहे) स्तुतिभिर्हविर्भिः सम्भजामहे ॥३॥
 १ देवताओंके दत्त २ देवाह्वानकर्ता ३ सर्वधनवन्त ४ दस ५ यज्ञके र्दनिष्या
 दन करने से शोभन कर्मा ७ अग्निदेवता को ८ स्तुति हवि द्वारा हम भ-
 जते हैं ॥३॥

अथाध्यात्मम्

(दूतम्) (होतारम्) (विश्ववेदसम्) विश्वानिवेत्तीति विश्व
 वेदाः तं सर्वज्ञं । वेत्तेरसुन्विदज्ञाने (अस्य) (यज्ञस्य) यो-
 गयज्ञस्य (सुक्रतुम्) शोभनप्रज्ञं नि० ३।३।१४ (आग्निम्)
 आत्माग्निं (वृणीमहे) ॥३॥

१ देवताओंके दत्त २ होता ३ सर्वज्ञ ४, ५ दस योगयज्ञके र्दज्ञे बुद्धिमा-
 न ७ आत्माग्नि को ८ हम भजते हैं ॥३॥

भरद्वाज ऋषिः ऋग्वेदो देवते पूर्ववत्

आग्निं वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणो स्युर्विपन्यया स
 मिद्धः सुक्रो आहुतः ॥४॥

(सामिद्धः) सामिदादिभिर्हविर्भिः सम्युग्दीपितः (सुक्रः)
 दीप्यमान (आहुतः) हविर्भिर्गहुतः (आग्निः) (विपन्यया)
 स्तुत्या नि० ३।१४ (द्रविणोस्युः) स्तोत्राणां धनमिच्छन्
 ह्रन्दसि परेच्छायां क्वच । प्रातिपदिकेभ्यः इच्छायां क्व
 चिसुगागमः (वृत्राणि) आवरकानि शत्रुकुलानिरक्ष-
 प्रभृतीनि (जङ्घनत) भृशं हन्तु [हन्ते र्यङ्लुगन्तास्ति
 डर्धलेट् (३, ४, ७)] ॥४॥

अथाध्यात्मम्

(समिद्धः) प्राणैः सम्यग्दीपितः (शुक्लः) मानससूर्यरूपः
 एषैव शुकोयएषतपति श० ४।३।१।२६ (आहुतः) इ-
 न्द्रियरूपहविर्भिराहुतः (अग्निः) आत्माग्निः (विपन्यया-
 स्तुत्या (द्रविणस्युः) योगिनो योगधनमिच्छन् (वृत्ता-
 णि) पापानि पाप्मावै वृत्रः श० ६।४।२।३ (जडुन्नत) ४
 १ समिद्धादिहविसे संदीप्त २ दीप्यमान ३ हविसे आहुत ४ अग्निपस्तु-
 तिद्वारा ६ स्तोताओंके धनको चाहता ७ शत्रुकुल वा राक्षस आदिको
 ८ नाश करो ॥ ४ ॥

प्राणों से संदीप्त २ मानस सूर्यरूप ३ इन्द्रिय रूप हवि से आहुत ४ आत्म-
 ग्नि ५ स्तुतिद्वारा ६ योगियोंके योगधनको चाहता ७ पापोंको ८ नाश
 करो ॥ ४ ॥

उशाना ऋषिश्चन्द्रो देवते पूर्ववत्

प्रेष्ट्वोऽतिथिं स्तुषे मित्रं मिथ प्रियम् अग्ने
 रथं न वेद्यम् ॥ ५ ॥

हे (अग्ने) (वो) ऋद्धावल युक्तोऽहं वीजकोऽप्रेष्ट्वं स्तोतृ-
 णामस्माकं धनदानेन प्रियतमं (अतिथिं) सर्वैरतिथि-
 वत्पूज्यं (मित्रं) (इव) (प्रियं) (रथम्) (न) इव (वेद्यम्)
 स्वर्गसुखानुभवहेतुम् ॥ विद् सुखाद्यनुभवेलाभे च यथा
 रथेनाभीष्टं देशं लभते तद्धदनेन स्वर्गं लभते तादृश स्व-
 र्गलाभकारणत्वां (स्तुषे) स्तौमि ॥ ५ ॥

१ हे अग्ने २ ऋद्धावल से युक्त में ३ स्तोताओंको धन देने से प्रियतम ४
 अतिथि समान सबके पूज्य ५, ६, ७ मित्रकी समान प्रिय ८, ९, १० रथकी

समान स्वर्ग सुखानुभवके कारण तुमको ११ स्तुत करता हूं ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (वेः) निवृत्तात्मा ऽहं । वीजकोषः (प्रेष्ठं) योगिनां प्रियतमं (अतिथिं) अतिथिवत्पूज्यं (मित्रं) (इव) (प्रियं) (रथं) (न) इव (वेधम्) महानारायणलोक-
प्राप्तिहेतुत्वां (स्तुषे) ॥ ५ ॥

१ हे आत्माग्ने २ निवृत्तात्मा में ३ योगियों के प्रियतम ४ अतिथि की स-
मान पूज्य ५, ६, ७ मित्र की समान प्रिय ८, ९, १० महानारायणलोक
की प्राप्ति के कारण तुमको ११ स्तुत करता हूं ॥ ५ ॥

सुधीति पुरुमीढा वृषी छन्दो देवने पूर्ववत्
त्वनो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः
उत द्विषो मर्त्यस्य ६

हे (अग्ने) (त्वं) (नैः) अस्मान् (महोभिः) पूजाभिः महाद्वि-
धनैर्वा (विश्वस्याः) सर्वस्याः (अरातेः) शत्रुजातेः सका-
शात् (उत) अपिच (मर्त्यस्य) (द्विषः) द्वेषात् (पाहि) रक्षा ६
१ हे अग्ने २ तुम ३ हमको ४ पूजा वा महाधनों के द्वारा ५ सब ६ शत्रु ७
और ८ मनुष्यजाति के ९ द्वेष से १० रक्षा करो ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वं) (नैः) अस्मान् (महोभिः) पूजाभिः
महाद्विर्योगैश्चैर्यैर्वा (विश्वस्याः) सर्वस्याः (अरातेः) कां-
मिनिजातेः सकाशात् (उत) अपिच (मर्त्यस्य) मरणा-
शीलस्य मनसः (द्विषः) द्वेषात् (पाहि) ॥ ६ ॥

हे आत्माग्ने २ तुम ३ ह्रमको ४ पूजा वा महा योगै श्वर्यी के द्वारा ५ सब
६ काम जानि ७ और ८ मरणा शील मनके द्देष से ९ रक्षा करो ॥ ६ ॥

भरद्वाज ऋषि ऋन्दो देवते पूर्ववत्
ए ह्येषु ब्रवाणिते इन्द्रो देवते रागिरः । एभि
वर्द्धसि इन्दुभिः ७

(३) हे शिवरूप (अग्ने) (एह) आगच्छ (ते) तुभ्यं त्वदर्थ
(इत्याः) पूर्वोक्ताः (उ) च (इतराः) अयोक्ताः (गिरः) स्तुतीः
(सु) सुष्टु । सुजः ८, ३, १, ३, ६ इति मूर्द्ध एये रूपम्
(ब्रवाणि) (एभिः) (इन्दुभिः) सोमरूप साम मन्त्रैः । सोमा-
हुतयो हवाऽ एता देवानां यत्सामानि श० ११ । ५ । ६ । ६ (वर्द्ध-
सि) ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे शिवरूप २ अग्ने ३ आग्ने ४ तेरे लिये ५ पूर्वोक्त ६ और
७ अयोक्त ८ स्तुति ९, १० भले प्रकार उच्चारण करूं ११ इन १२ सोमरूप-
साममंत्रोंके द्वारा १३ वृद्धि पाते हो ॥ ७ ॥

अथाध्यात्मम् - (३) हे विष्णुरूप (अग्ने) आत्माग्ने (एहि)
अनुभव गोचरो भव (ते) त्वदर्थ (इत्याः) पूर्वोक्ताः (उ) च (इतराः)
अयोक्ताः (गिरः) मन्त्राः (सु) (ब्रवाणि) (एभिः) (इन्दुभिः)
साम मन्त्रैः (वर्द्धसि) ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे विष्णुरूप २ आत्माग्ने ३ अनुभव गोचर हजिये ४ तेरे
लिये ५ पूर्वोक्त ६ और ७ अयोक्त ८ मन्त्र ९, १० भले प्रकार उच्चारण क-
रूं ११ इन १२ साममंत्रोंके द्वारा १३ वृद्धि पाते हो ॥ ७ ॥

का एव गोत्री वत्स ऋषि ऋन्दो देवते पूर्ववत् ।

ॐ ते वत्सो मनो यमत्परं मा चित्सुधस्थोत् अ
 ग्नेत्वाङ्कोमये गिरा ८

हे (ॐ) (वत्सः) प्राणाः (मनः) (चित्) अपि (ते) तव (परमा
 त्) उत्कृष्टात् (सधस्थात्) सह स्थानाद्दृद्युलोकात् प्रादु
 भूत्वा (आयमत्) दीर्घमभवत् तस्मात् (त्वाम्) (गिरा) स्तु
 त्या (कामये) ॥ ८ ॥

भाषार्यः - १ हे ॐ २ प्राण ३ मन ४ भी ५ तेरे ६ उत्कृष्ट ७ सह स्था
 नहृद्युलोक से प्रकट होकर ८ समाधि भाव को प्राप्त हुआ उस कारण
 ९ तुमको १० स्तुति द्वारा ११ चाहता हूँ ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम्

(ॐ) हे आत्मा मे (वत्सः) प्राणाः । अयमेव वत्सो योऽयं प
 वतेश ० ४। १। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।
 उत्कृष्टात् (सधस्थात्) सह स्थानादात्मलोकात् प्रादुभू
 त्वा (आयमत्) समाधिरूपमभवत् । तस्मात् (त्वाम्) (गिरा)
 महावाचा (कामये) ॥ ८ ॥

भाषार्यः - १ हे आत्मा मे २ प्राण ३ मन ४ भी ५ तेरे ६ उत्कृष्ट ७ आ
 त्मलोक से प्रकट होकर समाधि भाव को प्राप्त हुआ उस कारण ८ तुम
 को ९ महावाक् द्वारा ११ चाहता हूँ ॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषि ऋन्तो देवते पूर्ववत्
 त्वामग्ने पुष्करादध्यथवा निरमन्थनमृद्धी
 विभ्वस्य वाघतः ॥ ९ ॥

हे (ॐ) (अथवा) समाधि प्राणाः प्राणो वाऽअथवाः श ० ९।

४।२।१ (पुष्करौदधि) ब्रह्माण्डालयपुष्करमध्ये (विश्वस्य) सर्वस्य (वाघतः) वाहकात् (मूर्द्धः) सूर्यान्विषाणोः शिरः पपाततत्पतित्वासावादित्योऽभवत् श० १४।१।१।१० (त्वाम्) (निरमन्थत) अजनयत् ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने २ समष्टि प्राणने ३ ब्रह्माण्डालयकमलके मध्य ४ ५ ६ सवके वाहक सूर्यसे अनुमको ८ मथन कर प्रकट किया ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (अथर्वा) प्राणः (पुष्करौदधि) मानस कमल मध्ये (विश्वस्य) विश्वारव्यशरीरस्य (वाघतः) वाहकात् (मूर्द्धः) मानससूर्यात् (त्वाम्) (निरमन्थत) ६

भाषार्थः - १ हे आत्माग्ने २ प्राणने ३ मानसकमलके मध्य ४, ५, ६ विश्वनामशरीरके वाहक मानससूर्यसे अनुमको ८ मथन कर प्रकट किया ॥ ६ ॥

वृद्धाश्वत्थरुषिरनूपोवा-गायत्री छन्दोऽग्निदेवता
अग्ने विवस्वदाभरास्मभ्यमृतये महदेवो ह्य
सिनो दृशे ॥ १० ॥

हे (अग्ने) त्वं (अस्मभ्यम्) अस्माकं षष्ठ्यर्थे चतुर्थी (महे) महते (ऊतये) रक्षणाय अवरक्षणो (विवस्वत्) तमोरूपरक्षसां विवासनकरं ज्योतिः (आभर) आहर (हि) यस्मात् त्वं (नः) अस्माकं (दृशे) दर्शनार्थं (देवः) धीतमानः (सि) इन्द्रादयो नास्माभिर्दृश्यन्ते त्वं तु गार्हपत्यादिदेशोऽतिद्योत्मानः प्रत्यक्षेण दृश्यसे तस्मात्त्वां विशेषेण प्रार्थयामहे इत्यभिप्रायः ॥ १० ॥

भाषार्थः— १ हे अग्ने तुम २ हमारी ३, ४ महारक्षाकेलिये ५ तमोरूप
राक्षसोंके नाशक ज्योति को ६ प्रकट करो ७ जिसकारण तुम ८ हमारे
रेड दर्शनके लिये १० द्योतमान ११ हो ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्नेत्वं (अस्मभ्यम्) अस्माकं (महे) (ऊतये)
संसारद्रक्षणाय (विवस्वत्) विशेषेण निवासहेतुं ब्रह्म-
(आभर) आहू (हिं) यस्मात्वं (नः) अस्माकं (दृशे) ज्ञा-
नलाभाय (देवः) ज्ञान प्रकाशकः (असि) ॥ १० ॥

भाषार्थः— १ हे आत्माग्ने तुम २, ३, ४ संसार से हमारी महारक्षाके
लिये ५ सर्वालय ब्रह्मको ६ अनुभव गोचर करो ७ जिसकारण ८ हमारे
रेड ज्ञानलाभार्थ १० ज्ञान प्रकाशक ११ हो ॥ १० ॥

वृत्तिज्जीभृशुवंशावतंस ज्जीनाथूरामसूनु ज्वाला मसाद शर्मि कृते सा
मवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य प्रथमः खण्डः

अथद्वितीयः खण्डः

आयुडः स्वाहि ऋषिर्गायत्री छन्दो मिर्देवता
नमस्ते अग्ने अजसे गृणान्ति देव कष्टयैः । अग्ने
रुमिन्मर्ह्य ॥ ११ ॥

हे (देव) (अग्ने) (कष्टयैः) मनुष्याः यजमानाः नि० २। ३। ८
(अजसे) वुलाय (ते) तुभ्यं षष्ठी चतुर्थ्यर्थे (नमः) नमस्का-
रशब्दं (गृणान्ति) उच्चारयन्तित्वं (अग्नेः) वलैः (अभिन्म)
शत्रुं (अर्ह्य) नाशय ॥ १ ॥

भाषार्थः— १, २ हे अग्निदेवता ३ यजमान ४ वलके लिये ५ नेरे अर्थ

द्दिनमस्कारशब्द को ७ उच्चारण करते हैं तुम ८ वलों के द्वारा ९ शत्रु को १०
नाश करो ॥ १ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (देव) मायाक्रीडनकैः क्रीडनशील (अग्ने) आत्माग्ने-
(रूपेण) विद्वांसः (भोजसे) योगवलाय (ते) तुभ्यं (नमः)
(गृणान्ति) त्वं (अग्ने) योगवलैः (अमित्रम्) कामं (अर्दये) १

भाषार्थः - १, २ हे माया के खिलोनों से क्रीडनशील आत्माग्ने ३
विद्वान् ४ योगवलके लिये ५ तेरे अर्थ ६ नमस्कार शब्द को ७ उच्चार
ण करते हैं ८ तुम योग वलों से ९ काम को १० पीड़ित करो ॥ १ ॥

वामदेव ऋषि गयित्री छन्दो वैश्वानरो मूर्तिर्दे०
दूतं वो विश्वे वेदसं हव्यं वाहं ममर्त्यम् । यजि
ष्ठमृज्जसे गिरौ ॥ २ ॥

मन्त्रो यजमानं प्रशंसति हे यजमानत्वं (वै) युष्माकं (हृ
व्यवाहम्) देवेभ्यो हविषां वोढारं (दूतम्) देवानां दूतं (अम
र्त्यम्) अमरणा धर्माणां (विश्ववेदसम्) विश्वं समस्तं वे-
दो धनं यस्यासौ विश्ववेदाः तम् (यजिष्ठम्) अति शयेन य-
ष्टारमग्निं (गिरौ) वेदवाचा (ऋज्जसे) प्रसाधयसि बद्ध-
यासि ऋज्जतिः प्रसाधनकर्माणि ० ६।२। ४ यजमानो अग्निः
श० ६।३। ४। १२ यजमानो अग्निं पूजने नाग्निभावं प्राप्नोति
तस्मादाग्निं काण्डेतस्य प्रशंसा युक्तेव ॥ २ ॥

भाषार्थः - मन्त्र यजमान की प्रशंसा करता है हे यजमान तुम १
अपने २ देवताओं के लिये हविधारक ३ देवताओं के दूत ४ अमरणा ध-

र्मा ५ सर्वधनवत्त ६ महायज्ञकर्ता अभिको ७ वेदवाणीद्वारा ८ प्रसा
धनकरतेहौ ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम्

हेयोगिनत्वं (वेः) युष्माकं (हृव्यवाहेम्) (दूतम्) (अमृ-
त्यम्) अविनाशिनं (विश्ववेदुसम्) सर्वविदं (यजिष्ठ
म्) उत्कृष्टयष्टारमात्माग्निं (गिरा) महावाचा (ऋज्ज
से) वर्द्धयसितस्मान्मोक्षार्होसीत्यर्थः ॥ २ ॥

भाषार्थः - हे योगिन तुम १ अपने २ हविधारक ३ दूत ४ अविना
शी ५ सर्वज्ञ ६ उत्कृष्टयष्टा आत्माग्निको ७ महावाकद्वारा ८ बढ़ातेहैं
उस कारण मोक्ष योग्य हो यह अभिप्राय है ॥ २ ॥

प्रयोगऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-
उपत्वाजामयो गिरा देदेशतीह विष्कतः ।

वायो रनीकेऽस्थिरन् ३ । १३

हे अग्ने आत्माग्नेवा (जामुयः) तव स्वस्वरूपाः प्रजापतिना
द्वयोरुत्पन्नत्वात् (हृविष्कतः) हविः संस्कारं कुर्वन्त्यः
(गिरः) स्तुतयः (त्वा) त्वां (उप) उपतिष्ठन्ते (देदेशतीः)
तव गुणान् दिशन्त्यः (वायोः) प्राणस्य (अनीके) मुखे
(अस्थिरन्) अतिष्ठंश्च ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे अग्ने वा आत्माग्ने १ तेरी भगिनी रूप २ हवि संस्कार-
करन वाली ३ स्तुतियां ४ तेरे ५ समीप स्थित होनी हैं ६ तेरे गुणों को
कहनी ७ प्राण के ८ मुखमें ९ स्थित हुई ॥ ३ ॥

मधुच्छन्दऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्हि यावयम् । न
मो भरन्त एमासि ४ । १४

हे (दोषावस्तः) दोषायां रात्रौ स्वकीयेन ज्योतिष्पातमसू-
माच्छादयितः (अग्ने) (वयम्) अनुष्ठातारः (दिवे) (दिवे)
प्रतिदिनं (धियो) बुद्ध्या (नमः) नमस्कारं हविर्वा (भर-
न्तः) सम्पादयन्तः (उप) समीपे (त्वा) त्वां (एमासि) आ-
गच्छामः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ अपनी ज्योतिसे रात्रिके अंधकार को नाश करने-
वाले २ हे अग्ने ३ अनुष्ठान कर्ता हमलोग ४, ५ प्रतिदिन ६ बुद्धिद्वारा
७ नमस्कारवा हविको ८ सम्पादन करते ९ समीपमें १० तुमको
११ प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (दोषावस्तः) रात्रेः पितृयानु मार्गस्याच्छादयितः । लो-
पायितः (अग्ने) आत्माग्ने (वयम्) वागाद्यत्विजः (दिवे)
(दिवे) प्रतिदिनं (धियो) योगबुद्ध्या (नमः) इन्द्रियरूपा-
न्नं (भरन्तः) समर्पयन्तः (उप) समीपे (त्वा) त्वां (एमासि)
आगच्छामः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे पितृयानु मार्गके आच्छादक २ आत्माग्ने ३ हम
वागादिऋत्विज ४, ५ प्रतिदिनं ६ योग बुद्धिद्वारा ७ इन्द्रिय रूप
हविको ८ समर्पण करते ९ समीपमें १० तुमको ११ प्राप्त करते हैं ४

शुनः शोषं ऋषिर्गायत्री छन्दोमि देवता ॥

जैरा बोधत द्विविडिह विशेष विशेष यज्ञियाय ।

स्तोमं च रुद्राय दृशीकम् ॥ ५ ॥ १५ ॥

हे (जरबोध) जरया स्तुत्या बोध्यमानाम्ने (विशे) (विशे) प्रत्येक यजमानस्यानुग्रहार्थं (यज्ञियाय) यज्ञ सम्बन्धनुष्ठानसिद्धार्थं (तत्) देवयजनं (विविड्ढि) प्रविश। यजमानोऽपि (रुद्राय) रुद्ररूपाय तुभ्यं (दृशीकं) दर्शनीयं समीचीनं (स्तोमम्) स्तोत्रं करोतीति शेषः ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे स्तुतिसे बोध्यमानाम्ने २, ३ प्रत्येक यजमानके अनुग्रह ४ तथा यज्ञसम्बन्धी अनुष्ठान की सिद्धि के लिये ५ उस देवयजनस्थान में ६ प्रवेश करो यजमान भी ७ तुम्हें रुद्ररूप के लिये ८ दर्शनीय वा समीचीन ९ स्तोत्र को उच्चारण करता है ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (जरबोध) देहाभिमानत्याग एव जरा तस्यां बोधो यस्य स जरा बोधस्तद्गुणा विशिष्टात्माग्ने (विशे) (विशे) प्रत्येक माणा स्यानुग्रहार्थं। विशो वै मरुतः शु. ५। १। ३। ३ (यज्ञियाय) योग्यज्ञानुष्ठानसिद्धार्थं (तत्) हृदयं (विविड्ढि) प्रविश (दृशीकं) दर्शनीयमाधिदैवं (स्तोमम्) स्तोत्रं (रुद्राय) ईश्वराय भवति तस्य स्तोत्रस्याधिदैवानुष्ठानसम्बन्धत्वात्। विविड्ढि विशा प्रवेशने लोटोहिः (३, ४, ८, ९) वद्गलं छंदसि (२, ४, ९६) इति शपः ऋग्व्यासहलादिशेषौ (६, ९, ४, ९, ४, ६९) हुभलभ्यो हे ऋग्भिः (६, ४, ८, ९) इति हे ऋग्भिः रादेशः पत्वष्टुत्वे (८, ३, ३६, ८, ४, ४१) यद्वा विसृज्याप्तावित्यस्य लोणमध्यमैकवचने ऋग्व्यासस्य गुणाभावः ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ देहाभिमानत्यागरूपजरामें जिसका बोध होय तादृश हे आत्मा २, ३ प्रत्येक प्राण के अनुग्रह ४ तथा योग यज्ञानुष्ठानकी सिद्धि के लिये ५ उस हृदय में ६ प्रवेश करो ७ दर्शनीय प्राधिदेव ८ स्तोत्र ९ ईश्वर के लिये होता है क्यों कि उसका सम्बन्ध उसी से है ॥ ५ ॥

मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निमरुतौ देवते
प्रतित्यञ्चारुमध्वरं गोपीथाय प्रहूयसे।

मरुद्भिरग्नागहि ६

हे (अग्ने) (तमे) (यम्) अग्नेयं वीजकोषः (चारुम्) मनोहरं (अध्वरम्) यज्ञं (प्रति) प्रतिलक्ष्य (गोपीथाय) सोमपानाय (प्रहूयसे) प्रकर्षेण हूयसे तस्मात्त्वं (मरुद्भिः) सह (अगहि) आगच्छ ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने २ उस ३ अग्नि सम्बन्धी ४ मनोहर ५ यज्ञको ६ देखकर ७ सोमपान के लिये ८ आह्वान किये जाते हो उस कारण तुम ९ मरुद्गणों के साथ १० आओ ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्मा २ (तमे) (चारुम्) मनोहरं (यम्) योगसम्बन्धिनं (अध्वरं) यज्ञं (प्रति) प्रतिलक्ष्य (गोपीथाय) आत्म प्रतिविंब पानाय सर्वहि सोमः श० ५। ५। ४। १० (मरुद्भिः) प्राणैः (प्रहूयसे) (अगहि) आगच्छ ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मा २ उस ३ मनोहर ४ योग सम्बन्धी ५ यज्ञको ६ देखकर ७ आत्म प्रतिविंब के पानार्थ ८ प्राणों के द्वारा ९ आह्वान

कियेजानेहो १७ आश्रो ॥६॥

शुनः शोपऋषिर्गायत्री छन्दो वैश्वानरो मिर्दे०
 अश्वेनत्वा वारवन्तं वन्दे ध्येऽग्निं नमोभिः स
 प्राजन्तमध्वरोणाम् ७ ॥ १७

(तम्) (अध्वरोणाम्) यज्जानां (सम्राजं) सम्राट् स्वरूपं
 स्वामिनं (अग्निं) (त्वाम्) (नमोभिः) स्तुतिभिः (वन्दे ध्ये)
 वन्दितुं । तुमर्थे ध्ये । प्रवृत्ता इति शेषः (न) यथा (वारवन्तं
 जलसंघयुक्तं (अश्वम्) सूर्यं । असौ वा ऽ आदित्य एपो ऽ
 श्वः श० ६।३।१।२९—॥७॥

भाष्यार्थः - १उस २ यज्ञोंके ३ स्वामी ४ अग्निनाम ५ तुमको ६
 स्तुतिद्वारा ७ वन्दन करनेको हम प्रवृत्त हुए ८ जैसे ९ जल समूह
 युक्त १० सूर्यको ॥७॥

अथाध्यात्मम्

(तम्) (अध्वरोणाम्) योगयज्जानां (सम्राजं) स्वामिनं (अग्निं) आत्मा
 मिं (त्वाम्) (नमोभिः) स्तुतिभिः (वन्दे ध्ये) वन्दन्तु मि-
 च्छाम इति (न) यथा (वारवन्तं) जलसंघयुक्तं (अश्वम्)
 सूर्यं ॥७॥

भाष्यार्थः - १उस २ योगयज्ञोंके ३ स्वामी ४ आत्माग्निनाम
 ५ तुमको ६ स्तुतिद्वारा ७ वन्दना करना चाहते हैं ८ जैसे ९ जल स
 मूह युक्त १० सूर्यको ॥७॥

प्रयोगऋषिर्गायत्री छन्दो वैश्वानरो मिर्देवता-
 श्रीर्वभृगुर्वच्छुचिमन्नवानवदाहुर्वेऽग्निं २

समुद्रवाससम् ॥ २८

(समुद्रवाससं) अन्तरिक्षे वैद्युतात्मना समुद्रे वाडवात्म-
ना वानिवासो यस्यतं । समुद्र इत्यन्तरिक्ष नामानि ० १, ३
१ ५ (शुचिं) शुद्धं (अग्निम्) (शैर्वभृगुवत्) (अन्नवान
वत्) यथा शैर्वभृगुः । अन्नवानश्वतथा (आहुवे) अह
माहूयामि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ अन्तरिक्ष में विजली रूपसे वा समुद्र में वड़वान
लरूपसे निवास शील २ शुद्ध ३ अग्नि को ४, ५ शैर्वभृगु अन्नवान भा-
र्गव ऋषियों की समान ६ आवाहन करता हूँ ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम्

(समुद्रवाससं) मनोवर्तिनं । मनोवैसमुद्रः श० ७ । ५ । २ ।
५ २ (शुचिं) पवित्रं (अग्निम्) आत्माग्निं (शैर्वभृगुवत्)
(अन्नवानवत्) (आहुवे) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ मनोवर्ती २ पवित्र ३ आत्माग्नि को ४, ५ शैर्वभृगु
अन्नवान् भार्गव ऋषियों की समान ६ आवाहन करता हूँ ॥ ८ ॥

प्रयोग ऋषि गिर्यत्री छन्दोग्नि देविता-

अग्निमिन्धानोमनसाधियं सचेतमर्त्यः

अग्निमिन्धेविवस्वभिः ॥ ९ ॥ २९

(मर्त्यः) मनुष्यः (अग्निं) इन्धानः) काष्ठैः प्रज्वलयन् (म-
नसा) (धियं) कर्म (सचेत) भजेत यस्मात्सन्तरोहं
(विवस्वभिः) तमसां विवासायित्वा भिरिषिमभिः (अग्निम्)
(इन्धे) प्रज्वलितं करोमि ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ मनुष्य २ अग्नि को ३ काष्ठों से प्रज्वलित करता ४ मन से ५ कर्म को ६ सेवन करे जिस कारण मंत्र में ७ तम नाशक किरणों के साथ ८ अग्नि को ९ प्रज्वलित करता हूँ ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम्

(मर्त्यः) देहाभिमानी मनुष्यः (अग्निम्) आत्माग्निं (इंधनः) प्राणैः प्रज्वलयन् (मनसा) (धियै) प्रज्ञां (संचेत) भजेत यस्मान्मन्त्रोऽहं (विवस्वभिः) इन्द्रियरश्मिभिः (अग्निं) आत्माग्निं (इन्धे) प्रज्वलितं करोमि ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ देहाभिमानी मनुष्य २ आत्माग्नि को ३ प्राण द्वारा प्रज्वलित करता ४ मन सहित ५ प्रज्ञा को ६ सेवन करे जिस कारण मंत्र में इन्द्रिय रूप किरणों सहित ८ आत्माग्नि को ९ प्रज्वलित करता हूँ ॥ ९ ॥

वत्सवदधिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

आदित्यत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वा
सरम्। परायदिध्यते दिवि ॥ १० ॥ २०

(यत्) यदा (परे) वैश्वानरोऽग्निः (दिवि) द्युलोकस्योपरि (इध्यते) दीप्यते (आदित्य) अनन्तरमेव (प्रत्नस्य) चिरन्तनस्य (रेतसः) जगद्धीर्यस्य सूर्यस्य (वासरम्) (ज्योतिः) दैनन्तेजः (पश्यन्ति) सर्वजनाः ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ जव २ वैश्वानर अग्नि ३ स्वर्गलोक में ४ प्रज्वलित होता है ५ अनन्तर ही ६ चिरन्तन ७ जगत वीर्य रूप सूर्यके ८, ९ दिन संबन्धी तेज को १० देखते हैं ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम्

(यत्) यदा (पुं०) आत्माग्निः (दिवि) भृकुट्यां (दृध्यते) दीप्यते (आदित्) अनन्तरमेव (मत्नस्य) चिरन्तनस्य (रेतसः) देह वीजस्यात्मप्रतिविंबस्य । रेतो वै सोमः श० २ । ५ । १ । ६ सोमो वै भ्रातृ श० ३ । २ । ४ । ६ (वासरम्) वृ-प्रा-णस्ते नात्मानि गतिमन्तं सर्ते गत्यर्थस्य रूपम् (ज्योतिः) (पश्यन्ति) योगिजनाः ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ जव २ आत्माग्नि ३ भृकुटि में ४ प्रज्वलित होता है ५ अनन्तरही ६ चिरन्तन ७ देह वीज आत्मप्रतिविंबके ८, ६ उसज्योति को जो कि प्राण द्वारा आत्मा में गति मान हो १० योगी जन देखते हैं ॥ १० ॥

इति द्वितीयादशाति

इति ऋषी भृगुवंशावतंस ऋषीनाथूराम सूनुज्वाला प्रसादशर्म कृते सामवेदीयब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः ॥ २ ॥

अथ तृतीयः खण्डः

प्रयोग ऋषि गयित्री छन्दोभिर्देवता-

ॐ अग्निं वो वृधन्तु मध्वराणां पुरूतमम् । अग्च्छी
नम्रे सह स्वते ॥ १ ॥ २१

हे ऋत्विजः (वः) युष्माकं (अध्वराणां) यज्ञानां (वृधन्तं) वर्द्धयन्तं (पुरूतमं) समाष्टि रूपं (अग्निं) (अग्च्छी) अभिगच्छत (नम्रे) महापुरुषस्य पुत्रः प्रजापतिस्तस्य पुत्रोऽग्निस्तस्मै (सह स्वते) बलवते हविः समर्पयतेति शेषः । य

द्वावलपतेपौत्रायामिगच्छत ॥ १ ॥

भाषार्थः - हे ऋत्विजो १ तुम्हारे २ यज्ञोंके ३ वृद्धिकर्ता ४ समष्टिरूप ५ आग्नि को ६ प्राप्त करो ७ महापुरुषके पौत्र ८ वलवान् आग्नि के लिये हवि समर्पण करो ॥ १ ॥

अथाध्यात्मम्

हे वागाद् ऋत्विजः (वेः) युष्माकं (अध्वरोणां) योगयज्ञानां (वृधन्तं) वर्द्धयन्तं (पुरुतमं) महान्तं (आग्निं) आत्माग्निं (अच्छी) अभिगच्छत (नष्ट्रे) महापुरुषस्य पुत्रो विष्णुस्तस्य पुत्र आत्माग्निस्तस्मै (सहस्वते) ज्योतिष्मते प्रति विं व रूपहविः समर्पयत ॥ १ ॥

भाषार्थः - हे वागादि ऋत्विजो १ तुम्हारे २ योगयज्ञोंके ३ वृद्धिकर्ता ४ महान्त ५ आत्माग्नि को ६ प्राप्त करो ७ महापुरुषके पौत्र ८ ज्योतिष्मान् आत्माग्नि के लिये प्रति विं व रूपहवि को समर्पण करो ॥ १ ॥

भरद्वाज ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

३ आग्निस्ति ३ गमेन ३ शोचिषायै ३ सौष्टिष्वन्ये

३ अत्रिणाम् ३ आग्निन्नावि ३ सते रयिम ॥ २ ॥ ३२

(अयम्) (आग्निः) (तिगमेन) तीक्ष्णो न (शोचिषा) तेजसा (विश्वम्) सर्वं (अत्रिणाम्) अन्तारं राक्षसादिकं (नियंसत्) निहन्तु । यच्छते लीटि रूपम् (आग्निः) (नः) अस्मभ्यं (रयिम) धनं (वंसते) ददातु ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ यह २ अग्नि ३ तीक्ष्ण ४ तेजके द्वारा ५ सब ६ राक्षस

आदिको ७ नाश करो ८ अग्नि षट्हमारेलिये १० धनको ११ दो ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम्

(अयम्) (अग्निः) आत्माग्निः (तिग्मैः) (शोचिषा) ते-
जसा (विष्णुं) सर्वं (अत्रिणं) अन्तारं कामादिकं (नियंसे-
त्) निहन्तु (अग्निः) आत्माग्निः (नः) अस्मभ्यं (रयिम्)
योगधनं (वंसते) ददातु ॥ २ ॥

भाषार्थः— १ यह २ आत्माग्नि ३ तीक्ष्ण ४ तेजके द्वारा ५ सबके
भक्षक कामआदिको ७ मारो ८ आत्माग्नि षट्हमारेलिये १० योग-
धनको ११ दो ॥ २ ॥

वामदेव ऋषिर्गीयत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्ने मृड महान् १० अस्यैय आदेव युञ्जनम् ।

इयेथ वहि रासदम् ॥ ३ ॥ १३ ॥

हे (अग्ने) त्वं (महान्) (असि) (अयः) (यः) योगस्तेन-
रहितः साकारो भूत्वा (वह्नि रासदम्) आसीदन्ति यस्मि-
न्तदा सदमासनं कुशासनं (आइयेथ) आगच्छसि स-
त्वं (देवयुम्) देवानां कामयितारं । देवान् यष्टुमिच्छती-
ति क्यचि क्वा च्छन्दसि (३, २, १७) इति उः (जनम्) य-
जमानं (मृड) सुखय ॥ ३ ॥

भाषार्थः— १ हे अग्ने तुम २ महान् ३ हो ४ योगरहित अर्थात्-
सांकार होकर ५ कुशासनको ६ प्राप्त करते हो ७ देवकामा ८ यज-
मानको ९ सुखी करो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (अग्ने) आत्मा मे त्वं (महान्) (असि) (अयः) आत्मा
 मि त्वं (वह्नि रासदम्) दीप्ति युक्तु हार्दासनं । वह्नि दीप्तौ-
 (आद्रयेथ) प्राप्नोषि सत्त्वं (देवयुम्) देवस्य महापुरुष-
 स्य कामयितारं (जनम्) भक्तं (मृड) सुखय ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मा मे तुम २ महान ३ हो ४ आत्मा मि तुम ५
 दीप्ति युक्त हार्दासन को ६ प्राप्त करते हो ७ महापुरुष के चाहने वा
 ले ८ भक्त को ९ सुखी करो ॥ ३ ॥

वसिष्ठः अपि गायत्री छन्दोभिर्देवता-

अग्ने रक्षाणो अग्ने हंसः प्रतिस्मदेवरीषतः
 तपिष्टे रजरोदह ॥ ४ ॥ २४

(अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (देव) द्योतमान (अग्ने) (नः) अस्मा-
 न् (अहंसः) पापात् (रक्ष) (अजरः) जरारहितत्वं (रीष-
 तः) हिंसतः शत्रून् (तपिष्टे) अतिशयेन तापकैस्तेजोभि-
 (प्रतिदह) भस्मीकुरु ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ द्योतमान ३ अग्ने ४ हमको ५ पा-
 पसे ६ रक्षा करो ७ जरारहिततुम ८ हिंसक शत्रुओं को ९ अतिशय-
 तापकनेजों से १० भस्मकरो ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (देव) (अग्ने) आत्मा मे (नः) अस्मा-
 न् योगिजनान् (अहंसः) पापात् (रक्ष) (अजरः) निर्वि-
 कारत्वं (रीषतः) हिंसतः कामादीन् (तपिष्टे) अतिश-
 येन तापकैस्तेजोभिः (प्रतिदह) भस्मीकुरु ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ विद्वन् ३ आत्माग्ने ४ हमयोगियोंको
 ५ पापसे धरहाकरो ७ निर्विकारतुम ८ हिंसककाम आदिको ९ अतिश
 यतापकतेजों से १० भस्मकरो ॥ ४ ॥

भरद्वाज ऋषि गायत्री छन्दोभिर्देवता-

१२ ३ ११
 अग्ने^३यु^३ड्^३स्वा^३हि^३ये^३त^३वा^३श्व^३ा^३सो^३दे^३व^३सा^३ध^३वः ।

अ^३र^३व^३हं^३त्या^३श^३वः ॥ ५ ॥ २५

हे^३(अ^३)सर्वव्यापिन्^३(दे^३व^३)द्योतमान^३(अ^३ग्ने^३)(ये^३)(त^३व^३)
 त्वदीयाः^३(सा^३ध^३वः^३)सुशीलाः^३(आ^३श^३वः^३)क्षिप्र^३गा^३मि^३नः^३(अ^३
 श्वा^३सः^३)अ^३श्व^३ाः^३आ^३ज्ज^३से^३र^३सु^३क्^३(७।१।५०)इत्यमु^३कि^३रू^३प^३म्^३
 (अ^३र^३म्^३)अ^३लं^३प^३र्या^३न्त^३त्वं^३दी^३यं^३रथं^३(व^३हं^३न्ति^३)तान्^३(हिं^३)(यु^३ड्^३
 स्व^३)आ^३त्मी^३ये^३रथे^३यो^३ज^३य^३॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ द्योतमान ३ अग्ने ४ जो ५ तेरे ६ सुशील
 ७ क्षिप्रगामी ८ घोड़े ९ तेरे पर्यान्तरथको १० लेचलते हैं ११ उनकोही १२
 अपने रथमें जोड़ो ॥ ५ ॥

अथा^३ध्या^३त्सु^३म्^३(अ^३)हे^३सर्वव्यापिन्^३(दे^३व^३)(अ^३ग्ने^३)आ^३त्मा^३
 ग्ने^३(ये^३)(त^३व^३)त्वदीयाः^३(सा^३ध^३वः^३)यो^३गानु^३ष्ठान^३शी^३लाः^३(आ^३श^३
 वः^३)नि^३राल^३साः^३(अ^३श्व^३ासः^३)मा^३नु^३स^३सूर्याः^३।अ^३सौ^३वा^३आ^३दि^३त्य
 ए^३पो^३अ^३श्वः^३श० ६।३।१।२८(अ^३र^३म्^३)२-आ^३त्मा^३ग्नि^३स्त्वं^३द्व्य^३तिरि^३क्तं^३
 देहं^३(व^३हं^३न्ति^३)तान्^३(हिं^३)(यु^३ड्^३स्व^३)स्वा^३त्मानि^३यो^३ज^३य^३॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ विद्वन् ३ आत्माग्ने ४ जो ५ तेरे ६ यो-
 गानुष्ठानशील ७ निरालस ८ मानस सूर्य ९ आत्माग्निसे व्यतिरिक्त देह
 को १० धारणा करते हैं ११ उनकोही १२ अपने आत्मा में युक्त करो ॥ ५ ॥

पशिष्ठऋषिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

नि॒त्वो॑ नक्ष्यवि॒श॒पते॑द्यु॒मन्तं॑ धीमहे॒ वयम् ।

सु॒वीरं॑ म॒म आ॒हुत ॥ ६ ॥ २६

(नक्ष्य) हे उपगन्तव्य । नक्षतिर्व्याप्तिकर्मानि० २। १८ (वि-
श॒पते) यजमानानां स्वामिन् नि० २। ३ (आहुत) सर्वैर्यजमा
नैरभिहुत (अग्ने) (द्युमन्तं) दीप्तिमन्तं (सुवीरं) ऋत्विगा-
ख्यैः सुवीरैः समृद्धं (त्वा) त्वां (वयम्) (निधीमहे) निहितवन्तः

भाषार्थः - १ हे उपगन्तव्य २ यजमानोंके स्वामी ३ सब यजमानों से
अभिहुत ४ अग्ने ५ दीप्तिमान ६ ऋत्विक्नाम ऋषीरों से समृद्ध ७ तुमको
८ हमने ९ स्थापित किया ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - (नक्ष्य) हे सर्वव्यापिन् (विश॒पते) योगि
नां स्वामिन् (आहुत) योगिजनैरभिहुत (अग्ने) आत्माग्ने-
(द्युमन्तं) दीप्तिमन्तं (सुवीरं) वागाद्यृत्विग्भिः सम्वद्धं (त्वा)
त्वां (वयम्) योगिनः (निधीमहे) हार्दाकाशे निहितवन्तः ६

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ योगिजनेश्वर ३ योगियों से अभिहुत ४
आत्माग्ने ५ दीप्तिमान ६ वागाद्यृत्विजों से सम्वद्ध ७ तुमको ८ हम योगियों
ने ९ हार्दाकाश में स्थापन किया ॥ ६ ॥

विरूपऋषिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

अग्नि॑ मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः॑ षाधिव्याश्रयम् ।

अपा॑ थं रेता॑ थं सिजिन्वति ॥ ७ ॥ २७

(अयम्) (दिवः) द्युलोकस्य (मूर्द्धा) सूर्यरूपः श० १४। १।
१। १० (षाधिव्याः) (अपाम्) अन्नरिक्साणां मध्ये नि० १। १३

८ (ककुत्पतिः) ककुदा कृाणां गोलानां स्वामी (श्रमिः) श्रमि रात्मा मिर्वा (रेतांसि) आपः नि० १। १२। १६ यद्वा वीर्य विकार भूतानि स्थावरजङ्गमात्म कानि (जिन्वति) भीणयति। श्रमिर्वा इतो वृष्टिं समीरयतीति श्रुतेः ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ यह २ स्वर्गलोक का ३ सूर्यरूप ४ पृथिवी ५ और अन्तरिक्षों के मध्य ६ ककुदा कार गोलों का स्वामी ७ श्रमि वा आत्मा मि ८ जलों वा वीर्य विकार रूप चराचर जीवों को ९ भ्रमण करता है ॥ ७ ॥

श्रुतः शेष ऋषि गीयत्री छन्दोभिर्देवता.

^{३ २ ३ ३ ३ ३} इमं मूषृत्वमस्माकं ^{३ १ ३} सानि गोयत्रं ^{३ ३ ३ ३ ३ ३} नव्यां ^{३ ३ ३ ३ ३ ३} थं स
म। अग्ने देवेषु प्रवोचः ॥ ८ ॥ २८

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (त्वम्) (अस्माकम्) (इमम्) (नव्यासम्) संस्कृतं (सानि) दानं (गायत्रं) स्तुतिरूपं वचोऽपि (ऊर्षु) विष्णुशिवादिषु (देवेषु) इन्द्रादिषु च (प्रवोचः) प्रवृष्टि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने वा आत्माग्ने २ तुम ३ हमारे ४ इस ५ संस्कृत ६ दान ७ और स्तुति रूप वचन को भी ८ विष्णुशिवादि ९ और इन्द्र आदि देवताओं के मध्य भी १० उच्चारण करो ॥ ८ ॥

गोपवन ऋषि गीयत्री छन्दोभिर्देवता.

^{१ २ ३ ३ ३ ३} तत्त्वा गोपवनो गिराजनिष्टदग्ने अङ्गिरः।
^{३ ३ ३ ३ ३ ३} सपोवक श्रुधी हवम् ॥ ९ ॥ २९

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (गोपवने) व्याष्टि समष्टीन्द्रियाणां शोधकः पूशोधे (अङ्गिरः) व्याष्टि समष्टि माणः प्राणो

वाऽऽग्निः राशं ६।१।२।२८ (गिरा) वेदवचसा (तमे) त्वा
 त्वां (जनिष्वन्) संस्करोति हे (पावक) शोधक (स) त्वं (ह
 वम्) आह्वानं (शुधी) ऋणु ॥ ९ ॥

भाष्यार्थः - १ हे श्वमेवात्मा मे २ व्यष्टि समाष्टि इन्द्रियों का शोध
 क ३ व्यष्टि समाष्टि प्राण ४ वेदवचनसे ५ उस ६ तुमको ७ संस्कार करत
 है ८ हे शोधक ९ वह तुम १० आह्वानको ११ सुनो ॥ ९ ॥

वामदेव ऋषिर्गायत्री छन्दो मिर्देवता-

परिवाजपतिः कविर्गमिह्व्याः न्यक्मीत् ।

दधे द्रत्नानि दाशुषे ॥ १० ॥ ३०

(वाजपतिः) अन्नानां पालकः (कविः) मेधावी (अग्निः)
 अग्निरत्नाग्निर्वा (दाशुषे) हविर्दत्तवते यजमानाय (रत्ना
 नि) रत्नभूतानि धनानि योगधनानि वा (दधते) प्रयच्छ
 न् (हव्यानि) आधिदेवाध्यात्मसम्बन्धीनि (पर्यक्मीत्)
 देवान्प्रति नीतवान् ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ अन्न पालक २ मेधावी ३ अग्नि वा आत्माग्निने ४ हवि-
 दाता यजमानके लिये ५ रत्न रूप धन वा योगधनोंको ६ देते हुए ७ अग्नि
 देवाध्यात्मसम्बन्धी हविषोंको ८ देवताओंके पास पहुंचाया ॥ १० ॥

काएव ऋषिर्गायत्री छन्दो मिर्देवता-

उदत्यं जातं वेदसं देवैर्वहन्ति केतवः । दृशो
 विश्वायसूर्यम् ॥ ११ ॥ ३१

(केतवः) वैश्वानस्याग्नेरत्नाग्नेर्वा केतवो रश्मयः (उ)
 एव (तमे) (यम्) सर्वस्य प्राणरूपं (जादवेदसं) सर्वज्ञं-

(देवम्) द्योतमानं (सूर्यं) (विश्वाय) (दृशे) सर्वदर्शनाय-
(ब्रह्मन्ति) ऊर्ध्ववहन्ति ॥ ११ ॥

भाषार्थः - १ वैश्वानरशुद्धिवाशुद्धिमाशुद्धिकीकिरणे २ ह्री ३ उत्स ४
सबकेमाणरूप ५ सर्वज्ञ १ द्योतमान ७ सूर्यको ८, ९ सर्वदर्शनकोलि
ये १० ऊंचा धारण करती हैं ॥ ११ ॥

मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता

काविमैत्रिमुपैस्तुहि सत्यधर्माणामध्वरे।

देवममीवचातनम् ॥ १२ ॥ ३२ ॥

हे स्तोत्र सद्गुणयोगिन्वा (अध्वरे) यज्ञे योग यज्ञेवा (कावि
म्) मेधाविनं (सत्यधर्माणां) सत्यस्य ब्रह्मणो धारकं (दे
वम्) द्योतमानं (अमीवचातनं) अमीवानां हिंसकानां श
त्रूणां कामादीनाम्वाघातकं (अग्निम्) अग्निमात्माग्निंवा
(उपैस्तुहि) उपेत्य स्तुतिं कुरु ॥ १२ ॥

भाषार्थः - हे स्तोत्र समूह वा योगिन् १ यज्ञ वा योग यज्ञमें २ मेधा
वी ३ ब्रह्मके धारक ४ द्योतमान ५ हिंसक शत्रुवा कामआदिके घात
क ६ अग्नि वा आत्माग्नि को ७ सन्मुख होकर स्तुत कर ॥ १२ ॥

सिन्धुह्रीपोऽस्वरीषोत्तत आप्नोवाऋषिर्गायत्री छन्द आपो दे०

शन्नो देवीरभिष्टये शन्नो भवन्तु पीतये शं

योरभिस्त्रवन्तुनः ॥ १३ ॥ ३३ ॥

(देवीः) देव्यः आपः (नः) अस्माकं (अभिष्टये) (अ) अन्नं
(भ) तेजो रूपं घृतं तस्येष्टये (शम्) सुखरूपा भवन्तु (नः)
(पीतये) पानाय (शम्) सुखरूपा भवन्तु (नः) अस्माकं

(शंयोः) शंयुः शुभान्वितो यजमानस्तस्य (अभिस्त्रवन्तु) सन्मुखे प्राप्ता भवन्तु ॥ १३ ॥ ३३

भाषार्थः - १ प्रकाशमानजल २ हमारे ३ अन्न द्यतकी दृष्टि के लिये ४ सुख रूपहों ५ हमारे ६ पान के लिये ७ सुख रूपहों ८ हमारे ९ यजमानके १० सन्मुख प्राप्त हों ॥ १३ ॥

अथाध्यात्मम्- हे (देवीः) आपो ज्योती रसो मृतमिति श्रुता बुक्ता आपः (नः) अस्माकं वा गा दृत्विजां (अभिष्टये) (अभ) प्रकाश हीना माया विकारो देहस्तस्येष्टये प्रकृतौ होमाय (शम्) आनन्द रूपा भवन्तु (नः) अस्माकं (पीतये) पानाय (शम्) आ० (नः) अस्माकं (शंयोः) यजमानस्य (अभिस्त्रवन्तु) सन्मुखे प्राप्ता भवन्तु ॥ १३ ॥

भाषार्थः - १ हे ब्रह्मांशु रूपजलो २ हम वा गा दृत्विजों की ३ देहको प्रकृति में होम करने के लिये ४ आनन्द रूप हूजिये ५ हमारे ६ पान के लिये ७ आनन्द रूप हूजिये ८ हमारे ९ यजमानके १० सन्मुख प्राप्त हूजिये ॥ १३ ॥ उशना ऋषिर्गायत्री छन्दो विदेवता-

कस्ये न्यूनपरीणा सिधी योजिन्वसिसत्पते
गोषातायस्यते गिरः ॥ १४ ॥ ३४

हे (सत्पते) सतांपते अग्ने । आत्माग्ने ब्रह्माग्ने वा (नूनम्) निष्त्रयेन त्वं (कस्ये) कामस्य (परीणासि) नसकौटिल्ये व्यामौचपरितः कुटिले व्याप्ते वा देहे (धियः) कर्माणि मनोऽहङ्कारचित्तवृत्तीर्वा (जिन्वसि) प्रीणायासि (यस्य) (ते) तव सम्बन्धिन्यः (गिरः) स्तुतयः (गोषाताः) गवां महावाचां

द्राच्यः विदुषां निश्चयेतु सर्वाणि कर्माणि कामस्यै वना-
त्मन इत्यर्थः ॥ १४ ॥

भाषार्थः - १ हे सत्पुरुषों के स्वामी अग्ने वा आत्मा अग्ने २ निश्चयतु म
३ कामदेव के ४ देह में ५ कर्मों वा मन अहंकार चित्त दृष्टियों को धूमरे-
न करते हौ ७ जिस ८ तुम्हकी ९ स्तुतियां १० महा वाक्यों की दाता हैं ज्ञा-
नियों के निश्चय में सब कर्म काम के ही हैं न आत्मा के यह अभिप्राय
है ॥ १४ ॥

इति तृतीयादशतिः

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसादशर्मा कृते
सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य तृतीयखंडः

अथ चतुर्थः खण्डः

शंयुर्ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

यज्ञो यज्ञावो अयं यै गिरा गिरा च दक्षसे । प्रमे
वेयं ममृतं जातं वेदसं प्रियमिन्नं नशं ॥ १४ ॥ ३५

हे स्तोतारः (वः) युष्माकं (यज्ञोः) हविर्यज्ञाः (यज्ञोः) यो
गयज्ञाः (वयम्) वयं वेदा अपि (गिरा) अधिदैव सम्बन्धि
न्यावाचा (गिरा) अध्यात्म सम्बन्धिन्यावाचा (दक्षसे)
प्रहृद्धाय वलरूपाय वा (अग्नेये) अग्नेये आत्माग्नेये ब्रह्मा
ग्नेये वा भवन्ति (च) अहं वेदोऽपितं (अमृतम्) अविनाशिनं
(जातवेदसं) जानानां वेदितारं (मित्रं) (नै) इव (प्रियम्)
(प्रशंसिषम्) अधिदैव सम्बन्धिन्या स्तुत्या (प्रशंसिषम्)
अध्यात्म सम्बन्धिन्या स्तुत्या ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे स्तोताओ २ तुम्हारे ३ हविर्यज्ञ ४ योग यज्ञ ५ और ह्म

वेदभी ५ अधिदेवसम्बन्धी वाक् ६ और अध्यात्म सम्बन्धी वाक् द्वारा ७ प्र-
वृद्ध वलरूप ८ अग्नि आत्माग्नि वा ब्रह्माग्नि के लिये होने हैं ९ और मंत्रे
दभी १० अविनाशी ११ सर्वज्ञ १२ १३ १४ मित्रकी समान प्रियको १५
अधिदेव सम्बन्धी स्तुति के द्वारा प्रशंसा करता हूँ तथा १६ अध्यात्म सं-
बन्धी स्तुति के द्वारा प्रशंसा करता हूँ ॥ १ ॥

भर्गुराग्निर्वृहती छन्दोभिर्देवता-

पाहि॑नो॒ अग्ने॑ एक॒या पा॑ह्युः॒ अतो॑ द्वितीय॒या ।
पाहि॑ गी॒र्भास्ति॑ स्त॒भि रू॒र्जा म्पते॑ पाहि॒ चत॑
स्त॒भिर्वसो॑ २ ॥ ३६ ॥

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने ब्रह्माग्ने वा (नेः) अस्मान् (एकया)
अद्वैतलक्षणया गिरा (पाहि) सन्यासात्मने रक्ष (उते) अपि
च (द्वितीयया) (उ) मायाब्रह्म साधक यागिरेव वान प्रस्था
त्मने (पाहि) ऊर्जा म्पते हे अन्नानां वलानां वा स्वाभिन्
(तिस्तभिः) जीवेश माया साधिकाभिः (गीर्भिः) (पाहि) गृ-
हस्थात्मने रक्ष (वसो) हे ब्रह्माग्ने (चतस्तभिः) ब्रह्मजीवेश
माया साधिकाभिर्गीर्भिः (पाहि) ब्रह्मचर्यात्मने रक्ष ब्रह्मच-
र्यात्मने ब्रह्म माया जीवेशानां सिद्धान्तं ज्ञात्वा गृहस्था-
त्मने माया विकारान्नादिभिर्जीवेशयोस्तृप्तिं कृत्वा वान
प्रस्थात्मने सर्व ब्रह्म मयं ज्ञात्वा चतुर्थात्मने वासुदेवः सर्व
मिति वाचा परमां गतिं प्राप्नोति ॥ २ ॥

भाषार्थः १ हे अग्ने आत्माग्ने वा ब्रह्माग्ने २ हमको ३ अद्वैतलक्षणा वा
णी द्वारा ४ सन्यास आत्मने रक्षा करो ५ और ६ माया ब्रह्म साधक वा

णीद्वारा ८ वानप्रस्थ आश्रम में रक्षाकरो हे अन्न वावलों के स्वामी १०, ११
जीव ईश माया साधक वाणी के द्वारा १२ गृहस्थाश्रम में रक्षाकरो १३
हे ब्रह्मांशो १४ ब्रह्मजीव ईश माया साधक वाणी के द्वारा १५ ब्रह्मचर्या
श्रम में रक्षाकरो अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रम में ब्रह्म माया जीव ईश्वर के सि
द्धान्त को जानकर गृहस्थाश्रम में माया विकार अन्न आदिके द्वारा
जीव ईश्वर की तृप्ति को करके वानप्रस्थ आश्रम में सबको ब्रह्म रूप
जानकर चतुर्थ आश्रम में वासुदेवः सर्व ईश्वर के द्वारा परम गति
को पाता है ॥ २ ॥

शंयुः ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता

वृहद्भिर्ग्रेः अग्निभिः भुक्तेषु देवशोचिषोः भू
रद्वाजे समिधानो यविष्ट रेवत्यावक दीदिहि ३ ३७

हे (देव) दानादि गुण युक्त (यविष्ट) युवतम (पावक) शोध
क) (अग्ने) (भुक्तेषु) निर्मलेन (शोचिषो) तेजसा (भरद्वा-
जे) वाजमन्त्रं हृविर्लक्षणां भरतीति भरद्वाजमभिकुण्डं त
स्मिन् (समिधानः) समिध्यमानस्त्वं (वृहद्भिः) महद्भिः (अग्नि-
भिः) (नैः) अस्मदर्थं (रेवन्) धनयुक्तं यथा भवति तथा (दीदि-
हि) दीप्यस्व ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हेदान आदि गुण से युक्त २ युवतम ३ शोधक ४ अग्ने ५
निर्मल ६ तेजके द्वारा ७ अभिकुण्डमें ८ प्रज्वलित तुम ९, १० वडंतेजों
के साथ ११ हमारे लिये १२ जैसे धनयुक्त हो नैसेही १३ प्रदीप्त होजिये
अथाध्यात्मम् - हे (देव) दीप्त (यविष्ट) निर्जरामर (पाव-
क) देहस्य शोधक (अग्ने) आत्माग्ने (शोचिषो) स्वकीयते

जोरूपेण (शुक्रेण) मानससूर्येण । एषवै शुक्रोय एषतप्र-
 ति श० ४।३।१।२६ (भृद्वाजे) मनसि । मनो वै भरद्वाजक्यपि
 श० ८।१।२।६ (समिधानः) समिध्यमानस्त्वं (वृहोद्भिः) मह
 द्विः (अर्चिभिः) तेजोभिः (नः) अस्मद्वागाद्यत्विजा मर्थे (रेव
 त) योगैश्वर्ययुक्तं यथा भवति तथा (दीदिहि) दीप्यस्व ३
 भाषार्थः १ हे दीप्त २ निर्जगमर ३ देह केशोधक ४ आत्माग्ने ५ सप
 नेतेजरूप ६ मानससूर्यके साथ ७ मनमें ८ प्रज्वलिततुम ९ १० बड़े ते
 जोके साथ ११ हमारे लिये १२ जैसे योगैश्वर्ययुक्त हो तेसेही १३ प्रदीप्त
 हजिये ॥ ३॥ वसिष्ठत्रयिर्ब्रह्मती छन्दोभिर्देवता

त्वेऽग्नेस्वाहुतः प्रियासेः सन्तु सूर्यः । यन्तो
 रायै मघवानो जनानां मूर्धदयन्तु गोनाम् । ४।३८
 हे (स्वाहुत) सुप्तुभिर्यजुमानैराहुत (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने
 वा (जनानां) मध्ये (ये) (यन्तारः) संयमयुक्ताः (मघवा-
 नः) धनवन्तः योगैश्वर्यसम्पन्नावा (गोनाम्) गवां । गो
 पदान्ते (७.१.५७) इति नुकिरूपम् । इन्द्रियाणाम्वा ।
 (ऊर्व) समूहं (दयन्तु) प्रयच्छन्ति (त्वे) ते. उ. त एव (सूर्य
 यः) स्तोतारः नि० ३.१६ तव (प्रियासेः) प्रियाः । आज्जसेर
 सुक्त (७.१.५०) इत्यसुकिरूपम् (सन्तु) ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे ज्येष्ठयजमानों से आहुत २ अग्ने वा आत्माग्ने ३ मनुष्यों
 के मध्य ४ जो ५ संयमयुक्त ६ धनवान वा योगैश्वर्यसम्पन्न ७ गोवाइ
 द्वियोंके समूह को ८ दान करते हैं ९ वेही १० स्तोता १२ तेरे प्रिय १३
 होवें ॥ ४ ॥

भरद्वाजऋषिर्ब्रह्मती छन्दोग्निर्देवता

अग्नेर्जरिते विशपतिस्तपोनो देव रक्षसः । अ
प्रोषिवान् गृहपते महो ॐ असिदिवस्यो दुरो
रोणायुः ॥ ५ ॥ ३६

हे (जरिते) स्तोतः (देवे) (गृहपते) यजमान गृहस्य पाल
क (अग्ने) (विशपतिः) प्रजानां पालकः (रक्षसः) रक्षसा
नां (तपानः) सन्नापकः (अप्रोषिवान्) यजमान गृहस्या
त्यागी (दिवस्यायुः) द्युलोकस्य पाता (दुरोणायुः) यजमान
गृहस्य मित्रादिना सर्वदा वर्तमानस्त्वं (महान्) अतिशये
न पूज्यः (असि) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे स्तोता २ देव ३ यजमानके गृहके पालक ४ अग्ने ५ प्र
जापालक ६ रक्षसोंके ७ सन्नापक ८ यजमानके गृहकोन त्यागने
वाले ९ स्वर्गलोकके रक्षक १० यजमानके गृहमें सदा वर्तमान तुम
११ अतिशय पूज्य १२ हो ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (जरिते) वेदवाचा स्वकीय रूपस्य
स्तोतः (देवे) (गृहपते) देहस्य पालक (अग्ने) आत्माग्ने
(विशपतिः) प्राणानां स्वामी (रक्षसः) कामादीनां (तपू
नः) सन्नापकः (अप्रोषिवान्) देहस्या त्यागी (दिवस्या
युः) भृकुटेः पाता (दुरोणायुः) देहे सर्वदा वर्तमानस्त्वं (म
हान्) (असि) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे वेदवाक् से अपने रूपके स्तोता २ विद्वान् ३ देह
पालक ४ आत्माग्ने ५ प्राणोंके स्वामी ६ काम आदिके ७ सन्नापक ८

देहके शत्यागी ६ भृकुटिकेरक्षक १० देहमें सदावर्तमान तुम ११ म-
हान १२ हौ ॥ ५ ॥

प्रस्काएव ऋषिर्ब्रह्मती छन्दोग्निर्देवता-

अग्ने^२ विवस्व^३ दुषसो^४ अश्विन^५ ७ राधा^८ अमर्त्यः^९ १०
दाशुषे^{११} जात वेदो^{१२} वहो^{१३} त्वम^{१४} द्या देवा^{१५} ७ उपे^{१६} वृधः^{१७} १८

हे (अमर्त्य) अमरदेव (जातवेदः) जानानां वेदितः (अग्ने)
त्वं (उषसः) उषो देवतायाः सकाशात् (विवस्वत्) विशिष्ट-
निवासोपेतं (चित्रम्) नानाविधं (राधः) धनं (दाशुषे)
हविर्दत्तवते यजमानाय (आवह) आनीय प्रापय (अद्य)
आस्मिन्दिने (त्वम्) (उषे वृधः) उषः काले प्रबुद्धान् देवान्
(अग्ने) आवह ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ हे अमर २ सर्वज्ञ ३ अग्ने तुम ४ उषा देवताके सका-
शसे विशिष्ट निवाससे युक्त ६ नाना प्रकारके ७ धनको हविदा-
तायजमानके लिये ८ प्राप्त कराओ ९ अथ १० तुम ११ उषा कालपर
जागे हुए देवताओंको १२ लाओ ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (अमर्त्य) अविनाशिन (जातवेदः)
सर्वज्ञ (अग्ने) आत्मात्मेत्वं (उषसः) जपसमाधिसम्बन्धि
कालात् (विवस्वत्) तमसामज्ञानानां विवासनकरं (चि-
त्रम्) अद्भुतं (राधः) योगधनं (दाशुषे) आत्मसमर्पका-
ययोगिने (आवह) प्रापय (अद्य) (त्वम्) (उषे वृधः) उष-
काले योगानुष्ठातृन् (अग्ने) आवह समन्तात् ब्रह्मणि प्राप-
य ॥ ६ ॥

भाषार्थः—१ हे अविनाशी २ सर्वज्ञ ३ आत्मा मे मुम ४ जपसमाधि सम्बंधी काल से ५ ज्ञानान्धकार नाशक ६ अद्भुत ७ योगधन को ८ आत्म समर्पण कर्ता योगी के लिये ९ प्राप्त कराओ १० अवशुम १२ उपां काल पर योग निष्ठों को १३ ब्रह्म में प्राप्त करो ॥ ६ ॥

तृण पाणि ऋषिर्दृहती छन्दोभिर्देवता-

त्वन्नु^१श्चि^२ञ्ज^३ऊ^३त्या^३ वसो^३ राधा^३ ७^३ सिचो^३ दय^३।
अस्य^३ राय^३ स्त्व^३ मे^३ रथी^३ रासि^३ विदो^३ गा^३ धन्तु^३
चे^३ तुनः^३ ॥ ७ ॥ ४२

हे (वसो) ब्रह्मांशु रूप (अग्ने) अग्ने। आत्मा मे वा (चित्रैः) दर्शनीय स्त्वं (ऊत्या) रक्षया सह (राधासि) धूनानियोग धनानि वा (नैः) अस्मभ्यं (चोदय) मे रय (अस्य) (राधः) पूर्वोक्त धनस्य त्वं (रथीः) प्रेरयित्वा। रंहति गति कर्मानि० २। १४ (आसि) (नैः) अस्माकं (तुचै) पुत्राय नि० २। २। १। (गांधं) प्रतिष्ठां (तु) क्षिप्रं (विदोः) लम्भ्य ॥ ७ ॥

भाषार्थः—१ हे ब्रह्मांशु रूप २ अग्ने वा आत्मा मे ३ दर्शनीय तुम ४ रक्षा के साथ ५ धनों वा योग धनों को ६ हमारे लिये ७ प्रेरणा करो ८ इस ९ पूर्वोक्त धन के तुम १० प्रेरक ११ हौ १२ हमारे १३ पुत्र के लिये १४ प्रतिष्ठा को १५ शीघ्र १६ प्राप्त कराओ ॥ ७ ॥

विरूप ऋषिर्दृहती छन्दोभिर्देवता-

त्वामि^३त्स^३ प्रथो^३ अस्य^३ मे^३ ज्ञान^३ ऋ^३तः^३ कविः^३। त्वो^३
विप्रो^३ सः^३ समिधा^३ नदी^३ दिव^३ आ^३ विवा^३ सन्ति^३ वै^३
धंसः^३ ॥ ८ ॥ ४२

हे (सामिधोन) सामिध्यमान (दीदिवे) दीप्त (त्रातः) रक्षक
 (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा (ऋतः) सत्यः (काविः) सर्वज्ञः (त्व-
 म्) (द्वत्) त्वमेव (सप्रथाः) सुविस्तीर्णाः (आसि) (त्वाम्)
 (विमोसः) विप्राः मेधाविनः (आविवा सन्ति) परिचरन्ति

भाष्यार्थः - १ हे भले प्रकार प्रज्वलित २ दीप्त ३ रक्षक ४ अग्ने वा आ-
 त्माग्ने ५ सत्य ६ सर्वज्ञ ७, ८ तुमही ९ सुविस्तीर्णा १० हौ ११ तुमको-
 १२ मेधावी पुरुष १३ सेवन करते हैं ॥ ८ ॥

शुनः शोप ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

आनो अग्ने वयो वृधे थं रथि म्पावकेश थं स्ये
 मा रास्वाचन उपमाते पुरूस्सह थं सुनीती
 सुयशस्तरम् ॥ ९ ॥ ४३ ॥

हे (पावक) शोधक (अग्ने) सर्वव्यापिन् (अग्ने) अग्ने आत्मा-
 ग्नेवा (नः) अस्मभ्यं (वयो वृधम्) अभीष्टा वस्थाया वर्द्धकं
 (शंस्यम्) स्तुत्यहं (रथिम्) धनं योग धनंवा (रास्व) देहि
 रानिर्दान कर्मानि ३। २० हे (उपमाते) धातः (नः) अस्म-
 भ्यं (सुनीती + आ) सुनीत्या सुमार्गेण (पुरूस्सहम्) बहु
 भिः स्सहणीयं (सुयशस्तरम्) महा कीर्ति धनं (त्वं) देहि

भाष्यार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ शोधक ३ अग्ने वा आत्माग्ने ४ हमारे
 लिये ५ अभीष्ट अवस्थाके बढ़ाने वाले ६ स्तुति योग्य ७ धनवा योग्य
 नको दीजिये ८ हे धाता ९ हमारे लिये १० सुमार्ग से ११ बहु स्सहणी-
 य १२ महा कीर्ति धनको १३ दीजिये ॥ ९ ॥

सोभरि ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

यो^३वि^३श्व^३ा^३द^३य^३ते^३व^३सु^३हो^३ता^३२^३म^३न्द्^३्री^३ज^३न^३ा^३ना^३म्^३
म^३धो^३न्ने^३पा^३त्रो^३प्र^३थ^३मा^३न्य^३स्मै^३प्र^३स्तो^३मा^३य^३न्त्व^३
म^३ये^३॥ १० ॥ ४४

(होता) देवानामाह्वता (मन्द्रः) स्तुत्योग्निः । मदि स्तुतो
(जनानाम्) यजमानानां (विश्वः) विश्वानि सर्वाणि (वसु)
वसूनि धनानि (दयते) प्रयच्छति (अस्मै) (अग्नये) (मधो)
सोमस्य (प्रथमानि) मुख्यानि (पात्रो) पात्राणि (ने) च
(स्तोमोः) स्तोत्राणि (प्रयान्ति) गच्छन्ति ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ देवताओं का आवाहन करने वाला २ यजमानों का
३ स्तुत्यग्नि ४ सब ५ धनों को ६ देता है ७ इस ८ अग्निके लिये ९ सो
मके १० मुख्य ११ पात्र १२ और १३ स्तोत्रों को १४ यजमान प्राप्त करते
हैं ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम्

(होता) महापुरुषपुरुषाणामाह्वता (जनानाम्) योगिनां
(मन्द्रः) स्तुत्यआत्माग्निः (विश्वः) सर्वाणि (वसु) योगध-
नानि (दयते) प्रयच्छति (अस्मै) (अग्नये) आत्माग्नये (मधो)
आत्म प्रति विंवस्य । इदं ज्ञानुषथं सर्वेषां भूतानां मधु + अय
मात्मा सर्वेषां भूतानां मधु श० १४। ५। ५। १२-१३ (प्रथमा-
नि) मुख्यानि (पात्रो) पात्राणि ज्ञानेन्द्रियाणि (ने) च
(स्तोमोः) प्राणाश्च । प्राणावै स्तोमाः श० ८। ४। १। ८ (प्रयति)
योगमार्गेण गच्छन्ति ॥ १० ॥ ४४

भाषार्थः - १ महापुरुषपुरुषों का आवाहाना २ योगियों का ३ स्तु-
त्यआत्माग्नि ४ सब ५ योग धनों को ६ देता है ७ इस ८ आत्माग्निके लिये

६ आत्मप्रतिबिंबके १० मुख्य ११ पात्रज्ञानेन्द्रियां १२ और १३ प्राण
१४ योग मार्गसे जाते हैं ॥ १० ॥ ४४

इति चतुर्थी दशति

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूलुज्वाला प्रसादशर्मक
ने सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य चतु-

र्थः खण्डः अथ पञ्चमः खण्डः

वामदेवऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

^{३ १} एनावा^{२ ३}ऋग्भि^{१ २}न्म^{३ ४}सोजा^{५ ६}नपात^{७ ८}माहुव^{९ १०} । प्रिय^{११ १२}
^{१३ १४}चेतिष्ठ^{१५ १६} मरति^{१७ १८} स्वध्वर^{१९ २०}विध्वस्य^{२१ २२} दूत^{२३ २४}म^{२५ २६}मृत^{२७ २८}म^{२९ ३०} १-४

हे स्तोतारः (ऊर्जः) (नपातम्) ब्रह्मांशोः पुत्रः प्रजापतिस्त
स्य पुत्रोऽग्निः (प्रियम्) (चेतिष्ठम्) प्रजातारं ॥ नि० ३ ॥ ६ अ
थ वाचिती संज्ञाने त्वचितुश्छन्दसि (५।३।११) इतीष्टानि
रूपम् (अरतिम्) स्वामिनं (स्वध्वरम्) सुयज्ञं (दूतम्) यज
मानस्य दूतं (अमृतम्) अविनाशिनं (अग्निम्) (एना) ए
नेन । सुपांसुलुगित्यादिना त्वतीयाया आत्वे रूपम् (नमसे)
हविषा स्तोत्रेण वा (वेः) युष्मदर्थं (आहुवै) आह्वयामि । स
म्प्रसारणं बाहुलकात् ६।१।३४-॥१॥

भाषार्थः - हे स्तोताओ १, २ ब्रह्मांशुकापौत्रऋग्भि ३ प्रिय ४ प्रजा
ता ५ स्वामी ६ सुयज्ञ ७ यजमानके दूत ८ अविनाशी ९ अग्नि को १०
इस ११ हविषा स्तोत्रके द्वारा १२ नुम्हारे लिये १३ आह्वान करता हूँ १४

अथाध्यात्मम् - हे वागाद्यत्विजः (ऊर्जः) (नपातम्)
ब्रह्मांशोः पुत्रो नारायणस्तस्य पुत्र आत्माग्निः (प्रियम्)

सर्वात्मत्वात्त्रियं (चेतिष्ठम्) ज्ञान स्वरूपम् (अरतिम्) अन्नं यामिरूपेण स्वामिनं (स्वध्वरम्) अध्यात्म यज्ञवन्त (दत्तम्) महापुरुषपुरुषाणा माह्वानेदत्तं (अमृतम्) अविनाशिनं (अग्निम्) आत्माग्निं (ऐना) एनेन (नमसा) आत्मप्रतिविंब रूपान्नेन निमित्तेन (वेः) युष्मदर्थं (आहुवे) १

भाषार्थः - हे वागाद्यत्विजो १, २ ब्रह्मांशुकेषु ३ मिय ४ ज्ञानस्वरूप ५ अन्नयामी रूपसे स्वामी ६ अध्यात्म यज्ञवन्त ७ महापुरुषपुरुषोंके आह्वान में दत्त ८ अविनाशी ९ आत्माग्नि को १० इस ११ आत्मप्रतिविंब रूप अन्न के निमित्त १२ तुम्हारे लिये १३ आह्वान करता हूँ १

भर्ग्वरषिर्दृहती छन्दोग्निदेवता-

शेषे वनेषु मातृषु सन्त्वा मर्त्तिसद्वन्धते ।
तन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृतं आदिद्देवेषु रा
जसि ॥ १ ॥ ४६

हे (अग्ने) त्वं (वनेषु) वडवानलरूपेणोदकेषु नि० १। १२ (मातृषु) अरुणिकाष्ठसु ओषधयोर्देवानां पत्न्यः श० ६। ५। ४। ४ (शेषे) स्वपिपिर्वर्त्तसे (त्वां) त्वां (मर्त्तिसः) अध्वर्यादयो मनुष्याः मन्थने नोत्पाद्य (समिन्धते) (अतन्द्रः) अनलसत्त्वं (हविष्कृतः) यजमानस्य (हव्यम्) हविः (वहसि) देवान्यति (आदिद्) अनन्तरमेव (देवेषु) मध्ये राजसि) दीप्यसे ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने तुम २ वडवानल रूपसे जलोंमें ३ तथा अरुणिकाष्ठोंमें ४ शयन करते हो ५ तुमको ६ अध्वर्युआदि मनुष्यमन्थन

से प्रकट कर ७ प्रज्वलित करते हैं ८ अनालसीतुम ९ यजमानके १० हवि-
को ११ देवताओंके पास पड़वाते हैं १२ तदनन्तर ही १३ देवताओंके म-
ध्य १४ शोभित होते हैं ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) हे आत्माग्ने त्वं (वनेषु) वीर्य-
परिणाम स्थूल सूक्ष्म कारणदेहेषु (मान्तेषु) इन्द्रियेषु (शुषे-
स्वपिषित्वा) त्वां (मर्त्तिसैः) मनुष्याः योगानुष्ठानेन (सामिन्ध-
ते) (अतन्द्रः) अनालसस्त्वं (हविष्कृतः) यजमानस्य (हव्य-
म्) आत्मप्रतिविम्बं महा पुरुष पुरुषेषु (वहसि) (आदिद्)
अनन्तरमेव (देवेषु) विद्वत्सु योगिषु मध्ये (राजसि) दी-
प्यसे ॥ २ ॥

भाष्यार्थः - १ हे आत्माग्ने तुम २ वीर्यपरिणाम स्थूल सूक्ष्म कारण-
शरीरमें ३ तथा इन्द्रियोंमें ४ शयन करते हो ५ तुमको ६ मनुष्ययोगानु-
ष्ठानद्वारा ७ भले प्रकार प्रदीप्त करते हैं ८ अनालसीतुम ९ यजमानके
१० आत्मप्रतिविम्बको महापुरुषपुरुषोंमें ११ प्राप्त करते हो १२ तदन-
न्तर ही १३ विद्वानयोगियोंके मध्य १४ प्रकाश करते हैं ॥ २ ॥

सोभरिर्चरिषिर्वहती चन्दोभिर्देवता-

अदाशिगानु वित्तमो यास्मिन् ब्रतान्योदधुः ।
उपोपुजाते मार्यस्य वर्द्धनमग्निं नक्षन्तु नो
गिरः ॥ ३ ॥ ४७

(यास्मिन्) अग्नावात्माग्नेवा (ब्रतानि) कर्माणि योगकर्मा-
णिवा (आदधुः) आहितवन्तः स (गानु वित्तमः) यज्ञभूमे-
योगभूमेर्वीजंति शयेन ज्ञाता । गानुरिति पृथिवीनामनि-

११ (अदोर्शि) प्रादुरभूत् किञ्च (सुजातम्) सम्यक् प्रादुर्भूतं
 (आर्यस्य) यजमानस्य (वर्द्धनम्) वर्द्धयितारं (अग्निम्)
 अग्निमात्माग्निम्वा (नः) अस्माकं (गिरः) स्तुतिरूपा वाच
 (उषी) समीप एव (नक्षन्तु) गच्छन्तु नि० २० १८ - ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ जिस अग्निवा आत्माग्निमें २ कर्मवा योग कर्मों को
 ३ स्थापन किया वह ४ यज्ञभूमिवा योगभूमि का अतिशय ज्ञाना ५
 प्रकार हुआ ६ उस प्रादुर्भूत ७ यजमान की वृद्धि करने वाले ८ अ
 ग्निवा आत्माग्नि को ९ हमारी ११ स्तुति रूपवाणी १२ समीप ही १३
 प्राप्त करो ॥ ३ ॥

मनुक्तेषि वृहती छन्दोभिर्देवता-

अग्निं रुक्थे पुरोहितो यावाणो वाहुरध्वरो ऋ
 चो यामि मरुतो ब्रह्मणा स्पते देवा अवा वरेण्यम्
 (रुक्थे) स्तोत्रशस्त्रात्मके (अध्वरे) यज्ञे (पुरोहितः) देवा
 नां पुरोहितः (अग्निः) (यावाणः) सोमाभिषवपाषाणाः
 (वाहुरः) च वर्तते एवं सामग्यां सत्यां हे (ब्रह्मणा स्पते) हे
 (देवाः) हे (मरुतः) अहं (ऋचा) सूक्त रूपया स्तुत्या युष्म
 कं (वरेण्यम्) वरणीयं भजनीयं (अवः) रक्षणां (यामि)
 याचामि यामीति याञ्चा कर्मानि० ३० १६ ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ स्तोत्रशस्त्रात्मक २ यज्ञमें ३ देवताओं का पुरोहि
 त ४ अग्नि ५ सोमाभिषवपाषाण ६ और कुशा वर्तमान हैं ऐसी साम
 ग्री होने पर ७ हे ब्रह्मणास्पति ८ हे देवताओ ९ हे मरुद्गणों में १० सू
 क्तरूपस्तुतिके द्वारा ११ तुम्हारे १२ भजनीय १३ रक्षणा को १४ मांग-

ताहं ॥ ४४ ॥

अथाध्यात्मम्

(उक्त्ये) (अध्वरे) प्राणसम्बन्धयोगयन्त्रे । प्राणोवाऽऽउ
 क्यंशं १४।८।१४।१ (पुरोहितः) पुरतःहितः हितकरः
 (अग्निः) आत्माग्निः (प्रावाणः) प्राणः । प्राणावै प्रावाणः
 शं १४।२।२।३३ (वाहः) सुषुम्णाचवर्तने हे (ब्रह्मणस्प-
 ते) प्राण । प्राणोहि ब्रह्मणस्पतिः शं १४।४।१।२३ हे
 (देवाः) ज्ञानेन्द्रियाणि हे (मरुतः) शेषः प्राणाः । अहं यो
 गी (वं) युष्माकं (अवः) संसाराद्रक्षणं (वरेण्यम्) वरणी-
 यं (वृत्तौ) (योमि) याचामि ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १,२ प्राणसम्बन्धी योगयन्त्रमे ३ आगे हितकर्त्ता ४ आत्मा
 ५ प्राण ६ सौर सुषुम्णावर्तमानहैं हे ७ प्राण ८ हे ज्ञानेन्द्रियो ९ हे शेषे
 १० प्राणो योगी में १० तुम्हारे ११ वरणीय १२ संसार से रक्षणको मंत्रद्वारा
 १४ मांगता हूँ ॥ ४ ॥

सुदीनि पुरुमीढे वावाष्कम्भः ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

अग्निमीडिष्ववसे गाथाभिः शीरशोचिषम् । अ-

ग्निं राये पुरुमीढं ऋतन्नगाभिः सुदीतये छदिः ॥ ४ ॥

हे (पुरुमीढ) पुरुभिर्वहतीभिः कामादिभिः परिसिक्तत्वं । मिहसे
 चने (शीरशोचिषं) शयनस्वभावादीभिः र्यस्यनं । शीशयने
 (अग्निम्) विषावाख्यं (अवसे) संसाराद्रक्षणाय (गाथाभिः)
 मन्त्ररूपाभिर्वाग्भिः (ईडिष्वे) स्तुहि (ऋतम्) विख्यातं (अ-
 ग्निम्) शिवाख्यं (राये) धनाय योगधनाय वा स्तुहि (नरे)
 (अग्निः) (सुदीतये) शोभनदानाय (छदिः) गृह रूपः । जीवा

त्मनोनरस्यांशत्वान् ॥ ५ ॥

भाषार्थः १ हे काम आदि से परिसिक्त यजमान तु म २ शयन स्वभाव दी
मियाले ३ विष्णु नाम अग्निको ४ संसार से रक्षाके लिये ५ मंत्र रूप वचनों के द्वारा
६ स्तुत करो ७ ८ विख्यात शिव नाम अग्निको ९ धन वा योग धनके लिये स्तुत
करो १० ११ नर रूप अग्नि १२ शुभदानके लिये १३ गृह रूप है ॥ ५ ॥

प्रस्तावत्रपि वृहती छन्दोभिर्देवता-

**श्रुधि श्रुतकर्णावन्दिभिर्देवैरग्रे सयावभिः । आसी
दतुवर्हिषिमित्रो अर्यमा प्रातयावभिरध्वरे ॥ ६ ॥ ५०**

हे (श्रुतकर्णा) अत्रवणा समर्थाभ्यां कर्णाभ्यां युत (अग्रे) आह
वनीयामे (श्रुधि) अष्टु (मित्रः) देवः (अर्यमा) देवः (प्रातयावभिः)
प्रातः काले देवयजने गच्छद्भिः (सयावभिः) समान गतिभिः (वन्दि
भिः) वोढुभिः (देवैः) सह (अध्वरे) यज्ञमध्ये (वर्हिषि) दर्भे (आ
सीदतु) उपविशतु ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे अत्रवणा समर्थ कानवाले २ आहवनीयाग्नि ३ सुनो ४ मि
त्र ५ अर्यमा देवता ६ प्रातः काल देवयजन म्यानमें जानेवाले ७ ८ हविषोढा ९
देवताओंके साथ १० यज्ञके मध्य ११ कुशासन पर १२ वेदों ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (श्रुतकर्णा) अत्रवणा समर्थाभ्यां कर्णा
भ्यां युत (अग्रे) महापुरुष (श्रुधि) अष्टु (मित्रः) मानससूर्यः
(अर्यमा) मनश्च । मनः पितरः श० १४। १५। १३ (प्रातयावभिः)
प्रातः समाधिकालेऽन्तर्गमनशीलैः (सयावभिः) समान गति
भिः (वन्दिभिः) देहस्य वोढुभिः दीप्तैर्वावहदीप्तौ (देवैः) प्राणैः सह
प्राणा देवाः श० ६। ३। १। १५ (अध्वरे) योगयज्ञे (वर्हिषि) सुपुण्या

यां (आसीदत्तु) ॥ ६ ॥

भाषार्यः १२ हे ऋवणी समर्थकणीवाले २ महापुरुष ३ सुनो ४ मानससूर्य ५
शौरमन ६ समाधिकालपर्यन्तर्गमनशील ७ समानगति ८ देहधारक ९ प्रा
णोंके साथ १० योगयज्ञके मध्य ११ सुषुम्णापरवैद्यो ॥ ६ ॥

सौभरिर्ऋषिर्ब्रह्मती छन्दोभिर्देवता-

प्रद्वोदासोऽग्निद्वन्द्वानमज्मना । अणुमा
नरपृथिवीविवाचतेतस्थानाकस्य शर्माणा ॥ ५१
(देवः) द्योतमानः (इन्द्रः) परमैश्वर्ययुक्तः । द्वाद्विपरमैश्वर्यत-
स्मादौणादिके रप्रत्ययरूपम् (ने) च (द्वोदासः) दिवोदासो
जीवस्तत्सम्बन्धी (अग्निः) (मातरं) (पृथिवी) (अणु) विशेषेण
नुलस्य (मज्मना) वलेन (नाकस्य) स्वर्गरूपयज्ञस्य (वाचते)
(वै) वायुस्तेनाचते (शर्माणा) गृहेऽग्निकुण्डे (प्रतस्थौ) प्रतिष्ठते १
भाषार्यः - १ द्योतमान २ परमैश्वर्ययुक्त ३ शौर ४ जीवसम्बन्धी ५ अग्नि ६ ७
पृथिवीमाताको ८ देखकर टवलसे ९ स्वर्गरूपयज्ञके १० वायुसे वाचस-
११ गृह अग्निकुण्डमे १२ प्रतिष्ठत हुआ ॥ ७ ॥

अथाध्यात्मम् - (देवः) मायाकीइणकैः कीडनशीलः (इन्द्रः)
परमैश्वर्यसम्पन्नः (ने) च (द्वोदासः) जीवात्मसम्बन्धी (अग्निः)
आत्माग्निः (मातरम्) (पृथिवीम्) योगभूमिं (व्यनु) विशेषेणा-
नुलस्य (मज्मना) योगवलेन (नाकस्य) भृकुटेः (वाचते) (वै)
प्राणस्तेनाचते (शर्माणा) गृहे भृकुटिचक्रे (प्रतस्थौ) प्रतिष्ठते १
भाषार्यः - १ मायाके खिलोनोंसे कीडनशील २ परमैश्वर्यसम्पन्न ३
शौर ४ जीवात्मसम्बन्धी ५ आत्माग्नि ६ योगभूमिको ८ विशेषदेखकर टयो

गवलसे १० भृकुटिके ११ प्राणाद्यन भृकुटिचक्रपर १३ स्थितुं ज्ञसा ॥ ७ ॥

मेधान्तिथिर्मेधातिथिश्चोभासपीवृहतीछन्दइन्द्रोदेवता

अधज्मोअधवादिवावृहतोरोचनोदधि। अथो

वर्द्धस्वतन्वो गिरोममाज्ञातासुकृतोष्टण। ८। ५२

उत्यानावस्थायांहे (सुकृतो) योगयज्ञानुष्ठातः यजमान। इ

न्द्रौवैयजमानः श० १।२।१।११ (वृहतः) महतः (रोचनात्)

दीप्यमानात् गगनमुण्डलात् (अध) अधः (वा) (दिवः) भृ

कुटिमुण्डलात् (अध) (अधः (ज्मः) मानसभूमिः (आधि) उप

रि (अथो) (अ) आत्मपतिविंशः (य) प्राणस्तयोः समूह रूपे

णा (तन्वा) शरीरेण (वर्द्धस्व) (ममाज्ञाता) ममत्वेत्पन्नया (गि

रो) वाचा (ष्टण) तंशरीरं प्रीणाय ॥ ८ ॥

भाषार्थः १ हेयजमान उत्यान अवस्थामें २, ३, ४ महादीप्यमान गगन

मंडलसेनीचे ५ तथा ६, ७ भृकुटिमंडल सेनीचे ८, ९ मानसभूमिके ऊपर १०

प्राणपतिविंशसमूह रूप ११ शरीरकरके १२ वृद्धिपाशो १३ ममत्वसे उत्पन्न

१४ वाणीके द्वारा १५, १६ उस शरीरको पुष्ट करो ॥ ८ ॥ ५२

अथाधिदैवम् - हे (सुकृतो) शोभनकर्मवन्निन्द्रपरमेश्वर

(अध) अथ (वृहतः) महतः (रोचनात्) नक्षत्रैर्दीप्यमानात्त्वगी

त् (अधवा) अपिवा (दिवः) अन्तरिक्षात्प्रादुर्भूत्वा (ज्मः) अधिव्य

(आधि) उपरि (अथो) हिरण्मयेन ज्योतिर्मयेन नि० ज्योतिर्वैद्वि

रायं श० ६।७।१।२ (तन्वा) शरीरेण (वर्द्धस्व) (ममा) मदीय

या (गिरो) स्तुत्या (जाता) जजानिमदीयान्यपत्यानि (ष्टण)

अभिलषितैः फलैरा पूरय ॥ ८ ॥

भाषार्थः- १ हे शोभनकर्मापरमेश्वर २ ३ ४ नक्षत्रोंसे दीप्यमान स्वर्गसे
 ५ अथवा ६ अन्तरिक्षसे प्रकट होकर ७ ८ पृथिवीके ऊपर ९ १० ज्योतिर्म
 ११ यशरीरके साथ १२ रद्धिपाशो १३ मेरी १४ स्तुतिके द्वारा १५ मेरी सन्तानों
 को १६ अभिलाषित फलोंसे पूर्ण करो ॥ ८ ॥

विश्वामित्रवरपिर्वृहती छन्दोभिर्देवता-

कायमानो वनात् वयन्मातृजगन्पैः । नैतन्नम
 मृषे निवर्तनं यदूरसन्निहा भुवः ॥ ८ ॥ ५३ ॥

हे (ऌमे) (यत्) यस्मात् (वना) वनान्युदकानि (कायमानः)
 कामयमानस्त्वं (मातृ) मातृभूताः (ऌपैः) (ऌज
 गन्) अगमः गतवानसि समुद्रेषु विद्युते च बहुधा विद्यमानत्वा
 त् (ते) नव (तत्) (निवर्तनम्) निवारणं (नै) (मृषे) नक्षमे-
 मृषसमायां (यत्) यस्मात् (दूर) (सन्) अदृश्यतया दूरसन्
 (इह) अस्मिन्यज्ञे (आभुवः) प्रकटो भवसि ॥ ८ ॥

भाषार्थः १ हे ऌमे २ जिस कारण ३ जलोंको ४ चाहते तुमने ५ मातारूप
 ६ जलोंको ७ बडवानल और किन्ती रूपसे प्राप्त किया है ८ नेरा ९ वह १० निवार
 ११ नहीं १२ सहना हूँ जिस कारण १३ १४ आदृश्य होनेसे दूर होने तुम १५
 १६ सयज्ञमें १७ प्रकट हुए ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (ऌमे) आत्मा मे (यत्) यस्मात् (वना) व
 नानि गगनामृतोदकानि (कायमानः) कामयमानस्त्वं (मातृ)
 मातृभूतानि (ऌपैः) कमलान्तरिक्षाणि (ऌजगन्) कमलस्थानां
 नां देवानां रूपेण (ते) तत् (निवर्तनम्) बहुरूपधारणस्य नि
 वारणं (नै) (मृषे) (यत्) यस्माद् ज्ञानां दृष्टौ (दूर) (सन्) (इह)

देहे (आभुवः) नानारूपेण ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्माग्रे २ जिस कारण ३ गगनामृत रूप जलों को ४ चा
हने बलने तुमने ५, ६ मातारूप कमलान्तरिक्षों को ७ देवतारूप संख्या कि प
चत्तरे ८ उस १० बहु रूप धारण के निवारण को ११ नहीं १२ सहता हूं १३ जि
स कारण अज्ञानियों की दृष्टि में १४, १५ दूर होते हुए १६ इस देह में १७ ना
नारूप से प्रकट होते हो ॥ ६ ॥

कएव ऋत्पि वृहती छन्दोमिर्देवता-

नि^१त्वा^२म^३म^४नु^५र्द^६धे^७ज्यो^८ति^९र्ज^{१०}ना^{११}य^{१२}श^{१३} श्व^{१४}ते । दी^{१५}दे^{१६}
थ^{१७}क^{१८}ए^{१९}व^{२०} ऋ^{२१}त्^{२२}ज^{२३}ा^{२४}त^{२५} उ^{२६}क्षि^{२७}त^{२८}ा^{२९}य^{३०}न^{३१}म^{३२}स्य^{३३}न्ति^{३४} कृ^{३५}ष्ट^{३६}यः ॥ १० ॥ ५४

हे (अग्ने) (मने) प्रजापतिः (ज्योतिः) ज्योतिस्वरूपं (त्वाम्)
(शश्वते) धर्मेऽन्तरभृत्याय (जनाय) (निदधे) देवयजन-
देशे स्थापितवान् (ऋत्तजातः) ऋत्तेन यज्ञेन निमित्तभृते
नोत्पन्नः (उक्षितः) हविर्भिस्तर्पितस्त्वं (कोएव) मेधाविनि
नि० (दीदेथ) दीप्तवानासि (यम्) त्वां (कृष्टयः) मनुष्याः (न
मस्यन्ति) नमस्कुर्वन्ति ॥ १० ॥ ५४

भाषार्थः - १ हे अग्ने २ प्रजापतिने ३, ४ ज्योतिस्वरूप तुमको ५, ६ धर्मि
ष्टपुरुष समूह के लिये ७ देवयजन स्थान में स्थापन किया ८ यज्ञ निमित्त
उत्पन्न ९ हविसे तर्पित तुम १० मेधावी के समीप ११ प्रदीप्त होने हो १२ जिस
तुमको १३ मनुष्य १४ नमस्कार करते हैं ॥ १० ॥ ५४

इति पञ्चमी दशति

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वाला प्रसाद शर्मकृते सामवे
दीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य पञ्चमः खण्डः

अथ षष्ठः खण्डः

वसिष्ठश्चरुपिर्वहती छन्दोमिर्देवता-

देवावो द्रविणोदाः पूर्णा विवष्टुः सिचम् । उद्वो सिचं
ध्वमुपवापणा ध्वमो दिद्वो देवो हते ॥ १ ॥ ५५

(द्रविणोदाः) धनानां दातानि ० २ १० (देवः) अग्निः (वः) यु-
ष्मदीयां (पूर्णा) हविषा पूर्णा (आसिचम्) आसिक्तां सुचं (वि-
वष्टु) कामयताम् (उत्सिञ्चध्वंवा) ध्रुवग्रहेण होतृ चमसं प्र-
रयत (उपवापणा ध्वंवा) अग्रये सोमं प्रयच्छत । वाशब्दो समुच्च-
यार्थो (आदिद्) अनन्तरमेव (देवः) अग्निः (वः) युष्मान् (सो-
हते) वर्द्धयति । वंहते इत्यस्य रूपम् ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ धनदाता २ अग्निदेवता ३ तुम्हारे ४ हवि पूर्णा ५ सुचको
६ चाहो ७ ध्रुवग्रह से होतृ चमसको पूर्ण करो ८ अग्निको सोम सर्पण क-
रो ९ नदनन्तर १० अग्निदेवता ११ तुमको १२ वद्धाता है ॥ १ ॥

अथाध्यात्मम् - हेवागाद्यन्विजः (द्रविणोदाः) योगधना-
नां दाता (देवः) आत्माग्निः (वः) युष्मदीयां (पूर्णा) इन्द्रियैः
पूर्णा (आसिचम्) आसिक्ता मात्ममति विंवरूपां पराम् (विवष्टु)
कामयताम् (उत्सिञ्चध्वंवा) आपानेन प्राणं प्ररयत । प्राणो
वैग्रहः सोऽपानेनाग्निग्रहेण गृहीतः श ० १४ ६ २ २ (उपवा-
पणा ध्वंवा) आत्माग्रये मति विंवरूपां प्रयच्छत (आदिद्) अनन्तरमे-
व (देवः) आत्माग्निः (वः) युष्मान् (सोहते) ब्रह्मणि वर्द्धति ।
वह मापणो ॥ १ ॥

कावना

भाषार्थः - हेवागाद्यन्विजो १ योगधनो २ आत्माग्नि ३ तुम्हारे ४ इन्द्रि-

योंसे पूर्ण ५ आत्मप्रतिविम्बरूपपराको ६ चाहो ७ अपानसे प्राणको पूर्णकरो
८ आत्माग्नि केलिये प्रतिविम्बको अर्पण करो ९ तदनन्तर १० आत्माग्नि ११
तुमको १२ ब्रह्ममें प्राप्न करता है ॥१॥

कावऋषिर्ब्रह्मणी ब्रह्मणोऽस्यत्याद्यादेवताः

प्रैतु ब्रह्मणो स्पतिः प्रैदव्येतु सूनृता । अच्छो वीरनय
पाङ्क्तिराधसं देवायज्ञं नयन्तु नः ॥ २ ॥ ५६

(ब्रह्मणो स्पतिः) वेदस्यपालकः (अ) महानारायणाग्निः (अच्छ)
अभिमुखं (प्रैतु) ज्ञानदृष्टिगोचरो भवतु (सूनृता) सत्यस्वरूपा
(देवी) पराशक्तिः (प्रैतु) ज्ञानदृष्टिगोचरा भवतु किञ्च (देवाः)
देवाः (नः) अस्माकं (वीरम्) शत्रूणां मुन्मूलयितारं (नयम्)
नरस्य परमेश्वरस्यार्हं (पाङ्क्तिराधसम्) हविःपंक्तिभिः समृद्धं
(यज्ञम्) द्रव्ययज्ञं (नयन्तु) परमेश्वरे प्रापयन्तु ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ वेदकारक्षक २ महानारायणरूपअग्नि ३, ४ ज्ञानदृष्टि-
गोचरहो ५ सत्यस्वरूपा ६ पराशक्ति ७ ज्ञानदृष्टिगोचरहो ८ देवता ९ हमारे
१० शत्रुनाशक ११ परमेश्वरयोग्य १२ हविपंक्तिसे समृद्ध १३ द्रव्ययज्ञको
१४ परमेश्वरमें भासकरो ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् - (अ) सर्वव्यापी (ब्रह्मणो स्पतिः) प्राणाः । प्राणो
हि ब्रह्मणो स्पतिः श० १४। ४। १। २३ (अच्छ) आप्तुम् (प्रैतु) अस्मा-
न्याप्नोतु (सूनृता) सत्यस्वरूपा (देवी) महावाक् (प्रैतु) (देवाः)
प्राणाः (नः) अस्माकं (वीरम्) निःशेषेण कामादीनां मुन्मूल-
यितारं (नयम्) नरस्य परमेश्वरस्य सायुज्यार्हं (पंक्तिराधसम्) इ-
न्द्रियपंक्तिभिः समृद्धं (यज्ञम्) जीवात्मानं । यजमानो यज्ञः श०

१४
१३।२।१।१(नृयन्तु)परमेश्वरेप्रापयन्तु॥२॥

भाषार्थः- १ सर्वव्यापी २ प्राण ३ ४ हमको प्राप्त करो ५ सत्यस्वरूपा ६ महा
नाक ७ हमको प्राप्त करो ८ प्राण ९ हमारे १० कामादिकेनाशक ११ परमेश्वरकी
सायुज्यके योग्य १२ इन्द्रियपंक्ति से समृद्ध १३ जीवात्माको १४ परमेश्वरमें
प्राप्त करो ॥ २ ॥ कण्वऋषिर्वहती लन्दो यूपानिर्देवता

ऊर्द्ध ऊषुणा ऊतये तिष्ठो देवान सुविता । ऊर्द्धो वाज
स्य सनिता यदग्निभिर्वाघाद्भिर्विह्वयो महे ॥३॥ ५७

हे (ऊषु) ऋषिः ऊषुंरेतस्तेन (उ) उत्पन्नो देह ऊषुस्तस्य (स्य) आत्मा
ऊषुः हे भूतात्मन् (वाजस्य) स्वात्मारूप हविषः (सनिता) दा-
तात्वं (नः) अस्माकं योगिनाम् (ऊतये) रक्षणाय (ऊर्द्धः) समा-
धिस्थः (तिष्ठ) (न) यथा (सविता) सूर्यः (ऊर्द्धः) तिष्ठति (यन्) य-
स्मात्कारणात् (अग्निभिः) तव तिलकरूपैः (वाघाद्भिः) वागाद्यत्वा-
त्विभिः सहत्वां (विह्वयामहे) विशेषेण ह्वयामः ॥ ३ ॥

भाषार्थः- १ हे भूतात्मन् २ अपने आत्मारूप हविके ३ दाना तुम ४ हम योगि-
योंकी परक्षाके लिये ५ समाधिस्थ ६ देवो ७ जैसे ८ सूर्य ९ ऊंचा स्थित है १० जिस
कारण ११ तैरे तिलकरूप १२ वागाद्यन्विजोंके साथ तुमको १३ हम विशेष भ्राह्म-
न करते हैं ॥ ३ ॥

अथाधिदेवम् हे (ऊषु) वृक्षज यूपनिष्ठाग्ने (वाजस्य) हवि-
षान्नस्य (सनिता) दानात्वं (नः) अस्माकं (ऊतये) रक्षणाय
(ऊर्द्धः) उन्नतः (तिष्ठ) (न) यथा (सविता) सूर्यदेवः (ऊर्द्धः)
तिष्ठति (यन्) यस्मात्कारणात् (अग्निभिः) त्वामज्जग्दिः (वा-
घाद्भिः) यत्तं वहद्भिः ऋत्विग्भिः सह (विह्वयामहे) ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे यूपस्थामे २ ३ हविस्वरूपन्नके दानात्तुम ६ हमारी परस्त्राके लिये ६ ऊचे ७ ठेरो ८ जैसे ९ सूर्यदेवता १० ऊचा ठेरना है ११ जिस कारण १२ तव गुण प्रकाशक १३ यत्र वाहक ऋत्विजो के साथ १४ हम आपका आह्वान करते हैं ॥ ३ ॥ सौभरिक्वरपिर्वहनी चन्दोमिर्देवता-

प्रयो^३राये^३निनीषति^३मर्त्तो^३यस्त्वे^३वसो^३दाशन्^३। सवी^३
 र्न्धत्ते^३अग्र^३उक्थशं^३सिन्^३त्मनो^३सहस्र^३पोषिणाम्^३ ४
 हे (वसो) प्रशस्त धनवन् (अग्ने) (ये) (मर्त्त) मनुष्यस्त्वां (राये)
 धनार्थं (प्रनिनीषति) प्रणेतुमिच्छति (ते) तुभ्यं (दाशन्) हवी
 षिप्रयच्छति (सः) मनुष्य (उक्थशंसिन्म) उक्तयानां शस्त्रा
 णां शंसितारं (त्मना) आत्मनैव (सहस्रपोषिणोऽन) पशुधनं
 (वीरम्) पुत्रं (धत्ते) धारयति प्राप्नोति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे प्रशस्त धनवन् २ अग्ने ३ जो ४ मनुष्य ५ धनके लिये ६ तुमको प्राप्त करना चाहता है वह ७ आपके लिये ८ हवि देता है ९ वह मनुष्य १० शस्त्रोंके वक्ता ११ १२ अपने प्रयत्न से बहुधनी १३ पुत्रको १४ प्राप्त करता है ॥ ४ ॥
 अथाध्यात्मम्- हे (वसो) ब्रह्माभुरूप (अग्ने) आत्माग्ने (ये)
 (मर्त्तः) मनुष्यस्त्वां (राये) योग धनार्थं (प्रनिनीषति) आत्मनि
 प्रणेतुमिच्छति (ते) तुभ्यं (दाशन्) इन्द्रियरूप हवीषिप्रयच्छ
 ति (सः) योगी (उक्थशंसिन्म) शस्त्राणां शंसितारं (सहस्र
 पोषिणाम्) महापुरुष पूजकं (वीरम्) काम युद्धे भूरमात्मप्र
 तिद्विं वं (त्मना) आत्मन् आत्मागौ (धत्ते) धारयति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे ब्रह्माभुरूप २ आत्माग्ने ३ जो ४ मनुष्य ५ योग धनके लिये ६ तुमको प्राप्त करना चाहता है ७ वह आपके लिये ८ इन्द्रियरूप हविको देता है

६वहयोगी १० शंखवक्ता ११ महापुरुषके पूजक १२ कामयुद्धमें मूरुआत्मप्रति
विंवको १३ आत्माग्निमें १४ धारणाकरताहैं ॥ ४ ॥

काव ऋषिर्ब्रह्मती ब्रह्मोऽग्निर्देवता

प्र^१वो^३य^३ह^३पु^३रू^३णां^३वि^३शो^३दे^३व^३य^३ती^३ना^३म् । अ^३ग्नि^३ः^३सू^३
क्ते^३भि^३व^३चो^३भि^३र्वा^३णी^३म^३हे^३य^३ः^३स^३मि^३द^३न्य^३द्^३न्ध^३ते^३ ॥ ५ ॥

हे ऋत्विग्यजमानाः (देवयतीनाम्) विहत्सुत्यागशीलानां
पुरूषाम्) ब्रह्मनां (विशाम्) प्रजा रूपाणां (वः) युष्माकम-
नुग्रहाय (यहम्) महान्तं (अग्निम्) (सूक्तेभिः) सूक्त रूपैः
(वचोभिः) वाक्यैः (प्रवृणीमहे) याचामहे (अन्ये) (इत्) अ-
न्येष्वृषयः (यम्) अग्निं (समिन्धते) सम्यग्दीपयन्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - हे ऋत्विक् यजमानो १ विद्वानोंके मध्यत्यागशील २ ब्रह्म
त ३ प्रजा रूप ४ आपलोगोंके अनुग्रहार्थ ५ महान्त ६ अग्निको ७ सूक्त रू-
प ८ वचनोंके द्वारा ९ हमयाचना करतेहैं १०, ११ दूसरे ऋषिभी १२ जिस अ-
ग्निको १३ भले प्रकार दीप करतेहैं ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - हेवागाद्यत्विग्यजमाना (देवयतीनाम्)
ब्रह्मज्ञानिपुत्यागशीलानां (पुरूषां) ब्रह्मनां (विशाम्) म-
हापुरुषस्य प्रजा रूपाणां (वः) युष्माकमनुग्रहाय (यहम्) म-
हान्तं (अग्निम्) आत्माग्निं (सूक्तेभिः) (वचोभिः) महावाग्भिः
(प्रवृणीमहे) वयंगुरवो याचामहे (अन्ये) (इत्) अन्येष्वृषयः
(यम्) आत्माग्निं (समिन्धन्ते) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - हेवागाद्यत्विजयजमानों १ ब्रह्मज्ञानियोंके मध्यत्यागशी-
ल २ ब्रह्मत ३ महापुरुषके प्रजा रूप ४ आपके अनुग्रहार्थ ५ महान्त ६ आत्मा

मिको ७, ८ महावाक् द्वारा षडहम गुरुजन याचना करते हैं १०, ११ दूसरे ऋषि भी १२ जिस आत्मा मि को भले प्रकार दीप्त करते हैं ॥ ५ ॥

अन्कील ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

अथमाग्निः सुवीर्यस्य शोभि सौभगस्य । राय ईशो
स्वपत्यस्य गोमत ईशो वृत्रहथानाम् ॥ ६ ॥ ६०

(अथमाग्निः) यजनीयत्वेनाङ्गुल्या निर्दिश्यमानः (आग्निः) (हि)
(सुवीर्यस्य) शोभनसामर्थ्योपेतस्य (सौभगस्य) (ईशो) ई
श्वरो भवति तथा (गोमतः) गवादिपशुयुक्तस्य (स्वपत्यस्य)
शोभनापत्यस्य (रायः) धनस्य (ईशो) तथा (वृत्रहथानाम्) श
त्रुभूतपापविनाशनामपि (ईशो) सर्वस्वप्राप्तिः पापक्षयश्च तस्य
प्रसादाद्भवतीत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ यह २ अग्नि ३ ही ४ शुभसामर्थ्यावान् ५ ऐश्वर्यका ६ स्वामी
होता है तथा ७ गौआदिपशुयुक्त ८ शुभसन्तान युक्त षडहनकानथा १०, ११
शत्रु रूपपापविनाशों का भी १२ स्वामी होता है अर्थात् सर्वस्वप्राप्ति और पा
पनाश उसकी रूपासे होता है ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - (अथमाग्निः) (आग्निः) आत्माग्निः (हि) एव (सुवी
र्यस्य) ज्ञेयवत्त्वतः (सौभगस्य) योगैश्वर्यस्य (ईशो) ईश्व
रो भवति (गोमतः) इन्द्रियवतः (स्वपत्यस्य) निरुद्धप्राणस्य
प्राणः । प्रजाश० १४। ४। ३। १४ (रायः) योगधनस्य च (ईशो) तथा
(वृत्रहथानाम्) पापविनाशानां । पाप्मावैलुत्रः श० नपुंसके भा
वेक्तः (३, ३, ११४) इति क्ते. तप. तनप. तनथनाश्व (७, १, १५५)
इति तस्य धनादेशे रूपम् (ईशो) ॥ ६ ॥

भाष्यः - १ तह २ आत्माग्नि ३ ही ४ ज्ञेष्ठ वलयुक्त ५ योगैश्वर्यका ६ स्वामी होता है ७ इन्द्रियवान् ८ निरुद्ध प्राणका ९ श्रौर योगधनका १० स्वामी होता है ११ पापनाशो का भी १२ स्वामी होता है ॥ ६ ॥

वशिष्ठ ऋषिर्वहती छन्दोग्निर्देवता-

त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होतो नो अर्ध्वरो त्वम्यो
तो विश्ववार प्रचेतो यक्षि च वायम् ॥ ७ ॥ ६१

हे (विश्ववार) सर्ववराणीय (अग्ने) (प्रचेतो) प्रकृष्टमतिः (त्वम्) (नो) अस्माकं (गृहपतिः) यजमानः (त्वम्) (होता) देवानामाह्वाता (च) (त्वम्) (पोता) एतन्नामक ऋत्विक् (वायम्) वराणीयहविः (यासि) प्राप्नोषितस्माद्देवान् (यक्षि) यज ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतमिति भगवद्ब्रह्मचर्यात् ॥ ७ ॥

भाष्यः - १ हे सवसे वराणीय २ अग्ने ३ ज्ञेष्ठ बुद्धि ४ तुम ५ हमारे ६ यजमानहां ७ तुम ८ होताहो ९ श्रौर १० तुम ११ पोता नाम ऋत्विजहो १२ वराणीयहविको १३ मामकरते हो उसकारण १४ देव यजन करो ॥ ७ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (विश्ववार) विश्वाख्य शरीरेण वराणीय (अग्ने) आत्माग्ने (प्रचेतो) सर्वज्ञः (त्वम्) (नो) अस्माकं वागाद्यत्विजां (गृहपतिः) यजमानः (त्वम्) (होता) महापुरुष पुरुषाणां माह्वाता (च) (त्वम्) (पोता) असि (वायम्) वारिभवं प्रतिविंबं (यासि) प्राप्नोषितस्मात्पूर्वोक्तान् देवान् (यक्षि) यज ॥ ७ ॥

भाष्यः - १ हे विश्वनाम शरीरसे वराणीय २ आत्माग्ने ३ सर्वज्ञ ४ तुम

५ ह्रमवागाद्यत्विजोंके ६ यजमानहो ७ तुम ८ महापुरुष पुरुषोंके नाद्धा
नकन्तिहो ९ श्रौ १० तुम ११ पोताहो १२ प्रतिविंवको १३ माप्रं करतेहो उस
कारण पूर्वोक्तदेवताओंका १४ यजन करो ॥ ७ ॥

विश्वाभित्रऋषिर्ब्रह्मनी छन्दोभिर्देवता

सखायस्त्वावचमहे देवमर्त्तिसऊनये। अपा
न्नपातं सुभगं सुदं ससं सुप्रतूर्नि
मनेहसम् ॥ ८ ॥ ३२

हेऽग्नेऽन्माग्नेवा (सखाय) भित्रभूताः (मर्त्तिसैः) मनुष्याः
(अपाम्) (नपातम्) ब्रह्मांभूनां पौत्रं (सुभगम्) ऐश्वर्यवान्
न्तं (सुदं ससम्) सुकर्माणानि ० २ १ (सुप्रतूर्निम्) प्रकर्षणा
शत्रूणां कामादीनाम्वाहिंसितारं। तूर्वितिः हिंसार्थः नि ० २ १ ०
। ३ २ (अनेहसम्) अक्रोधनं। एहः क्रोधनामसुनि ० २ १ ३
(देवम्) (त्वाम्) (ऊनये) रक्षणाय (वचमहे) वृणीमहे। ८
भाषार्थः - हे अग्नेवाऽन्माग्ने १ भित्ररूप २ मनुष्य ३ ४ ब्रह्मांशुकंपौ
त्र ५ ऐश्वर्यवान् ६ सुकर्मा ७ शत्रुवाकाम आदिके हिंसक ८ अक्रोधी ९ देव
ता १० तुमको ११ रक्षाके लिये १२ ह्रमवर्ते है ॥ ८ ॥

इति श्रीभृगुवंशव्रतं सज्जीनाथ रामसूनु ज्वाला प्रसाद शर्म कृते सामवे
दीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः

अथ सप्तमः खण्डः

श्यावाश्ववामदेवो ऋषी त्रिष्टुप छन्दोभिर्देवता

आजुहोता हविषो मर्जयध्वं निहोतारं गृह्णेति
दधिध्वम। इडस्पदेन मसा रतहव्यं सपर्य

ताद्यजतम्पस्त्यानाम् ॥१॥ ६३

हेऽरत्विजः (अ) अग्निं (आजु होत) आह्वयत (हविषा) (मर्ज
यध्वं) शोधयध्वं सम्मार्गत्तपौः कुरुध्वं (इडः) इलायाः (पदे)
उत्तरवेद्यां (होतारम्) देवानामाह्वानारं (गृहपतिम्) गृहपाल
कं (निदधिध्वम्) निःशेषेणाधारयध्वम् (नमसा) नमस्कारे
णाहविषावायुक्तम् (रातहव्यम्) दत्तहविष्कं (पस्त्यानाम्)
यज्ञगृहाणां नि० ३।४।७ मध्ये (यजतम्) यजनीयं पूजनीयं
(अ) अग्निं (सपर्यत) परिचरत ॥१॥

भाषार्थः - हेऽरत्विजो १ अग्निका २ आह्वानकरो ३ हविसे ४ शोधन
करो ५, ६ उत्तरवेदीपर ७ देवताओं के आह्वाना ८ गृहपालकको ९ धार
णकरो १० नमस्कारवाहविसे युक्त ११ दत्तहविष्क १२, १३ यज्ञशालाओं
में पूजनीय १४ अग्निको १५ सेवो ॥१॥

अथाध्यात्मम्- हे वागाद्यत्विजः (अ) आत्माग्निं (आजु हो
त) (हविषा) इन्द्रियरूपहविषा (मर्जयध्वम्) शोधयध्वं (इ
डः) (पदे) उदरस्यस्थाने मनसि हृदये वा । उदरमेवास्येडा प्र०
११।२।६।८ (होतारम्) महापुरुषपुरुषाणामाह्वानारं (गृहप
तिम्) व्याप्तिसमाधिदेहस्य स्वामिनमात्माग्निं (निदधिध्वम्)
(नमसा) नमस्कारेणासह (रातहव्यम्) दत्त हविष्कं (पस्त्या
नाम्) कमलानां मध्ये (यजतम्) यजनीयं (अ) आत्माग्निं
(सपर्यत) ॥१॥

भाषार्थः - हे वागादिऽरत्विजो १ आत्माग्निका २ आह्वानकरो ३
इन्द्रियरूपहविसे ४ शोधो ५, ६ मनवाहृदयमें ७ महापुरुषपुरुषोंके आ

वह्नात् ८ व्याप्तिसमष्टिदेहके स्वामी आत्माग्नि को धारण करो १० नम-
स्कारके साथ ११ दत्तहविष्क १२, १३ कमलोंके मध्य यजनीय १४ आत्मा
ग्नि को १५ सेवो ॥ १ ॥ वाएहव्य ऋषिर्जगती छन्दोभिर्देवता-

चित्रइच्छि^{३२३}शो^३स्तरु^१णा^२स्य^३वक्ष्णो^३नयो^३मातेरो^३
न्वेति^३धातवे^३। अनू^३धा^३यद^३जीजन^३दधा^३चित्^३दो-
ववक्ष्णत्स^३द्यो^३महि^३दूत्य^३चरन्^३ ॥ २ ॥ ६४

(शिशोः) प्रजापतेः पुत्रस्य (तरुणस्य) अजरामरस्याग्नेः (वक्ष-
यः) हविर्वहनं । वक्ष्णोणादिको ऽथसप्रत्ययः (चित्रइत्) आ-
श्वर्यभूतमेव । चित्रइति पुल्लिङ्गे व्यत्ययेनेति (३, ४, ६८) बोध्य-
म् (यः) अग्निः (मातेरो) सर्वस्य निर्मात्र्यौ सर्वस्य मातृभूते
द्यावापृथिव्यौ (धातवे) स्तनपानाय धेतपानेतुमर्थे इति (३
४, ४६) तवेन्प्रत्ययः (न्) (अन्वेति) नगच्छति ब्रह्मरूपत्वा-
त् (यन्) यस्मात् (अनूधाः) ऊर्ध्वराहितः प्रजापतिः (अजीजन-
त्) स्वमुखान् प्रादुश्चकार (अधाचित्) उत्पत्यन्तरमेव (स-
द्यः) यज्ञे सति शीघ्रं (महि) महान्तं (दूत्यम्) दूतकर्म । कर्म-
णि यत्प्रत्ययः (चरन्) आचरन् (आववक्षत्) देवान्प्रतिहवीं
प्यावहति ॥ २ ॥ ६४ ॥

भाषार्थः - १ प्रजापतिके पुत्र अजरामर अग्निका ३ हवि मापण ४ आ-
श्वर्यरूपही है ५ जो अग्नि ई पृथिवी स्वर्ग को ७ स्तनपानके लिये ८, ९ प्राप्न-
नहीं करता है ब्रह्मरूप होने से १० जिस कारण ११ स्तन रहित प्रजापति
ने १२ अपने मुखसे प्रकट किया १३ नदनंतर १४ यज्ञ होने पर शीघ्र १५
महान् १६ दूतकर्मको १७ करता १८ देवताओंके पास हविको पड़ंचा

अग्न्याख्येन ज्योतिषा (संविशस्व) यज्ञे प्रवेशं कुरु (परमे) (जनिवे) यज्ञे (संवेशनः) सम्यक् प्रवेष्टा (चारुः) कल्याणभूतः (देवानाम्) (प्रियः) त्वं (तन्व) यजमानाय (एधि) वृद्धिं प्राप्नुहि ३
भाषार्थः - हे अग्ने १ तेरी २ यह विजली नाम ३ एक ज्योति है ४, ५ अष्ट सूर्य ६ तेरी ७ एक ज्योति है ८, ९ तीसरी अग्नि नाम ज्योति से १० यज्ञ में प्रवेश करो, ११, १२ यज्ञ में १३ प्रवेश कर्ता १४ कल्याण रूप १५ देवताओं के १६ प्रिय तुम १७ यजमान के लिये १८ वृद्धि को पाओ ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - हे आत्माग्ने (ते) तव (इदम्) जीवाख्यम् (एकम्) ज्योतिः (परः) (ऊ) अन्नर्यामीश्वरः (ते) तव (एकम्) ज्योतिः (तृतीयेन) (ज्योतिषा) महापुरुषाख्य ज्योतिषा (संविशस्व) योगिनां भक्तानाम्वा मुनसि प्रवेशं कुरु (परमे) (जनिवे) योगयज्ञे भक्तियज्ञे वा (संवेशनः) सम्यक् प्रवेष्टा (चारु) कल्याणरूपः (देवानाम्) विदुषां भक्तानां । विद्वांसो हि देवाः श० ३ । ७ ३ । १० (प्रियः) त्वं (तन्व) पुत्ररूपाय भक्त्याय (एधि) वृद्धिं प्राप्नुहि ३
भाषार्थः - हे आत्माग्ने १ तेरी २ यह जीव नाम ३ एक ज्योति है ४, ५ अन्नर्यामी ईश्वर ६ तेरी ७ एक ज्योति है ८, ९ महापुरुष नाम ज्योति से १० योगी भक्तों के मन में प्रवेश करो ११, १२ योग यज्ञ वा भक्तियज्ञ में १३ प्रवेश कर्ता १४ कल्याण रूप १५ ज्ञानी भक्तों के १६ प्रिय तुम १७ पुत्र रूप भक्त के लिये १८ वृद्धि पाओ ॥ ३ ॥ कुत्सः ऋषिर्जगती छन्दोभिर्देवता-

इमं थं स्तोमं महते जानि वेदसे रथो मिव संमहे मा मनीषयो । भद्रा हि नः प्रमेति रस्यसे थं सदयमैसै रव्यमारिषामावयन्तव ॥ ४ ॥ ६६ ॥

(अहते) पूज्याय (जाने वेदसे) जानाना मुत्पन्नानां वेदित्रे अभ-

ये (मनीषया) बुद्ध्या (इमम्) वेदोक्तं (स्तोमम्) स्तोत्रं (रथम्) (इव) (सम्महेम) प्रशंसयामः महपूजायां (हि) यस्मात् (अस्य) अग्नेः (संसदि) यज्ञशालायां (ने) अस्माकं (प्रमतिः) प्रकृष्टा बुद्धिः (भद्रा) कल्याणीतस्मात् हे (अ) सर्वव्यापिन् (अग्ने) (वयम्) (तव) (सख्ये) सखित्वे सति (मा) (रिषाम) शत्रुभ्यो हिंसितान भवाम ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ पूज्य २ स्तुतिके ज्ञाता अग्निके लिये ३ बुद्धि द्वारा ४ इत्येवोक्त ५ स्तोत्रको ६ ७ रथकी समान ८ इम प्रशंसा करते हैं ९ इत्यग्नि की १० यज्ञशालामें ११ हमारी १२ अष्ट बुद्धि १३ कल्याणरूपा है उसकारण हे १४ सर्वव्यापिन् १५ अग्ने १६ इम १७ तेरी १८ भक्तिमें १९, २० शत्रुओं से हिंसित न हों ॥ ४ ॥
अथाध्यात्मम् - (अर्हते) प्रतिविंवह विषा पूज्याय (जानुवेदसे) सर्वज्ञात्माग्ने (मनीषया) योग बुद्ध्या (इमम्) (स्तोमम्) प्राणं । प्राणावै स्तोमाः श० ८ । १ । ३ (रथम्) (इव) (सम्महेम) पूजितं कुर्मः (हि) यस्मात् (अस्य) आत्माग्ने (संसदि) योगयज्ञे (ने) अस्माकं (प्रमतिः) व्यवसायात्मिका बुद्धिः (भद्रा) कल्याणीतस्मात् हे (अ) सर्वव्यापिन् (अग्ने) आत्माग्ने (वयम्) (तव) (सख्ये) सखित्वे सति (मा) (रिषाम) संसारबंधनेन हिंसितान भवाम ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ प्रतिविंवनामहविसे पूज्य २ सर्वज्ञ आत्माग्निके लिये ३ योग बुद्धि द्वारा ४ इत्येव प्राणको ६ ७ रथकी समान ८ इम पूजते हैं ९ निसंस्कारण १० इत्यग्नि के ११ योग यज्ञमें १२ हमारी १३ व्यवसायात्मिका बुद्धि १४ कल्याणी है १५ हे सर्वव्यापिन् १६ आत्माग्ने १७ हम १८ तेरी १९

भक्तिमें २७२ संसारबंधनसे हिंसित न होंवे ॥ ४ ॥

द्वयोर्भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप छन्दो वैश्वानरो म्निर्देवता-
 मूर्द्धनिर्दिवोऽरति एथिव्या वैश्वानर मृतभ्राजा
 तेमग्निम् । कविं सभ्राजं मतिथिजनानामास
 न्नः पात्रं जनयंत देवाः ॥ ५ ॥ ६७

(देवाः) महापुरुष पुरुषाः (दिवः) स्वर्गस्य (मूर्द्धनिम्) सूर्यरूपं
 (एथिव्याः) (अरतिम्) एथिवीतः हवींषि गृहीत्वा ध्रुलोकस्य ग-
 न्तां (वैश्वानरम्) विश्वेषां सर्वेषां नृणां सम्बन्धिनं (ऋते)
 ब्रह्मणि (भ्राजातम्) प्रादुर्भूतं (कविम्) कान्त दर्शिनं (सभ्राज-
 म्) सम्यग्रजमानं (जनानाम्) उत्पन्नानां (अतिथिम्) (नः)
 अस्माकं (पात्रम्) दानपात्रं (अग्निम्) (आसने) आसनि आस्ये
 ब्राह्मणानां सन्यासिनाम्वा मुखे (जनयन्) उपादयन् ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ महापुरुष पुरुषोंने २ सूर्यरूप ४.५ एथिवी से हविले कर
 स्वर्गमें जाने वाले ६ सर्वजन सम्बंधी ७.८ ब्रह्ममे प्रादुर्भूत ९ कान्तदर्शी १०
 भले प्रकार राजमान ११ सृष्टिके १२ अतिथि १३ हमारे १४ दानपात्र १५ अ-
 ग्निको १६ ब्राह्मणोंके मुखमें १७ प्रकट किया ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - (देवाः) योगिनः (दिवः) भृकुटेः (मूर्द्धनिम्)
 सूर्यज्योतिस्वरूपं श० १४।१।१।१० (एथिव्याः) मानसभूमेः
 (अरतिम्) इन्द्रियादीनि हवींषि गृहीत्वा भृकुटि मंडले गन्ता-
 रं (वैश्वानरम्) विश्वान्सर्वान् ब्रह्मणि नयति तं (ऋते) ब्रह्म-
 णि (भ्राजातम्) प्रादुर्भूतं (कविम्) मेधाविनं (सभ्राजम्)
 सम्यग्रजमानं (जनानाम्) जीवानां (अतिथिम्) (नः) अस्म-

कंवेदानां(पञ्च^{१५}म्) पात्रभूतं(आस^{१५}म्) सर्वस्योपवेशनस्या
नं(अग्निम्) आत्माग्निं(जनयन्त) स्वानुभवे ॥५॥

भाषार्थः- १योगियोंने २भृकुटिके ३ज्योतिस्वरूप ४ मानसधूमि
के ५ इन्द्रिय आदिहृविकों लेकर भृकुटि मंडलमें जाने वाले ६ सबको ७
ब्रह्ममें मात्न करने वाले ७ ब्रह्ममें ८ प्रादुर्भूत ९ मेधावी १० भले प्रकार राज
मान ११ जीवोंके १२ अतिथि १३ हमवेदोंके पात्रभूत १४ सबके उपवेशन
स्थान १५ आत्माग्नि को १७ अपने अनुभवमें प्रकट किया ॥ ५ ॥

भरद्वाजवरपिस्त्रिपुपच्छन्दोमिर्देवता...

वि^{३३}त्^{३३}दा^{३३}पो^{३३}न^{३३}प^{३३}र्व^{३३}त^{३३}स्य^{३३}पृ^{३३}ष्ठा^{३३}दु^{३३}क^{३३}थे^{३३}भिः^{३३}र^{३३}ने^{३३}ज^{३३}न^{३३}य^{३३}न्त^{३३}
दे^{३३}वाः^{३३}। त^{३३}न्त्वा^{३३}गि^{३३}रः^{३३}सु^{३३}ष्टु^{३३}त^{३३}यो^{३३}वा^{३३}ज^{३३}य^{३३}न्त्या^{३३}जि^{३३}न्वा^{३३}गि^{३३}
र्व^{३३}वा^{३३}हो^{३३}जि^{३३}ग्यु^{३३}र^{३३}भ्वाः^{३३} ॥६॥ ६८

हे(अग्ने) (देवाः) स्तोतारः(उकथेभिः) स्तोत्रैः यज्ञैर्हविर्भिन्न
(त्वत्) त्वत् सकाशात्(व्यजनयन्त) आत्मनो विविधान्का
मानूजनयन्ति(ने) यथा(पर्वतस्य) मेघस्य नि० १, १०, ९
(पृष्ठात्) उपरिभागात्(आपः) उदकानि हे(गिर्ववाहः) गीर्भिः
स्तुतिरूपाभिर्वागिर्भवहनीयाम्(तम्) प्रसिद्धं(त्वा) त्वां(सु
ष्टुतयः) शोभनस्तुतिरूपाः(गिरः) वाचः(वाजयन्ति) वलि
नंकुर्वन्ति नि० २, १, ९। ३(जिग्युः) वशीकुर्वन्ति च(ने) यथा
(अभ्वाः) (आजिम्) संग्रामंजयन्ति ॥६॥

भाषार्थः- १हे अग्ने २स्तुतिकरने वाले मनुष्य ३स्तोत्रयज्ञ और हृवि
के द्वारा ४तुम्ह ५ अपनी कामानाओं को मात्न करते हैं ६ जैसे ७ मेघके ८
उपरिभागसे ९ जलोंको १० हे स्तुतिरूपवचनोंसे भजनीय अग्ने ११ उस प्र-

श्लो १२ तुमको १३ भुभस्तुतिरूप १४ वचन १५ वली करते हैं १६ और वशी करते हैं १७ जैसे १८ घोड़े १९ संग्रामको जय करते हैं ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्- (अग्ने) हे आत्माग्ने (देवोः) विद्वांसः (उको-
योभिः) प्राणैः । प्राणो वाऽ उक्थं प्राणो हीदं सर्वमुत्थापय
ति श० १४ । ८ । १४ । १ (त्वत्) त्वत् सकाशात् (व्यजनयन्त) वि
विधानियो गैश्वर्याणि जनयन्ति (न) यथा (पर्वतस्य) (पृष्ठा
त्) (आपः) हे (गिर्ववाहः) महावाग्भिर्वहनीयात्माग्ने (तम्)
(त्वा) त्वां (सुष्ठुतयः) (गिरः) महावाचः (वाजयन्ति) वलिनं
कुर्वन्ति (जिग्युः) वशी कुर्वन्ति च (न) यथा (अश्वैः) (आजि
म्) संग्रामं जयन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः- १ हे आत्माग्ने २ विद्वानलोग ३ प्राणद्वारा ४ तुमसे ५ वल्लवि
धियो गैश्वर्योको प्राप्त करते हैं ६ जैसे ७ पर्वतकी ८ पृष्ठसे ९ जलोंको १० हे
महावाक्योंसे भजनीय ११ उस १२ तुमको १३ ओष्ठस्तुतिरूप १४ महावाक्
१५ वली करते हैं १६ और वशी करते हैं १७ जैसे १८ घोड़े १९ संग्रामको ज
य करते हैं ॥ ६ ॥ वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो मिर्द्विता-

आवो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्यं
यजं रौद्रस्योः । अग्निं पुरातेन चित्तोरचित्ता
द्विरणय रूपमवसे कौण्ठ्वम् ॥ ७ ॥ ६ ॥

हे ऋत्विग्यजमाना (वः) युष्माकं (तनयित्तो) आकास्मिका
अनितुल्यात् (अचित्तात्) मरणात् । न विद्यते चित्तं युस्मिन्त-
स्मात्सर्वेन्द्रियोपसंहाररूपात् (पुरा) प्रागेव (अवसे) स्वर
क्षणाय (अध्वरस्य) यज्ञस्य (राजानम्) अधिपतिं (होतारम्)

देवानामाह्वानारं (रुद्रं) शिवस्वरूपं (रोदस्योः) द्यावापृथिव्योर्मध्ये (सत्ययजम्) सत्यं परमेश्वरं यजन्तं (हिरण्यरूपम्) सुवर्णं प्रभञ्ज्योतिः स्वरूम्वा । हिरण्यं ज्योतिः श० ६।७।१।२ (अग्निम्) (आकृणुध्वम्) यूयं समन्ताद् विभिर्भिर्भजध्वम् ॥७॥ ६६

भाषार्थः - हे ऋत्विज यजमानो १ तुम्हारे २ आकस्मिक वचन तुल्य ३ मरणसे ४ पहिले ही ५ अपनी रक्षा के लिये ६ ७ यज्ञाधिपति ८ देवाद्भानकर्ता ९ शिव स्वरूप १० पृथिवी स्वर्ग के मध्य ११ परमेश्वर का यजन करने वाले १२ सुवर्ण प्रभवा ज्योति स्वरूप १३ अग्नि को १४ हविद्गारा से वन करो ॥७॥ ६६

अथाध्यात्मम् - हे योगिनः (वः) युस्माकं (तनयित्वाः) आकस्मिकाशनि तुल्यात् (अचिन्तात्) मरणात् (पुरा) प्रागेव (अवसे) संसाराद्रक्षणाय (अध्वरस्य) योगयज्ञस्य (राजानुम्) स्वामिनं (होतारम्) महापुरुष पुरुषाणामाह्वानारं (रुद्रम्) संसाररोगस्य द्रावयितारं (रोदस्योः) मनोभृकुट्योर्मध्ये (सत्ययजम्) सत्यं यजन्तं (हिरण्यरूपम्) ज्योतीरूपं (अग्निम्) आत्माग्निं (आकृणुध्वम्) यूयं समन्ताद् विभिर्भिर्भजध्वम् ॥७॥

भाषार्थः - हे योगिजनो १ तुम्हारे २ आकस्मिक वचन तुल्य ३ मरणसे ४ पूर्व ही ५ संसार से रक्षा के लिये ६ योग यज्ञके ७ स्वामी ८ महापुरुष पुरुषों के आह्वाना ९ संसार रोगके द्रावक १० मनभृकुटिके मध्य ११ परमेश्वर का यजन करने वाले १२ ज्योति स्वरूप १३ आत्माग्नि को १४ हविषों द्वारा सेवन करो ॥७॥ वसिष्ठ उवाच पितृपुत्रोऽग्निर्देवता-

इन्द्रराजासमयानमाभिः यस्य प्रतीकमाहृतघृते
ना नरो हव्येभिरीडते सर्वाध्वं अग्नि रयं सुपसामशोचि ॥७॥

(राजा) दीप्तः (अर्थः) स्वामी हविषां प्रेरको वा (अग्निः) (नमोभिः) स्तुतिभिः (समिन्धे) समिध्यते (यस्य) अग्नेः (प्रतीकम्) मुखं (घृतेन) (आहुतम्) भवति (सवाधः) सज्ज्ञानवाधः (नरः) मनुष्यः (हव्यैभिः) हव्यैः सार्द्धम् (देवते) स्तुवति (सः) अग्निः (उपसाम्) (अग्रम्) (आशोचि) आदीप्यते ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ दीप्त २ स्वामी वा हविषां का प्रेरक ३ अग्नि ४ स्तुतिओं से ५ प्रदीप्त होना है ६ जिस अग्नि का ७ मुख ८ घृत में ९ आहुत होना है १० सवाधा ११ मनुष्य १२ हविषों के साथ १३ जिसकी स्तुति करना है १४ वह अग्नि १५ उपाकालों के १६ आरम्भ में १७ प्रदीप्त होना है ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् - (राजा) षडैश्वर्यसम्पन्नः (अर्थः) सर्वस्य प्रेरकः (अग्निः) आत्माग्निः (नमोभिः) नमस्कारैः (समिन्धे) समिध्यते (यस्य) आत्माग्नेः (प्रतीकम्) मुखं (घृतेन) साममून्त्रैः। घृतः सामानि श० ११।५।७।५ (आहुतम्) भवति (सवाधः) संसाररोगग्रस्तः (नरः) मुमुक्षुः (हव्यैभिः) प्राणैर्न्द्रियैः सार्द्धम् (देवते) स्तुवति (सः) आत्माग्निः (उपसाम्) (अग्रम्) ब्राह्ममुहूर्त्तसमाधिकालं (आशोचि) आदीप्यते ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ षट् ऐश्वर्यसे सम्पन्न २ सबका प्रेरक ३ आत्माग्नि ४ नमस्कारों से ५ प्रदीप्त होना है ६ जिस आत्माग्नि का मुख ७ साम मंत्रों से ८ आहुत होना है ९ संसार रोग ग्रस्त १० मुमुक्षु ११ प्राणैर्न्द्रियों के साथ १२ स्तुति करता है १३ वह आत्माग्नि १४ उपसाम १५ ब्राह्म मुहूर्त्त समाधिकाल पर १७ प्रदीप्त होना है ८

विशिरास्वाप्सुः पन्निपुपुच्छन्दोभिर्देवता.

प्रकेतुना वृहता यात्याग्निं रागेदसी वृषभो रोरूति

दिवश्चिदन्तादुपमा मुदानुपामुपस्थमहिषोवर्द्धे-७
 (अग्निः) (वृहता) (केतुना) प्रज्ञानेन नि० ३।१२ (रोदसी) घाव
 एधियौ (आ) समन्तात् (प्रयाति) प्रकर्षेण गच्छति व्याप्नोति
 (वृषभः) दृष्टि कर्तृ मेघरूपः सन् (रोरवीति) अत्यर्थं शब्दं करो-
 ति (दिवः) स्वर्गलोकस्य (चिदन्तात्) चिदात्मनः स्वरूपात्सू-
 र्यात् सूर्यरूपात् (उपमाम्) उपमायारूपं ब्रह्माण्डं (उदान्तं)
 उत्कर्षेण व्याप्तवान् (अपाम्) व्यष्टिलक्षणात्तामुदकानां (उप-
 स्थे) उत्सङ्गे (महिषः) विद्युद्रूपेण मद्या भूमेः (षः) शोभारूपः स-
 न् (वर्द्धे) वर्द्धते ॥६॥

भाषार्थः - १ अग्नि २, ३ ज्ञानद्वारा ४ एधिवी स्वर्गको ५ सवशोर से ६ व्या-
 प्तकरता है ७ मेघरूप होना ८ अत्यन्त शब्द करता है ९ स्वर्गलोकके १० सूर्यरू-
 पसे ११ ब्रह्माण्डको १२ जिसने व्याप्त किया १३ जलों के १४ उत्संगमें १५ विज-
 लीरूपसे भूमिका शोभारूप होना १६ दृष्टि पाता है ॥६॥

अथाध्यात्मम् - (अग्निः) आत्माग्निः (वृहता) (केतुना) प्र-
 ज्ञानेन सह (रोदसी) मनोभृकुटी (आ) समन्तात् (प्रयाति)
 (वृषभः) गगनमेघरूपः सन् (रोरवीति) अनाहन शब्दं करोति
 (दिवः) (चिदन्तात्) मानससूर्यरूपात् (उपमाम्) उपमायारू-
 पं शरीरं (उदान्तं) उत्कर्षेण व्याप्नोति (अपाम्) कमलान्तरि-
 स्नाणानि० (उपस्थे) उत्संगे (महिषः) कमस्य देवानां रूपेण
 योगभूमेः शोभारूपः सन् (वर्द्धे) वर्द्धते ॥६॥

भाषार्थः - १ आत्माग्निः २, ३ प्रज्ञानके साथ ४ मनभृकुटिको ५ सवशो-
 रसे ६ व्याप्तकरता है ७ गगनमेघरूप होना ८ अनाहन शब्दको करता है ९, १०

मानससूर्यरूपसे ११ शरीरको १२ व्यापन करता है १३ कमलान्तरिक्षोंके १४ उ
त्संगमें १५ कमलस्थदेवरूपसे यांगभूमिका शोभारूपहोना १६ वृद्धिपाता है

॥६॥

वासिष्ठस्वयिर्जगती छन्दोधिर्देवता-

अग्निनरो दीधितिभिरैरण्यो हस्तच्युतं जनयत प्रश-

स्तम् । दूरेदृशो गृहपतिमथ व्युम् ॥ १० ॥ ७२

हे (नरः) नेतारः कृत्विजः (प्रशस्तम्) प्रकर्षेण स्तुतं (दूरेदृशम्)

दूरदर्शिनं (गृहपतिम्) गृहाणां पालकं (अरण्योः) (अथ व्युम्)

गमनवन्तं । अथर्वन्तिर्गन्त्यर्थः नि० २।१४।६७ (हस्तच्युतं) अन्तर्हि-

तं (अग्निम्) (दीधितिभिः) अद्भुलिभिः नि० २।५।८ (जनयत) १०

भाषार्थः - १ हे स्वयिजो २ अत्यन्त स्तुत ३ दूरदर्शी ४ गृहपालक ५ अर-
णिकाष्टके मध्य ६ विद्यमान ७ अन्तर्हित ८ अग्निको ९ अद्भुलियोंसे १०
प्रकटकरो ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम् - हे (नरः) नेतारो वागाद्यत्विजः (प्रशस्तम्)

प्रशंसनीयं (दूरेदृशम्) दुःखं रातिददाति दूरः संसारस्तास्मिन्दर्शिनं

यस्य तं (गृहपतिम्) देहानां पालकं (अरण्योः) जीवात्मप्रणवुरू-

पारणयोर्मध्ये (अथ व्युम्) गमनवन्तं प्रादुर्भवन्शीलं (हस्तच्यु-

तम्) अन्तर्हितं (अग्निम्) आत्माग्निं (दीधितिभिः) महापुरुषरश्मि-

भिः (जनयत) ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे वागाद्यत्विजो २ प्रशंसनीय ३ संसारमें दर्शन देने वा-

ले ४ देहपालक ५ जीवात्मप्रणवरूप अरणिके मध्य ६ प्रादुर्भवनशील ७ अ-

न्तर्हित ८ आत्माग्निको ९ महापुरुषकी किरणोंसे १० प्रकटकरो ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मरुते सामवेदी

ब्रह्म भाष्ये छन्दो ध्याख्याने प्रथमस्या ध्यायस्य सममः खण्डः ।

अथाष्टमखण्डः

बुधश्च गविष्टि रश्वद्वा वृषी त्रिष्टुप् छन्दो मिद्विना-

अवोध्यमिः समिधा जनानाम् प्रतिधेनुमिवायती

मुषासम् । यद्वा इव प्रवयो मुज्जिहोनाः प्रभानवैः

सस्रते नो कमेच्छ ॥२॥७३

यदा (धेनुम्) (इव) धेनुतुल्यं (आयतीम्) आगच्छन्ती (उपास
म्) (प्रति) उपकाले (अमिः) (जनानाम्) अध्वर्यादीनां (समि
धा) (अवोधि) प्रबुद्धो भूत तदा (भानवः) तस्य रश्म योज्वालाः
(नाकम्) अन्तरिक्षं (अच्छे) आभिसुरव्येन (प्रसस्रते) प्रसरति
(इव) यथा (वयाम्) पक्षिणां (यद्वा) समूहाः (प्रोज्जिहोनाः)
स्वाधिष्ठानं त्यजन्तोऽन्तरिक्षं गच्छन्ति ॥२॥

भाषार्थः - जव १, २ धेनुतुल्य ३ आती ४ उपाके ५ समय ६ अमि ७ अ
ध्वर्यु आदिकी ८ समिधसे ९ प्रबुद्ध आतव १० उसकी ज्वाला ११, १२ अन्तरि
क्षके सन्मुख १३ चलनी हैं १४ जैसे १५ पक्षियों के १६ समूह १७ अपने स्या
नको त्यागते अन्तरिक्षको जाते हैं ॥२॥

अथाध्यात्मम् - यदा (धेनुम्) (इव) (आयतीम्) (उपास
म्) (प्रति) समाधिकाले (अमिः) आत्मा मिः (जनानाम्) योगि
नां (समिधा) प्राणो न । प्राणावै समिधः श० १।५।४।१ (अवो
धि) प्रबुद्धो भूत तदा तस्य (भानवः) जीवेन्द्रियशक्ति रूपारश्म
यः (नाकम्) भृकुटिमंडलं (अच्छे) आप्तुम् (प्रसस्रते) प्रसर
न्ति (इव) यथा (वयाम्) पक्षिणां (यद्वा) समूहाः (प्रोज्जिहो

ना) स्वाधिष्ठानं त्यजन्तोऽन्नरिसं गच्छन्ति ॥ २ ॥

भाषार्थः - जव १, २ धेतु तुल्य ३ आती ४ उपाशों ५ के समय समाधि-
काल पर ६ आत्मा मि ७ योगियों के ८ प्राण से ९ प्रबुद्ध होता है नव उ सर्क
१० जीव इन्द्रिय शक्ति रूप किरणों ११ भृकुटि मंडल की १२ प्राणिको १३
चलती है १४ जैसे १५ पक्षियों के १६ समूह १७ अपने स्थान को त्यागते
अन्नरिस को जाते हैं ॥ २ ॥

वत्सप्रि चरिषिस्त्रिपुपुच्छन्दो विषावाग्निर्देवता-

प्रभूजयन्तमहाविपोधां मूरमूरपुरान्दमीणाम्
नयन्तद्गीर्भिवनाधियधाः हरिश्मञ्जुनवर्मेणा
धनर्चिम् ॥ २ ॥ ७४

हे स्तोतः त्वं (जयन्तम्) असुरसेनानां जेतारं (महां) षोडश-
कलावतारं महान्तं (विपोधां) मेधाविनां भक्तानां धर्तीस्व
(मूरैः) मुरुदैत्यसेनाजनैः (पुराम्) पूर्णानां प्राकारादीनां (द-
र्माणाम्) विदारकं । दृविदारै (अमूरम्) दैत्यपाशैर्निर्मुक्तं । मु-
रवेष्टने (गीर्भिः) षोडशसहस्रकन्यानां स्तोत्रैः (वर्मेणा) क-
वचेन च (वनांम्) तासां निवासस्थानानां (नयन्तम्) द्वारि-
कायां प्रापयन्तं (ने) च (धनर्चिम्) धनदानेन द्वारिकावासि-
नां पूजकं (हरिश्मञ्जु) विषावाख्यमग्निं (प्रभूः) स्तोतुं प्रभवस-
मर्थो भव (धियम्) परिचरणारूपं कर्म च (धाः) विधेहि ॥ २ ॥

भाषार्थः - हे स्तोता तुम १ असुरसेनाके जेता २ षोडशकलावतार ३
मेधावी भक्तों के धारक ४ मुरुदैत्यके सेनाजनोंसे ५ पूर्ण प्राकार आदि-
के ६ विदारक ७ दैत्यकी पाशोंसे निर्मुक्त ८ षोडशसहस्रकन्याओंके स्तो

३६ और ऋग्वेदों के द्वारा १० उनके निवासस्थानों को ११ द्वारिकामें पहुंचाने वा
ले १२ और १३ धनदानसे द्वारिकावासियोंके पूजक १४ विष्णु नामश्रद्धिके
१५ स्तुतिकरनेको समर्थ हो १६ और सेवारूपकर्मको १७ विधानकरा ॥२॥

भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप छन्दो महापुरुषाग्निर्देवता

^३भुक्^१न्ते^३ अन्य^३द्यज^१तते^३ अन्य^३द^३ विषु^३रूपे^३ अहनी^३
द्यौरि^३वासि^३ । विष्वा^३हिमा^३या^३ अवा^३सि^३ स्वधा^३वन्^३
भद्रा^३ते^३ पूषन्नि^३हरा^३ति^३ रस्तु ३ ॥ ७५

(पूषन्) हे महापुरुषरूपाग्ने । पूषच्छ्रौ (ते) तव (भुक्त्) मान
ससूर्यरूपं । एषवै भुक्तेय एषतपति श० ४।३।१।२६ (अन्यत्)
(ते) तव (यजतम्) यजनीयं पूजनीयं परमात्मरूपं (अन्यत्)
(अहनी) अहश्च रात्रिश्च (विषुरूपे) योगभोगादिक्रियाभि-
नानारूपेत्वं (द्यौः) (इव) (आसि) यथा द्यौरादित्यः प्रकाशयित
तथात्वं प्रकाशकोऽसि (स्वधावन्) हे पराः परारूपान्भवन्नि०
२।७।२० (हि) यस्मात् (विष्वाः) सर्वाः (मायाः) प्रज्ञाः (अवासि)
रक्षसितस्मात् (इह) अस्मिन् जन्मनि (ते) (रातेः) दानं (भद्रा)
कल्याणरूपं (अस्तु) भवतु ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - १ हे महापुरुषरूपरूपग्ने २ तेरा ३ मानससूर्यरूप ४ अन्य है
५ तेरा ६ पूजनीयपरमात्मरूप ७ अन्य द्वे ८ दिन और रात्रि ९ योगभोगादि
क्रियाओंके द्वारा नानारूप हैं तुम १०, ११ सूर्यतुल्य प्रकाशक १२ ही १३ हे प
रांपरा रूपरूपान्वाले १४ जिस कारण १५ सब १६ प्रज्ञाओंको १७ रक्षित
रहे हो ३ मकारण १८ इस जन्ममें १९ तेरा २० दान २१ कल्याणरूप २२ हो

विष्वाभिन्न ऋषिस्त्रिष्टुप छन्दोग्निर्देवता

इडाममे पुरुदं सथं सेनिगोः शश्वत्तमं हव
 मानाय साधः स्यान्नः सूनू स्तनयो विजावाभसा
 ते सुमति भूत्वस्मै ४ ॥ ७६ ॥

हे (अमे) (पुरुदंसमम्) बहुकर्माणां (गोः) (सनिं) गवादिपशु
 नां सम्पादकं (इडाम) अन्नं नि० २। ७। १६ (शश्वत्तमम्) निर
 न्तरं (हवमानाय) यजमानाय मह्यं (साध) साधयति च (नः)
 (अस्माकं) (सूनूः) पुत्रः (तनयः) कुलविस्तारकर्त्ता (स्यात्) हे
 (अमे) (ते) नव (सा) (विजावा) अवन्ध्या (सुमतिः) शोभना
 बुद्धिः (अस्मे) अस्मासु (भूतु) भवतु ॥ ४ ॥

भाषार्थः - हे अमे २ बहुकर्मा ३, ४ गो आदि पशुओं के सम्पादक ५ अन्न
 को धनिरन्तर ७ मुक्त यजमान के लिये ८ साधन करो ९ हमारा १० पुत्र ११ कु
 लका विस्तार करने वाला १२ होवे १३ हे अमे १४ तेरी १५ वह १६ अवन्ध्या १७
 शुभ बुद्धि १८ हमारे मध्य १९ प्राप्त होवे ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (अमे) आत्मा मे (पुरुदंसमम्) बहुकर्मा
 कर्त्ता (गोः) (सनिम्) महावाक सम्पादयित्री वाचमेव तद्देवाधे
 नुम कुर्वत ९। १। २। ७ (इडाम्) अद्वा। अद्देडासयो हवै अद्दे
 डेगि वेदावह अद्वा ७ रुन्देऽथो यत्किंच अद्दया जप्यं थं स
 र्वं थं हैतव ज्ञयति शश्वत्तमं (शश्वत्तम्) निरन्तरं (हवमानाय) य
 जमानाय (साध) साधय (नः) अस्माकं योगिनां (सूनूः) मानस
 रुधः (तनयः) पुत्रः पुत्रामनरकान्तरकः (स्यात्) हे (अमे) आ
 त्मा मे (ते) नव (सा) (विजावा) अवन्ध्या विविधज्ञान भक्ति वि
 ज्ञानानां जननी (सुमतिः) निश्चयात्मिका बुद्धिः (अस्मे) अस्मा

सु(भृत्) भवतु ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ हे आत्माग्रे २ वहुन कर्म करने वाली ३, ४ महावाक्का-
सम्पादन करने वाली ५ अद्भुतको ६ निरन्तर ७ यजमान के लिये ८ साध-
नकरो ९ हम योगियों का १० मानस सूर्य ११ पुन्नामनरक से तारक १२
होवे १३ हे आत्माग्रे १४ तेरी १५ वह १६ अवन्ध्या विविध भक्ति ज्ञान की
जननी १७ निश्चयात्मिका बुद्धि १८ हममें १९ प्रतिष्ठित हो ॥ ४ ॥

वत्सप्रिन्नरपिस्त्रिपुप् छन्दोभिर्देवता-

प्रहोतो जातो मेहान् न भोविन् नृषद्यो सीदपा वि
वर्ते । दधद्यो धायी सुतेवयो ७ सियन्तो वसूनि
विधते तनूपाः ॥ ५ ॥ ७७

(यः) (अपाम्) अन्नरिक्षाणां नि० १।३।८ (विवर्ते) कार्यभूते वेदि
समूहे (होता) यजमानानां होम निष्पादकः (महान्) पूज्यः (म-
जातो) (नभोवित) ज्वालाया अन्नरिक्षे विद्यमानः विदभावे-
(नृषद्यो) ऋत्विग्यजमानेषु वसनशीलोः प्रिः (दधत्) हवींषि
धारयन् (सुधायी) अष्टोधारकः (आसीत्) स (विधते) परिच-
रते (ते) तुभ्यं (वद्योसि) अन्नानि (वसूनि) धनानि (यन्तो)
नियमयिता (तनूपाः) तन्वः पत्ताच भवत्विति शेषः ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ जो २ अन्नरिक्षोंके ३ कार्यभूत वेदि समूह पर ४ यजमानों
का होम निष्पादक ५ पूज्य ६ हुआ ७ ज्वालासे अन्नरिक्षमे विद्यमान ८
ऋत्विज यजमानोंमे वसनशील अग्नि ९ हविष्योंको धारण करता १० अ-
ष्टधारक ११ हुआ वह १३ तुम्हसे वक के लिये १४ अन्नों १५ और धनोंके
१७ प्राप्त करानेवाला १७ और शरीरकारक हो ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - (यः) आत्माग्निः (अपाम्) कमलान्तरि
 क्षाणां (विवर्ते) विवर्ते उत्सङ्गे (महान्) कमलस्थानां देवा
 नारूपेण पूज्यः (प्रजातः) (नभोविने) मानसान्तरिक्षे विद्यमा
 नः (नृषाम्) जीवात्मनि स्थितः (आसीत्) (होता) होमनिष्पा
 दकः (दधत्) प्राणोन्द्रियादीनि हवींषि धारयन् (सुधीर्षी) ज्ञे
 षो धारकः स (विधत्) परिचरते (ते) तुभ्यं (वयांसि) प्राणान् ।
 अन्नं हि प्राणः श० २।२।१।६ (वसूनि) योगधनानि योगैश्व
 र्याणि (यन्तो) नियमयिता (तनूपाः) आत्मनः पाताञ्च भवतु
 आत्मा वैतनूरीनि श्रुतेः ॥५॥

भाषार्थः - १ जो आत्माग्नि २ कमलान्तरिक्षोंके ३ उत्संगमें ४ कमल
 स्थदेवरूपसे पूज्य ५ हुआ ६ मानसान्तरिक्ष में विद्यमान ७ जीवात्मा में स्थि
 त ८ हुआ ९ होमनिष्पादक १० प्राणोन्द्रिय रूप हविको धारण करता ११
 ज्ञेष्ठ धारक हुआ वह १२, १३ तुभसे वकके लिये १४ प्राणों १५ और योग
 धन योगैश्वर्योको १६ प्राप्त करनेवाला १७ और आत्मा कारक ही - ५॥

वसिष्ठ उवाच ।

प्रसम्मूर्जे मसुरस्य प्रशस्तं पुंशंसः कृष्णीनाम्
 नुमाद्यस्य इन्द्रस्यैव प्रतेव संस्कृतानि वन्दे द्वा
 रा वन्दे माना विवष्टु ॥६॥७८

(असुरस्य) असुं प्राणं राति ददाति तस्य (पुंसुः) पुरुषस्य सर्व-
 व्यापिनः (कृष्णीनाम्) भक्तानां (अनुमाद्यस्य) पूजनार्हस्य
 स्तुत्यस्य (तवसुः) बलरूपस्य (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य । इ-
 दि परमैश्वर्ये (इव) तुल्यं (प्रशस्तम्) उत्कृष्टं (सम्मूर्जम्)

अग्नेरात्माग्निर्वा सम्यग्नाजमानं स्वरूपमस्ति तस्मात् (दंढारा) स्तुतिद्वाराणि स्तुतिप्रमुखानि (वन्दमाना) स्तूयमानानि (कृतानि) यज्ञकर्माणि (प्रविवष्टु) प्रकर्षणा कामयताम् ॥ ६ ॥
भाष्यार्थः - १ प्राणदाता २ सर्वव्यापी ३, ४ भक्तोंके पूजनीय ५ बलरूप ६ परमेश्वरके ७ तुल्य ८ उत्कृष्ट ९ अग्निवा आत्माग्नि का दीप्तिमान स्वरूप है उस कारण १० स्तुतिप्रमुख ११ स्तूयमान १२ यज्ञकर्मोंको १३ भले प्रकार चाहो ॥ ६ ॥

विश्वामित्ररूपिस्त्रिष्टुपच्छन्दोग्निर्देवता
 अरण्यो निहितो जातवेदो गर्भ इव सुभृतो गर्भिणीभिः । दिवे दिवे इन्द्रिया जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्यैभिरग्निः ॥ ७ ॥ ७ ८

(अयम्) (जातवेदाः) सर्वज्ञः (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (अरण्योः) अरण्योः अणवजीवरूपा अण्योर्वा (निहितः) स्थापितः (इव) यथा (गर्भिणीभिः) (सुभृतः) सुपुधृतः (गर्भः) तथा (जागृवद्भिः) जागरूकैः समाधिस्थैर्वा (हविष्मद्भिः) (मनुष्यैभिः) उभयविधयजमानैः (इन्) एव (दिवे) (दिवे) प्रत्यहं (इन्द्रियैः) स्तोत्रव्यः ॥ ७ ॥

भाष्यार्थः - १ यह २ सर्वज्ञ ३ अग्निवा आत्माग्नि ४ अणिकाष्टवा अणवजीवके मध्य ५ स्थापित है ६ जैसे ७ गर्भिणीस्त्रियोंसे ८ धारित ९ गर्भ १० तथा जागरूक वा समाधिस्थ ११ हविष्युक्त १२, १३ उभयविधयजमानोंके द्वारा ही १४, १५ प्रतिदिन १६ स्तुति करने योग्य है ॥ ७ ॥

पायुर्त्रयिस्त्रिष्टुपच्छन्दोग्निर्देवता

सनादेमेमृणासियातु धोनान् नत्वोरक्षोऽंरसि
 एतनासुजिग्युः अनुदह सहमूरान् कयादा माते
 हेत्या मुक्ष तदेव्यायाः ॥ ८ ॥ ८०

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवात्वं (सनात्) सदैव (कयादः) मांस
 भक्षकान् यद्वा (क) शान्तिः (अ) कीर्तिर्निवृत्तिश्च (य) प्रभात्या
 गः सुखञ्च तेपां भक्षकान् (यातु धानान्) असुरान् कामादीन्वा
 (मृणासि) मारयसि (रक्षासि) असुराः कामादयो वा (त्वा) त्वां
 (एतनासु) संग्रामेषु (न) (जिग्युः) न जयन्ति तस्मात् (सहमृ
 रान्) सहभूतान् मूढान् यद्वा संसारबंधनदात्त्वं राक्षसान्
 कामादीन्वा । मूवन्धे (अनुदह) तेजसाभस्मीकुरु (ते) असुराः
 कामादयो वा (दैव्यायाः) दैव्यात् (हेत्याः) आयुधात् (मो) (सु
 क्षत) मुक्तामाभूवन् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने वा आत्माग्ने तु म २ सदैव ३ मांसभक्षकोंवा शान्ति
 कीर्तिर्निवृत्ति प्रभात्याग सुखके भक्षक ४ असुरवा कामआदिको ५ मारते
 ह्यै ६ असुरवा कामआदि ७ तुमको ८ संग्रामोंमें ९ नहीं जीतते हैं १० मूढ
 वा संसारबंधनदाता राक्षसवा कामआदिको ११ भस्मकरो १२ वे असुरवा
 कामआदि १४ दैव्य १५ आयुधसे १६ १७ मुक्तनहों ॥ ८ ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सा
 मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्याष्टमः खण्डः

अथ नवमः खण्डः

गयत्रिर्ऋषितुष्टु छन्दोर्गिर्देवता-

अग्ने औजिष्ठमाभरद्युन्मैस्मभ्यमाधिगो । प्रेनो

राये^३पनी^३यसे^३रात्से^३वाजो^३ये^३पन्थो^३म् ॥१॥ ८१॥

हे (अग्निगो) अष्टपथगुमनसर्वगत (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवात्वं
(अस्मभ्यम्) (ओजिष्टम्) वलवत्तमं (द्युन्नम्) धनं योगधन-
म्वा नि० २। ६ (आभर) आहरत्वं (पनीयसे) स्तुतियोग्याय (रा-
ये) धनाय योगधनाय वा (वाजाय) अन्नाय विराड्पान्नाय वा
(नः) अस्मान् (पन्थोम्) प्राप्तिसाधनं मार्गं (प्ररोत्स) प्रकर्षेण
ददासि एदाने ॥ १ ॥ ८१

भाषार्थः - १ हे सर्वगत २ अग्ने वा आत्माग्ने तु म ३ हमारे लिये ४ वल-
वत्तम ५ धन वा योगधनको ६ दीजिये ७ तु म स्तुतियोग्य ८ धन वा योगध-
नके लिये ९ अन्न वा विराट् रूप अन्नके लिये १० हमको ११ प्राप्ति साधन
मार्ग १२ देते हौ ॥ १ ॥ ८१

(नौ देवते)

वामदेव ऋषिर्भरद्वाजो वार्हस्पत्यो वा ऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्नि यज्ञमा

यदि^३वीरो^३अनु^३ष्यो^३दग्नि^३मिन्धी^३ते^३मर्त्यैः^३। औजु^३ह्वे^३

द्व्य^३मानु^३षक^३शर्म^३भक्षी^३ते^३द्व्यम्^३ ॥२॥ ८२

(यदि) (मर्त्यैः) मनुष्यैः (वीरैः) कामादीनां प्रतियोद्धा (स्यात्)
(अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (इन्धीत) अग्न्याधानं कुर्वीत
(आनुषक) आनुपूर्वेण (ह्व्यम्) हविरात्म प्रतिविम्बम्वा (हो-
जुह्वत्) आभिसुरव्येन जुहोति अपिच (द्व्यम्) देवसम्बन्धिनं
विह्वत्सम्बन्धिनम्वा (शर्म) सुखं मोक्षानन्दम्वा (भक्षीत)
सेवेत ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ जो २ मनुष्य ३ काम आदिका प्रतियोद्धा ४ होवे ५ अग्नि
वा आत्माग्नि को ६ प्रज्वलित करे ७ कर्मपूर्वक ८ हवि वा आत्म प्रतिविंबको

६ होमै १० देवसम्बधीवाविद्वानसम्बधी ११ सुखवामोक्षानन्दको १२
सेवनकरै ॥ २ ॥

द्वयोर्भरद्वाजऋषिरनुष्टुप् छन्दोभिर्देवता
त्वेषस्ते^३ धूमं^१ ऋ^३ ए^३ व^३ नि^३ दि^३ वि^३ स^३ थं^३ छु^३ क्र^३ आ^३ त^३ तः^३ ।
सूरा^३ न^३ हि^३ द्यु^३ ता^३ त्वं^३ कृ^३ पा^३ पा^३ व^३ क^३ रो^३ च^३ से^३ ॥ ३ ॥ ८३

हे (पावक) शोधकाग्ने (त्वेषः) दीप्तस्य (ते) तव (शुक्रः) शु
क्लो निर्मलः शुभ्रवर्णो वा (धूमः) (दिवि) अन्तरिक्षे (आत
तः) विस्तीर्णः (सन्) (ऋ ए व ति) मेघात्मना परिणतो गच्छ
ति (हि) यस्मात्त्वं (सूरः) (ने) सूर्य इव (कृपा) समर्थया
(द्युता) दीप्त्या (रोचसे) प्रकाशसे ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे शोधक अग्ने २, ३ तुम्हदीप्तका ४ निर्मलवा शुभ्रवर्ण
५ धूम ६ अन्तरिक्षमें विस्तीर्ण होता ८, ९ मेघरूप होकर चलना है १०
जिस कारणतुम ११, १२ सूर्यकी समान १३ समर्थ १४ दीप्तिसे १५ प्रकाश
करते हो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् हे (पावक) शोधकात्माग्ने (त्वेषः) दीप्त
स्य (ते) तव (शुक्रः) मानससूर्यः श० ४।३।१।२६ (धूमः) प्रा
णः श० १४।६।१।१५ (आततः) विस्तीर्णः (सन्) (दिवि) भृ
कुटिमण्डले (ऋ ए व ति) गच्छति (हि) यस्मात्त्वं (सूरः)
(ने) समष्टि सूर्य इव (कृपा) समर्थया (द्युता) दीप्त्या (रोचसे)
प्रकाशसे ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे शोधक आत्माग्ने ३, ३ तुम्हदीप्तका ४ मानससूर्य ५ और
प्राण ६, ७ विस्तीर्ण होता ८ भृकुटिमण्डलमें ९ जाता है १० जिस कारणतुम

११, १२ समष्टि सूर्यकी संमान १३ समर्थ १४ दीप्तिसे १५ प्रकाश करने हो ३

विनियोगः पूर्ववत्

त्वं^{११} हि^{१२} क्षैत^{१३} वेद्यु^{१४} शोभे^{१५} मित्रान^{१६} पत्यसे^{१७} । त्वं^{१८} विचर्षणो^{१९}

ऋवो^{२०} वसो^{२१} पुष्टि^{२२} न^{२३} पुष्यसि^{२४} ४ ॥ ८ ॥

हे (अग्ने) (त्वम्) (हि) (क्षैतवत्) क्षितिः क्षयोऽपचयः तत्स
म्वन्धि क्षैतं शुष्क काष्ठं तद्युक्तं (यशः) अन्नं नि० २, ७ (पत्य-
से) अभिपतसि गच्छसि (न) यथा (मित्रः) अहरभिमानी दे
वो विराड्पान्नं हे (विचर्षणो) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टः (वसो) अ
ग्ने (त्वम्) (ऋवः) अन्नं (न) च (पुष्टिम्) (पुष्यसि) वर्द्धयसि ४

भाषार्थः - १ हे अग्ने २ तुम ३ ही ४ शुष्क काष्ठ युक्त ५ अन्नको ६ प्रा
प्रकरते हो ७ जैसे ८ दिवसाभिमानी देवता विराड् रूप अन्नको ९ हे सर्व द
ष्टा १० अग्ने ११ तुम १२ अन्नको १३ और १४ पुष्टिको १५ बढ़ाते हो ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् (अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वम्) (हि) (क्षैतवत्)
क्षय इति गृहनामनि० ३, ४ क्षैतो देह गृहस्थो भूतात्मा तेन युक्त
म् (यशः) मानससूर्य । आदित्यो यशः श० १४। १। १। ३२ (पत्यसे)
ईशिषे । पत्यतिरैश्वर्य कर्मानि० २। २१ (न) यथा (मित्रः) सूर्यो
ब्रह्माण्डं हे (विचर्षणो) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टः (वसो) ज्योतिः
स्वरूपात्माग्ने (त्वम्) (ऋवः) विराड्पान्नं (न) च (पुष्टिम्) (पु
ष्यसि) (वर्द्धयसि) ॥ ४ ॥

भाषार्थः १ हे आत्माग्ने २ तुम ३ ही ४ भूतात्मासे युक्त ५ मानससूर्य
के ६ ईश्वर हो ७ जैसे ८ सूर्यब्रह्माण्डका ९ हे सबके दष्टा १० ज्योतिस्व
रूप आत्माग्ने ११ तुम १२ विराड् रूप अन्न १३ और १४ पुष्टिको १५ बढ़ा

तेहौ ॥४॥ मृक्तवाहाद्वितत्रापिरनुष्टुप्छन्दोभिर्देवता-

प्रातरेभिः पुरुषियोविशस्त्वेतातिथिः । विश्वे
यस्मिन्मर्त्येहव्यमर्त्तासइन्धते ॥५॥ ८५

(पुरुषियः) बहुप्रियः (विशः) विब्रह्मणिशेतेब्रह्मशायी (अ-
तिथिः) अतिथिवत्पूज्यः (अग्निः) (प्रातः) (स्तवेत) स्तूयते-
(विश्वे) सर्वे (मर्त्तासः) मनुष्याः (यस्मिन्) (अमर्त्ये) अवि-
नाशिनि (हव्यम्) (इन्धते) दीपयन्ति ॥५॥

भाषार्थः - १ बहुप्रिय २ ब्रह्मशायी ३ अतिथिवत्पूज्य ४ अग्नि ५
प्रातःकालपर ६ स्तुतिकियाजाता है ७ सब ८ मनुष्य ९ जिस १० अविना-
शी अग्निमें ११ हविको १२ होमते है ॥५॥

अथाध्यात्मम् (पुरुषियः) पुरां देहानां प्रियः (विशः) ब्रह्म-
शायी (अतिथिः) अतिथिवत्पूज्यः (अग्निः) आत्माग्निः (प्रातः)
समाधिकाले (स्तवेत) (विश्वे) सर्वे (मर्त्तासः) अहमास्पदाम-
नुष्याः (यस्मिन्) (अमर्त्ये) अविनाशिन्यात्माभौ (हव्यम्)
होमार्हात्मप्रतिविंबं (इन्धते) दीपयन्ति ॥५॥

भाषार्थः - १ देहोंका प्रिय २ ब्रह्मशायी ३ अतिथि समानपूज्य ४
आत्माग्नि ५ समाधिकालपर ६ स्तुतिकियाजाता है ७ सब ८ अहमास्य
दमनुष्य ९ जिस १० अविनाशी आत्माग्निमें ११ होम योग्य आत्म प्रतिवि-
वको १२ होमते है ॥५॥

वसूयवभावेया ऋषयः अनुष्टुप्छन्दोभिर्देवता

यद्वा हिष्टतदग्नेये वृहदूर्ध्वं विभावसो । महिषी
वत्वेद्रियस्त्वद्वाजा उदीरते ॥६॥ ८६

(यत्) (वाहिष्ठं) वोद्धृतमं स्तोत्रं (तत्) (अग्नेये) अग्नेये आत्माग्नेये
 वाक्यते हे (विभावसो) विविधिप्रभाधनवन् (वृहत) वृहन् वि
 राडूपान्नाम्वा (अर्च) अस्मभ्यं प्रयच्छयतः (त्वत्) त्वत्तः सकाशात्
 (महिषी) (इव) सार्वभौमलक्ष्मीरिव (रयिः) धनं योगधनं वा (उ
 दीरते) उद्गच्छति (त्वत्) त्वत्तः (वाजा) अन्नानि विराडूपान्नानि
 वोद्गच्छन्ति ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ जो स्तोत्र २ धारणा योग्य है ३ उसको ४ अग्नि वा आत्मा
 अग्निके लिये उच्चारण करते हैं ५ हे बहुविध प्रकाश धनवाले ६ वृहन् अन्न वा
 विराट् रूप अन्नको ७ हमें दे ८ जिस कारण तुमसे ९ सार्वभौमलक्ष्मी की तुल्य १०
 धन वा योगधनको ११ प्राप्त करता है १२ तुमसे १३ अन्न वा विराट् रूप अ
 न्नोंको पाता है - ॥ ६ ॥

गोपवन ऋषिः सप्तवधिर्वा ऋषिरनुष्टुप् छन्दो वेदाग्निर्वेदता-

विशो विशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ॥

अग्निवो दुयं वचः स्तुषे भूषस्य मन्माभिः ७ ॥ ८ ॥

हे (विशः) यजमानाः (वः) युष्माकं (विशः) मनुष्या ऋत्वि
 जः (पुरुप्रियम्) बहुप्रियं (अतिथिम्) अतिथिवत्प्रियमग्नि-
 म्पति (वाजयन्तः) अन्नमिच्छन्तः सन्ति (वचः) वेदवागहं
 (वः) युष्माकं (भूषस्य) स्वर्गापवर्गसुखस्य (दुयम्) गृहं नि
 ३ ४ ५ (अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (मन्माभिः) मननीयैः
 स्तोत्रैः (स्तुषे) स्तौमि ॥ ७ ॥

भाष्यार्थः - १ हे यजमानो २ तुम्हारे ३ ऋत्विज ४ बहुप्रिय ५ अतिथिस
 मप्रिय अग्निसे ६ अन्नको चाहने वाले हैं ७ वेदवाक्मे ८ तुम्हारे ९ स्वर्गमोक्ष

मानससूर्यमें व्याप्त आत्माग्नि को ११ क्षेमके लिये १२ भृकुटि में १३ धार
णा करते हैं ॥ ८ ॥ गोपवन ऋषिरनुष्टुप् छन्दोभिर्देवता-

अगन्म वृत्रहन्तमज्येष्ठमग्निमानवम् । यः स्मृशु
तर्वन्नाक्षैर्वृहदनीके इध्यते ॥ ८ ॥ ८६

वयं यजमानाः (वृत्रहन्तमं) पापानामतिशयेन हन्तारं (ज्येष्ठ
म्) देवानां ज्येष्ठं (आनवम्) मनुष्यसम्बन्धिनं तेषां हितकारिणाम्बानि ० २, ३, २० (अग्निम्) (अगन्म) (यः) अग्निः (वृ
हदनीके) ग्रहाणां महति सेनावति (श्रुतर्वन्नाक्षै) श्रुतः
विरच्यातः ऋरुद्रः तद्रूपे आक्षै ऋक्षमेषादिराशीनां पतौ
सूर्ये (इध्यते स्म) प्रवृद्धो भवत् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - हम यजमान १ पापनाशक २ देवताओं में वडे ३ मनुष्य
सम्बन्धी वा उनके हिनकारी ४ अग्नि को ५ प्राप्त करें ६ जो अग्नि ७ ग्रहों की व
डी से ^{ना}बाले ८ रुद्र रूप सूर्य में ९ वड़ी वृद्धि को प्राप्त हुआ ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् - वयं योगिनः (वृत्रहन्तमं) पापानाम
तिशयेन हन्तारं (ज्येष्ठम्) (आनवम्) अजरामरं (अग्निम्)
आत्माग्निं (अगन्म) (यः) आत्माग्निः शेषं पूर्ववत् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - हम योगी जन् १ पापनाशक २ ज्येष्ठ ३ अजरामर ४ आ
त्माग्नि को ५ प्राप्त करें ६ जो आत्माग्नि ७ ग्रहों की वड़ी सेना वाले ८ रुद्र रू
प सूर्य में ९ वड़ी वृद्धि को प्राप्त हुआ - ॥ ८ ॥

वामदेवः कश्यपो वा मारीचो मनुर्वा वैवस्वत उभो वा ऋत्पय अनुष्टुप्
छन्दोभिर्देवता-

जातः परेण धर्मणा यत्स वृद्धिः सहा भुवःपिता

यत्कश्यपस्योग्निः अद्भ्योमातामनुः कविः ॥ १० ॥
 हेअग्ने (यत्) यस्मात्त्वं (पुरेणो) (धर्मणा) यज्ञेननिमित्तेन
 नि० ३, १७ (जातः) प्रादुर्भूतः तस्मात् (सृष्टिः) यज्ञे सहवर्तन्ते
 इति सवृतः ऋत्विग्यजमानास्तैः (सह) (अभुव) अभूवः (यत्)
 यस्मात् (अग्निः) (कश्यपस्य) कश्यमद्यं पिवतीति कश्यपो
 मायामद्यस्य पानाजीवस्तस्य (पिता) तस्मात् (अद्भ्यो) त-
 स्य (माता) (मनुः) मन्त्रः (कविः) गुरुः ॥ १० ॥

भाषार्थः - हेअग्ने १ जिसकारणानुम २, ३ यज्ञनिमित्त ४ प्रकट हुए
 उसकारण ५ ऋत्विजोंके ६ साथ ७ प्राप्त हुए ८ जिसकारण ९ अग्नि १०
 जीवात्माका ११ पिता है उसकारण १२ अद्भ्यो उसकी १३ माता है १४ मन्त्र
 १५ गुरु है ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम् हेआत्माग्ने (यत्) यस्मात्त्वं (पुरेणो) (ध-
 र्मणा) योगयज्ञेन (जातः) प्रादुर्भूतस्तस्मात् (सृष्टिः) वा-
 गाद्यत्विज्जीवात्मभिः (सह) (अभुव) अभूवः (यत्) यस्मा-
 त् (अग्निः) आत्माग्निस्त्वं (कश्यपस्य) मायामद्यपि जीवात्मन-
 (पिता) तस्मात् (अद्भ्यो) तस्य (माता) (मनुः) महावाक् (क-
 विः) गुरुः ॥ १० ॥

भाषार्थः - हेआत्माग्ने १ जिसकारणानुम २, ३ योगयज्ञकेनिमि-
 त्त ४ प्रकट हुए उसकारण ५ वागाद्यत्विजोंके ६ साथ ७ प्राप्त हुए ८ जिस
 कारण ९ आत्माग्निनुम १० जीवात्माके ११ पिता है उसकारण १२ अद्भ्यो
 उसकीमाता है १३ महावाक् १५ गुरु है ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशवतंसंज्ञीनाथूरामस्त्रुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते

सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य नवमं खण्डः

अथ दशमः खण्डः

अग्निस्तापसञ्चरधिरनुष्टुप् छन्दो देवा देवताः

सोमं^३ रं^३ राजानं^३ वरुणाम^३ अग्निमन्वारं^३ भामहे। आदि^३
त्यविष्णुं^३ सूर्यं^३ ब्रह्माणं^३ च वृहस्पतिम्^३ ॥१॥६१

(राजानम्) राजमानमीश्वरं (सोमम्) उमामहेश्वरं। सोमो
वैराजा युक्तः प्रजापतिः श० १२। ६। १। १ (वरुणम्) (अग्निम्)
(आदित्यम्) अदितेः पराशक्तेः पुत्रं (विष्णुं) (सूर्यम्) (ब्रह्मा
णम्) (च) (वृहस्पतिम्) वृहतां वेदमंत्राणां स्वामिनं महा-
नारायणं (अन्वारं भामहे) आश्रयामः ॥१॥

भाषार्थः - १ राजमान ईश्वर २ उमामहेश्वर ३ वरुण ४ अग्नि ५ पर
शक्तिके पुत्र ६ विष्णु ७ सूर्य ८ ब्रह्मा ९ और १० वेदमंत्रोंके स्वामी महाना
रायणको ११ हम आश्रय करते हैं ॥१॥

अथाध्यात्मम् (राजानम्) राजमानं (सोमम्) जीवा-
त्मानं। सोमो वै भ्रातृ श० ३। २। ४। ६ (वरुणम्) अपानं। अ-
पानो वरुणः श० १२। ६। २। १२ (अग्निम्) वाचं। वाक्वा अ-
ग्निः श० ६। १। २। २६ (आदित्यम्) चक्षुः। चक्षुरादित्यः श० १४
४। १। १५ (विष्णुम्) परमात्मानं (सूर्यम्) अन्नर्यामिनं (ब्रह्माणं) (च)
(वृहस्पतिम्) प्राणं। प्राणो हि वृहस्पतिः श० १४। ४। १। २२
(अन्वारं भामहे) वयं योगिनः सप्तशामः ॥१॥

भाषार्थः - १ राजमान २ जीवात्मा ३ अपान ४ वाक् ५ चक्षु ६ पर-
मात्मा ७ अन्नर्यामी ८ और ९ प्राणको १० हम योगी स्पर्श करते हैं ॥१॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप् छन्दो यजमानो देवता

इते एत उदारुहन्दिवः एष्टान्यारुहन। प्रभूर्ज
यो यथा पथा धामङ्गिरसो ययुः ॥२॥ ६२

हे यजमानाः (यथा) (आङ्गिरसः) ऋषयः (भूर्जया) यस्त
भूमौ जयवता (पथा) (उ) समष्टि मूर्तेः प्रतिष्ठा पूजनात्मके
न मार्गेणैव य० अ० ११-१८ (उत्) (उ) ऊर्ध्वमेव (प्रारुहन)
(दिवः) (एष्टानि) ब्रह्म विष्णु महेशलोक रूपाणि (आरुहन)
पुनः (धाम) महानारायणलोकं (ययुः) तथैव यूयमपि (इतः)
भूमेः सकाशात् (एत) ऊर्ध्वगच्छत ॥२॥

भाषार्थः - हे यजमानो १ जैसे २ अंगिर वंशी ऋषि ३ यज्ञभूमिमें ४, ५
समष्टि मूर्ति की प्रतिष्ठा पूजन रूपमार्ग से ही ६, ७ ऊपरको ही ८ चढ़े ९, १०
स्वर्ग एष्ट अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेशके लोकोंको ११ चढ़े १२ फिर महानारा
यणलोकको १३ गये १४ उसी प्रकार तुमभी इसभूमिसे १५ ऊपरको चलो

अथाध्यात्मम् हे वागाद्यत्विज यजमानाः (यथा) (आङ्गिर
सः) प्राणाः। प्राणो वाऽङ्गिराश० ६। १। २। २८ (भूर्जया) यो
गभूमिजयवता (पथा) (उ) योगमार्गेणैव (उत्) (उ) ऊर्ध्वमेव
(प्रारुहन) (दिवः) (एष्टानि) कमलात् (आरुहन) पुनः (धाम)
गगनमण्डलं (ययुः) तथैव यूयमपि (एत) ऊर्ध्वगच्छत ॥२॥

भाषार्थः - हे वागादि ऋत्विज यजमानो १ जैसे २ प्राण ३ योगभूमि
के जेता ४, ५ योगमार्ग से ही ६, ७ ऊपरको ही ८ चढ़े ९, १० स्वर्ग एष्ट अर्थात्
कमलोंको ११ चढ़े १२ फिर गगनमंडलको १३ गये उसी प्रकार तुमभी १४
ऊपरको चलो ॥२॥

कश्यपोऽसितो देवलो वाक् ऋषिरनुष्टुप् छन्दो मिर्देवता

राये अग्ने महत्वादानाय समिधी महि । ईडि

वाहिमहे वृषन्द्यावा होत्राय पृथिवी ॥ ३ ॥ ८३

(अग्ने) हे सर्व व्यापिन् (अग्ने) (त्वा) त्वां (महे) महते (राये) धनाय धनलाभाय (दानाय) हविषां दानाय (समिधी महि) वयं सन्त्यग्दीपयामहे (वृषन्) हे कामानां वर्षितस्त्वं (महे) महते (होत्राय) होत्रं होमद्रव्यं तस्य लाभाय (द्यावा पृथिवी) (ईडिष्वे) स्तुहि ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - १ हे सर्व व्यापिन् २ अग्ने ३ तुमको ४.५ महत्त्वं धनलाभ ६ अग्नेरहविदानके लिये ७ हम प्रज्वलित करते हैं ८ हे कामनाओंकी वृष्टि करनेवाले तुम ९.१० महाहोमद्रव्यके लाभार्थ ११ पृथिवी स्वर्गको १२ स्तुत करो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) हे सर्व व्यापिन् (अग्ने) आत्माग्ने (त्वा) त्वां (महे) महते (राये) योगैश्वर्याय (दानाय) प्रतिविवादीनां दानाय (समिधी महि) (वृषन्) हे अमृतस्य वर्षितस्त्वं (महे) महते (होत्राय) योगयज्ञाय (द्यावा पृथिवी) ब्रह्माण्डं (ईडिष्वे) ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - १ हे सर्व व्यापिन् २ आत्माग्ने ३ तुमको ४.५ योगैश्वर्य ६ अग्नेरप्रतिविवके के दानार्थ ७ हम प्रज्वलित करते हैं ८ हे अमृतवर्षानेवाले तुम ९.१० योगयज्ञके लिये ११ ब्रह्माण्डको १२ स्तुत करो ॥ ३ ॥

भार्गुहृति सोमो वाक् ऋषिरनुष्टुप् छन्दो मिर्देवता-

दधन्त्वाये दीमनुवाच ब्रह्मतिवरुतत् । परि विश्वा
निकाव्यानेभिश्चकमिवाभुवत् ॥ ४ ॥ - ८४

अध्वर्युः (ईर्म) अग्निं (अनु) अनुलक्ष्य (वा) निवृत्तात्मना सह (यत्) हविः (दधन्वे) अग्नौ धारयति (वा) (ब्रह्म) मन्त्रं (अनुवोचत्) अनुवक्ति होत्रादिः (तत्) सर्वत्वं (वेरुं) वेरेव जानास्येव हे यजमान । अथमाग्निः (विश्वानि) सर्वाणि (काव्यो) काव्यानि श्रुतिवचांसि हव्यानि वा (पर्यभुवत्) परिभवति स्वायत्तानि करोति व्याप्नोतीत्यर्थः (इव) यथा (नेमिः) वहिर्वेष्टनवलयः (चक्रम्) रथाङ्गम् ॥ ४ ॥

भाषार्थः - अध्वर्यु १ अग्निको २ अनुलक्षणकर ३ निवृत्तात्माके साथ ४ जिस हविको ५ अग्निमें धारण करता है ६ अथवा ७ मंत्रको ८ उच्चारण करता है ९ उस सबको तुम १० जान्ने ही हो ११ यह अग्नि सब १२ श्रुत वचनों वा हविषोंको १३ व्याप्त करता है १४ जैसे १५ वहिर्वेष्टनवलय १६ रथचक्रको - ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् - ज्ञानचक्षुः । चक्षुर्वेद्यज्ञस्याध्वर्युः शं० १४। ६। १। ६ मनोवाः अध्वर्युः शं० १। ५। १। २१ प्राणोदानौ वाः अध्वर्युः ५। ५। १। ११ (ईर्म) आत्माग्निं (अनु) अनुलक्ष्य (वा) निवृत्तात्मना सह (यत्) प्रतिविंवरूपं हविः (दधन्वे) आत्माग्नौ धारयति (वा) (ब्रह्म) महावाक् (अनुवोचत्) होताः श्रुतवक्तिवाग्वैवज्ञस्य होता शं० १२। ८। २। २३ हे योगिन् (तत्) सर्वत्वं (वेरुं) जानास्येव । अथमात्माग्निः (विश्वानि) सर्वाणि (काव्यो) काव्यानि पूर्वोक्तवचांसि हव्यानि वा (पर्यभुवत्) व्याप्नोति (इव) यथा (नेमिः) (चक्रम्) ॥ ४ ॥

भाषार्थः - ज्ञानचक्षु १ आत्माग्निको २ अनुलक्षणकर ३ निवृत्तात्माके साथ ४ जिस प्रतिविंवरूप हविको ५ आत्माग्निमें धारण करता है ६

अथवा७ महावाक्को ८ वाक् उच्चारण करता है हे योगिन् १० उस सबको
 १० जान्ते ही है यह आत्मा मि ११ सब ११ पूर्वोक्त वचनों वाह विओको १३
 व्यापक करता है १४ जैसे १५ नेमि १६ रथ चक्रको - ॥ ४ ॥

पायुर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दोभिर्देवता-

प्रत्यग्नेहरसाहरः ऋणाहि विष्वतस्यरि । यातु
 धानस्यरससावलन्युज्जवीर्यम् ॥ ५ ॥ ६५

हे अग्ने (हरः) रुद्ररूपस्त्वं (हरसा) तेजसा क्रोधेन वा (यातु धान
 नस्य) (वलम्) (विष्वतः) सर्वतः (प्रति ऋणाहि) नाशय (र
 ससः) (वीर्यम्) (परिन्युज्ज) समन्ताद् वतानं कुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने २ रुद्ररूपतुम् ३ तेजवा क्रोधसे ४ यातु धानकी ५
 सेनाको ६ सब ओरसे ७ नाशकरो ८ राससके ९ वलको १० तोडो ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) हे आत्माग्ने (हरः) रुद्ररूपस्त्वं
 (हरसा) तेजसा (यातु धानस्य) कामस्य (वलम्) (विष्वत
 सर्वतः) (प्रति ऋणाहि) नाशय (रससः) क्रोधस्य (वीर्यम्)
 (परिन्युज्ज) समन्ताद् वतानं कुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्माग्ने २ रुद्ररूपतुम् ३ तेजसे ४ कामकी ५ सेनाको
 ६ सब ओरसे ७ नाशकरो ८ क्रोधके ९ वलको १० तोडो ॥ ५ ॥

प्रस्तावऋषिरनुष्टुप् छन्दोभिर्देवता

त्वमग्नेर्वसुं धरिह रुद्रो धं ष्पादित्यां धं उतो यजो
 स्वध्वरज्जनं मनुजात घृतपुष्यम् ॥ ६ ॥ ६६

(अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (अग्ने) (त्वम्) (इह) युज्से (रुद्रान्) (वसुं
 ष्पादित्यान्) (यज) (उत) अपि च (मनुजातम्) मनुना प्रजाप

तिनाउत्पादितं (घृतमुषमं) घृतस्यसेत्कारं (जनमे) यजमानं (स्वध्वरमे) शोभनयागयुक्तं कुर्विति शेषः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ अग्ने ३ तुम ४ इत्ययत्तमे ५ रुद्रो ६ वसु-
श्रो ७ आदित्यो को ८ पूजन करो ९ और १० मनुप्रजापति से उत्पादित ११ घृत
के सींचने वाले १२ यजमान को १३ भुभयत्त वाला करो - ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) (अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वम्) (इह) ४
योगयज्ञे (रुद्रान्) (वसून्) (आदित्यान्) (यज) प्राणोन्द्रि-
याणां होमेन यज (उत) अपि च (मनुजातम्) वेदमंत्रैः संस्कृ-
तं (घृतमुषमं) इन्द्रियशक्तिभिः सहात्मप्रतिविंबेन सेत्कारं
(जनमे) योगिनं (स्वध्वरमे) सुयोगयज्ञवन्तं कुर्विति शेषः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १, २ हे आत्माग्ने ३ तुम ४ इत्ययत्तमे ५, ६, ७ रुद्रवसु-
आदित्यो को ८ प्राण इन्द्रियके होम से पूजो ९ और १० वेदमंत्रों से संस्कृ-
त ११ इन्द्रियशक्ति सहित आत्म प्रति विंब से सींचने वाले १२ योगी को १३
अष्टयोगयज्ञवाला करो - ॥ ६ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते
सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य दशमः खंडः

इति प्रथमप्रपाठकः

अथैकादशः खण्डः द्वितीयप्रपाठकः

दीर्घतमा अत्रपि रुषिणः छन्दोभिर्देवता-

पुरुत्वादाशिवाङ् वौचैरिरेभेतेवस्विदो। नोदे
स्यैवशरणं आमहस्य ॥ १ ॥ - ६७

हे अग्ने) अग्ने आत्ममेवा (तव) (अग्निः) अग्निसेवकोऽहं (त्वां)

त्वां (स्विदा) अर्चन प्रकारेण स्वदतिर्चतिकर्मानि० (दाशिवे
 इ) हविर्वत्तवानस्मि (आ) समान्नात् (वेचि) प्रार्थयामि (इ
 व) यथा (महस्य) महनः (नोदस्य) शिक्षकस्य गुरोः (शरणे)
 गृहे ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हेअमेवाआत्माग्ने २तेरे ३सेवकमेने ४तुमको ५पूजन
 विधिसे ६हवि अर्पण कियाहै ७सवस्योरसे ८प्रार्थना करताहूं ९जैसे
 १०, ११ गुरुके १२ गृहमें शिष्य ॥ १ ॥

विश्वामित्र ऋषिः ककुप् छन्दोभिर्देवता-

मूहोत्रं पूर्व्यवचोभयभरता वृहन् । विषाज्योतींश्च
 षिविभ्रतेन वेधसे ॥ २ ॥

हेहोत्रादयः (विषाम्) मेधाविनां (ज्योतींषि) सत्कर्मानुष्ठान
 सम्पाद्यानितेजांसि (विभ्रते) निमित्ततया कुर्वाणाय (न) च
 (वेधसे) जगतो विधात्रे (होत्रे) देवानामाहात्रे (अग्नये) (वृ
 हन्) महत् (पूर्व्यम्) वेदोक्तं (वचः) स्तोत्रशस्त्रादिकं वाक्यं
 (मभरत) सम्पादयत ॥ २ ॥

भाषार्थः - हेहोत्राद्दिक्त्वजो १ ज्ञानियोंके २ सत्कर्मानुष्ठा
 नसम्पाद्यतेजोंको ३ प्राप्तकरनेवाले ४ और ५ जगत्के विधाता ६ देवा
 हानकर्ता ७ अग्निके लिये ८ महान् ९ वेदोक्त १० स्तोत्रशस्त्रादि वा
 क्यको ११ सम्पादनकरो - ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् - हेवागाद्यत्विजः (विषाम्) प्राणायाम
 निष्ठानां योगिनां (ज्योतींषि) प्रतिविंवरूपाणि (विभ्रते) स्व
 त्मनिधारकाय (न) च (वेधसे) जगतो विधात्रे (होत्रे) महा

पुरुषपुरुषाणामाहूत्रे (अग्नेये) आत्मानये (वृहते) महत्
(पूर्व्यम्) वेदोक्तं (वेचः) महावाचं (प्रभरेत) सम्पादयत ॥ २ ॥

भाषार्थः— हे वागाद्यत्विजो १ प्राणायामनिष्ठयोगियोंके २ मति-
विंवरूपतेजोंको ३ अपने आत्मामें धारण करनेवाले ४ और ५ जगतके वि-
धाता ६ महापुरुषपुरुषोंके आह्वाना ७ आत्मानिकेलिये ८ महान ९ वे-
दोक्त १० महावाक्को ११ सम्पादन करो ॥ २ ॥

गोतमऋषिरुषिाकुच्छन्दोभिर्देवता-

अग्नेर्वाजस्य गोमतेर्दृशानः सहसोयहो । अस्मे
देहि जातवेदो महि ऋवः ॥ ३ ॥ - ६६

हे (सहसोयहो) ब्राह्मज्योतिषः पुत्र (जातवेदः) सर्वज्ञ (अग्ने)
(गोमतः) बहुभिर्गोभिर्युक्तस्य (वाजस्य) अन्नस्य (दृशानः)
ईश्वरस्त्वं (अस्मे) अस्मासु (महि) प्रभूतं (ऋवः) अन्नं (देहि) ३

भाषार्थः— १ हे ब्राह्मज्योतिके पुत्र २ सर्वज्ञ ३ अग्ने ४ बहुत गोसे युक्त
५ अन्नके ६ स्वामीतुम ७ हमारे लिये ८ बहुत ९ अन्नको १० दो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम्— हे (सहसोयहो) ब्राह्मज्योतिषः प्रादुर्भू-
त (जातवेदः) सर्वज्ञ (अग्ने) महापुरुषाग्ने (गोमतः) गोलोक
सम्बन्धिनः (वाजस्य) दिव्यभोगस्य (दृशानः) स्वामीत्वं (अ-
स्मे) अस्मासु भक्तेषु (महि) महान्तं (ऋवः) भोगं (देहि) ३

भाषार्थः— १ हे ब्राह्मज्योतिसे प्रादुर्भूत २ सर्वज्ञ ३ महापुरुषाग्ने ४
गोलोकसम्बन्धी ५ दिव्यभोगके ६ स्वामीतुम ७ हमभक्तोंको ८ महान्त
९ भोग १० दीजिये ॥ ३ ॥

विष्वाभिऋषिरुषिाकुच्छन्दोभिर्देवता-

अग्नेयजिष्ठोऽध्वरे देवान् देवयते यज । होता मन्द्रो
विराजस्येति सिधः ॥ ४ ॥ - १००

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा (यजिष्ठः) यष्टतमः त्वम् (अध्वरे) य
ज्ञेयोगयज्ञेवा (देवयते) देवानात्मनश्च्छते यजमानाय (देवा
न्) (यज) (होता) देवानामाह्वता (मन्द्रः) यजमानस्य मादयि
तात्वं (सिधः) क्षपयित्नुं शत्रून्कामादीन्वा (अति) अतिक्र
म्य (विराजसि) विशेषेण शोभसे ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्नेवा आत्माग्ने २ वडेयष्टतुम् ३ यज्ञवायोग यज्ञमे
४ देवेच्छु यजमान केलिये ५ देवताओंको ६ पूजो ७ देवताओंके आह्वाना
८ यजमानके संतुष्ट करनेवालेतुम् ९ शत्रुओंवा कामआदिको १० अति
क्रमाणकर ११ विशेषशोभित होनेहों ॥ ४ ॥

वित ऋषिरुषिाक् छन्दोग्निर्देवता-

जज्ञानः सप्तमातृभिर्मैधामाशासताभिये ॥ अ
यं ध्रुवोरयीणाञ्चिकेतदो ॥ ५ ॥ - १०१

(सप्त) (मातृभिः) हविर्मानि समर्थाभिर्जिह्वाभिः स्वात्मनि हविः
प्रक्षेप्तीभिर्वाजिह्वाभिः सह (जज्ञानः) प्रादुर्भूतः (ध्रुवः) स्थिरः
(अयम्) अग्निः (रयीणाम्) धनानां स्वरूपं (आचिकेतत्)
अपश्यम् (मैधाम्) स्वकीयां बुद्धिं (भिये) यजमानस्य ध
नार्थं (अनुशासत) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ सप्तजिह्वाओंके साथ २ प्रादुर्भूत ३ स्थिर ४ इस अग्नि
ने धनोके स्वरूपको ५ देखा ६ अपनी बुद्धिको ७ यजमानके धनार्थ १०
अनुशासन करता है ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - (सप्त) (मातृभिः) सप्तयोगभूमिभिः (जज्ञे
नः) प्रादुर्भूतः (ध्रुवः) अचलः (अयम्) आत्माग्निः (रयीणाम्)
योगधनानां स्वरूपं (आचिकेतत्) अपश्यत् (मेधाम्) स्वकी
यशक्तिरूपां यजमानस्य बुद्धिं (अग्नये) योगलक्ष्मीलाभाय
(अनुशासत) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १, २ सप्तभूमियोगके साथ ३ प्रादुर्भूत ४ अचल ५ इस आ
त्माग्निने ६ योगधनोंके स्वरूपको ७ देखा ८ निज शक्तिरूप यजमान की
बुद्धिको ९ योगलक्ष्मीके लिये १० अनुशासन करता है ॥ ५ ॥

इरिमि वि ऋषि रुषिाक् छन्दो दिदिदेवता-

उत्तस्यानां दिवा मतिरदितीरुत्यागमत् । सोऽशो
नातामयस्करुदपसिधः ॥ ६ ॥ १०२

(उत्त) अपिच (सो) (यो) प्राणरूपा (मति) बुद्धिरूपा (अदितीः)
अखण्डिता पराशक्तिः श० ४।१।२।६-९ (ऊत्या) रक्षयासाद्धि
(दिवा) उत्तरायणो समाधौवा (नः) अस्मान् (अगमत्) (सो) (श
नाता) शान्ति विस्तार कारिणी पराशक्तिः तनविस्तृतौ (मयः)
सुखं (करत्) करोतु (सिधः) क्षमपितृन् शत्रून्कामादीन्वा-
(अप) अपगमयतु ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ और २ वह ३ प्राणरूप ४ बुद्धिरूप ५ अखण्डिता पराश
क्तिः ६ रक्षाके साथ ७ उत्तरायणवासमाधिमें ८ हमको ९ प्राप्त हुई १० वह
११ शान्ति विस्तार करने वाली पराशक्ति १२ सुखको १३ करो १४ शत्रु
शौचाकाम आदिको १५ दूर हटाओ ॥ ६ ॥

द्वयोर्विश्वमनावैयश्वऋषिरुषिाक् छन्दोभिर्देवता-

ईडिष्वाहिप्रतीव्यो यजस्वजोतवेदसम्। चरि
ष्णुधूममगृभीतशोचिषम् ॥७॥ - १०३

(प्रतीव्यम्) शत्रुषुप्रतिगमनशीलं (अग्निं) (हि) एव (ईडिष्वा) स्तुतिभिः स्तुतं कुरु किञ्च (चरिष्णुधूमम्) सर्वत्रचरणशीलधूमज्वालं (अगृभीतशोचिषम्) रक्षोभिः प्रधृतदीप्तिं (जातवेदसम्) सर्वज्ञं (यजस्व) हविर्भिः पूजय ॥७॥

भाष्यार्थः - १ शत्रुओं परधावा करने वाले २ अग्निको ३ ही ४ स्तुत करे ५ सर्वत्र गमनशीलधूमवाले ६ राक्षसों से अप्रधृत दीप्तिवाले ७ सर्वज्ञ अग्नि को ही हविषों से पूजो ॥७॥

अथाध्यात्मम् - (प्रतीव्यम्) कामादिषुगुमनशीलं (अग्निं) आत्माग्निं (हि) एव (ईडिष्वा) किञ्च (चरिष्णुधूमम्) कमलेषुचरणशीलप्राणं। प्राणोधूमः श० १४। ६। १। १५ (अगृभीतशोचिषं) कामादिभिरप्रधृतदीप्तिं (जातवेदसम्) सर्वज्ञात्माग्निं (यजस्व) पूजय ॥७॥

भाष्यार्थः - १ काम आदि परधावा करने वाले २ आत्माग्निको ३ ही ४ पूजो और ५ कमलों में गतिशील प्राण वाले ६ काम आदि से अप्रधृत दीप्तिवाले ७ सर्वज्ञ आत्माग्निको ही पूजन करो ॥७॥

अणिकृच्छन्दोग्निर्दिवता-

ननुस्यमाययाचनैरिपुरीशीतमर्त्यः। योऽग्रये
ददाशहव्यदातये ॥८॥ - १०४

(मर्त्यः) मरणशीलः (रिपुः) शत्रुः (मायया) (चन) आपितस्यु यो गिनो भक्तस्य वा (नै) (ईशीत) ईश्वरो न भवति (यः) (हव्य

दातये) हविषां मादानुसमर्थीय (अग्नेये) अग्नेये । आत्माग्नेये-
इष्टदेवाग्नेयेवा (ददाश) हवींषि प्रयच्छति ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ मरणशील २ शत्रु ३ मायासे ४ भी ५ उसयोगीभक्त
पर ६ ७ समर्थनहीं होता है ८ जोकि ९ हवि ग्रहणमें समर्थ १० अग्निवा
आत्माग्निवा इष्टदेवाग्नि के लिये ११ हवि समर्पण करता है ॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषिरुष्णिक् छन्दोभिर्देवता-

अपत्यं वृजिनं छं रिपुं छं स्तेनं मग्ने दुराध्यम् ।

देविष्टमस्य सत्पते क्लीधौ सुगम् ॥ ९ ॥ - १०५

हे (सत्पते) सतां पालयितः (अग्नेः) अग्ने आत्माग्नेवा (तम्)
प्रसिद्धं (वृजिनम्) कुटिलं (दुराध्यं) दुःखस्याध्यात्तारं दु-
ष्टाभिप्रायं (स्तेनम्) चौररूपं (रिपुम्) शत्रुं कामम्बा (देवि-
ष्टम्) दूतमं (अपास्य) अपक्षिप । असुक्षेपने (यिम्) (य)
पुरुषोत्तमः (इ) तस्य शक्तिस्तं शक्ति युक्तं पुरुषोत्तमं (सुगम्)
सुलभं (क्लीधौ) कुरु ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हे सत्पुरुषों के पालक २ अग्नेवा आत्माग्ने ३ उस प्रसिद्ध
४ कुटिल ५ दुष्टाभिप्राय ६ चौर रूप ७ शत्रु वा कामको ८ वदत दूर ९ फेंको
१० शक्ति युक्त पुरुषोत्तमको ११ सुलभ १२ करो ॥ ९ ॥

विश्वमना एवर्षिरुष्णिक् छन्दोभिर्देवता

अनुष्टुप्तेन वस्य मे स्तोमस्य वीरविश्वते । निमा

यिनस्तपसा रक्षसो दह ॥ १० ॥ - १०६

हे (वीर) शत्रूणां विनाशयितः शीर्यवन्वा (विश्वते) विशां-
। योगिनाम्बा पालयितः (अग्नेः) अग्ने । आत्माग्नेवा (मे) (त्व

स्य) गुरूपदेशान्नवनुल्यस्य (स्तोत्रस्य) स्तोत्रस्य (श्रुष्टी) अन्तरिक्षे व्याप्तिः नि० तस्मात् (तपसा) तापकेन तेजसा (मायिनः) मायाविनः (रक्षसः) रक्षसान् कामादीन्वा (निर्दह) नितरां भस्मीकुरु ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे शत्रुविनाशक २ योगियोंके रक्षक ३ अग्ने ४ मेरे ५ गुरूपदेश से नवनुल्य ६ स्तोत्रकी ७ अन्तरिक्षमें व्यापि है उस कारण ८ तापक नेज से ९ मायावी १० रक्षसों वा काम आदि को ११ निरन्तर भस्मकरो ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्यैकादशः खण्डः ॥

अथ द्वादशः खण्डः

प्रयोगो भार्गव ऋषिः ककुप् छन्दो मिर्देवता

प्रमथं हिष्टाय गायत ऋतां वै वृहते भुक् शोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये ॥ १ ॥ - १०७

हे (उपस्तुतासः) उपगम्य स्तोतारः यूयं (महिष्टाय) दातृतमाय (ऋतां वै) यज्ञवते सत्यवते वा (वृहते) महते (भुक् शोचिषे) भुद्धतेजसे व्यष्टि समाष्टिरूपतेजसे वा। एष वै भुको य एष तपतिः श० ४। ३। २। २६ (अग्नये) अग्नये आत्मानये वा (अगायत) स्तोत्रं पठत ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे उपस्तोतापोनुम २ वड़ेदाना ३ यज्ञवान वा सत्यवान ४ महान् ५ भुद्धतेज वाले ६ अग्निवा आत्माग्निके लिये ७ स्तोत्र को पढ़ो ॥ १ ॥

द्वयोः सौभरिर्ऋषिर्गुणिक् छन्दो मिर्देवता

प्रसो^{१२}अग्ने^{२२}तवो^{३३}तिभिः^{३३} सुवीरो^{३३}भिस्तरति^{३३}वोजे^{३३}कर्म
भिः । यस्य^{३३}त्वं^{३३} संसर्व्य^{३३}माविध^{३३} ॥ २ ॥ १०८

हे (अग्ने) अग्ने । आत्माग्नेवा (सः) यजमानः (तवे) (सुवीरोभिः)
महावीराभिः यद्वा शोभनवीराः पुत्रादयो यासुताभिः (वाजक
र्म्मभिः) वाजानामन्तानां वलानां वा कर्मरक्षां यासुतादृशी
भिः (ऊर्तिभिः) रक्षाभिः (प्रतरति) आपदुं संसारसागरं वा प्रतर-
ति (यस्य) यजमानस्य (त्वम्) (सर्व्यम्) सखित्वं मित्रत्वं (आ-
विध) प्राप्नोषि ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने वा आत्माग्ने २ वह यजमान ३ तेरी ४ महावीरवती
वा पुत्रादिवती ५ रक्षकवलकर्मवती ६ रक्षाओं से ७ आपद वा संसारसागर-
कोतरता है ८ जिस यजमानके ऋतुम १० सखाभावको ११ प्राप्त करते हो ॥ २

उषिष्वाकृच्छन्दोषिर्देवता-

तु^१गूर्ध्व^२या^३स्व^४एरि^५देवा^६सो^७देव^८मरे^९ति^{१०}दधन्विरे^{११} । देव^{१२} ।
त्रो^{१३}हव्य^{१४}मूहिषे ॥ ३ ॥ - १०९

(अग्ने) हे ब्राह्मणात्वं (देवत्रो) यज्ञे । देवान् हविर्दानेन त्रायते त्रा-
क (हव्यम्) हविः (ऊहिषे) निर्णीतं कुरुषे (देवासः) विद्वांसः त्र-
न्विजः (अरतिमे) देवान् यजमानां ऋप्रतिगन्तारं (स्वः) सूर्यः
रूपं (नरम्) नररूपं (देवम्) अग्निमात्माग्निम्वा (दधन्विरे) धा-
रितवन्तः स्थापितवन्तः नि० २ । १४ तस्मात्त्वं (तम्) अग्निमात्मा
ग्निम्वा (गूर्ध्वय) स्तुहि गूर्ध्वयतिः स्तुतिकर्मानि० ३ । १४ । ५ - ॥ ३

भाषार्थः - १ हे ब्राह्मणानुम २ ऋत्तमे ३ हविको ४ निर्णीत करते हो ५
विद्वानत्रन्विजोंने ६ देवता और यजमानोंके पास जानेवाले ७ सूर्यरूप ८

नररूपर्षिः श्रमिवाशात्माग्नि को १० स्थापन किया ११ उ सश्रमिवाशात्माग्नि
को १२ स्तुत करो ॥ ३ ॥

प्रयोगो भार्गवः ऋषिः सोमरिः काण्वो वा ऋषय उषिणक् चन्दो
ग्निर्देवता- ^३मानो ^२हृणीथा ^१अतिथि ^३वसुराग्निः ^३पुरु
प्रशस्त एषः । यः ^३सुहोता ^३स्वध्वरः ॥ ४ ॥ ११०
हे ऋत्विक् सङ्घ (नः) अस्माकं (अतिथिम्) अतिथि वत्पु
यमग्नि मात्माग्निम्वा (मो) (हृणीथाः) माहर (यः) (एषः) (सु
होता) सुष्टु देवानामाह्वता (स्वध्वरः) शोभनयज्ञः (पुरुप्रश
स्तः) बहुभिस्तुतः (वसुः) ब्रह्मांशुरूपः ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - हे ऋत्विज समूह १ हमारे २ अतिथि समान मिय अग्नि वा
शात्माग्नि को ३, ४ हरण मत करो ५ जो ६ यह ७ देवताओं का आह्वता ८
शोभनयज्ञ वाला ९ बहुतों से स्तुत १० ब्रह्मांशु रूप है ॥ ४ ॥

निस्तृणां सोमरिः ऋषिरुषिणक् चन्दो ग्निर्देवता

^३भद्रो ^२नो ^१अग्नि ^३राहुतो ^३भद्रो ^३रातिः ^३सुभग ^३भद्रो ^३अ
ध्वरः । भद्रो उत प्रशस्तयः ॥ ५ ॥ १११ ॥

हे (सुभग) शोभनैश्वर्याग्ने । आत्मा मेवा (आहुतः) हविर्भिस्त
र्पितस्त्वं (नः) अस्मभ्यं (भद्रः) कल्याणो भवतु (रातिः) त्वदानं
(भद्रो) कल्याणं भवतु (अध्वरः) यज्ञः योग यज्ञो वा (भद्रः) क
ल्याणो भवतु (उत) अपि च (प्रशस्तयः) प्रशंसाः (भद्रो) क
ल्याणयश्च भवन्तु ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ हे शोभनैश्वर्यवान अग्ने वा आत्मा मे २ हविसे तर्पित तुम ३
हमारे लिये ४ कल्याण रूप हजिये ५ ते दान ६ कल्याण रूप हो ७ यज्ञ वा

वायोगयत् ८ कल्याणरूपहो ९ और १० प्रशंसा ११ कल्याणरूपहो ५॥

उषिाक् छन्दोभिर्देवता-

यजिष्ठंत्वाववृमहे देवदेवत्रा होतारं ममर्त्यम् । अ
स्य यज्ञस्य सुकृतुम् ॥ ६ ॥ ११२

हे अग्ने । आत्माग्नेवा (अस्य) (यज्ञस्य) (सुकृतुं) सुष्ठु कर्तारं
(यजिष्ठं) यष्टुतमं (देवत्रा) देवेषु मध्ये (देवम्) अतिशयेन
दानादिगुणं (होतारम्) देवानामाह्वतारं (अमर्त्यम्) अवि-
नाशिनं (त्वां) त्वां (ववृमहे) वृणीमहे संभजामहे ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - हे अग्नेवा आत्माग्ने १ इत् २ यज्ञके अष्टौ कर्ता ४ बडेयष्टा भेदेन
ताओंके मध्य ६ अतिशय दानादिगुणवाले ७ देवताओंके आह्वाना ८ अवि-
नाशी ९ तुमको १० हमसेवन करते हैं ॥ ६ ॥

वार्हस्पत्य ऋषिः ककुप् छन्दोभिर्देवता-

तदग्नेद्युम्नमाभरयत्सासाहोसदनं कञ्चिदत्रिणो
म् । मन्युजनस्य दूढ्यम् ॥ ७ ॥ ११३

(अग्ने) हे अग्ने । आत्माग्नेवा (यत्) यदा (आसदने) यज्ञे योग-
यज्ञेवा (जनस्य) यजमानस्य (अत्रिणाम्) अन्तारं (कम्) का-
मं (मन्युम्) क्रोधं (दूढ्यं) दुष्टां बुद्धिं नि० ५।४।२६ (चित्)
अपि (सासाह) (तत्) तदा (द्युम्नम्) यशः (आभर) अस्मा-
भ्यमाहर ॥ ७ ॥

भाष्यार्थः - १ हे अग्नेवा आत्माग्ने २ जब ३ यज्ञवा योगयज्ञमें ४ यजमान-
के ५ भस्मक ६ कामको ७ क्रोधको ८ हुष्ट बुद्धिको ९ भी १० जयकरो ११ त-
व १२ यशको १३ हमें प्राप्त कराओ ॥ ७ ॥

विश्वमनाञ्चरपि रुषिाक छन्दोभिर्देवता-

यद्वाउविश्वपतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशो विश्वे
दग्निः प्रतिरक्षां सि सेधति ॥८॥ ११४

(यद्वा) यदेव (विश्वपतिः) विशां योगिनाम्वा पालायिता (शितः)
हविर्भिस्तीक्ष्णी कृतः संस्कृतो वा शोतनु करुणो श्यतिः संस्कृत
रार्थः (सुप्रीतः) सुप्रीतोऽग्निरात्माग्निर्वा (मनुषः) यजमान
स्य (विशो) गृहे देहे वा प्रादुर्भवति विश्वनिवेशने । तदेव (उ) रु
द्ररूपः (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (विश्व) सर्वाणि (इव) एव
(रक्षांसि) रक्षांसि कामादीन्वा (सि सेधति) गृह्णाति पिधुगतौ ।

॥८॥-११४

भाष्यार्थः

१जमी २योगियोंकारक्षक ३हविशोंसेतीक्ष्णाफियाहुआवासंस्कृत
अतिप्रसन्न अग्निवाआत्माग्नि ५यजमानके ६गृहवादेहमें प्रकटहो
ताहैतमी ७रुद्ररूप ८अग्निवाआत्माग्नि ९सब १०, ११रक्षसोंवाकाम-
आदिकोही १२ग्रहणकरताहै ॥८॥ ११४॥

इतिज्ञीभृगुवंशावतंसंज्ञीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मविरचिते-
सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमोऽध्यायः-

समाप्तमाग्नेयं पर्व आग्नेय काण्डम्वा

॥ इति १मपर्व ॥

अथद्वितीयाध्याय आरभ्यते ॥

तत्रप्रथमः खण्डः

शंयुर्वाहं स्पत्यञ्चरपि भिरद्वाजञ्चरिर्वागायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

नेद्वोगायसुते सचापुरुहूताय सत्त्वेने । शयद्गवे



नैशोकिने ॥१॥ १

अत्र श्रुतयोविचारणीयाः इन्द्रोवैयजमानः श० ११११११
 मन एवेन्द्रः १२। १। १३ प्राणा एवेन्द्रः १२। ११। १४ हृदयमेव
 न्द्रः १५ इन्द्रोवैसर्वदेवाः १३। ७। १। ४ इति परमैश्वर्ये इन्द्रः पर
 मेश्वरः। बह्वर्थसंभवे योर्थोयत्र संभविष्यति तमेव कथयिष्या
 मद्मति— हे स्तोतः (वै) निवृत्तात्मा (सच्चो) ऋत्विग्भिः सहि
 तस्त्वं (सुते) अभिषुते सोमे सति (पुरुहूताय) वद्भिर्यजमा
 नैराहूताय (सत्वने) धनानां दात्रे। षण्णुदाने (इन्द्राय) (त
 त्) स्तोत्रं (गाय) (यत्) स्तोत्रं (गवे) विष्टवं श्रुत्वाय (ने
 च (शाकिने) शक्ति मते इन्द्राय (शम्) सुखकरं भवेत् ॥१॥
भाषार्थः— हे स्तोता १-२ ऋत्विज सहित निवृत्तात्मा तु म ३ सोमा
 भिषवहोने पर ४ बहुत यजमानों से आहूत ५ धनदाता ६ इन्द्रके लिये ७
 उस स्तोत्रको ८ गाओ ९ जो स्तोत्र १० विष्णुके अंशरूप ११ और १२ शक्ति
 मान इन्द्रके लिये १३ सुखकर्ता होवे ॥ १ ॥

अथाध्यात्मम-हे अन्नरात्मन् (वै) निवृत्तात्मा (सच्चो)
 वागाद्यत्विग्भिः सहितस्त्वं (सुते) अभिषुते प्रतिविंवे (पुरुहू
 ताय) वद्भिर्योगिभिराहूताय (सत्वने) मोक्षदात्रे (इन्द्राय
 परमेश्वराय (तत्) स्तोत्रं (गाय) (यत्) (गवे) ब्रह्मांशुरूपाय
 (ने) च (शाकिने) सर्वशक्ति मते (शम्) आनन्दकरं भवति १
भाषार्थः— हे अन्नरात्मन् १-२ वागादिऋत्विज सहित निवृत्तात्मा
 तु म ३ आत्मप्रतिविंवाभिषवहोने पर ४ बहुत योगियों से आहूत ५ मोक्ष
 दाता ६ परमेश्वरके लिये ७ उस स्तोत्रको ८ गाओ ९ जो स्तोत्र १० ब्रह्मांशु

रूप ११ और १२ सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिये आनन्द कर्त्ता होवे ॥१॥

सूक्तस्य ऋषिर्गायत्री छन्दो इन्द्रो देवता-

यस्ते नूनं शतक्रतुर्विन्द्रो द्युम्नितमो मदेः ।

ते नूनं नूनं मदे मदेः ॥ २ ॥ २

हे (शतक्रतो) शतयज्ञकर्त्ताः (इन्द्रे) (येः) (द्युम्नितमः) दी
प्नितमः (मदेः) सोमः (ते) (नूनम्) त्वदर्थं मेवास्माभि रभिषुतो
ऽस्ति (तेन) सोमेन (नूनम्) अवश्यमेव (मदे) तव मदे सज्जा
ते सति (मदेः) अस्मानपिमादय मदी हर्षे ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे शतयज्ञकर्त्ता २ इन्द्र ३ जो ४ बड़ा दीप्यमान ५ सोम
६ आपके लिये ७ निश्चय अभिषुत हुआ ८ उस सोमसे ९ अवश्यही १० ते
रामदुत्पन्न होने पर ११ हमको भी हर्षित कर ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (शतक्रते) अनन्तकर्मन् (इन्द्रे) परमे
श्वर (येः) (द्युम्नितमः) यशस्वितमः (मदेः) आत्म प्रतिविंबः
(ते) (नूनम्) त्वदर्थं मेवाभिषुतोऽस्ति (तेन) आत्म प्रतिविंबे
न (नूनम्) अवश्यमेव (मदे) सज्जाते सति (मदेः) अस्मान-
पिमादय मदी हर्षे ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे अनन्त कर्मा २ परमेश्वर ३ जो ४ बड़ा यशस्वी ५ आ
त्म प्रतिविंब ६ आपके लिये ही अभिषुत हुआ है ८ उस आत्म प्रतिविंबसे
९ अवश्यही १० आपका मदुत्पन्न होने पर ११ हम आत्मारूपयज्ञज्ञानों
को भी आनन्दित करो ॥ २ ॥ हर्यत ऋषिर्गायत्री छन्दो गौर्देवता

गाव उपवदावटं मही पत्तस्य रप्सुदा उभा कणा
हिरण्ययो ॥ ३ ॥ - ३

हे(गौः) वेदमंत्र (अः) वागीशस्त्वं (अवटे) कृणीरन्ध्रे (उपवदु) य
स्मात् (यज्ञस्य) यज्ञस्ययोगयज्ञस्यवा (मही) भूमिः (रप्सुदा)
(रप्) मन्त्रस्तेन सुदा सुखदात्री (उभा) उभौ (कणी) कौणी (हिर-
एयथा) ज्योतिर्मयौ महावाक् ऋवणो समर्थौ । ज्योतिर्वैहिर
एयं श० ६।७।१।२-॥३॥

भाषार्थः - १ हे वेदमंत्र २ वागीशतुम ३ कणीरन्ध्रमे ४ कहो जिसका
रण ५ यज्ञवायोगयज्ञकी दी भूमि ७ मंत्रद्वारा सुखदाता है और दोनों ८ का
न ९ ज्योतिर्मय अर्थात् महावाक् ऋवणमे समर्थ हैं ॥ ३ ॥

ऋतकक्षत्रपिगीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अ० र० म० श्वाय गायत ऋतकक्षारङ्गवो अ० र० मिन्द्र
स्य धाम्ने ॥४॥ - ४॥

हे (ऋतकक्ष) ऋतं शास्त्रमेव कक्षे वाहूयस्य सऋतकक्षः हे शा-
स्त्रानुवर्तिन्नन्तरात्मन् (अश्वाय) विराडात्मने सूर्याय । असौ वा
ऋादित्य एषो ऋः श० ६।३।१।२६ (अरम्) अलं (गायत) पुत्रशि
ष्पाद्यभिप्रायेण वद्भवचनं (गवे) सूर्याशरूपदेवसमूहाय । एषवै ऋ
कोय एषतपतितस्य ये रश्मयस्ते विश्वे देवाः श० ४।३।१।२६ (अरम्)
अलं गायत (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (धाम्ने) महापुरुषलोकाय
(अरम्) अलं गायत ॥४॥

भाषार्थः - १ हे शास्त्रानुवर्तिन्नन्तरात्मन् २ विराडात्मा सूर्यके लिये
३ पर्याप्त ४ गानकरो ५ सूर्याशरूपदेवसमूहके लिये ६ पर्याप्त गानकरो ७ पर-
मेश्वरके धाम अर्थात् महापुरुषलोकके लिये ८ पर्याप्त गानकरो - ॥४॥

ऋतकक्षत्रपिगीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

तोमिन्द्रवाजयामसि महैष्टत्रायहन्तेवे। सृष्टषो
 वृषभोभुवत् ॥५॥ - ५

(तम्) (इन्द्रम्) इन्द्रं परमेश्वरं वा (महे) महते (ष्टत्राय) पापाय (हन्ते
 वे) महापापस्य हन्तुं (वाजयामसि) सोमेनात्मप्रतिविंवेन वा वाज
 वन्तमन्नवन्तश्चाकुर्मः (सः) (वृषा) धनैः शक्तिभिर्वासेक्तादाता (वृष
 भः) कामानां योगैश्वर्याणां स्वादाता (भुवत्) भवतु ॥५॥

भाष्यार्थः - १ उसर इन्द्रवापरमेश्वरको ३, ४, ५ महापापकेनाशार्थं
 सोमवाशात्मप्रतिविंवार्षणासेहमन्नवानकरं ७ वह ८ धनवाशक्तिभ्यो
 कादाता ९ कामनावायोगैश्वर्योकादाता १० होशो ॥ ५ ॥

इन्द्रमातरो देवजामयऋषिका गायत्री छन्दो देवता-

त्वमिन्द्रवल्नादधिसेहसोजातश्रोजसः। त्वंश्सन्
 वृषन् वृषदासि ॥६॥ - ६

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (सहसः) ब्राह्मज्योतिषः (वल्नात्) वल्
 शक्त्या (श्रोजसः) दीप्तिशक्त्या (अधिजातः) प्रादुर्भूतोऽसि हे (वृष
 न्) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षितः। दानः (त्वम्) (सन्ति) सदैव (हो
 पा) कामादीनां वर्षिता (असि) नान्यः स्वस्यान्याभावात् ॥६॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुम ३ ब्राह्मज्योतिकी ४ वलशक्ति ५ शौरदी
 प्तिशक्तिसे ६ प्रकटहुएहो ७ हे धर्मकाम अर्थमोक्षकेदाता ८ तुम ९ सदैव १०
 कामादिकी वर्षा करने वाले ११ हो अद्वैत होनेसे ॥ ६ ॥

गोपत्यश्वसक्तिनोऋषी गायत्री छन्दो महानारायणो देवता-

यज्ञे इन्द्रमवर्द्धयद्भूमिव्यवर्तयत्। चकाराण्योप
 शान्दिवि ॥७॥ ७

(यत्) यत्पुरुषो महानारायणः (इन्द्रम्) ईश्वरं ब्रह्मविष्णुशि
वेन्द्राख्यं (अकर्ह्यत्) (यत्) यस्मात् (दिवि) परमेधाम्नि (सोपशे
म्) उपेत्य शयनं (चक्राणः) कुर्वन् (भूमिम्) व्यष्टिसमष्ट्याख्यभू
मिं ब्रह्माण्डं (व्यवर्त्तयत्) विशेषेण वर्त्तमानमकरोत् ॥ ७ ॥

भाषार्थः— १ यत्पुरुष महानारायणने २ ब्रह्माविष्णुशिव इन्द्रनाम
ईश्वरको ३ वदाया ४ जिसकारण ५ परमधाममें ६ शयन करने ७ हुए ८
व्यष्टिसमष्टिभूमिनाम ब्रह्माण्डको ९ विशेषकर वर्त्तमान किया ॥ ७ ॥

गोषत्तयश्च सक्तिनौ ऋषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता.

यदिन्द्राह यथा त्वमीशीयवस्व एक इत् । स्तोता
मे गोसखा स्यात् ॥ ८ ॥ ८

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यथा) (त्वम्) (एकः) (इत्) एव (वस्वः) प
रमेश्वर्यस्य ईशिषेतथा (अहम्) (यद्) यदि (ईशीय) योगेश्व
र्ययुक्तः स्यात् (दानीम्) (मे) मम (स्तोता) वाक् (गोसखा) म
हावाचांसखा (स्यात्) ८ ॥ ८ ॥

भाषार्थः— १ हे परमेश्वर २ जैसे ३ तुम ४ अकेले ५ ही ६ परमेश्वर्यके स्तो
त्री होनेसे ही ७ में ८ यदि ९ योगेश्वर्यवान होऊं तो १० मेरा ११ वाक् १२ महा
वाक्योंका सखा १३ होवै ॥ ८ - ८ ॥

मेधातिथिराङ्गिरस ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता.

पन्थ पन्थमित्सोतारं प्राधो वत मद्योय । सोमं
वीरोय भूरोय ॥ ९ ॥ - ९

हे (स्तोतारः) अभिषोतारोऽध्वर्यवः । वागाद्यत्विजोवा (मद्योय)
मद्योग्याय (वीरोय) विकान्ताय (भूरोय) शौर्यवते । इन्द्राय

परमेश्वरायवा (पुन्यम्) अधिदैवयज्ञेस्तुत्यं (पुन्यम्) अथा^६
 त्मयज्ञेस्तुत्यं (इत) एव (सोमम्) सोममात्मप्रतिविन्वा (अ^६
 धावत) अभिगमयत प्रयच्छतेत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाषार्थः हेअध्वर्युलोगोवावागादिऋत्विजो २ मद्योग्य ३ वीर ४ अ^६
 रइन्द्रवापरमेश्वरकेलिये ५ अधिदैवयज्ञमेंस्तुति योग्यवा ६ अथात्मय^६
 ज्ञमेंस्तुतियोग्य ७ ही ८ सोमवा आत्मप्रतिविंवको ९ समर्पणकरो ॥ ६ ॥

काएवः प्रियमेधऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इ^३द्व^३सो^३सु^३त^३म^३न्धः^३ पि^३वा^३सु^३पू^३र्ण^३मु^३द^३र^३म्। अ^३नो^३
 भ^३यि^३न्^३र^३रि^३मा^३ते ॥ १० ॥ १०

(अ^३ना^३भ^३यि^३न्) हे^३नि^३र्भ^३य^३(व^३सो) प्र^३श^३स्त^३ध^३न^३व^३न्नि^३न्द्र (इ^३द^३म्)
 (सु^३त^३म्) अ^३भि^३षु^३तं (अ^३न्धः) सो^३म^३ल^३क्ष^३ण^३ान्नु^३य^३था (सु^३पू^३र्ण^३म्)
 (उ^३द^३म्) भ^३व^३ति^३त^३था (अ^३पि^३व) (ते) तु^३भ्यं (र^३रि^३म्) द^३द^३ः ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हेनिर्भय २ प्रशस्तधनवन्निन्द्र ३ इदम् ४ अभिषुत ५ सोम
 लक्षण अन्नको जैसे ६ ७ उदरपूर्ण होने से ही ८ पान करो ९ आपके लिये
 १० हम देते हैं ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम् - (अ^३भ^३यि^३न्) हे^३भ^३य^३भू^३न्ध^३(व^३सो) य^३ज्ञ^३स्व
 रूप (अ) प^३रु^३मेश्वर (इ^३द^३म्) (सु^३त^३म्) अ^३भि^३षु^३तं (अ^३सु^३पू^३र्णं) प्रा^३णै
 र्यु^३क्तं (अ^३नु^३द^३र^३म्) त्य^३क्त^३भो^३गं (अ^३न्धः) आ^३त्मा^३त्प्र^३ति^३विं^३वरू^३पा^३न्नुं
 (पि^३व) (ते) तु^३भ्यं^३त्व^३द^३र्यं (र^३रि^३म्) द^३द^३ः रा^३दा^३ने ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हेभयभून्ध २ यज्ञस्वरूप ३ परमेश्वर ४ इदम् ५ अभिषुत
 ६ प्राणों से युक्त ७ त्यक्तभोग ८ आत्मप्रतिविंवरूप अन्नको ९ पान करो १०
 आपके लिये ११ हम देते हैं ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मविरचिते सा
मवेदीयब्रह्म भाष्ये इन्द्रो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥

सूतकक्षः श्रुतकक्षोवाञ्छरिषिर्गयित्रीछन्दः सूर्योदेवता-
उदूघेदभिः श्रुतो मघं वृषभन्नं यूपिसम् । अ
स्तारमेषि सूर्य ॥ १ ॥ ११

(सूर्य) हे सूर्य रूपेश्वर (घो) किरण मालया सहितस्त्वं (श्रुतो
मघं) सर्वदा देयत्वेन विख्यातधनं (वृषभम्) याचमानानां
धनवर्षितारं (नय्यूपिसम्) नरहितं नय्यं नरुहित कर्माणां
(अस्तारं) शत्रूणां क्षेपारं महानारायणां (उत्) उत्कर्षेण
(अभिदत्) समन्नादेव (एषि) प्राप्नोषितस्य शिरस्त्वात् साका
रणामाद्यत्वाच्च ॥ १ ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ हे सूर्य रूपेश्वर २ किरणमालासे युक्ततुम ३ सदा वि
ख्यातधनवाले ष्याचकोंके धनदाना ५ प्राणियोंके हितकारी कर्म करने
वाले ईशजयी महानारायणको ७ उत्कर्षके साथ ८ सब शेरसे ही ई प्रा
प्तकरते हौ उसके शिररूप और साकारों में आद्य होनेसे ॥ १ ॥ १२ विनियोगः

पूर्ववत्-
यदद्युक्त्वाच्च वृत्रहन्नुदगा अभिसूर्य । सर्वन्तादि
न्द्रनेवशो ॥ २ ॥ १२

हे (वृत्रहन्) पापनाशक यद्वा अपामावरकस्य मेघस्य हन्तः (इन्द्र)
ईश्वर (सूर्य) (अद्य) स्थापितस्थितिकाले (यत्) (कच्च) यत्किञ्चि
त्पदार्थजानं (अभि) अभिसुखी कृत्यं (उदगाः) उदयं प्राप्तवानसि
इण गतौ उत्पूर्वः तस्य लुडिः गादेशः (तत्) (सर्वम्) (ते) तव-

रूपेणाजीवस्यसहवर्तमानं (वृत्रेषु) पापेषु (वज्रिणाम्) इन्द्रतुल्यं
(इन्द्रम्) परमेश्वरं (हवामहे) आह्वयामः ॥६॥ १६

भाषार्थः - १हम २योगैश्वर्यनिमित्त ३तथास्वल्पभोगसाधननिमित्त
४अन्तर्यामीरूपसेजीवात्माकेसहचर ५पापपुरुषोंकेमध्य ६इन्द्रतुल्य ७
परमेश्वरको ८हमआह्वानकरतेहैं ॥६॥ १६

विशोकऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
अपिवत् कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रवाहे । तत्रादि
२१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
पौंस्यम् ॥७॥ १७

(इन्द्रः) परशुरामरूपः परमेश्वरः (सहस्रवाहे) सहस्रवाह्य-
त्व्यनृत्ये (कद्रुवः) कामरक्षस्यदेहस्य (सुतम्) अभिषुतं क्रो-
धं (अपिवत्) मनसिधारयामास (तत्र) तस्मिन्नावसरे (पौंस्य-
म्) वैष्णवं वीर्यं (आदिष्ट) आदीप्यत ॥७॥

भाषार्थः - १परशुरामरूपपरमेश्वरने २सहस्रवाहुनामराजाकेलि
ये ३कामरक्षदेहके ४अभिषुतक्रोधको ५मनमेंधारणकिया ६उसअ-
सरमें ७वैष्णवीपराक्रम ८प्रकाशितहुआ - ॥७॥

वसिष्ठऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
वयमिन्द्रत्वायवोभिप्रनोनुमो वृषन् । विद्धीत्वा
२१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
इस्यनोवसो ॥८॥ १८

हे (वृषन्) धर्मार्थकाममोक्षाणां वरिष्ठः (इन्द्रः) परमेश्वर (त्व-
यवः) त्वत्कामाः (वयम्) (त्वा) त्वां (प्राभिनोनुमः) प्रकर्षणा-
स्तुमः (वसो) हेज्योतिः स्वरूप (नः) अस्माकं (अस्य) आत्म-
नः (विद्धी) प्रार्थनां जानीहि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे धर्नार्थकाममोक्षकेदाता २ परमेश्वर ३ तेरे भक्त ४ हम ५ तुमको ६ स्तुत करते हैं ७ हे ज्योतिस्वरूप ८ हमारे ९ आत्मा की १० प्रार्थना को जानो ॥ ८ ॥

विशोकऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

आघो^३ये^३अग्नि^३मिन्ध^३ते^३स्तृण^३ान्ति^३वर्हि^३रानु^३षे^३क।
येषा^३मिन्द्रो^३युवा^३सखा^३ ॥ ८ ॥ १६

(यै) भक्ताः (आनुषेक) आनुपूर्व्याणानिरु० ६। ३। १६ (वर्हिः)
(स्तृणान्ति) (अग्निम्) (इन्धते) दीपयन्ति (येषाम्) भक्तानां
(युवा) अजरामरः (इन्द्रः) परमेश्वरः (सखा) ते (आघोः) निष्पा
पाः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ जो भक्त २ क्रमपूर्वक ३, ४ कुशास्तरण करते हैं ५ अग्नि को ६ दीप्त करते हैं ७ जिन भक्तों का ८ अजरामर ९ परमेश्वर १० सखा है वे ११ निष्पाप हैं ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् (यै) योगिनः (आनुषेक) आनुपूर्व्याणो
गविधिना (वर्हिः) माणसमूहं प्रजावैवर्हिः २। ६। १। २३ प्राणः
प्रजा १४। ४। ३। १४ (स्तृणान्ति) (अग्निम्) आत्माग्निं (इन्धते)
(येषाम्) योगिनां (युवा) अजरामरः (इन्द्रः) महानारायणः
(सखा) ते (आघोः) निष्पापाः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ जो योगी २ योगविधिसे ३ प्राणसमूह को ४ अन्तर्गत करते हैं ५ आत्माग्नि को ६ मज्जलित करते हैं ७ जिन योगियों का ८ अजरामर ९ महानारायण १० सखा है वे ११ निष्पाप हैं ॥ ८ ॥

विशोकऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

भिन्धि^३विष्वा^३अप^३द्विषः^३परि^३वाधो^३जही^३मृधः^३।वसु^३
 स्याह^३न्तदा^३भरे^३॥१०॥२०

हेपरमेश्वर^३(विष्वाः)सर्वाः(द्विषः)द्वेष्टीःशत्रुसेनाःकामादीनां
 सेनावा(अप)अस्मत्तःअपनीय(भिन्धि)विदारय(वाधः)हिं
 सित्रीः(मृधः)संग्रामान्(परिजही)हिंस्याःद्व्यचोतइति(१६।
 १।३५)दीर्घः(तत्)(स्याह)सहणीयं(वसु)धनंयोगधनंवा
 आभर)अस्मभ्यम्आहर॥१०॥२०

भाष्यार्थः - हेपरमेश्वर१सर्वद्वेषकरनेवालीशत्रुसेनावाकामादिकी
 सेनाको३हमसेदूरहटाकर४विदारणकरो५हिंसाशील६संग्रामोंको७न
 एकरो८उसर्दसहणीय१०धनवायोगधनको११दीजिये-॥१०॥२०
 इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसुनुज्वालापसादशर्म्मविरचितेब्र
 ह्मोव्याख्यानेद्वितीयाध्यायस्यद्वितीयःखण्डः

अथतृतीयः खण्डः

इहैव^३भृएव^३एषा^३कशा^३हस्तेषु^३यद्ददान्^३।नियामं^३
 चिच्च^३मृज्जते^३॥१॥२१-

(एषाम्)मरुतां(हस्तेषु)स्थिताः(कशाः)स्वस्ववाहनताडन
 हेतवः(यत्)(वदान्)यद्ददन्तिध्वनिकुर्वन्तितं(इहैव)अत्रैवस्थि
 त्वा(भृएव)भृणोमिसध्वनिविशेषः(चिच्चम्)विचित्रं(यामम्)
 रथं(न्यृजते)नितरामलङ्करोतिऋज्जतिःसाधनकर्मानि०६
 ।४।२४-॥१॥२१

भाष्यार्थः - १इनमरुनोंके२हाथोमेस्थिति३कशा४जो५धुनिकरतीहैं
 उसको६यहांहीस्थितहोकर७सुन्नाहंवहध्वनिविशेष८विचित्र९रथको

१० निरन्तर अलंकृत करती है ॥१॥ २१

अथाध्यात्मम् (एषाम्) प्राणानाम् । (हस्तेषु) स्थिताः (क
शाः) अनाहतशब्दाः । कशशब्दे (यत्) ऐश्वर्य (वदान्) कथय
न्तितंशब्दसमूहं (इहैव) अत्रैव समाधौ (भृएवे) भृणोमिस
अनाहतशब्दः (चित्रम्) विचित्रं (यामम्) योगरथं (न्यृजते)
नितरामलङ्करोति ॥१॥ २१

भाषार्थः - १ इन प्राणोंके २ वशमें वर्तमान ३ अनाहतशब्द ४ जिस
ऐश्वर्यको ५ कहते हैं उस शब्दसमूहको ६ यहां समाधिमें ही ७ सुन्नाइं प्रह
अनाहतशब्द ८ विचित्र ९ योगरथको १० निरंतर अलंकृत करता है ॥१॥

द्वयोस्त्रिशोक ऋषिर्गयित्री छन्द इन्द्रो देवता-

**दुमे उन्वा विचक्षते सखाय इन्द्र सोमिनेः । पुष्टावन्तो
यथा पशुम् ॥२॥ २२**

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर वा (दुमे) (सोमिनेः) अभिषुत सोमाः । आ
भिषुतात्मप्रतिविंवावा (सखायः) भक्ताः (त्वा) त्वां (उ) एव (वि
चक्षते) (यथा) (पुष्टावन्तः) सम्भृत घासाः पुरुषाः (पशुम्) गो-
पशुम्विपश्यन्ति ॥२॥ २२

भाषार्थः - १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ ये ३ अभिषुत सोम वा आत्मप्रतिविं
४ भक्त ५, ६ आपकी ही ७ देखते हैं ८ जैसे ९ घास डकट्टी करने वाले पुरुष १० गो
पशुको - २ ॥ २२

वत्सका एव ऋषिर्गयित्री छन्द इन्द्रो देवता-

**समस्य मन्ये वै विशो विभ्वी नमन्त कृष्टयः । समुद्रा
येव सिन्धवः ॥३॥ २३**

(विशः) परमेश्वरे निविशन्त्यः । विश प्रवेशे (विश्वोः) सर्वाः (कृष्ट-
यः) अजाः सुमुखवः (अस्य) परमेश्वरस्य (मन्यवे) ज्ञानयज्ञाय-
जपयज्ञाय वामनपूजायां बोधे च (संनमन्त) (इव) यथा (सिन्धु-
वः) स्यन्दनशीलानद्यः । इन्द्रियाणि वा (समुद्राय) समुद्राय मन-
सेवा । मनो वै समुद्रः श० ७।५।२।५२-॥३॥

भाषार्थः - १ परमेश्वरमें प्रवेश करने वाले २ सब ३ सुमुखजन ४ परमेश्वर
के ५ ज्ञानयज्ञवाजपयज्ञके लिये ६ भुक्ते हैं ७ जैसे ८ नदियां वा इन्द्रियां
९ समुद्रवामनके लिये-॥३॥

कुसीदीका एव ऋषिर्गायत्री छन्दो देवा देवताः

द्वानामिद्वामहन्तद्वृणीमहवैयम् । वृषाणां
मस्मभ्यमृतये ॥ ४ ॥ २४

(वृषाणाम्) धर्मार्थकाममोक्षाणां वर्षित्वृणां (देवानाम्) महापुरुष
पुरुषाणां (इत्) एव (महन्) (अवः) पालनमस्ति (तत्) पालनं
(अस्मभ्यम्) (ऊतये) स्वकीयरक्षणाय (वयम्) (आवृणीमहे)
आभिमुख्येन प्रार्थयामः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ धर्मार्थकाममोक्षके दाना २ महापुरुषसुरियों का ३ ही ४ व
डा ५ पालन है ६ उस पालनको ७, ८ निज रक्षाके लिये ९ हम १० चाहते हैं ॥ ४ ॥

मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो ब्रह्मणस्पतिर्देवता

सोमो नो अस्वराणां कृणुहि ब्रह्मणस्पते । कक्षी
वन्तयं प्रौशिजः ॥ ५ ॥ २५

(ब्रह्मणस्पते) हे प्राण । प्राणो हि ब्रह्मणस्पतिः श० १४।४।१।२३
(कक्षीवन्तं) कक्षपापं कक्षीपापी कामस्तद्वन्तं (सोमानं) तस्मा

देवसोमस्यात्मप्रतिविंवस्याभिषवकर्त्तारिं^४(अम्) ब्राह्मणांमां^५स्व
 णां) ब्रह्मवर्चस्विनं (कृणोहि) कुरु (यैः) अहं (शौशिजः) योगे-
 च्छयायुक्तोस्मि ॥५॥

भाषार्थः - १ हे प्राण २ कामी ३ और आत्म प्रतिविंव का अभिषव करने-
 वाले ४ मुझ ब्राह्मण को ५ ब्रह्मवर्चस्वी ६ करो ७ जोमें ८ योगेच्छासे युक्त हूं ९

अनुकस्ररषिगीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

वो^१ध^२न्मना^३इ^४दे^५स्तुनो^६वृ^७त्र^८हा^९ भूर्या^{१०}सुतिः^{११}। शृ^{१२}णोतु^{१३}
 श^{१४}क^{१५}श्री^{१६}षि^{१७}म् ॥ ६ ॥ २६

(वृत्रहा) पापस्यहन्ता (भूर्यासुतिः) बहुसोमरसेनात्मप्रतिविंवे-
 नवापूज्यः (शकः) सर्वशक्तिमान्परमेश्वरः। शक सामर्थ्ये (नैः)
 अस्माकं (वोधन्मनाः) ईप्सितानां ज्ञाता (इत्) एव (अस्तु) (श्री
 शिषम्) अस्मदीयांस्तुतिं (शृणोतु) ॥६॥२६

भाषार्थः - १ पापनाशक २ बहुन सोमरसवा आत्म प्रतिविंव से पूज्य ३ सर्व
 शक्तिमान् परमेश्वर ४ हमारे ५ ईप्सितों का ज्ञाता ६ ही ७ हो ८ हमारी स्तुतिको
 सुनो ॥६॥२६ (श्यावाश्वरषिगीयत्री छन्दः सविता देवता-

अ^१द्य^२नो^३दे^४व^५सवि^६तः^७ प्र^८जा^९व^{१०}त्^{११} सा^{१२}वी^{१३}ः^{१४} सौ^{१५}भ^{१६}ग^{१७}म्^{१८} पर^{१९}
 दु^{२०}र्ष^{२१}स्य^{२२} सु^{२३}व ॥ ७ ॥ २७

हे (सवितः) सूर्ययद्वा सर्वस्य प्रसविता (देवे) मायाक्रीडनकैः
 क्रीडनशील परमेश्वर (अद्य) (नैः) अस्मभ्यम् (प्रजावत्) पुत्रा
 द्युपेतं प्राणाद्युपेतं वा (सौभगम्) शोभनं धनं योगैश्वर्यम् वा (सौ
 वी) प्रेरय (दुर्षस्यम्) दुःस्वप्नं दुःखं दुःस्वप्नतुल्यं संसारम् वा (पर
 सुव) दूरे प्रेरय पुप्रेणो ॥७॥२७

(सङ्गमे) भृकुटौ (धिया) पराशक्तिरूपविद्यया (अजायत)
योगिनां दृष्टौ प्रादुर्भवति ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ वेदस्तमहापुरुष २ गगनमेघोंके ३ भ्रान्त गगनमण्डल
४ खौर ५ नाडियोंके ६ संयमभृकुटिमें ७ पराशक्तिरूपविद्याके द्वारा ८ योगि
योंकी दृष्टिमें प्रकट होता है ॥ ९ ॥

इरिमिव ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

प्रसम्प्राजञ्चूर्षणीनामिन्द्रं स्तोतानव्यं
गीर्भिः नरैर्नृषाहं मंथं हिष्ठम् ॥ १० ॥ ३०

हे स्तोतारः (चर्षणीनां) कृताकृतज्ञानवतां भक्तानां (सम्प्रा
जम्) अधीश्वरं (अनव्यम्) अनुः जीवस्तस्य दातारं (नरम्)
समष्टिजीवरूपं (नृषाहं) नृणां शत्रुं मनुष्याणामभिभवितारं
(मं हिष्ठम्) भक्तानां दातृतमं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गीर्भिः) वै
दिकमन्त्रैः (प्रस्तोत) प्रकर्षेण स्तुत ॥ १० ॥

भाषार्थः - हे स्तोताओ १ कृताकृतज्ञानवाले भक्तोंके २ अधीश्वर ३
जीवके दाता ४ समष्टिजीवरूप ५ शत्रुओंके जयकरनेवाले ६ भक्तोंके महा
दानी ७ परमेश्वरको ८ वैदिकमन्त्रोंसे स्तुत करो - ॥ १० ॥

इति द्वितीयस्यार्द्धः प्रपाठकः

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वाला प्रसादशर्माविरचिते छन्दो
व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः खण्डः

अथ चतुर्थः खण्डः

ऋतकस्रषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अपादुशिष्यन्धसः सुदस्यप्रहोषिणोः । इन्द्रो

रिन्द्रो^३यवो^१शिरः^३॥१॥३१

(शि^१प्री)(श)^१ महानारायणाः (इ^३) शक्तिः (प) ब्रह्मा (रु) रुद्रः
(ष) विष्णुः यस्यरूपाणि स (इन्द्रः) परमेश्वरः (सुदक्षस्य) यो
गक्रियायां कुशलस्य (महोषिणाः) प्रकर्षेणा देवानिन्द्रियरूप-
हविर्भिर्जुह्वतः (अन्धसः) अन्नरूपस्य (इन्द्रोः) मनसः । मनोच-
न्द्रमाश० १४।४।१।१७ एववै सोमो राजा देवानामन्नं यच्चन्द्र-
माः श० २।४।४।१५ (यवो^१शिरः) यवेन प्राणो न सहितं मानसस्य
यी । अन्नं हि प्राणाः श० २।२।१।६ । विष्णोः शिरः पपात तत्पतित्वा
सावादित्योः भवत् श० १४।१।१।१० (उ) एव (अपात्) अपि वत् ।

भाष्यार्थः - १ शक्ति सहित विदेव रूपवाले २ परमेश्वरने ३ योगक्रियामे
कुशल ४ देवताओंको इन्द्रियरूपहविसे पूजनेवाले ५ अन्नरूप ६ मनके ७ प्राण
सहित मानस सूर्यको ८ ही ९ पानक्रिया - ॥१॥

मेधातिथि ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इ^३मा^१उ^३त्वा^३पुरु^३वसो^३भि^३प्र^३नो^३न^३वु^३गिरः^३ । गो^३वो^३वत्स^३न्^३

धे^३न^३वः^३ ॥२॥३२

हे (पुरु^३वसो) बहुधनपरमेश्वर (त्वो) त्वां (उ) एव (इ^३माः) (गिरः)
वेदवाचः (अभि) अभिमुखीभूताः सत्यः (प्र^३नो^३न^३वुः) प्रकर्षेणा पु-
नः पुनः स्तुवन्ति प्राप्नुवन्ति । नोति स्वव्याप्ति कर्मा (न) यथा (धे^३
नवः) (गो^३वः) (वत्स^३म्) अभिलक्ष्य हम्भारवं कुर्वन्ति ॥२॥

भाष्यार्थः - १ हे बहुधनी परमेश्वर २ तुमको ३ ही ४ ये ५ वेदवाचन ६ सन्तु
खहोते ७ वारम्बार स्तुन करते है ८ जैसे ९, १० गौ ११ वत्सको देखकर हम्भाश
ब्द करती है ॥२॥

गोतम ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अत्राह गौरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् । इत्थो
चन्द्रमसो गृहे ॥ ३ ॥ ३३

(अत्र) विचार काले (इत्थो) अनेन प्रकारेण (आह) वेदो ऽ क
थयन् (अमन्वत) विद्वांसो ऽ जानन् (गौ) ब्रह्मांशुरूपस्य (त्वष्टुः)
महानारायणस्य (नाम) आत्मा (चन्द्रमसः) मनसः (गृहे) ना
नसकमले (अपीच्यम्) अन्तर्हितं जीवोपाधिना ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ यहां विचार काल पर २ इस प्रकार से ३ वेदने कहा ४ विद्व
नों ने जाना ५ ब्रह्मांशुरूप ६ महानारायण का ७ आत्मा ८ मानसकमल में
९ जीवोपाधि से अन्तर्हित है ॥ ३ ॥

भरद्वाज ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

यदिन्द्रो अने यदितो महीरपो वृषन्तमः तत्रपूषा
भुवत्सचा ॥ ४ ॥ ३४ ॥

(यद्) यदा (वृषन्तमः) स्वांशुभिरतिशयेन वर्धितः (इन्द्रः) म
हानारायणः (अपः) दिव्यपार्थिवदेहानां जननीः (रितः) प्राप्तः
सन् (महीः) पार्थिवदिव्यभूमि (अनयत्) (तत्र) स्थिरत्चनायां
(पूषा) व्याप्तिसमष्टि सूर्यः (सचा) सहायः (भुवत्) ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ जब २ निज किरणों की वर्षा करने वाले ३ महानाराय
ण ने ४ दिव्य पार्थिव देहों की जननी जलों को ५ प्राप्त करते हुए ६ पार्थिव
दिव्यभूमियों को ७ उत्पन्न किया ८ वहां स्थिरत्चना में ९ व्याप्तिसमष्टि सूर्य
१० सहायक ११ हुआ ॥ ४ ॥

विन्दुः पूतदक्षो वा ऋषिर्गायत्री छन्दो गौर्देवता

गौ॒ह्ये॒यति॑ म॒रुतो॑ ॥ अ॒वस्यु॑ मी॒तो म॑घो॒नाम् ।

यु॒क्तौ व॑न्ही॒रथो॑नाम् ॥ ५ ॥ ३५

(यु॒क्तौ) ब्रह्मा॑णि यु॒क्तौ (रथो॑नाम्) ब्राह्मा॑दिलोकानां (व॑न्हीः) प्राप॑का (म॒घोना॑म्) धन॑वतां (म॒रुता॑म्) वैश्या॑नाम् । विशो॑ वै म॒रुतः॑ श० २। ५। १। १२ (मा॒तो) (गौः) दि॒व्यभो॑मरूपा॒ष्टिर्वी॑ (अ॒वस्युः) तेभ्योऽन्नं॑ काम॒य मा॑ना॒सती॑ (ध॒यति॑) पोष॒यति॑ ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ ब्रह्ममें युक्त २ ब्राह्म आदिलोकों की प्रापक ३, ५, ६ धनवान् वैश्यों की माता ७ दिव्यभोम रूप षाष्टिर्वी ८ उनके लिये अन्न को चाहती ९ पालन करती है - ॥ ५ ॥

श्रुत॑क॒क्ष ए॒व सु॒क सो॒वाञ्छ॑पि॒र्गाय॑त्री छन्द॒ इन्द्रो॑ दे॒वता॑
उ॒पे॒नो॑ ह॒रिभिः॑ सु॒न या॑हि म॒दानां॑ प॒ते । उ॒पे॒नो॑ ह॒रि
भिः॑ सु॒नम् ॥ ६ ॥ ३६

हे (म॒दानां॑ प॒ते) अ॒हङ्का॑र॒स्पदा॑नां जी॒वानां॑ स्वा॒मिन् पर॑मे॒श्वर॑
त्वं (ह॒रिभिः) ब्रह्म॑ विष्णु॒ महेश॑ रूपैः (नः) अ॒स्माकं॑ (सु॒नम्) अ॒
भिषु॑त मा॒त्मप्र॑ति॒विंवं॑ (उ॒पया॑हि) प्रा॒प्नुहि॑ तथेन्द्र॒ रूपस्त्वं॑ (ह॒रि
भिः) अ॒श्वैः (नः) अ॒स्माकं॑ (सु॒नम्) अ॒भिषु॑त सो॒मं (उ॒प) उ॒पया॑
हि प्रा॒प्नुहि॑ ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ हे जीवों के स्वामी परमेश्वर तुम २ ब्रह्मा विष्णु महेश रूपों से ३ हमारे ४ अभिषुत आत्मप्रतिविंव को ५ प्राप्त करो तथा इन्द्र रूप तुम ६ घोड़ों के द्वारा ७ हमारे ८ अभिषुत सोमको ९ प्राप्त करो - ॥ ६ ॥

श्रुत॑क॒क्ष ए॒व सु॒क सो॒वाञ्छ॑पि॒र्गाय॑त्री छन्द॒ इन्द्रो॑ दे॒वता॑
इ॒ष्टो॒हो॒त्रो॒ अ॒स्त॒स्य॑ तेन्द्र॒ वृ॒धन्तो॑ अ॒श्वैरो॑ अ॒च्छो॒व

^{३१२}भृथ^{३२}मोजसा ॥७॥ ३७

हे यजमानाः (अध्वरे) द्रव्य यज्ञे योग यज्ञे वा (अवभृथम्) (अ-
च्छ) आप्तुं (मोजसा) मन्त्रवलेन (इन्द्रम्) परमेश्वरं (वृधन्त-
वर्द्धयन्तः) (इष्टाः) प्रियाः (होत्राः) ह्यन्त इति होत्राः आहुत य-
स्ताः (अस्तस्य) विस्तजत दत्त इत्यर्थः ॥७॥

भाषार्थः - हे यजमानो १ द्रव्ययज्ञवायोगयज्ञमें २ अवभृथस्नान ३ प्रा-
प्त करनेको ४ मन्त्रवलसे ५ परमेश्वरको ६ बढ़ानेनुम ७ प्रिय आहुतियोंको
८ छोड़ो ॥७॥

वत्सः काएव ऋषिर्गायत्री छन्दो यजमानो देवता-

^{३२३}अहमि^{३१२}न्द्रि^{३२}पितु^{३३}स्परि^{३२}मेधा^{३२}मृतस्ये^{३१}जग्रह^{३२}। अहं^{३१}
^{३१}सूर्ये^{३२}इवाजनि ॥८॥ ३८

(अहम्) जीवात्मा (ऋतस्य) सत्यस्य (पितुः) सर्वपालकस्य म-
हानारायणस्य (मेधाम्) ज्ञानशक्तिं (इत्) एव (परिजग्रह) परि-
गृहीतवानस्मि (हि) यस्मात् (अहम्) (सूर्यः) (इव) (अर्जनि)
प्रादुरभूवद्देहाभिमानत्यागेनेत्यर्थः ॥८॥

भाषार्थः - १ जीवात्मा मेंने २ सत्य ३ सर्वपालक महानारायण की ४ ज्ञा-
नशक्ति को ५ ही ६ ग्रहण किया है ७ जिस कारण ८ मैं ९, १० देहाभिमानत्याग
से सूर्यकी समान ११ प्रकट हुआ ॥८॥

शुनः शेष ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

^{३१}रेवती^{३२}न्तः^{३३}सध^{३२}मादे^{३१}इन्द्रे^{३२}सन्तु^{३३}तुवि^{३१}वोजाः । सुमन्तो^{३२}
^{३१}योभि^{३२}र्मदे^{३३}म ॥९॥ ३९

(इन्द्रे) अन्नर्यामिनि परमेश्वरे (सधमादे) अस्माभिः सह हर्षयु

क्ते सति (नः) अस्माकं (रेवतीः) रेवत्यः महावाचः। वाग्वै रेवती श
 ३।८।१।१२ (तुविवाजाः) वद्भवलाः नि० २।६।३८ (सन्तु) (याभिः)
 वाग्भिः (सुमन्तः) ब्रह्माण्डरूपान्नवन्तः वयं नि० २।७ (मदेम) ह
 प्येम ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ अन्तर्यामी परमेश्वरके २ हमारे साथ हर्षयुक्त होने पर ३
 हमारे ४ महावाक्य ५ वद्भवली ६ होवे ७ जिन महावचनोके द्वारा ८ ब्रह्माण्ड
 रूपान्न वाले हम ९ हर्षित होवें ॥ ६ ॥

मनु शेषो वामदेवो वा ऋषिर्गायत्री छन्दो जीवेशो देवते-

सामः पूषा च चेततू विष्वासां सुक्षितीनाम्।

देवत्रारथ्याहितो ॥ १० ॥ ४०

(देवत्रा) विद्वत्सु। विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३।१० (रथ्योः) स्थू
 लसूक्ष्मशरीरयोः रहति गति कर्मा (हितो) हितौ हित करो (सो
 मः) जीवात्मा (च) (पूषा) अन्तर्यामी (विष्वासाम्) सर्वासाम्
 (सुक्षितीनाम्) योगभूमिनां विधिं (चेततुः) जानीतः ॥ १० ॥ ४०

भाष्यार्थः - १ विद्वानो मे २ स्थूलसूक्ष्मशरीर ३ का हितकारी ४ जीवात्मा
 ५ और ६ और अन्तर्यामी ७ सब ८ योगभूमियों की विधिको ९ जानने है - ॥ १०

॥ ४० ॥ इति श्री भृगुवशावतसंज्ञीनाथूरामसूत्रज्वालाप्रसादशर्माविर
 चिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थं खंडः

अथ पञ्चमः खण्डः

मृतकस्य ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

पोन्तमावो अन्धस इन्द्रममि प्रगायत। विष्वा
 सां हं शतं कतुमं हं हिष्टञ्चर्षणीनाम् ॥ ११ ॥ ४१

हेऽऋत्विजः । वागाद्युत्विजोवायूयं (वेः) युष्माकं (अन्धसः) सोम
स्यात्मप्रतिविंबस्यवा (आपोन्तम्) आभिमुख्येनपिवन्तं । पापा-
नेछान्दसः शपोलुक (विष्वासाहम्) सर्वेषां शत्रूणामभिभवि-
तारं (शतकतुम्) अनन्नकर्माणां (चर्षणीनाम्) कृताकृतज्ञान
वतां भक्तानां (मंहिष्ठम्) यष्टव्यत्वेन पूजनीयं (इन्द्रम्) परमे-
श्वरमिन्द्रं वा (अभिप्रगायत) प्रकर्षेणाभिष्टुत ॥ १॥

भाषार्थः - हेऽऋत्विजो वा वागाद्युत्विजो १ तुम्हारे २ सोमवा आत्म प्र-
तिविंबके ३ सन्मुखपानकर्ता ४ सब शत्रुओं के तिरस्कर्ता ५ अनन्नकर्मा ६ कृ-
ताकृतज्ञान वाले भक्तों के ७ पूजनीय ८ इन्द्र वा परमेश्वर को ९ भले प्रकार
गाओ - ॥ १॥ (वसिष्ठऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता)

प्रवेन्द्राय मादने थं हे विष्वाय गायत । सखा
यः सोमपात्रे ॥ २ ॥ ४२

हे (सखायः) भक्ताः (वेः) यूयं (हर्ष्यश्वाये) हरिनामकाश्वाय-
यद्वा ब्रह्म विष्णु महेशेषु व्यापकाय । अश्नुते व्याप्नोति सश्वः
(सोमपात्रे) सोमपात्रे प्रतिविंब पात्रे वा (इन्द्राय) इन्द्राय महाना-
यणा यवा (मादनेम्) मदकरं स्तोत्रं (प्रगायत) प्रपठत ॥ २॥

भाषार्थः - हे भक्तो २ तुम ३ हरिनामक श्व वाले ब्रह्मा विष्णु महेशों
में व्यापक ४ सोपाना वा प्रतिविंब पात्रा ५ इन्द्र वा परमेश्वर के लिये ६ मदकर
स्तोत्रको ७ पठ करो - ॥ २॥

मेधातिथि प्रियमेधा वृषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

वैयमुत्वा तदिदथा इन्द्रत्वायन्तः सखायः । केणो
उकथोभिर्जरन्ते ॥ ३ ॥ ४३

हे^१ (इन्द्र) परमेश्वर (त्वायन्तः^२) त्वामिच्छन्तः (सखायः^३) भक्ताः
 (वयम्) (तदि^४दर्याः) यत्त्वद्विषयं स्तोत्रं तदेव प्रयोजनं येषां तां ह
 शाः सन्तः (त्वा) त्वां (उ^५) एव (जरामहे) स्तूमहे यस्मात् (के^६एव)
 मेधाविनः नि० (उक्त^७थेभिः) उक्तयैः शस्त्रैः (जरन्ते^८) त्वां स्तुवन्ति
 परात्परत्वात्सर्वात्मकत्वाच्च ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुमको चाहते ३ भक्त ४ हम ५ आपके स्तो
 त्रकोही चाहते ६, ७ तुमकोही ८ स्तुत करते हैं जिस कारण ९ मेधावी १० श-
 स्त्रों से ११ आपकी ही स्तुति करते हैं आपके परात्पर और सर्वात्मक होने से। ३

स्तुतकस्य ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्राय मद्दने सुतम्परिष्टो भन्तु नो गिरः । अर्क
 मर्चन्तु कारवः ॥ ४ ॥ ४४

(मद्दने) मदन शीलाय (इन्द्राय) इन्द्राय परमेश्वराय वा (सुत-
 म्) अभिषुतं सोम मात्म प्रति विम्बं वा (नः) अस्माकं (गिरः) मुखे
 च्चारिता वेदवाचः (परिष्टो भन्तु) परितः स्तुवन्तु तथा (कारवः) स्तो
 तारः नि० ३।१५ (अर्कम्) सर्वैरर्चनीयमिन्द्रं परमेश्वरम्वां (अर्च-
 न्तु) पूजयन्तु ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ मदन शील २ इन्द्र वा परमेश्वरके लिये ३ अभिषुत सोम-
 वा आत्म प्रति विंबको ४ हमारे ५ मुखे च्चारिता वेदवाच ६ सब ओर से स्तुत क-
 रो ७ तथा स्तोता लोग ८ सब से पूजनीय इन्द्र वा परमेश्वरको ९ पूजन करो ॥ ४ ॥

(इरिमिं ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता)

अयन्त इन्द्र सोमो निपूता अधिवाहिषि । एहीम
 स्यद्रवापिव ॥ ५ ॥ ४५

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर वा (ते) तुभ्यं त्वदर्थं (अथम्) (सोमः) सोमः । आत्म प्रति विंबो वा (आधि वर्हिषि) वेद्यां आस्तीर्णे दर्भे । सुपुम्णा याम्वा (निपूतः) अभिषवादि संस्कारैः शोधितः (अस्य) (इम्) सारस मृतं मानस सूर्यम्वा (एहि) प्राञ्जुहि (द्रव) गच्छ (पिपि) पानं कुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ आपके लिये ३ यह ४ सोम वा आत्म प्रति विंब ५ वेदी में स्तीर्ण दर्भ वा सुपुम्णा नाडी पर ६ अभिषव आदि संस्कारों से शोधित हुआ ७ इसके सारस मृत वामानस सूर्यको ८ प्राप्त करो ९ जाओ १० पान करो ॥ ५ ॥ मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

सुरूपकृत्नु मृतये सुदुघोमिव गोदुहे । जुहुमसि घवि घवि ॥ ६ ॥ ४६

(सुरूपकृत्नुम्) सुरूपाणां ब्रह्मविष्णु महेशादीनां कर्त्तारं परमेश्वरं (ऊतये) शत्रुभ्यः संसारद्वारक्षणाय (घवि घवि) प्रतिदिनं (जुहुमसि) आह्वयामः (इव) यथा (गोदुहे) गोदोह कर्मार्थं (सुदुघाम्) सुदुदोग्धीं गामाह्वयन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः - ब्रह्माविष्णु महेशादि सुरूपों के कर्त्ता परमेश्वरको २ शत्रुओं वा संसार से रक्षा के लिये ३ प्रतिदिन ४ हम आह्वान करते हैं ५ जैसे ६ गोदोह कर्म के लिये ७ अच्छी दोग्धी गौको ॥ ६ ॥

त्रिशोक ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अभित्वा वृषभा सुते सुते धं स्तेजामि पीतये । तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥ ७ ॥ ४७

(वृषभ) धर्मार्थकाम मोक्षाणां वर्पितः (अ) महानारायण (सुते)

अभिषुतेसति (सुतम्) सोममात्मप्रति विंवम्वा (पीतये) पानाय
 (त्वा) त्वां (अभिस्त्जामि) ददामि (अ + इ) हे महालक्ष्मीना
 रायणा (त्स्य) प्रीणानेनु० पर० सक० सेट् (मदम्) (व्यर्त्तुहि) वि
 शेषेण प्राप्नुहि ॥७॥

भाष्यार्थः - १ हे धर्मार्थकाममोक्षकेदाना २ महानारायण ३ अभिषुत
 होनेपर ४ सोमवा आत्मप्रतिविंवको ५ पानकरनेके लिये ६ आपको ७ देता हूँ
 ८ हे महालक्ष्मीनारायण ९ त्वम्प्रहो १० मदको ११ प्राप्त करो ॥७॥

कुसीदऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

य इन्द्रे चमसेषु सोमं चमसेषु सुतः ॥ पिवेदस्य
 त्वं मीशिषे ॥ ८ ॥ ४८

हे (इन्द्र) इन्द्रपरमेश्वरवा (यो) (सोमः) सोमः । आत्मप्रतिविं
 वा (चमसेषु) अधिषवणा फलकेषु । मनो हृदयभृक्कटिषुवा (ते)
 त्वदर्थं (सुतः) अभिषुतः (चमसेषु) भक्षणापात्रेषु । कमलेषुवा । च
 सुप्रदने (आ) आवर्त्तते (अस्य) (पिवं) पानं कुरु (त्वम्) (इत्)
 (मीशिषे) ईश्वरो भवसि ॥ ८ ॥

भाष्यार्थः - १ हे इन्द्रवा परमेश्वर २ जो ३ सोमवा आत्मप्रतिविंव
 षवणा फलकवामनहृदयभृक्कटिमें ५ आपके लिये ६ अभिषुत हुआ ७ भक्ष
 णापात्रवा कमलोंमें ८ वर्त्तमान है ९ इसका १० पानकरो ११ तुम १२ ही १३
 ईश्वर हो - ॥ ८ ॥

सुन शेषऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

योगे योगे त्वं स्तरे वाजे वाजे हवामहे । सखायं
 इन्द्रमृतये ॥ ९ ॥ ४९ ॥

(सखायः) भक्तावयं (योगे) (योगे) प्रत्येकयोगानुष्ठाने (वाजे) (वा-
जे) कामादीनां प्रत्येकसङ्ग्रामे (तवस्तरम्) अतिशयेन वलिनं नि-
२८ (इन्द्रम्) परमेश्वरं (ऊतये) संसाराद्रक्षाणाय (हवामहे) आ-
ह्वयामः ॥ ८ ॥

भाष्यः - १ भक्तहम २, ३ प्रत्येकयोगानुष्ठानमें ४, ५ कामादिके प्रत्येक
संग्राममें ६ अतिवली ७ परमेश्वरको ८ संसारसे रक्षाके लिये ९ हम आह्वान
करते हैं - ॥ ८ ॥ मधुच्छन्दाऋषिर्गायत्री छन्दो देवता

आत्वेतो निषीदतेन्द्रमभिप्रगायत । सखायैः
स्तोमवाहसः ॥ १० ॥ ५०

हे (स्तोमवाहसः) यज्ञे विवृत् पञ्चदशादिस्तोमानां प्रापकाः । प्रा-
णायामकर्तारो वा । प्राणा वैस्तोमाः शः ८ । ४ । १ । ४ (सखायैः) ऋ-
त्विजः । सखिवत्प्रिया भक्तावा (तु) क्षिप्रं (आएत) द्रव्ययज्ञं योग-
यज्ञं वा ५५ गच्छत (आनिषीदत) आगत्योपविशत (इन्द्रम्) इ-
न्द्रं परमेश्वरं वा (अभिप्रगायत) सर्वतः प्रकर्षेणास्तुत ॥ १० ॥

भाष्यः - १ हे यज्ञमें विवृत् पञ्चदश आदिस्तोमके प्रापक वा प्राणायाम-
कर्त्ता २ ऋत्विजो ३ शीघ्र ४ आशो ५ आकरवैवो ६ इन्द्र वा परमेश्वरको ७
सवसोरसे भले प्रकार गाओ स्तुत करो - ॥ १० ॥

इति ऋषिभृगुवंशावतंस ऋषिनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशम्भिरिच्छिते
सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य पञ्चमः खण्डः

अथ षष्ठः खण्डः

विष्णामिऋषिर्गायत्री छन्दो महानारायणो देवता

इदं ध्येनोर्जसा सुते ध्ये रोधानास्यते । पिवा

त्वा^३स्वर्गिर्वे^३णाः॥१॥५१

हे^३(राधानाम्) राधांशभूतानां देवीनां (पते) स्वामिन् (गिर्वे^३णः)
गीर्भिवे^३द्वचने^३र्वननीयसंभजनीय (अ) महानारायण (अस्य)
भक्तस्य (भोजसा) योगवलेन (हि) (सुतम्) (इदम्) अभिपुत्र
मात्मप्रतिविं (अनु) अनुलक्ष्य (तु) क्षिप्रं (पिवे) ॥१॥

भाषार्थः - १, २ हे राधांशभूतदेविओंके स्वामी ३ वेदवचनों से भजनीय
४ महानारायण ५ इस भक्तके योगबलसे ७ ही ८, ९ इस अभिपुत्र आत्मप्र
तिविंको १० अनुलक्षणकर ११ शीघ्र १२ पानकरो ॥ १॥

मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दो इन्द्रो देवता-

महा^३ ॐ इन्द्रः^३ पुर^३श्चनो^३ महित्व^३ मस्तु^३ वज्रिणो^३। द्यौ^३
र्न^३प्रथिना^३शवः^३॥२॥५२

(पुरश्चनः) पुरः व्यष्टि समाष्टि शरीराण्येवचनोऽन्नयस्यतादृशः
(इन्द्रः) परमेश्वरो महानारायणः (महान्) परात्परः (वज्रिणो)
ज्ञानवज्रधुक्ताय परमेश्वरायैव (महित्वम्) ब्रह्माण्डरूपत्वं (प
स्तु) यस्य शक्त्या भूत्या (प्रथिना) पृथिवी (र्न) च (द्यौः) स्वर्गलो
कः (शवः) मृतदेहो भवतीत्यर्थः ॥२॥

भाषार्थः - १ व्यष्टिसमाष्टि रूप अन्नवाला २ परमेश्वर महानारायण
३ परात्पर है ४ ज्ञानवज्रधर परमेश्वरके लिये ही ५ ब्रह्माण्ड रूपत्व ६ हो ७ नि
सकी शक्तिसे भूत्या पृथिवी ८ और ९ स्वर्गलोक १० मृतदेह होते हैं - ॥२॥

कुसीद कण्ठवक्त्रिर्गायत्री छन्दो इन्द्रो देवता

प्रा^३तूने^३ इन्द्र^३ क्षु^३मन्तो^३ ज्वि^३त्र^३ ग्रा^३भं^३ सद्^३भाय^३
महाहस्ती दक्षिणान ॥३॥५३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (महाहस्ती) महाहस्तवान्त्वं (नः) अस्माकं
 (सुमन्तम्) अन्नवन्तं भोगवन्तं (आश्राभम्) समन्तात् मायावि
 कारणां गृहीतारं (चित्रम्) अद्भुष्टमात्रं जीवात्मानं (दक्षिणेन)
 हस्तेन (तू) क्षिप्रं (सद्भुभाय) सद्भुहाण संसारकूपा दुष्कर ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ वड़े हाथवाले तुम ३ हमारे ४ अन्नभोगवान् ५
 सबओर मायाके गृहीता ६ अंगुष्ठ मात्र जीवात्मा को ७ हाथसे ८ शीघ्र ९ ग्रहण
 कर संसारकूपसे उद्धार कर ॥ ३ ॥

प्रिय मेघऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अभिप्रगोपतिङ् गिरिन्द्र मर्चयथा विदे । सूने ७
 सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४ ॥ ५४

(सत्यस्य) ब्रह्मणाः (सूनेम्) पुत्रं तेन प्रादुर्भूतं (सत्पतिम्) सतां
 क्तानां पालकं (गोपतिम्) गोपालं श्रीकृष्णं गोलोक स्वामिनं
 (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गिरौ) वेदवाचा (यथा) (प्रविदे) अहम्वेदः प्र-
 कर्षेण जानामि तथा (अभ्यर्च) आभिमुख्येन पूजय ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १, २ ब्रह्मपुत्र ब्रह्मसे प्रादुर्भूत ३ भक्तपालक ४ गोपाल गोलोक
 स्वामी श्रीकृष्णानाम ५ परमेश्वर को ६ वेदवचनसे ७ जैसे ८ मैं वेदजान्ता हूँ
 तेसेही ९ सन्मुख होकर पूजन करे ॥ ४ ॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

कया न श्चिन्वन् आभुवदती सदा वृधः सखा । कया
 श्चिहया वृतौ ॥ ५ ॥ ५५

(सदा वृधः) सर्वदा वर्द्धमानः (चिन्वन्) अद्भुतः ज्योतिः स्वरूपत्वेन
 विलक्षणाः (सखा) साखिवत्प्रियः परमेश्वरः (कया) (उती) ऊत्या

तर्पणेन । सुपांसु लुगित्यादिना (३।१।३६) पूर्वसर्वादीर्घः (क
या) (शचिष्ठया) प्रज्ञावत्तमया (वृता) वर्तनेन कर्मणा (नः) प्र
स्माकं (आभुवत्) अभिमुखो भवेदिति सदा विचारणीयमि-
त्यर्थः ॥ ५ ॥

भाषार्थः

१ सर्वदा वर्द्धमान २ ज्योतिस्वरूप होने से विलक्षण ३ सखाकी समान प्रिय
परमेश्वर ४.५ किस तर्पण ६ और किस ७, ८ प्रज्ञावत्तम कर्मके द्वारा ९ हमारे
१० सन्मुख होवै यह सदा विचार योग्य है ॥ ५ ॥

ऋतकसञ्जयि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

त्यमुवः सत्रासाह विष्वा सुगीर्वायतम् । आच्यो
वयस्युतये ॥ ६ ॥ ५६

हे मेधाविन्यजमानत्वं (तम्) (सत्रासाहम्) सत्येन ज्ञानेन माया
पाधीनामभिभवितारं (वः) युष्मदीयेषु (विष्वासु) सर्वेषु (गीर्वा)
स्तोत्रेषु (आयतम्) विस्तृतं सर्वरूपत्वात् (यम्) परमेश्वरं (उ) ए
व (ऊतये) रक्षणाय (आच्यवयसि) आभिमुख्येन गमयसि च्यु
डु-गतौ ॥ ६ ॥

भाषार्थः - हे मेधावी यजमान तुम १ उस २ सत्य ज्ञान द्वारा माया उपाधि
योंके अभिभविता ३ तुम्हारे ४ सब ५ स्तोत्रोंमें ६ सर्व रूपसे विस्तृत ७ परमेश्वर
को ८ ही ९ रक्षाके लिये १० सन्मुख प्राप्त करने हो ॥ ६ ॥

मेधातिथिञ्जयि गीयत्री छन्दः सदसस्पतिर्देवता-

सदसस्पतिमद्भुतमिन्द्रस्य काम्यम् । सनिमे
धामयासिषम् ॥ ७ ॥ ५७

(सदसस्पतिम्) भक्त सभायाः पालकं (अद्भुतम्) मानसविधिना

५ द्रुतं (प्रियम्) चतुष्पदार्थदानेन प्रियं (काम्यम्) मेधाविभिर्वा-
 ज्छनीयं (इन्द्रस्य) (सनिम्) परमेश्वरस्य पूजनं (मेधाम्) अर्चा हि
 बुद्धिञ्च (अयासिषम्) प्राप्तवानस्मि ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ भक्तसभाकेपालक २ मानसविधिसे अद्रुत ३ चतुष्पदार्थ-
 दानसे प्रिय ४ मेधाविदोंसे वांछनीय ५ परमेश्वरके ६ पूजनको ७ और पूजनयो-
 ग्य बुद्धिको भी ८ मैंने प्राप्त किया है ॥ ७ ॥

वामदेव ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

ये^३त^३प^३न्थो^३ऽ^३धो^३दि^३वो^३य^३भि^३व्य^३श्व^३मे^३र^३यः^३ उ^३त^३ज्जो^३ष^३न्तु^३नो^३
 भु^३वः^३ ॥ ८ ॥ ५८

हे परमेश्वर (यै) (पन्थोः) देवयानादिभेदैर्वहु संख्याकाः (दिवः)
 महानारायणलोकस्य (अधः) अधस्तात् सन्ति (उत) अपि च (यै
 भिः) यैर्मागैः (अश्वम्) मानससूर्यजीवात्मानं । असौवा आदि-
 त्यण्डोऽश्वः श० ६ । ३ । १ । २६ (व्यैरयः) विशेषेण प्रेरयसि (ते)
 पन्थाः (नः) अस्माकं (भुवः) भक्तिभूमेर्योगभूमेर्वा (ज्जोषन्तु)
 ष्टएवन्तु ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ जो २ मार्गदेवयान आदिभेदोंसे वहुत संख्यावाले ३ महा-
 नारायणलोकसे ४ नीचे हैं ५ और ६ जिन मार्गोंसे ७ मानससूर्यजीवात्मा-
 को ८ विशेषप्रेरणकरते हैं ९ वे मार्ग १० हमारी ११ भक्तिभूमिवा योगभूमि
 के १२ जोताहों ॥ ८ ॥

श्रुतकस्य ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

भ^३द्र^३म्भ^३द्र^३न्^३श^३भ^३र^३ष^३मूर्^३जं^३ १२ शतकतो । य^३दि^३द्र^३
 मृ^३ड^३या^३सि^३नः ॥ ९ ॥ ५९

हे (शतक्रतो) बहु कर्मन् बहु यज्ञवा (इन्द्रे) इन्द्र परमेवश्वरवा (भद्रम्) सुखोत्पादकं (इपम्) अन्नं (भद्रम्) सुखोत्पादकं (ऊर्जम्) रसञ्च (नः) अस्मभ्यं (आभर) आहर सम्पाद्य देहि (यद्) यदि (नः) अस्मान् (मृडयासि) सुखयसि ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ बहु कर्मन् बहु यज्ञवा २ इन्द्रवापरश्वर ३ सुखोत्पादकं ४ अन्नं ५ सुखोत्पादकं ६ रसकोभी ७ हमें ८ दो ९ जो १० हमको ११ सुखी करते हो ॥ ९ ॥ विन्दुर्ऋषि गायत्री छन्दो मरुताद्या देवताः

अस्ति सोमो अयं सुतः पिवन्त्यस्य मरुतः उत स्वराजो अभिचनो ॥ १० ॥ ६०

(अयम्) (सोमः) सोमः । आत्मप्रतिविंवा (सुतः) अभिषुतः (अस्ति) (मरुतः) देवाः प्राणावा (अस्य) (पिवन्ति) पानं कुर्वन्ति (उत) अपिच (स्वराजा) स्वतेजसा दीप्यमानौ (अभिचना) अभिनौ नरनारायणौवा (उ) अपि पिवतः ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ यह २ सोमवा आत्मप्रतिविंवा ३ अभिषुत है ४, ५ मरुतदेवतावा प्राणा ६ इसका ७ पान करते हैं ८ और ९ अपने तेजसे दीप्यमान १० अभिनीकुमारवानरनारायण ११ भी पान करते हैं - ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य षष्ठः खण्डः

अथ सप्तमः खण्डः

इन्द्रमातरो देवयामयऋषिका गायत्री छन्द इन्द्रो देवता
इन्द्रो यन्तीरूपस्युव इन्द्रो ज्ञानं मुपासते । वन्वा
नासा सुवीर्यम् ॥ १ ॥ ६१

(ई^१इ^२यन्तीः) ज्ञानावस्थायां परमेश्वरं प्राप्नुवन्त्यः ई^३ख गतौ (ए^४पस्युवः) उपसनायां कर्मच्छन्त्यः नि० (सुवीर्यम्) (वन्वानासः) परमेश्वरात्स्वकीयं शोभनवीर्यं याचमाना वेदवान् च वनुयाचने (जातम्) प्रादुर्भूतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उपासते) तस्य सर्वात्मकत्वात् ॥१॥

भाषार्थः - १ ज्ञान अवस्था में परमेश्वर को प्राप्त करने वाली २ उपासना में कर्म चाहने वाली ३, ४ परमेश्वर से अपने बल को चाहने वाली वेदवाणी ५ प्रादुर्भूत ६ परमेश्वर को ७ उपासना करती हैं उसके सर्वात्मक होने से ॥१॥ गोधात्रयि गयित्री छन्दो देवा देवताः

न^१कि^२देवा इ^३नीमसि^४ न^५क्या यो^६पयामसि^७ । मन्त्र^८
श्रुत्य^९ञ्च^{१०}रामसि^{११} ॥२॥ ६२

तस्मात् हे (देवाः) (कि) काम्ययज्ञे (न) (इनीमसि) नहिंस्मः प्राणिवधं कर्मपश्वादि यागं न कुर्मः । मीड् हिंसायां क्यैयादिक मीनातेर्निगमे (७।३।८।१५।०) इति ह्रस्वः इदन्तो मसि (७।१४६।पा०) मकारलोपश्चान्दसः । आकारः समुच्चये (कि) काम्ययज्ञे (न) (योपयामसि) यूपनिखननं वृक्षौषध्यादि हिंसामपि न कुर्मः (मन्त्र श्रुत्यं) मन्त्रेण स्मार्यं श्रुत्या प्रतिपाद्यं जपयज्ञं (आचरामसि) आचरामः अनुतिष्ठामः यथामनुः ३ प्र० जप्ये नैव तु संसिद्धे द्वाह्मणो नात्र संशयः कुर्यादन्यन्न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते । यज्ञानां जपयज्ञो स्मीति भगवन्नाच्च ॥२॥

भाषार्थः - उस कारण १ हे देवताओं २ काम्ययज्ञ में ३, ४ प्राणिवध कर्मपश्वादि यज्ञ को हम नहीं करते हैं ५ काम्ययज्ञ में ६, ७ यूपखनन

वृक्षोपाधिआदिहिंसाकोभीनहीं करते हैं ८ जपयज्ञकोही करते हैं-॥२॥

दध्यङ्ः^३डाथर्वण^३ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता

दोषा^३आगाह^३ज्ञाय^३द्युम^३ज्ञाम^३न्नाथर्वण^३। स्तुहि^३
देव^३सवितारम्^३ ॥ ३ ॥ ६३ ॥

हे (द्युमज्ञामन्) द्युमतां स्वरसौष्टव युक्तानां साम्नां गामनृगा
तः (आथर्वण) वाक् । वाग्वै दध्यङ्गुथर्वणाः श० ६।४।२।३।
(दोषा) रात्रिः (आगात्) समन्ताद्गतवान् । आगतावासंध्याव-
र्तते (वृहत्) साम (गाय) (सवितारम्) सर्वस्युप्रसवितारं (देव
म्) मायाक्रीडनकैः क्रीडणा शीलं परमेश्वरं (उ) एव (स्तुहि)

भाष्यार्थः - १ स्वरसेसामगान करने वाले २ वाक् ३ रात्रि ४ व्यतीतङ्ग
ईवाभाई सन्ध्यावर्तमान है ५ वृहत्सामको ६ गाओ ७ सबकेमेरक ८ माया
केखिलोनों से क्रीडन शील परमेश्वरको ईही ९० स्तुन करो ॥ ३ ॥

प्रस्तुएवऋषिर्गायत्री छन्दोः श्विनौ देवते

एषोउषाःप्रपूर्व्याव्युच्छति प्रियादिवः । स्तुषेवा
मश्विना वृहत् ॥ ४ ॥ ६४

(एषा) (प्रपूर्व्या) पूर्वनास्ति सा (प्रिया) जपकालत्वेन विदु
पांप्रिया (उषा) (दिवः) (व्युच्छति) तमोर्कयति हे (मश्विना)
मश्विनौ ब्रह्माण्डे व्यापकौ परमहापुरुषौ । मश्विनाः सूर्यरूपा
प्रतिविधाः सन्ति ब्रह्माण्डे पुययोः इनि । असौवा आदित्य ए-
षोऽश्वः श० ६।३।१।२।४ (वाम्) युवाम् (उ) एव (वृहत्) प्रभू
तं यथा भवति तथा (स्तुषे) स्तौमि ॥ ४ ॥ ६४

भाष्यार्थः - १ यह २ मादुर्भूत ३ जपकाल होने से ज्ञानियोंकी प्रिया ४

उपा५ स्वर्गकेर्दतमकोहरानीहे ७ हे अश्विनी कुमारो वा ब्रह्माण्डमें व्याप
कपरमहापुरुषो ऋतुमदोनोंको र्दही १०.११ पडास्तुतकरताहं ॥ ५ ॥

गौतमऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता.

इन्द्रो^१दधी^३चो^३अस्थो^३भिर्वृत्रो^३एय^३प्रति^३ष्कृतः। जघा^३
न^३नवती^३र्नव^३ ॥ ५ ॥ ६५

यस्मान् (अप्रतिष्कृतः) अप्रतिस्वलितः (इन्द्रः) यजमानः। इन्द्रो
वैयजमानः (दधीचः) अथर्वणस्य वेदवाचः। वाग्वैदध्यङ्गाय
र्वणः श० ६। ४। २। ३ (अस्थिभिः) सारैर्महावाग्भिः। अस्थीन्धव-
प्तीः श० १०। २। ६। १८ (नवतीर्नव) समनस्कानिदूशेन्द्रिधाणि
११ त्रिगुणत्रिकालरागद्वेषमोहगुणितानि (वृत्रोणि) पापरू-
पाणि। पाप्मावैवृत्रः श० ६। ४। २। ३ (जघान) ॥ ५ ॥ ६५

भाषार्थः - जिसकारण १ अप्रतिस्कलित २ यजमानने ३ वेदवचनों
के ४ सारमहावाक्योंसे मनसहित इन्द्रियों को जो कि त्रिगुणत्रिकालरागद्वे-
षमोहसे गुणित होकर र्दही होती हैं ६ पापरूपोंको ७ मार ॥ ५ ॥ ६५

मधुच्छन्द्यऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता.

इन्द्रे^३हि^३मत्स्य^३न्धसो^३विश्वे^३भिः^३सोम^३पर्व^३भिः^३।

महो^३धं^३अभिष्टि^३रजसा^३ ॥ ६ ॥ ६६

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ओजसा) बलै न तेजसा वा (महान्) (अभि-
ष्टिः) अभामायातस्या इष्टिर्हेमो यस्मिन्नीदृशस्त्वं (एहि) आग-
च्छ (अन्धसः) अन्नरूपजीवात्मन्ः नि० ५। १७ (विश्वेभिः) सर्वे (सो-
मपर्वभिः) शक्तिरूपेन्द्रियप्राणैः। प्राणः सोमः श० ७। २। ४। २
(मत्सि) माघहृष्टो भव ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ वलवातेजसे ३ महान ४ मायाहोमके स्थान
तुम ५ आत्मा ६ अन्नरूपजीवात्मा के ७ सव ८ शक्ति रूप इन्द्रियप्राणोंसे
हर्षितहृजियै ॥ ६ ॥ वामदेव ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

१२ ३२ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
आतून इन्द्र वृत्रहन् स्माकं मह्यं मागहि महो
१ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
न्महीभिस्तृतिभिः ॥ ७ ॥ ६७

हे (वृत्रहन्) पापनाशक (इन्द्र) परमेश्वर (तू) अस्माकं (महा-
न) महेश्वरत्वं (महीभिः) योगभूमिभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः सह-
अस्माकम् (अर्द्धम्) समीपं (तू) शीघ्रं (आगहि) आगच्छ ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे पापनाशक २ परमेश्वर ३ हमारे ४ महेश्वर तुम ५ यो-
गभूमि ६ और रक्षाओंके साथ ७ हमारे ८ समीप ९ शीघ्र १० आओ ॥ ७ ॥

वत्स ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
ओजस्ते दस्यति त्विषि उभयत्समवर्त्तयत् । इन्द्र
१ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
श्वर्मवरोदसी ॥ ८ ॥ ६८ ॥

(अस्य) परमेश्वरस्य (तत्) (ओजः) बलं (तित्विषे) दिदीपे त्विष दी-
प्तौ (दि० प०) (यत्) यस्मान् (इन्द्रः) परमेश्वरः (उभे) (रोदसी) द्या-
वापृथिव्यौ ब्रह्माण्डं (चर्म) (इव) (समवर्त्तयत्) महाप्रलयकाले
वीजरूपं कृतवान् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ इस परमेश्वरका २ वह ३ बल ४ प्रदीप्तहोना है ५ जिसकार-
ण ६ परमेश्वरने ७ दोनों ८ पृथिवी स्वर्ग अर्थात् ब्रह्माण्डको ९, १० चर्मके समा-
न ११ महाप्रलयकाल परवीजरूप किया ॥

शुनः शोष ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
अयमुने समतसि कपोते इव गभीधिम् । वचस्तच्चि-
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
न्न शोहसे ॥ ९ ॥ ६९ ॥

हे परमेश्वर (अयम्) जीवात्मा (ते) (उ) तवैव तं (समतसि) सम्य-
कसातत्येन प्राप्नोषि (इव) यथा (कपोतेः) कस्य मनोः प्रजापतेर्भ-

हान्नौका । कंवैप्रजापतिः श० २।५।२।१३ (गर्भीधिम्) गर्भस्य वृ-
ह्नाण्डस्य धारकं महासमुद्रम् (तच्चित्) तस्मादेव कारणात् (नः)
अस्माकं (वचः) (ओहसे) प्राप्नोषि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - हे परमेश्वर १ यह जीवात्मा २, ३ ते एही उसको ४ भले प्रकार नि-
रन्तर मात्न करते हो ५ जैसे ६ प्रजापति की महा नौकाने ७ ब्रह्माण्ड के धारक म-
हासमुद्रको ८ उसी कारणसे ९ हमारे १० वचनोंको ११ मात्न करते हो ॥ ८ ॥

वातायन उन्नत्तपिर्गायत्री छन्दो वातो देवता-

वा^३तै^३ः प्रा^३वा^३तु^३ भेष^३जै^३ थं^३ शम्भु^३ मयो^३ भुनो^३ हृद्^३ । मन^३
श्रौ^३यू^३ थं^३ पितारिषत् ॥ १० ॥ ७०

(वातः) प्राणः । प्राणो वै वातः श० १।१।२।१४ (नः) अस्माकं (हृद्) हृ-
दयाय (शम्भु) संसाररोगशमनस्य भावयित्वा (मयो भु) मोक्षसुख-
स्य च भावयित्वा (भेषजम्) शौषधम् मृतरसम्वा (प्रावातु) प्रागमय-
तु (नः) अस्माकं (श्रौयूषि) (पितारिषत्) प्रवर्द्धयतु प्राणायामैः ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ प्राण २ हमारे ३ हृदयके लिये ४ संसाररोगनाशक ५ मोक्षसुख-
केदाता ६ शौषधिवाग्मृतरसको ७ मात्नकराओ ८ हमारी ९ श्रौयुक्तो १० बढाओ
प्राणायामके द्वारा ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसा-
दशर्मा विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य सप्तमः खंडः

अथाष्टमः खण्डः

काण्वत्तपिर्गायत्री छन्दो वरुणाद्या देवताः

यु^३ थं^३ रक्षन्ति^३ प्रचेतसो^३ वरुणो^३ मित्रो^३ अयमो^३ । न किं^३
सद^३ भ्यते^३ जनः ॥ १ ॥ (प्रचेतसः) महद्भ्रतानाः (वरुणाः)

अंपानः (मित्रः) प्राणः । प्राणो वै मित्रः । अंपानो वरुणाः श० १२।१।८
- १२ (अयमो) मनः पितरः श० १।४।४।३।१३ (यम्) (रक्षन्ति)
(स) (जनः) योगी (किः) (क) परमेश्वरः (इ) शक्तिः महति पुरु-
षरूपः सन्नपि (न) (दभ्यते) नहिंस्यते ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ महाज्ञानी २ अपान ३ प्राण ४ मन ५ जिसको ६ रसाक
रते हैं ७ वह ८ योगी ९ प्रकृति पुरुष रूप होता भी १०, ११ हिंसित नहीं होता है

वत्सञ्जयिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

गव्योषुणो यथा पुरो ष्वयातरथयो । वरिवस्यो
महोनोम् ॥ २ ॥ ७२

(अ) हे सर्वव्यापिन् (यथा) (पुरो) पूर्वकाले यथा तथा (नैः) अ
स्माकं (महोनोम्) मघं हविर्लक्षणां धनं येषामस्ति तेषां यज-
मानानां (गव्यो) महावाग्दानेच्छया (अश्वया) समष्टिभाव
दानेच्छया । असौ वाऽऽदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२६ (उ
न) अपि च (रथया) योगरथदानेच्छया (सुवरिवस्य) परिचर
आगच्छेत्यर्थः ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ जैसे ३ पूर्वकालमें तैसेही ४ हमारे ५
यजमानोंके ६ महावाग्दानकी इच्छा ७ और समष्टिभावदानकी इच्छा ८
और ९ योगरथदानकी इच्छासे १० आषो— ॥ २ ॥

वत्सञ्जयिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इमोस्त इन्द्रोऽश्वयो घृतन्दुहतशोशिरम् । ऐ
नामृतस्यपिप्युषीः ॥ ३ ॥ ७३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीयाः (इमोः) (अश्वयः) महावाचः (ए
नाम्) (घृतम्) इन्द्रियशक्तिसमूहं । प्राणः पयः शीर्षस्तत्राणां
श० ६।५।४।१५ (ऋतस्य) सत्यस्य ब्रह्मणाः (पिप्युषीः) वर्धयि-
त्रीर्वृद्धिद्विद्वतीः (शिरम्) मानससूर्यञ्च श० १४।१।१।१० (आदुह
त) दुहन्ति देहाभिमानात्पृथक् कुर्वन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ आपके ३ ये ४ महावाक् ५ इस ६ इन्द्रिय-
समूह ७, ८ ब्रह्मवर्द्धक बुद्धिदत्तयों ९ और मानस सूर्यको १० देहाभिमान
से रथक करती हैं ॥ ३ ॥

स्तुतकस्तत्रपिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३ ३ ३ १ ३ ३ १ १ ३ १
अथाधियाच्चगव्ययापुरुणा मन्पुरुषुन। यत्सो ११
मे सोम आभुवः ॥ ४ ॥ ७४

हे (पुरुणामिन्) बहुनामन् (पुरुषुत) बहुभिः स्तुत परमेश्वर (ये
त्) यस्मात्त्वं (सोमे) (सोमे) प्रत्येकात्मप्रतिविंवे (आभुवः) अन्त-
र्यामिरूपेण प्रादुर्भूतोऽसितस्मात् (अथा) आत्माकारया (गव्यया)
महावाग्निच्छया (धिया) मत्तया (च) प्रादुर्भव ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे बहुनामवाले २ बहुतसे स्तुत परमेश्वर ३ जिसकार-
णानुम ४, ५ प्रत्येक आत्मप्रतिविंवेमें ६ अन्तर्यामीरूपसे प्रकट हुए होउस
कारण ७ आत्माकार ८ महावाक्की इच्छा ९ और मत्ताके द्वारा १० प्रक-
ट हुनिये ॥ ४ ॥ मधुच्छन्दाऽत्रपिर्गायत्री छन्दः सरस्वती देवता-

३ ३ ३ १ ३ ३ १ १ ३ १
पावकानः सरस्वती वाजोभिर्वाजिनीवती यज्ञं
वेषुधियावसुः ॥ ५ ॥ ७५

(पावका) शोधयित्री (वाजिनीवती) योगक्रियावती (धिया)
वसुः) ज्ञानधना (सरस्वती) वागाधिष्ठातृदेवी (वाजोभिः) प्राणा-
द्यन्त्रैर्निमित्तभूतैः (नः) अस्मदीयं (यज्ञम्) योगयज्ञं (वेषु) बहु-
तु ॥ ५ ॥

(भाषार्थः)

१ शोधका २ योगक्रियावती ३ ज्ञानधना ४ वागाधिष्ठातृदेवी ५ प्राण-
दिग्ब्रह्मोंके निमित्त ६ हमारे ७ योगयज्ञको ८ चाहो ॥ ५ ॥

वामदेव ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

क इ म न्ना हु षी ष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्
स नो वसु न्या भरात् ॥ ६ ॥ ७६

(कः) अन्तर्यामी परमेश्वरः कं वै प्रजापतिः श० २। ५। २। १३ (नो
हुषीषु) मनुष्यसम्बन्धि योगयज्ञेषु । नहुष इति मनुष्यनाम
नि० (इमम्) (इन्द्रम्) महापुरुषं (सोमस्य) सोमेनात्मप्रतिवि
वेन (आतर्पयात्) आतर्पयति प्रीणात्तितस्मात् (स) अन्तर्यामी
(नः) अस्माकं (वसुनि) धनानि (आभरत्) आभरत् आहस्त
स्वायत्तानि करोतु धनत्यागे हि मुक्तिलाभ इत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ अन्तर्यामी परमेश्वर २ मनुष्यसम्बन्धि योगयज्ञो मे
३ इन्द्र ४ महापुरुषको ५ सोमवा आत्मप्रतिविंबके द्वारा ६ तप्त करता है
७ वह अन्तर्यामी ८ हमारे ९ धनोंको १० अपनाही करो अर्थात् धनत्याग
मेंही मुक्तिलाभ है ॥ ६ ॥

इरि मित्र ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

आयो हि सुषुमा हिन इन्द्र सोम पिवा इमम् ।
एदं वहिः स सोमम् ॥ ७ ॥ ७७

हे (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर वा (आयो हि) आगच्छ (हि) यस्माद्
यं (ते) त्वदर्थं (सुषुमाः) सोममात्मप्रतिविंबं वाऽभिपुनवन्तः (इ
मम्) (सोमम्) सोममात्मप्रतिविंबं वा (पिवा) (मम्) मदीयं
(इदम्) (वहिः) वेद्यां मास्तीर्णीदं सुषुमांस्वा (आसदः) आ
सीद अभिनिषीद ॥ ७ ॥ ७७

भाषार्थः - २ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ आओ ३ जिस कारण हमने ४ आप

केलिये ५ सोमवाग्नात्म प्रतिविंबका अमिपचकिया ६ इंस ७ सोमवाग्नात्म
प्रतिविंबको ८ पानकरो ९ मेरी १० इंस ११ वेदी में आस्तीर्ण दर्भवा सुषुम्णा
पर १२ वैद्यो - ॥ ७ ॥ ७७

वारुणः सत्यधृतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो मित्राद्यादेवताः
महि^३त्री^३णां^३म^३वर^३स्तु^३द्यु^३क्ष^३मि^३त्र^३स्यो^३र्य^३म्णाः^३।^३दुरा^३
ध^३र्व^३वरु^३णा^३स्य^३ ॥ ८ ॥ ७८

तस्मिन्काले (त्रीणां) त्रयाणां (मित्रस्य) मित्रस्य प्राणास्य
वा (अर्यम्णाः) अर्यम्णाः । मनसोवा (वरुणास्य) वरुणास्या-
पानस्यवा (द्युक्षमे) (द्यु) स्वर्गः (क्ष) निवासः प्राप्तिश्च स्वर्गे
निवासो प्राप्तिर्वा यस्मिंस्तुं (दुराधर्वम्) अन्यैर्धीर्धितुं वाधितुम-
शक्यं (महि) महत् (अवरु) अवरुः रक्षाणां । विसर्जनीयस्य रेफा
देशश्छान्दसः (अस्तु) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - उससमयपर १ तीनों २ मित्रवाप्राण ३ अर्यमावामन ४ व
रुणावाअपानका ५ स्वर्गप्रापक ६ अवाधित ७, ८ महारक्षाणा ९ प्राप्त होवै
॥ ८ ॥ वत्सऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

त्वा^३वतः^३पुरु^३वसो^३वैर्य^३मि^३न्द्र^३प्रा^३णो^३तः^३।^३स्म^३सि^३स्था^३
तु^३ह्री^३णां^३ ॥ ९ ॥ ७९

हे (पुरुवसो) वद्भधन (प्राणोतः) भक्तानां स्वामिन् (ह्रीणां) ब्र
ह्मविष्णु महेशू रूपाणां वैष्णव रूपाणां म्वा (स्थानः) (इन्द्र)
परमेश्वर (वद्यम्) (त्वावतः) त्वत्सदृशस्येश्वरस्यैव । सादृश्ये-
वतुव (स्मसि) तव स्वभूताः स्मः ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हे वद्भधन २ भक्तोंके स्वामी ३ ब्रह्मा विष्णु महेश वा वै

शाव रूपोंके ४ धारक ५ परमेश्वर ६ हुम ७ तुमसे ईश्वरकेही ८ हैं - ॥६॥

अथाधिदेवम् - हे (पुरुवेसो) वहुधन (मृणोतः) लोका
नां मृणोतः (हरीणाम्) अश्वानां (स्थातः) (इन्द्रः) (वयम्)
(त्वावतः) त्वत्सदृशस्येश्वरस्यैव (स्मसि) तवस्वभूताः स्मः ६

भाषार्थः - १ हे वहुधन २ लोकोंके मृणोता ३ घोड़ोंपर ४ चढ़नेवाले ५
इन्द्र ६ हुम ७ तुमसे ईश्वरकेही ८ हैं ॥६॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मात्रिरचिते
सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्यानेद्वितीयाध्यायस्याष्टमः खण्डः ८

इतिद्वितीयःप्रपाठकः २

अथनवमः खण्डः । अथातृतीयःप्रपाठकः

मगाथञ्जरीषिगीयत्री छन्द बुन्दो देवता -

उ॒त्वा॑ म॒दन्तु॑ सो॒माः कृ॒णु॑ष्व॒ राधो॑ अ॒द्रिवः । अ॒व
ब्र॒ह्मद्वि॑षो॒ जहि ॥ १ ॥ ८०

हे (अद्रिवः) वज्रवन्निन्द्रयद्वा अद्रिः सूर्यः सविश्वात्मा । ब्रह्म
एडानां धारक परमेश्वर (सोमाः) सोमा आत्म प्रतिविंवावा
(त्वा) (उ) त्वामेव (मदन्तु) (राधो) धनं योगधनम्वा (कृणु
ष्व) कुरु प्रयच्छ (ब्रह्मद्विषः) ब्राह्मणानां ब्रह्मज्ञानिनाम्वा
द्वेष्टीन् (अवजहि) अधोगमं नरकं नय । हन्ते रीत्यर्थस्येदं रु
पम् ॥ १ ॥ - ॥ ८० ॥

भाषार्थः - १ हे वज्रधरेन्द्रवाब्रह्माण्डोंके धारक परमेश्वर २ सोम
वा आत्म प्रतिविंवा ३, ४ तुमकोही ५ हर्षित करो ६ तुमधनवा योगधनको
७ दो ८ ब्राह्मण ब्राह्मज्ञानियोंके द्वेष्टाओंको ९ नरकमें प्राप्न करो - ॥१॥

विश्वामित्र ऋषि गयित्री छन्द इन्द्रो देवता

गिर्वेणः^१ पाहिनेः^३ सुतमधो^३ द्वीराभि^३ रज्यसे । इन्द्र^३
त्वादातमिद्यशः^३ ॥ २ ॥ ८१

हे (गिर्वेणः) गीर्भिः वाग्भिः स्तुतिभिः वननीय सम्भजनीय (इन्द्र) परमेश्वर (नेः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुतमात्म प्रतिविस्वं (पाहि) संसाराद्रक्ष (मधोः) (धाराभिः) प्राणधारुभिः । प्राणो वै मधु श० १४।१।३।३० (अज्यसे) सिच्यसे (यशः) मया समर्पित मुदकमन्त्रं धनञ्च नि० (त्वादातम्) पूर्वत्वया पृहीतं (इत्) एव यथा भगवद्वाच्यं यत्करोषि यदश्नासियज्जुहोमि ददासियत् यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणाम्भुभाभुमफलैरेव मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः सन्यासयोग युक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसौति ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे स्तुतिसे सम्भजनीय २ परमेश्वर ३ हमारे ४ अभिषुतमात्म प्रतिविस्वको ५ संसारसे रक्षाकरे ६, ७ प्राणधारुओं से ८ सिंचते हो ९ मुझसे समर्पित अन्नजल धन १०, ११ पहिले ही तुमसे अंगीकृत है ॥ २ ॥

वामदेव ऋषि गयित्री छन्द इन्द्रो देवता

सदा^१ व^३ इन्द्र^३ श्व^३ कृषदा^३ उपानु^३ समर्पयन् । न देवो^३
वृत्तः^३ शूर^३ इन्द्रः^३ ॥ ३ ॥ ८२

मन्त्रः कथयति (सेः) (इन्द्रः) परमेश्वरः सदा (वः) युष्माकं (उपो) समीप एव (सर्पयन्) परिचरन् प्रीतिमुत्पादयन् (श्वः) कृषत) आकर्षणं कृतवान् (नु) परन्तु (देवः) माया क्रीडाणकैः क्रीडाणाशीलः (शूरः) मायोपाधि युद्धे कुशलः (इन्द्रः) परमे

श्वरः^{११}(नः)^{१२}(वृत्तः) अभ्यर्थितः ॥ ३ ॥

भाषार्थः - मंत्रकहता है १ उसर परमेश्वरने ३ तुम्हारे ४ समीपही ५ अन्तर्यामी रूपसे मीन्युत्यादन करते हुए ६ आकर्षणा किया ७ परन्तु ८ मायाके खिलोनों से कीडन शील ९ मायोपाधिके युद्धमें कुशल १० परमेश्वर ११ १२ तुमसे प्रार्थित नहीं हुआ ॥ ३ ॥

श्रुतकक्षत्रपि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

श्रुत्वा^१ विशन्त्विन्दवः^२ समुद्रमिव^३ सिन्धवः^४ । नत्वा^५
मिन्द्रातिरिच्यते ॥ ४ ॥ ८३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (इन्द्रवः) मनो वृत्तयः । मनोचन्द्रमाश०
१४।४।१।१७ (त्वा) त्वां (श्राविशन्तु) (इव) यथा (सिन्धवः)
स्यंदनशीलानद्यः (समुद्रम्) कश्चित् (त्वाम्) (न) (अतिरि-
च्यते) त्वतोधिको नास्ति सर्वेषां त्वदंशत्वात् ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ मनकी वृत्ति ३ तुममें ४ प्रवेश करो ५ जैसे
६ नदियां ७ समुद्रमें कोई ८ तुमसे ९ अधिक नहीं है अर्थात् तुम सबसे अ-
धिक हो सब तुम्हारे ही अंश हैं ॥ ४ ॥

मधुच्छन्दात्रपि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्रमिन्द्राधिना^१ वह्दिन्द्रमके^२ भिरकिणोः^३ । इन्द्र-
वाणीरनूषत ॥ ५ ॥ ८४

(गाथिनः) गीयमान साम युक्ता उद्गातारः (वहन्) वहता सा-
म्ना (इन्द्रम्) परमेश्वरं (इत्) एव (अनूषत) स्तुवन्ति (अर्किणोः)
अर्चनहेतु मन्त्रोपेता होतारः (अर्किभिः) उक्तय रूपैर्मन्त्रैः स्तुव-
न्ति (वाणी) महावाचः (इन्द्रम्) परमेश्वरमेव स्तुवन्ति तस्या

न्याभावात् ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ सामगान करने वाले उद्गाता २ वहत्सामद्वारा ३ परमेश्वर को ४ ही ५ स्तुत करते हैं ६ होता लोग ७ उक्त्य रूपमंत्रों से स्तुत करते हैं ८ महावाक् ९ परमेश्वर ही की स्तुतिकरते हैं ॥ ५ ॥

श्रुतकक्षत्रपि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रो^१ इषु^२ ददानु^३ नः^४ ऋभु^५ क्षणामृ^६ भु^७ थं^८ रयि^९ म् । वाजी^{१०}
ददानु^{११} वाजिनम् ॥ ६ ॥ ८५

(इन्द्रः) परमेश्वरः (इषुः) अमृत वृष्ट्यै (ऋभुक्षणामृभुथं रयिम्) मेधाविनां क्षणमुत्सवरूपं (ऋभुम्) उरुभासमानं (रयिम्) योगधनं (नः) अस्मभ्यम् (ददानु) तथा (वाजी) सूर्यरूपः परमेश्वरः (वाजिनम्) स्वकीयात्मानं (ददानु) समष्टिरूपलाभाय वाजीवाः अश्वः नि० २।२८ असौवाः आदित्यएषोऽश्वः शा० ६।३।१।२६ - ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ परमेश्वर २ अमृत वृष्टिके लिये ३ मेधावियों के उत्सवरूप ४ उरुभासमान ५ योगधनको ६ हमें ७ दो तथा ८ सूर्यरूप परमेश्वर ९ अश्वानी आत्माको १० समष्टिरूपलाभके लिये हमे दो - ॥ ६ ॥

श्रुतसमदक्षत्रपि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रो^१ अङ्ग^२ महद्भय^३ मभीष^४ दपचु^५ च्यवत् । साहि^६ स्थि^७
रो^८ विचर्षा^९ णिः ॥ ७ ॥ ८६

(इन्द्रः) परमेश्वरः (महत्) (भयम्) संसारभयं (अङ्ग) क्षिप्रं (अभीषत्) अभिभवति अभिभवद्वा (अपचुच्यवत्) अपच्यावयति अपच्यावयेद्वा (हि) यस्मात्कारणात् (सः) (स्थिरः) अचलः अनन्तत्वात् (विचर्षाणिः) सर्वस्य द्रष्टा सर्वगतत्वात् ॥ ७ ॥

भाषार्थः— १ परमेश्वर २,३ संसारभयको ४ शीघ्र ५ तिरस्कार करता है ६ शौर दूर करता है ७ जिस कारण ८ वह ९ अनन्त होने से अचल १० सर्वगत होने से सब का द्रष्टा है ॥ ७ ॥

भरद्वाज ऋषि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

^३१ ^३२ ^३३ ^३४ ^३५ ^३६ ^३७ ^३८ ^३९ ^३१० ^३११ ^३१२ ^३१३ ^३१४
 इ^३मा^३ उ^३त्वा^३ सु^३ते^३ सु^३ते^३ न^३क्ष^३न्ते^३ गि^३र्वि^३णो^३ गि^३रि^३ः। गी^३र्वो^३
 व^३त्सं^३न्^३धे^३न^३वः॥ ८ ॥ ८७

(हे (गिर्विणोः) वेद वा गिर्वननीय सम्भजनीय परमेश्वर (सुते सुते) सोमे चात्म प्रति विवेऽभिषुते सति (इमाः) (गिरिः) वेद वाचः (त्वा) (उ) त्वामेव (नक्षन्ते) व्याप्नुवन्ति त्वदन्या भावात् (न) यथा (धेनवः) (गावः) (वत्सम्) व्याप्नुवन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः— १ हे वेद वचनों से संभजनीय परमेश्वर २ सोम वा आत्म प्रति विवे के अभिषुत होने पर ३ ये ४ वेद वचन ५, ६ तुमको ही ७ व्याप्त करते हैं ८ जैसे ९, १० दुग्धदाता गौवत्सको ॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषि गीयत्री छन्द इन्द्रा पूषणा देवते-

^३१ ^३२ ^३३ ^३४ ^३५ ^३६ ^३७ ^३८ ^३९ ^३१० ^३११ ^३१२ ^३१३ ^३१४
 इ^३न्द्रा^३नु^३पू^३षा^३णो^३ वय^३थं^३ स^३र^३व्या^३ य^३स्व^३स्ते^३ये। ह^३वे^३म^३
 वा^३जं^३ सा^३त^३ये॥ ९ ॥ ८८

(वयम्) (स्वस्तेये) कल्याणाय (सरव्याय) सखिभावलाभाय (वाजसातये) प्राणोन्द्रिय रूपान्नस्य सम्भजनाय (चु) क्षिप्रं (इन्द्रा पूषणा) महापुरुषं विराजञ्च (हवेम) आह्वयामः स्तवामो वाह्यते ह्यतिवा अर्चति कर्म स्वपि पठ्यते नि० ३। १४ = ॥ ९ ॥

भाषार्थः— १ हम २ कल्याण ३ सखिभाव ४ शौर प्राण इन्द्रिय रूपान्न के अपेणार्थ ५ शीघ्र ६ महापुरुष शौर विराट्को ७ आह्वान करते हैं ॥ ९ ॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्दो इन्द्रो देवता-

नकि इन्द्रत्वदुत्तरं न ज्याया शक्ति वृत्रहन् ।

न कथं वयं यथा त्वम् ॥ १० ॥ ८६

हे (वृत्रहन्) पापनाशक (इन्द्र) परमेश्वर (कि) स्तष्टौ क्वीजं
स्तष्टिवाचकं कि सप्तम्यन्तपदं (त्वत्) त्वत्तः (उत्तरः) श्लेषः (न)
(शक्ति) (न) (ज्यायः) ज्यायान् प्रशस्ततरः (यथा) यादृशः
(त्वम्) तादृशः (कि) स्तष्टौ (नैव) ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे पापनाशक २ परमेश्वर ३ स्तष्टिमें ४ आपसे ५ श्लेष
६ नहीं ७ है ८ न ९ प्रशस्ततर है १० जैसे ११ तुमहो वैसा १२ स्तष्टिमें १३ न
ही है ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्मा विरचिते
सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य नवमः खण्डः

अथ दशमः खण्डः

विशोक ऋषिर्गायत्री छन्दो महानारायणो देवता-

तराणि वोजनानान्त्र द्वाजस्य गोमतेः । समा

नेमुप्रशंथं सिषम् ॥ ११ ॥ ८७

वेदः कथयति हे भक्ताः (वैः) युष्माकं (जुनानाम्) मनुष्याणां
(तराणिम्) संसार सागरात्तारकं (त्रुदम्) कामादीनां तर्दयि
तारं (वाजस्य) भक्तैर्भोग्यस्य (गोमतेः) गोलोकस्य (समान
म्) सम्यक् प्रापकं (उ) महानारायणमेव (प्रशंसिषम्) प्र
कर्षेण स्तौमि ॥ ११ ॥

भाषार्थः - वेद कहता है हे भक्तो १ तुम ३ मनुष्यों के ३ संसार सागर

सेतारक ४ काम आदिके हिंसक ५ भक्तों के भोग्य ६ गोलोक के ७ प्रापक
८ महानारायण को ही ९ स्तुत करता हूँ उसका अन्य न होने से ॥ १॥

मधुच्छन्दा ऋषिर्गीयत्री छन्दो इन्द्रो देवता.

अस्त्रुमिन्द्रतेगिरः प्रतित्वा मुदहासत । सजोषो
वृषभम्यतिमा ॥ २ ॥ ९१

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीयाः (गिरः) मन्त्र रूपाः (अस्त्रुम)
उच्चारितवानस्मिताः (त्वाम्) (वृषभम्) धर्मार्थकाममोक्षाणां
वर्षितारं (पतिम्) स्वामिनं (प्रति) (उदहासत) उत्कर्षणाप्राप्तु
वन्तादृशीर्गिरस्त्वं (सजोषाः) सेवितवानसि वैदिकमन्त्रा
स्त्वामेव स्तुवन्ति नान्यमित्यर्थः ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ आपके ३ मन्त्ररूप वचनों को ४ मैंने उच्चा
रण किया ५ उन्होंने तुम्हें ६ धर्मार्थकाममोक्षके दाता ७ स्वामी को ८
उत्कर्षाके साथ प्राप्त किया तुमने ९ उनको सेवन किया है अर्थात् वैदिक
मंत्र आपकी ही स्तुति करते हैं न दूसरे की ॥ २ ॥

वत्स ऋषिर्गीयत्री छन्दो मरुदर्यमणौ देवते.

सुनीथो घासमर्त्याय मरुतो यमयमा । मित्रा
स्यान्त्यद्रुहः ॥ ३ ॥ ९२

(सः) (मर्त्याः) मनुष्यः (घा) मेधया (सुनीथः) सुप्रशस्तः (यम्)
(अद्रुहः) अद्रोग्धारः (मित्राः) मित्रभूताः (मरुतः) मरुतः प्राणा
वा (पान्ति) रक्षन्ति (यम्) (अर्यमा) देवः मनोवापाति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ वह २ मनुष्य ३ बुद्धिद्वारा ४ सुप्रशस्त है ५ जिसको ६
द्रोहन करने वाले ७ मित्ररूप ८ मरुद्गणवामाण ९ रक्षा करते हैं १० जिस

कोशक्षर्यमादेवतावामनरक्षाकरता है-॥३॥

त्रिशोकऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

यद्दीडो विन्द्र यत् स्थिरैर्यत्परि शोने पराभृतम्।
वसुस्पाहन्तदाभरे ॥ ४ ॥ ८३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (वीडो) प्राणस्य पूरके (व) प्राणः (दीडि) अ-
धेषणकर्मा (यत्) योगधनं (स्थिरै) कुम्भके (यत्) योगधनं-
(परिशोने) समन्तात्प्राण दानं यस्मिन्तास्मिन्तूरेचके। प्राणादा-
ने (यत्) योगधनं (पराभृतम्) सम्भृतम् (तत्) (स्याहम्) स्पृ-
हणीयं (वसु) योगधनं (आभरे) आहर देहि ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १हे परमेश्वर २ प्राणके पूरक में ३ जो योगधन ४ कुम्भ
कमें ५ जो योगधन ६ रेचक में ७ जो योगधन ८ सम्भृत है ९ उस १० स्पृह
णीय ११ योगधनको १२ दीजिये ॥ ४ ॥

सुकक्षर्यमादेवतावामनरक्षाकरता

मनुष्यो वा वृत्रहन्तमप्रशद्धचर्षणीनाम्। आशि
षैरोधसे महे ॥ ५ ॥ ८४

मन्त्रः कथयति (वेः) युष्माकं (चर्षणीनाम्) मनुष्याणां (महे)
महते (राधसे) योगैश्वर्याय (मनुष्ये) विख्यातं (वृत्रहन्तमम्)
अतिशयेन पापस्य हन्तारं (शद्धम्) योगवत्तं नि० ३।४ (आशि-
षे) प्रकर्षणा शास्मि। शास शासने। आशंसन। आशीर्वाद् प्रा-
र्थने ॥ ५ ॥

भाषार्थः

मन्त्र कहता है १ तुम २ मनुष्योंके ३, ४ योगैश्वर्यके लिये ५ विख्यात ६ अति
शय पापनाशक ७ योगवत्तको ८ परमेश्वर से चाहता हूँ ॥ ५ ॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रादेवता
 अरन्त इन्द्रं ऋवसे गमेमश्नुत्वावतः। अरे
 शक परेमाणि ॥ ६ ॥ ८५

हे (अरु) वीर (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तव (ऋवसे) विराड् रूपान्ना-
 यन्नं वै विराट् श० १२। २। ४। ५ (अरम्) (अ) कृष्णः (र) राधा
 धाकृष्णरूपं त्वां (गमेम) गच्छेम प्राप्नुयामहे (शक) सर्व शक्ति-
 मन् (त्वावतः) त्वत्सदृशस्य (परेमाणि) परमुत्कृष्टं स्थानं गम्यते
 येन सः परेमायज्ञं स्तस्मिन् भक्तियज्ञे (अरम्) राधाकृष्णरूपं त्वां
 प्राप्नुयाम ॥ ६ ॥ ८५

भाषार्थः - १ हे वीर २ परमेश्वर ३ आपके ४ विराट् रूप अन्नके लिये
 ५ राधाकृष्ण रूपतुमको ६ हम प्राप्त करें ७ हे सर्वशक्तिमन् ८ आपसेके ९
 भक्तियज्ञमे १० राधाकृष्णरूपतुमको प्राप्त करें- ॥ ६ ॥

विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-
 धानावन्तं करम्भिणाम् पूषवन्तमुविथनेम्। इन्द्र
 प्रातं जुषस्व नः ॥ ७ ॥ ८६

हे (इन्द्र) (धानावन्तम्) धानाभृष्टयवाः तद्धतं (कराम्भिणम्)
 करम्भोदधिमिष्णाः सक्तवः तद्वन्तं (पूपवन्तम्) सवनीयपुरो
 डाशोपेतं (उविथनेम्) स्तोत्रयुक्तं (नः) अस्माकं सोमं (प्रातः)
 प्रातः सवने (जुषस्व) सेवस्व ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ भृष्टयवयुक्त ३ सक्तयुक्त ४ सवनीयपुरोडाश
 सेयुक्त ५ स्तोत्रयुक्त ६ हमारे सोमको ७ प्रातः सवनेमें ८
 अथाध्यात्मम् - हे (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्माकं

धाधारणो धानाधारणात्तद्वन्तं (करम्मिणाम्) केन कामेन रभ्यते
 सिच्यंते तत्करम्मं मनस्तद्वन्तं (अपूपवन्तम्) पृशोधे शुद्धिं नपाति
 सइन्द्रियं समूहस्तद्वन्तं (उक्थिनम्) प्राणासम्बन्धिनं मात्मप्रति
 विवं माणोवाऽउक्थं श० १४। ८। १४। १ अयुं च हवाऽअस्यैपोऽनि
 रुक्त आत्मा यदुक्थं श० १४। ८। १४। १ (प्रातः) समाधिकाले (जुष
 स्व) सेवस्व ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ हमारे ३ धारणावान ४ मनवान ५ इन्द्रि-
 यसमूहयुक्त ६ प्राणासम्बन्धी आत्मप्रति विंवको ७ समाधिकालपर ८ से-
 वनकरो ॥ ७ ॥ गोपुत्रपश्वसूक्तिना वृषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
 अपूपानेन नमुचैः शिर इन्द्रो देवर्तयः । विष्वा
 यदजुयस्पृधः ॥ ८ ॥ ६७

हे (इन्द्र) (यद्) युदात्वं (विष्वाः) सर्वाः (स्पृधः) स्पृद्धमानाः आ-
 सुरीः सेनाः (अजयैः) जितवानसितदा (अपाम्) (फेनेन) वञ्ची
 भूतेन (नमुचैः) असुरस्य (शिरः) (उदवर्तयः) शरीरादुद्धतमवर्तयः
 अच्चैत्सीत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ जवतुमने ३ सब ४ स्पृद्धमान आसुरी सेनाको
 ५ जीता है तव ६ वज्ररूपजलफेनसे ७ नमुचि असुरके ८ शिरको ९ तुमने
 कारा ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम्

मन्त्रोपदेशः हे (इन्द्र) यजमान । इन्द्रो वै यजमानः श० १। १२
 ११ (यद्) युदात्वं (विष्वाः) सर्वाः (स्पृधः) स्पृद्धमानाः कामसे-
 नाः (अजयैः) जितवानसितदा (अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां
 (फेनेन) ज्ञानवज्रेण (नमुचैः) पापस्य । पाप्मावै नमुचिः श० १२

७।३।४ (शिरः) (उद्वर्त्तयः) ॥८॥

भाषार्थः - मन्त्रकहता है १ हे यजमान २ जवतुमने ३ सब ४ स्पृष्टम
नकामसेनाको ५ जीनातव ६ कमलान्न रिक्षोंके ७ ज्ञान वज्रसे ८
पापके ऽशिरको काटो - ॥८॥

वामदेव ऋषि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इमं^३ इन्द्र^३ सोमा^३ सुतो^३ सो^३ यच्च^३ सो^३ त्वा^३ । तेषां^३ म
त्स्व^३ प्रभू^३ वसो^३ ॥९॥ ९८

हे (प्रभूवसो) प्रभूतधनवनु (इन्द्र) इन्द्रपरमेश्वरवा (ये) (सो
त्वा) अभिषोतव्याः (सोमाः) सोमाः । इन्द्रियात्मप्रतिविंवा
(ते) (इमे) (सुतासः) अभिषुताः (तेषाम्) मदेन (मत्स्व) दृष्टो
भव ॥९॥

भाषार्थः

१ हे बहुधनवान २ इन्द्रवापरमेश्वर ३ जो ४ अभिषोतव्य ५ सोमवा इन्द्रिय
आत्मप्रतिविंवा ६ वे ७ ये ८ अभिषुत हुए ९ इनके १० मदसे हर्षित हजि
ये ॥९॥ ऋतकक्ष ऋषि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

तुभ्यं^३ सुतो^३ सो^३ मा^३ स्तो^३ णि^३ वाहि^३ विभावसो^३ । स्तो
तुभ्यं^३ इन्द्र^३ मृडय^३ ॥१०॥ ९९

हे (विभावसो) महादीप्तिधन (इन्द्र) परमेश्वर (तुभ्यम्) त्वद
र्घ्य (सोमाः) इन्द्रियात्मप्रतिविंवाः (सुतासः) अभिषुताः (वाहिः)
सुपुम्णा (स्तीणिम्) प्रसारिता (स्तोतुभ्यः) अस्मभ्यं (मृडय)
मोक्षानन्दं देहि ॥१०॥

भाषार्थः - १ हे महादीप्तिधन २ परमेश्वर ३ आपके लिये ४ इन्द्रिय
आत्मप्रतिविंवा ५ अभिषुत हुए ६ सुपुम्णा ७ प्रसारित है ८ हमस्तोताओंके लिये

धर्मोक्षानन्ददीजिवे ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म विरचिते सा
मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य दशमः खण्डः

अथैकादशः खण्डः

श्रुतः शेषः अपि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३
 आव इन्द्रं कृवि यथा वाज यन्तः शतं कृतुम् । मंथं
 हिष्ठं थं सिञ्च इन्दुभिः ॥ १ ॥ १००

(वः) निवृत्तात्माऽहं (शनकृतुम्) बहुकर्माणं (मंहिष्ठम्) पूजनी
 यतमं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (इन्दुभिः) प्राणोन्द्रियात्मप्रतिविंबैः सो
 मोवै भ्रातृ ३।२।४।६ प्राणोवै सोमः श० ७।३।१।४५ इत्यादिः
 (आसिञ्चै) (यथा) (वाजयन्तः) अन्नमिच्छन्तः पुरुषाः (कृविम्)
 कृषिं जलेन पूरयन्ति । कृतीच्छेदने कृत्यते छिद्यते खन्यते इति
 कृविः कृषिः ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - १ निवृत्तात्मा मे २ बहुकर्मा ३ पूजनीयतम ४ परमेश्वरको ५
 प्राण इन्द्रिय आत्म प्रतिविंब से ६ सींचना हं ७ जैसे ८ अन्नको चाहने पुरुष
 खेत जो जल से भरते हैं ॥ १ ॥

श्रुतकक्षत्रपि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३
 अतश्चिदिन्द्र न उपायो हि शतं वाजया । इषो सहस्रं
 वाजया ॥ २ ॥ १०१

ईशोपदेशः हे (इन्द्रं) यजमान जीवात्मन् (अतश्चित्) मानसक
 मलादेव (शनवाजया) शं कल्याणांत नोतीति शतंतयाऽनाह
 तशब्दवता (सहस्र वाजया) सहस्रब्राह्म ज्योतिस्तं राति ददा-

नीति सहस्रं तथाऽनाहतशब्दवता । वाजनिः स्वने (इषो) अ-
मृतरसेनसिक्तत्वं यथा ऋतिः इषो त्वोर्जे त्वेति वृष्टपैतदाहुयो
वृष्टादूर्ध्वसो जायते तस्मै तदाह । १।७।१।२ (नः) अस्माकं (उपा-
याहि) समीपमा गच्छ ॥ २ ॥

भाष्यार्थः - ईश्वर कहते हैं १ हे यजमान २ मानसकमल से ही ३ कल्प
एदाता अनाहत शब्दवान ४ ब्राह्मज्योतिके दाता अनाहत शब्दवान ५
अमृतरससे सिक्त तुम ६ हमारे ७ समीप आओ ॥ २ ॥

विशोकऋषिर्गयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३ ३ १ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
ओ बुन्दं वृत्रहो दे दे जातः वृच्छो द्वि मातरंम् । कउ

१ १ ३
योः केह भृषि वरे ॥ ३ ॥ १०२

(जातः) योगेन संस्कृतः (वृत्रहो) पापस्य नाशक आत्मा रूप य-
जमानोहं (बुन्दंम्) जीवात्मा रूपमिषुं बुन्दु इषुर्भवतीति यास्क-
६।३२।३३ (आदे) यस्मात्स जीवः (मातरंम्) विद्यारूपां मातरं
(विष्टच्छात्) वृष्टवान् (के) पुरुषाः (उग्र्याः) हिंसकाः (के) पुरुषाः
(हि) मसिद्धौ (भृषि वरे) भक्तिज्ञान शास्त्राणि ॥ ३ ॥ **भाष्यार्थः**

१ योगसे संस्कृत २ पापनाशक आत्मा रूप यजमानमें ३ जीवत्वार्थाणा को ग्रहण
करताहं जिस कारण उस जीवने ५ विद्यारूप माना को ६ वृच्छा ७ कोन पुरुष
हिंसकहैं ८ किन पुरुषोंने ९ मत्यक्षमें १० भक्तिज्ञान शास्त्रोंको सुना ॥ ३ ॥

मेधातिथिऋषिर्गयत्री छन्दः माणो देवता-

३
वृवदुक्थं हवामहे स्तु प्र करस्त्रं मृतये (साधेः)

१ १ ३
कृणवन्त मवसे ॥ ४ ॥ १०३

(ऊतये) संसाराद्दक्षिणाय (सुप्र करस्त्रं) प्रलम्बबाहुं नि० ६।१७

(अत्रैसे) लोकस्य पालनाय (साधः) योगसाधनं (कृण्वन्तम्) कुर्वन्तम् (दृवदुक्थं) महदुक्थं समष्टिप्राणं । प्राणोवाऽऽकथं श० १४।८।१४।१ (हवामहे) आह्वयामः ॥ ४ ॥

भाषार्थः— १ संसार से रक्षा के लिये २ मलंबवाहु ३ लोकपालन के लिये ४ योगसाधन ५ करने वाले ६ समष्टिप्राणको ७ हम आह्वान करते हैं ॥ ४ ॥

गोतम ऋषिर्गायत्री छन्दो मित्राद्या देवताः

ऋजुनीतीनो वरुणो मित्रो नयति विद्वान् । सूर्य
मो देवैः सजोषोः ॥ ५ ॥ १०४

(देवैः) इन्द्रियैः (सजोषोः) समानप्रीतिः (विद्वान्) नेतव्यमुत्तमस्थानं जानन् (मित्रः) प्राणः (वरुणोः) क्षपानः (सूर्यमो) मनः (ऋजुनीती) ऋजुनीत्या ऋजुनयनेन कौटिल्यरहितेन गमनेन (नयति) समाधौ प्रापयति ॥ ५ ॥

भाषार्थः— १ इन्द्रियों के साथ २ समानप्रीतिवाला ३ प्राप्ति योग्य उत्तमस्थानको जान्ना ४ प्राण ५ क्षपान ६ मन ७ सीधीचालसे ८ समाधिमें प्राप्त करते हैं ॥ ५ ॥ ब्रह्मातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो यजमानो देवताः

दूरे दिह्वयत्सतोरुणाप्सुराश्वितत् । विभानुं वि
श्वथातनत् ॥ ६ ॥ १०५

(यत्) यदा (अरुणाप्सुः) अरुणारूपो यजमानः (दूरैर्) दूरे गगनमण्डले वर्तमानात् (सतः) महापुरुषात् (इह्व) (इव) मानसकमले (अश्वितत्) आश्विः । श्विगतौ तदा (भानुम्) दीप्तिं (विश्वथा) विश्वधा बहुधा मनोबुद्धीन्द्रियरूपेण (व्यतनत्) विस्तारयति ॥ ६ ॥— १०५

भाषार्थः - १ जवर अरुणरूपयजमान ३ गगनमंडलमें वर्तमान ४ मह्यप्ररुषसे ५, ६ इसमानसकमलमें ही ७ प्राणहृत्प्रातव ८ दीमिको ९ वहुप्रकार मन बुद्धि इन्द्रियरूपसे विस्तृत करता है - ॥ ६ ॥ १०५

विश्वामित्रोजमदग्निर्वाञ्छरिर्गीयत्री छन्दो मित्रावरुणौ देवते-
 श्नानौ मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूति मुक्षतम् । मध्वो
 रजांश्च सिसुक्रतू ॥ ७ ॥ १०६

(सुक्रतू) शोभनकर्माणौ (मित्रावरुणौ) प्राणोदानौ । प्राणोदानौ वै मित्रावरुणौ श० श० ३ । १२ (नैः) अस्माकं योगिनां (गव्यूतिम्) इन्द्रियाणां मालयं (घृतैः) इन्द्रियशक्तिभिः । प्राणपयः शीर्षस्तत्प्राणं श० ६ । ५ । ४ । १५ (स्यो) समृन्नात् (उक्षतम्) सिञ्चतम् (रजांसि) कमलरूपलोकान् (मध्वो) ज्ञानरसेन सिञ्चतम् । इदं वै तन्मधुदध्यङ्गाथर्वणोऽभिव्यामुवाच श० १४ । ५ । १६ - ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ शोभनकर्मा २ प्राणउदान ३ हमयोगियोंकी ४ इन्द्रियोंके मालयसमूहको ५ इन्द्रियोंकी शक्तिसे ६ सबओर ७ सींचो ८ कमलरूपलोकोंको ९ ज्ञानरससे सींचो ॥ ७ ॥

प्रस्काएवञ्चपि गीयत्री छन्दः प्राणानाहतशब्दौ देवते-
 उदृत्य सुनवोगिरैः काष्ठो यज्ञेष्वत्नत । वाञ्छा
 अभिस्तुयातव ॥ ८ ॥ १०७

(ये) (सुनवः) वाचउत्पादकाः प्राणाः । सुनोतेः रूपं (गिरैः) अनुहृतशब्दाः (नैः) (यज्ञेषु) योगयज्ञेषु (काष्ठो) अमृतरूपापः (उदृत्य) एव (उदत्नत) विस्तारितवन्तः पुनः (वाञ्छाः) इन्द्रियाणि (अभिस्तु)

जान्त्रिमुखं यथा भवति (तथा (यांवे) ११) आलयेषु प्रतिगमना
यमेति वन्तः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ जो २ चवनको उत्पन्न करने वाली माण ३ और अनाह
तशब्द हैं ४ उन्होंने ५ योग यज्ञों में ६ अमृत रूप जलों को ७ ही ८ विस्तृत कि
या ९ और इन्द्रियों को १० जानु अत्रिमुख जैसे हों वैसे ही ११ निजालयों में च
लने के लिये मेरित किया ॥ ८ ॥

मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दोविष्णुर्देवता-

इदं विष्णुं विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढम्
स्य पाथं सुले ॥ ९ ॥ १०८

(विष्णुः) वामनावतारः (इदम्) ब्रह्मलोक पर्यन्तं जगत् (विच
क्रमे) विभज्य क्रमते स्म (त्रेधा) (पदम्) (निदधे) भूमावेकं पद
मन्तरिक्षे द्वितीयं दिवितृतीयं (अस्य) (पदम्) (पाथं सुले) च
तुर्दशभुवनमयब्रह्माण्डे (समूढम्) सम्य गन्त भूतम् ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ वामनावतार विष्णुने २ इस ब्रह्मलोक पर्यन्त जगतको
३ विभाग कर उलंघन किया ४ तीन प्रकारसे ५ पदको ६ रक्वा ७ भूमि पर
एक पदको अन्तरिक्षमें दूसरेको स्वर्गमें तीसरेको ९ इसका पद ८ चतुर्दशभु
वनमयब्रह्माण्डमें १० भले प्रकार अन्तर्गत हुआ ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम् (विष्णुः) यो मयज्ञस्य यजमानः । यथा श्रु
तिः एतद्देवा विष्णु भूत्वे मां लोकान् क्रमन्त तथैवैतद्यजमानो
विष्णु भूत्वे मां लोकान् क्रमते ६ । ७ । २ । १० (अस्य) देहस्य (इदम्)
सुपुष्पा मार्गं (विचक्रमे) विभज्य क्रमते स्म (पाथं सुले) योगभू
मौ (त्रेधा) ज्ञात्तु ज्ञान ज्ञेयारव्यत्रिविधिभेदेन (समूढम्) सम्य

गन्तर्हितं (पदम्) ब्रह्म यथा भगवद्वाक्पुंततः पदंतत्परि मार्गतव्यं
 यस्मिन्नाताननि वर्तन्ति भूयइति (निदधे) स्वात्मनिधारयामा
 स ॥ ८ ॥ **भाषार्थः** - १ योगयत्केयजमानने २ इसदेहके ३ इस
 सुषुम्णा मार्गको विभाग कर उलंघन किया ५ योग भूमिमें ६ ज्ञात्त्वज्ञान
 ज्ञेयनाम विविधिभेदसे ७ अन्तर्हितं ब्रह्म को ८ अपने आत्मा में धारणा
 किया ॥ ८ ॥

तृतीयोऽर्थः

(विष्णुः) (अस्य) प्रधानस्य (इदम्) कार्यविश्वं (विचक्रमे)
 विशेषेण स्वां भुभिर्गतवान् व्याप्तवान् क्रम। पादविक्षेपणो-
 गतौ पादकिरणो (पाथं सुले) पांसवो भूम्यादिलोक रूपाविद्य
 न्ने यस्य तत्पांसुलंजगत्तस्मिन् जगति (समूहम्) सम्यगन्त
 र्हितं (पदम्) पद्यते ज्ञायतइति पदमद्वैताख्यं स्वरूपं (त्रेधा)
 त्रिदेवरूपेण (निदधे) संसारे स्थापितवान् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ विष्णुने २ इसप्रधानके ३ इसकार्यविश्वको ४ अपनी कि
 रणोंसे व्याप्त किया ५ जगतमें ६ अन्तर्हितं ७ अद्वैत स्वरूपको ८ त्रिदेवरूप
 से संसारमें स्थापन किया ॥ ८ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सन्तुज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सा
 मवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्यैकादशः खण्डः

अथ द्वादशः खण्डः

मेधातिथिऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

अस्य रातो सुतामिव ॥ १ ॥ १० ८

हे इन्द्र परमेश्वर वा (मन्युपाविणं) क्रोधशोकाहं कारणं सुन्व-

न्तंजंनं^३(अतीहि) अतिक्रम्यगच्छ^३(सुषुवांसैम्) सोममात्मप्रति
 विम्बंवासुन्वन्तंजंनं^४(उपेरय) स्वसमीपेभेरय^५(अस्य)^६(एतो)
 यज्ञारख्येदाने^७(सुतम्) अभिषुतं सोममात्मप्रतिविम्बंवा^८(पि
 व) ॥१॥ **भाषार्थः** - हेइन्द्रवापरमेश्वर १ क्रोधशोकअहंकार
 का अभिषवकरनेवाले मनुष्यको २ अतिक्रमण करके जाओ ३ सोमवाष्पात्म
 प्रतिविंबका अभिषवण करनेवाले मनुष्यको ४ अपनेसमीपभरणकरो ५
 इस ६ यज्ञनामदानमें ७ अभिषुतसोमवाष्पात्म प्रतिविंबको ८ पानकरो ॥१॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्दो देवो देवता-

कदु^२प्रचेतसे^३ मह^४ वच^५ा देवाय^६ शस्यते^७ । तदि^८ध्यस्य^९
 वर्द्धनम् ॥ २ ॥ ११०

(कदु) कस्मात्कारणादेव (मह) भगवदवतारदिवसाद्युत्सवेयज्ञे
 वा (प्रचेतसे) प्रकृष्टज्ञाना यज्ञानस्वरूपाय वा (देवाय) परमे
 श्वराय (वचः) स्तोत्रं (शस्यते) उच्चार्यते (हि) यस्मात् (तदि
 त) तदेव स्तोत्रं (अस्य) यजमानस्य (वर्द्धनम्) वृद्धिकरम्

भाषार्थः - १ किसी कारण २ भगवदवतारके दिवसआदि उत्सववा
 यज्ञमें ३ ज्ञेष्टज्ञानवाले वा ज्ञानस्वरूप ४ परमेश्वरके लिये ५ स्तोत्र ६ उ
 च्चारण किया जाता है ७ जिस कारण ८ वही स्तोत्र ९ इस यजमानकी १०
 वृद्धि करनेवाला है ॥२॥

मेधातिथिप्रियमेधावृषीगायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

उकथ^३ज्वन^४ शस्यमान^५ नागो^६ रीयि^७ राचिके^८ त ।
 नगा^९ यत्र^{१०} दीयमानम् ॥ ३ ॥ १११

(अथिः) (अ) विष्णुः (य) ब्रह्मा (इ) रुद्रः त्रिदेवरूपो परमेश्वरः

(नागोः) अव्यक्तभाषिणाः । गुड् । अव्यक्ते शब्दे, अगुः व्यक्तभाषि
नागुः अव्यक्तभाषीतस्य (शस्यमानं) पठ्यमानं (उक्त्यम्) श
खं (चै) (गीयमानं) (गायत्रं) साम (नै) (आचिकेत) नाभिजा-
नीयादिति (नै) अन्तर्यामी सन् सर्वभूणोतीत्यर्थः ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ त्रिदेवरूपपरमेश्वर २ अव्यक्तभाषीके ३ पठेद्गए ४ श
खको ५ शौर ६ गायेद्गए ७ गायत्रसामको ८ नहीजाने ९ यहवातनहीक
ह अन्तर्यामी होतासवको सुन्ताहै ॥ ३ ॥

विश्वामित्ररपि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्र उक्त्येभिर्मन्दिष्ठो वाजो नञ्च वाजपतिः

हरिवात्सुतानां सखा ॥ ४ ॥ ११२

(वाजानाम्) यज्ञानां मध्ये (वाजपतिः) यज्ञपतिः (चै) (हरिवात्सु-
विष्णुरूपः (इन्द्रः) परमेश्वरः (उक्त्येभिः) शस्त्रैः स्तोत्रैः (मन्दिष्ठः)
अतिशयेन तृप्तः सन् (सुतानाम्) देहाभिमान रहितानां भक्ता-
नां (सखा) भवति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ यज्ञोक्ते मध्य २ यज्ञपति ३ शौर ४ विष्णुरूप ५ परमेश्व
र ६ शख शौर स्तोत्रोसे ७ अत्यन्त तृप्त होता ८ देहाभिमान रहित भक्तो का
ई सखा होता है ॥ ४ ॥ मेधातिथिप्रियमेधा तृपी गायत्री छन्द आत्मा देवता-

आयो ह्युपनः सुतवाजोभिर्महणी यथा महो
इव युवजानिः ॥ ५ ॥ ११३

वागाद्युत्विजां वचनमृहे आत्मारूपयजमान । आत्मा वैयजुस्य
यजमानोऽङ्गान्युत्विजः शो ३ ५ २ १ ६ (नै) अस्माकं (सुतम्)
अभिषुतं शक्तिसमूहं (उपायोहि) प्राप्नुहि (वाजोभिः) विषयैः

(मो) हृणीयथाः) माह्वियस्व (इव) यथा (महान्) महापुरुषः
(युवजानि) यौवनोपेतजायायाः स्वामी सन्नन्याभिर्नापहियते ५

भाष्यः - वागाद्यत्विजकहतेहैहे आत्मारूपयजमान १ हमारे रश्मिपुत्रशक्ति समूह को ३ भाग कर ४ विषयों से ५ इन्द्रणमत कराओ ७ जै-
से महापुरुष ६ युवांजायाका स्वामी होता अन्यस्त्रियों से हरण नहीं

किया जाता ॥ ५ ॥ कौत्सो दुर्मित्ररुषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-
कदावसो स्तोत्रं हृतं श्रवणं शरुद्वैः
दीर्घं सुतवाताप्याय ॥ ६ ॥ ११४

हे (वसो) ज्योतिर्भयपरमेश्वर (कदा) (वो) गगनामृतं (श्रवणं
शरुद्वै) श्वरोत्स्यनितदा (वाताप्याय) प्राणीनाप्यते ऊर्ध्वान्निपात्य
तेतस्मै गगनामृताय (स्तोत्रम्) (हृतं) प्राप्यते पठ्यते हर्य गतौ
गगनामृतञ्च (सुतम्) श्रमिपुत्रं (दीर्घम्) समष्टिभावापन्नमात्म
प्रतिविंवंप्रति (श्रमशा) कुल्यारूपं भवति ॥ ६ ॥

भाष्यः - १ हे ज्योतिर्भयपरमेश्वर २ कभी ३ गगनामृत ४ श्वरोधको-
पातां हैतव ५ गगनामृतके लिये ६ स्तोत्र ७ पढ़ा जाता है और गगनामृत रश्मिपुत्र ८ समाष्टिभावापन्न आत्मप्रतिविंवके प्रति ९ कुल्यारूप होता है ॥ ६ ॥

मेधानिधिर्रुषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-
ब्राह्मणादिन्द्रराधसः पिवा सोममृतं श्रुतं तवेदं
सख्यमस्तुतम् ॥ ७ ॥ ११५ ॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (रुषिर्गायत्री) प्रत्येक समाधिकाले (ब्राह्मणात्)
ब्रह्मज्ञानयुक्तात् (राधसः) राधामहा मायातस्यांशरूपाद्देहा-
त् (सोमम्) आत्मप्रतिविंव (पिवा) यस्मात् (तव) (इदम्) (सख्य-

म्) (अस्तुतम्) अहिंसितमस्ति ॥७॥ ११५

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ प्रत्येक समाधिकाल पर ३ ब्रह्मज्ञान युक्त
४ मायाके अंश रूपदेहसे आत्म प्रतिविंबको पान करो जिस कारण ५ तेरी ८
यह र्द मित्रता १० अहिंसित है ॥७॥

मेधातिथिञ्चरिषीर्गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

वयं घाते अपि स्मसि स्तोतारं इन्द्र गिर्वणाः ।

त्वन्त्रोजिन्व सोमपाः ॥८॥ ११६

हे (गिर्वणाः) गीर्भिर्वननीयसम्भजनीय (इन्द्र) परमेश्वर (वयं-
म्) (ते) तव (स्तोतारः) (स्मसि) स्मः भवामः हे (सोमपाः) आत्म
प्रतिविंबस्य पातः (त्वम्) (अपि) (नेः) अस्मान् (घा) मेधया (जि-
न्व) प्रीणय ॥ ८ ॥

भाष्यार्थः - १ हे वेदबचनोंसे संभजनीय २ परमेश्वर ३ हम ४ तेरे ५ स्तो-
ता ६ हैं ७ हे आत्म प्रतिविंबके पान करने वाले ८ तुम र्द भी १० हमको ११ बुद्धिस-
हित १२ प्राप्त करो जिन्वतिर्गच्छतिकर्माणि घ० - ॥८॥

विश्वामित्रो गाथिनो भोपाद उदलोवाञ्चरिषीर्गीयत्री छन्द इन्द्रो दे०

एन्द्र एक्षुका सुचिन्तृन्मृगान् नूषुधेहिनः । सत्रा

जिदुग्रपौ थंस्यम् ॥९॥ ११७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (कासुचित्) (एक्षु) कास्वपियोग क्रियासु-
मृक्कासु (नः) अस्माकं (नूषु) अङ्गेषु (नृमृगाम्) योगवलं (प्राधे-
हि) समन्नात्स्थापय हे (उग्र) उत्कृष्ट (सत्राजित्) यज्ञेनाजितः
भक्त्यै कालभ्यस्त्वं (पौस्थ्यम्) पुरुषार्थ मोक्षं देहि ॥ ९ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २, ३ किसी योग क्रियाके बीच ४ हमारे ५ अंगों-

में ६ योगवलको ७ धारण करो ८ हे उत्कृष्ट दीयत्तसे अजितकेवल भक्तिसे लभ्यतुम्
१० पुरुषार्थ मोक्षको दीजिये ॥ ८ ॥

श्रुतकक्षत्ररुषि गयित्री छन्द इन्द्रो देवता
^{३ १२} एवा^{१३} ह्या^{३ ३ ३ ३ १२} सि^{३ ३ ३} वी^{३ ३ ३ ३} र्यु^{३ ३ ३ ३} रवा^{३ ३ ३ ३} शूर^{३ ३ ३ ३} उत^{३ ३ ३ ३} स्थिरः । एवा^{३ ३ ३ ३} तैरा^{३ ३ ३ ३}
 ध्यम्मनः ॥ १० ॥ ११८

(१) हे विष्णुरूप परमेश्वरत्वं (२) निष्प्रयत्न (वीर्युः) कामयुद्धे
 वीरान् भक्तान् स्वात्मनि मिश्रयिता । युमिष्णो (एव) (असि) (३)
 हे शिवरूप परमेश्वरत्वं (४) असुराणां संग्रामे भूरः (उत) अपि
 च (स्थिरः) (एव) असिहे (५) महानारायण (तै) तव (मनः) (राध्यम्)
 स्तुतिभिराराधनीयं (एव) ॥ १० ॥

भाषार्थ - १ हे विष्णुरूप परमेश्वर २ निष्प्रयत्न ३ तुमही भक्तोंको अप-
 ने आत्मा में मिलानेवाले ४ ही ५ हो ६ हे शिवरूप परमेश्वर तुम ७ असुरों-
 के संग्राममें भूर ८ और ९ स्थिर १० ही हो ११ हे महानारायण १२ आपका
 १३ मन १४ स्तुतिओंसे आराधनीय १५ ही है ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सा-
 मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयोऽध्यायः २

अथ तृतीयाध्याय आरभ्यते

अथ प्रथमः खण्डः

वसिष्ठत्ररुषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता

^{३ १ ३} अभि^{३ १ ३} त्वा^{३ १ ३} भूर^{३ १ ३} नो^{३ १ ३} नु^{३ १ ३} मो^{३ १ ३} दु^{३ १ ३} र्ग^{३ १ ३} धा^{३ १ ३} इ^{३ १ ३} व^{३ १ ३} धे^{३ १ ३} न^{३ १ ३} वः । इ^{३ १ ३} शो^{३ १ ३}

नमस्य जगतः स्वदृशमोशानामिन्द्रतस्थुषुः । १ । १

हे (भूर) असुराणां युद्धे भूर (इन्द्र) परमेश्वर (अस्य) (जगतः)

जङ्गमस्य (ईशानम्) ईश्वरं (तस्थुषः) स्थावरस्य (ईशानम्) स्तामि-
 नं (स्वईशम्) सूर्यरूपेण सर्वस्य द्रष्टारं (त्वा) त्वां (अभिनोनुमः) भृ-
 शमभिष्टुमः (इव) यथा (अदुग्धाः) (धेनवः) आत्मीयं वत्सं स्नेहा-
 द्रेण मनसा हुंकारादिभिरिभिनन्दन्ति ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - १ हे असुरोंके युद्धमें भ्रू २ परमेश्वर ३ इत् ४ चरके ५ ईश्वर
 ६ अचरके ७ स्वामी ८ सूर्यरूपसे सबके दृष्टा ९ तुमको १० हमस्तुन करते हैं
 ११ जैसे १२ अदुग्ध १३ गौअपने बछड़े को स्नेहाद्रि मन झङ्कार आदि के द्वारा प्र-
 सन्न करती हैं ॥ १ ॥ भरद्वाज ऋषि वृंहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वामिद्धि हवामहे सातो वाजस्य कारवेः । त्वां

वृत्रे विन्द्र सत्यति न्नरस्त्वाङ्गाष्ठा स्वर्वतः ॥ २ ॥ ३

(इन्द्र) हे परमेश्वर (कारवेः) स्तोतारो वागाद्यत्विजो वयं (वाजस्य)
 विराटरूपान्नस्य (सातो) लाभनिमित्ते (त्वाम्) (इत्) एव (हि) (ह
 वामहे) स्तुतिभिर्हवामहे (नरः) इन्द्रियाणां नेतारः (सत्यतिन्)
 सतां भक्तानां पालयितारं (त्वाम्) (वृत्रेषु) पापेषु सत्सु भजन्ति (स्-
 वर्वतः) मानससूर्यस्य । असौ वाऽ आदित्य एषोऽश्वः श० ६। ३। १।
 २६ (काष्ठासु) कामसङ्गमेषु (त्वाम्) त्वामेवाह्वयन्ति ॥ २ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ स्तोता हम वागाद्यत्विज ३ विराटरूपान्न
 के ४ लाभनिमित्त ५ तुमको ६ ७ ही ८ स्तुतिद्वारा आवाहन करते हैं ९ इन्द्र-
 योंके नेता १० भक्तपालक ११ तुमको १२ पापोंके होनेपर भजते हैं १३ मान
 ससूर्यके १४ कामसंग्रामोंमें १५ तुमको ही आवाहन करते हैं ॥ २ ॥

वालरिखित्या ऋषयो वृंहती छन्द इन्द्रो देवता-

अभिप्रवः सुराधसामिन्द्रमन्वयथाविदो योज

रित्भ्यो मघवा पुरुवसुः सहस्रेणो वशिः क्षीति ॥३॥३
 (यः) (पुरुवसुः) महातेजस्वी ज्योतिः स्वरूपः (मघवा) मघवान्-
 योगधनवान् परमेश्वरः (सहस्रेणोव) सहस्रज्योतिस्तं रातिददा
 तितेन रूपेणैव (जरित्भ्यः) स्तोत्रभ्यः अभि (शिः क्षीति) अभीष्टं द-
 दानि शिः क्षीतिर्दानकर्माणि० ३।२० हेमनः (वः) निवृत्तात्मा त्वं (य-
 था) (विदे) वेदो हं जानामि विदज्ञाने तथा (सुराधसम्) ज्ञेष्ठधनो
 पेतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (मर्चं) प्रकर्षेण पूजय ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ जो २ ज्योतिस्वरूप ३ धनवान् परमेश्वर ४ ज्योतिदाता
 रूपके द्वारा ही ५ स्तोताओं के लिये ६ अभीष्ट को देता है ७ हेमन निवृत्तात्मा
 तुम ८ जैसे ९ मैं वेद जान्ता हूँ उसी प्रकार १० ज्ञेष्ठधनसे युक्त ११ परमेश्वरको
 १२ पूजन करो ॥ ३ ॥ नोधां ऋषिर्दृहती छन्द इन्द्रो देवता-

तस्वोदस्म मृतीषह वसो मन्दान् मन्धसः । अभि
 वत्सं नस्वसरेषु धेनेव इन्द्र गोभिर्न वामहे ॥ ४ ॥

वेदोपदेशः हे (वसो) आत्मांशु रूपजीवात्मन् (तमे) (दस्मम्) श-
 चूणा मुपक्षयितारं । दसु उपक्षये (ऋतीषहम्) वाधकानामभिभ-
 वितारं (मन्धसः) नैवेद्याद्यन्नात् (मन्दानम्) मोदमानं (इन्द्रम्)
 परमेश्वरं (वः) युष्माकं (स्वसरेषु) गृहेषु देव मन्दिरेषु नि० ३।४ (गो-
 र्भिः) मन्त्रैः (अभिर्न वामहे) अभिपुमः । नुस्तवने शब्दे च (ने) यथा
 (धेनेवः) (वत्सम्) गोष्ठे स्ववत्समभिलक्ष्य शब्दयन्ति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - वेदोपदेश करता है १ हे आत्मांशु रूपजीवात्मन् २ उस ३ शत्रु-
 नाशक ४ वाधकों के अभिभविता ५ नैवेद्यांशादि अन्नसे ६ मोदमान ७ परमे-
 श्वरको ८ तुम्हारे ९ ग्रहों वा देवालयों में १० मंत्रों से ११ हम स्तुत करते हैं १२ जै-

से १३ गौ १४ च छडे को गोष्ठमें देख कर शब्द करती हैं - ॥ ४ ॥

कलिः मगाथ ऋषिर्वहनी छन्द इन्द्रो देवता-

^{१ २ ३} तरोभिर्वी^{३ १ २ ३} विदद्दु^{१ २ ३} सुमिन्द्रं^{३ १ २ ३} सर्वाध^{३ १ २ ३} ऊनयो^{३ १ २} वृह

^{१ २} द्वायन्तः^{३ १ २ ३} सुतसोमे^{३ १ २ ३} अध्वरे^{३ १ २ ३} द्वुवभरन्त^{३ १ २ ३} कारिणाम् ५-५

(सर्वाधः) ऋत्विजः नि० ३। १८ (सुतसोमे) अभिपुतसोमके (अध्वरे) यज्ञे (वृहन्) साम (गायन्तः) तिष्ठन्ति मन्त्रोऽहं (वः) युष्माकं (तरोभिः) योगवलैः (विदद्दुसुं) योगधनवेदकं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (ऊनयो) रक्षणाय (द्वुवै) (ने) यथा (कारिणाम्) स्वहितकरणशीलं (भरम्) भर्तारं कुटुम्बपोषकं पुत्रादय आह्वयन्ति ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ ऋत्विजलोग २ अभिपुतसोमवाले ३ यज्ञमें ४ वृहन्साम को ५ गाने वृहन्ते है मंत्रमें ६ तुम्हारे ७ योगवलोंसे ८ योगधनके दाता ९ परमेश्वरको १० रक्षाके लिये ११ आह्वान करताहं १२ जैसे १३ कुटुम्बपोषकपिता आदिको पुत्र आदि ॥ ५ ॥

वासिष्ठ ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ ३ ३} तरोणि^{३ १ २ ३} रित्सिषासति^{३ १ २ ३} वाज^{३ १ २ ३} पुरन्ध्या^{३ १ २ ३} युजो^{३ १ २ ३} । आव

^{१ २} इन्द्रम्पुरु^{३ १ २ ३} हतनमे^{३ १ २ ३} गिरो^{३ १ २ ३} नोमिन्त^{३ १ २ ३} ष्वसु^{३ १ २ ३} द्रुवम्-६ ॥ ६

(तरोणिः) मानससूर्यः (युजो) सहायभूतया (पुरन्ध्या) प्रज्ञया (इत) एव (वाजम्) विराड् रूपान्नं (सिषासति) सम्मज्जते वेदोहं (वः) युष्मदर्थं (पुरु हतम्) बहुभिराहुतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गिरा) स्वकीयवाचा (आनमे) अभिमुखं कुर्वे (द्वै) यथा (तष्टा) यद्वैकिः (सुद्रुवं) शोभनदारुं (नेमिम्) चक्रस्य वलयमानमयते ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ मानससूर्य २ सहायभूत ३ प्रज्ञाके द्वारा ४ इ ५ विराड् रूप

पञ्चको ६ सेवन करता है मे वेद ७ तुम्हारे लिये ८ बहुतसे आहुत ९ परमेष्ठ
रको १० अपनी वाणीसे ११ सन्मुख करता हूँ १२ जैसे १३ बढई १४ शोभन
काष्ठ वाले १५ चक्रबलय को भुकाता है - ६॥

मेधातिथि ऋषि र्द्विती छन्द इन्द्रो देवता-

पिवा^१सुत^३स्य^३ रसि^३नो^३ मत्स्वान^३ इन्द्र^३ गो^३मतः^३। आपि^३
नी^३वोधि^३सध^३माद्यो^३ वृधे^३स्मा^३ थं^३ अवन्तु^३तो^३धियः^३ ७

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वरवा (ने) अस्मदीयस्य (रसिनः) रसवतः
(गोमतः) गोविकारैः पयःप्रभृतिभिः अपणाद्रव्यैर्युक्तस्य। इन्द्र-
ययुक्तस्यवा (सुतस्य) अभिषुतसोमस्यात्मप्रतिविवस्यवा (पिवे-
पानंकुरु (मत्स्व) मत्तोभव (सधमाद्यो) सहमाद्यन्ति देवा अत्रेति स-
धमाद्यो यज्ञः तस्मिन्सोमयज्ञे। योगयज्ञेवा (आपिः) वन्धुर्व्याप-
को वात्वंनि० २। १८ (ने) अस्माकं (वृधे) वर्द्धनाय (वोधि) वोध्यस्व
(ने) त्वदीयाः (धियः) बुद्धयः (अवन्तु) अस्मान् रक्षन्तु ॥ ७ ॥

भाष्यः - १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ हमारे ३ रसवान् ४ पय आदि से युक्त
वा इन्द्रियों से युक्त ५ अभिषुत सोमवा आत्मप्रतिविव का ६ पानकरो ७ मत्त-
हो ८ सोमयज्ञ वा योग यज्ञमें ९ वन्धु वा व्यापकनुम १० हमारी ११ वृद्धिकेलि
ये १२ चेतो १३ आपकी १४ बुद्धियां १५ हमको रक्षा करो - ॥ ७ ॥

भर्ग ऋषि र्द्विती छन्द इन्द्रो देवता-

त्व^३ थं^३ ह्योहि^३ चरे^३ वे^३ विदा^३ भर्ग^३ वसु^३ त्तये^३। उ^३ द्वा^३ वृष^३ त्व^३
म^३ धव^३ ना^३ विष्ट^३ यु^३ उ^३ दिन्द्रा^३ ष्व^३ मिष्ट^३ ये^३ ॥ ८ ॥ ८

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (हि) (एहि) प्रादुर्भव (वसुत्तये) अस्माकं
वागाद्यत्विजां योगधनदानाय (चरेवे) ज्ञानिने यज्ञमानाय (भर्गम्)

योगैश्वर्यं (विदाः) लभस्वदत्त्वहे (मघवन्) लक्ष्मीपते (गविष्टये)
 इन्द्रिययज्ञाय (उद्वावृषस्व) योगैश्वर्यं मासिञ्च । वृषुसेचने (अ
 ष्वम्) मानससूर्यं (इष्टये) यागाय (उद्) उद्वावृषस्व स्वात्मनि-
 सिञ्च ॥ ८ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २, ३ तुमही ४ आओ ५ हमवागाद्यत्विजोंके
 योगधनकेदानार्थ ६ ज्ञानीयजमानकेलिये ७ योगैश्वर्यको ८ दो ९ हे लक्ष्मी
 पते इन्द्रिययज्ञकेलिये १० योगैश्वर्यकोदो ११ मानससूर्यको १२ योगकेलि
 ये १३ अपनेआत्मानमें सींचो ॥ ८ ॥

वासिष्ठऋषिर्ब्रह्मती छन्दो मरुतो देवताः

नहि वृष्वरमञ्चनवाशिष्ठः परिमं सते । अ-
 स्माकं मद्यमरुतः सुते सचो विश्वे पिवन्तु का-
 मिनः ॥ ९ ॥ ९

हे (मरुतः) देवाः प्राणावा (वासिष्ठः) वाक् । वाग्वै वासिष्ठः १० १४।
 ९। २। २ (वः) युष्माकं मध्ये (वरमं) (चन) अन्त्यमपि (नहि) (प-
 रिमंसते) वर्जयित्वा नस्तौति किन्तु सर्वानेव युष्मान् स्तौति (अद्य
 (अस्माकं) (सुते) अभियुते सोमे । आत्म प्रतिविश्वेवा (कामिनः)
 कामयमानाः (विश्वे) सर्वयूयं (सचो) सङ्गत्य (पिवन्तु) पानं-
 कुर्वन्तु ॥ ९ ॥

भाष्यार्थः

१ हे मरुतदेवताओवाप्राणो २ वाक् ३, ४, ५, ६, ७ तुमसबकी स्तुतिकरताहे ८ अ-
 व ९ हमारे १० अभियुत सोमवाआत्म प्रतिविश्वमें ११ इच्छामान १२ सबतुम १३
 मिलकर १४ पानकरो — ॥ ९ ॥

प्रगाथः काएवऋषिर्ब्रह्मती छन्दो मरुतो देवता

माचिदन्वद्विशं सतं सर्वायो मारिषयत् । इन्द्र
मितस्तोता वृषणां संचो सुते मुहु रुकथा चेशं
सत ॥ १० ॥ — १०

हे (सर्वायः) भक्ताः (अन्यत्) भगवत्स्त्रोत्रादन्यत् (माचित्) मैव
(विशंसत उच्चारयत् (मां) (रिषयत्) माहिंसितारो भवत (सुते)
अभिपुते सोमे । आत्मप्रतिविंवेवा (वृषणाम्) धर्मकामार्थमोक्षा
णां वर्षितारं (इन्द्रम्) (इत्) परमेश्वरमेव (संचो) सहस्रदीभूय
(स्तोत) स्तुत (च) (उकथा) उकथानिशस्त्राणि (मुहुः) पुनः पुनः
(शंसते) उच्चारयत् ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ हे भक्तो २ भगवत् स्तोत्रसे अन्यको ३, ४ मत उच्चारणा करो
५, ६ मत हिंसिता होओ ७ सोमवा आत्मप्रतिविंवेके अभिपुत होने पर ८ धर्म का
मार्थमोक्षके दाता ९, १० परमेश्वर को ही ११ मिलकर १२ स्तुत करो १३ और १४
शस्त्रों को १५ बारम्बार १६ उच्चारणा करो - १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सन्नुज्वालाप्रसाद शर्मा विरचिते साम
वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य प्रथमः खण्डः १

अथ द्वितीयः खण्डः

आदि रसः पुरुहन्मात्रपि वृंहती छन्द इन्द्रो देवता-

नकिष्कर्मणा नशद्यंश्वकारसदावृधम् । इन्द्र
नयन्निविश्वं गून् मृन्वसमं धृष्टं धृष्टामोजसां ॥ ११ ॥ १२

(किः) कर्ता देहेन्द्रिय मनो बुद्धि समूहः नि० (तम्) जीवात्मानं (को
र्मणा) कर्मफलेन (नं) (नशते) व्याप्नोति नशत् व्याप्तिकर्मानि०
२, १२ (यः) जीवात्मा (सदावृधम्) सदावर्द्धकं (विश्वं गून्) सर्वैः

स्तुत्यं (ऋत्वा^६म्) महान्तं (नं^{१०}) च (भोजसा^{११}) वलेन (अधृष्टं^{१२}) अ-
 न्यैर्धर्षितुमशक्यं (धृष्टुम्^{१३}) शत्रूणां धर्षकं (इन्द्रम्^{१४}) परमेश्वरं (य-
 जैः^{१५}) (चकार^{१६}) अनुकूलं कृतवान् ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - १ कर्त्ता देह इन्द्रियमन बुद्धि का समूह २ उस जीवात्मा को
 ३ कर्मफलसे ४, ५ व्याप्त नहीं करता है ६ जिस जीवात्माने ७ सदा दृष्टि देने वा
 ले ८ सबसे स्तुति योग्य ९ महान्त १० और ११ बलसे १२ दूसरेके अधृष्ट १३ श-
 त्रुओंके धर्षक १४ परमेश्वर को १५ यज्ञोंके द्वारा १६ अनुकूल किया ॥ १ ॥

द्वयोर्मेधातिथिर्ऋषिर्हृहती छन्द इन्द्रो देवता-

यऋते चिदभिऋषिः पुरा जनुभ्यः श्वात्वेदः । संधो

तासन्धि मघवा पुरूवसु निष्कर्त्ता विद्रुत पुनः । २-१२

(यैः^१) परमेश्वरोऽन्तर्यामिरूपेणादेहेति षन्सन् (अभिऋषिः^२) अभि-
 ष्लेषणात् सन्धानद्रव्यात् (ऋते^३) (चित्^४) विनापि (जनुभ्यः^५) ग्री-
 वाभ्यः सकाशात् (श्वात्वेदः^६) श्वातर्दनात् श्वारुधिर निस्त्रवणात् (पु-
 रा^७) पूर्वमेव (सन्धिसन्धाना^८) सन्धातव्यस्य संयोजयिता (पुनः^९)
 (विद्रुतं^{१०}) विद्रुतं विच्छिन्नं (निष्कर्त्ता^{११}) संस्कर्त्तास (मघवा^{१२}) लक्ष्मीवान्
 (पुरूवसुः^{१३}) बहुधनः ॥ २ ॥

भाष्यार्थः - १ जो परमेश्वर अन्तर्यामी देह मैठैरता २, ३, ४ सन्धानद्रव्य
 के विनाभी ५ ग्रीवाओंसे ६ श्वारुधिरगिरनेसे पहिले ही ८ संधातव्यसंगोंका
 संयोजक है ९ फिर १० विशेषच्छिन्नसंगका ११ संस्कर्त्ता है वह १२ लक्ष्मीवा-
 न १३ बहुत धनवाला है - ॥ २ ॥ विनियोगः पूर्ववत्-

श्वान्वासहस्रमाशतयुक्त्वा रथे हिरण्ययो ब्रह्म

युजो हरय इन्द्र कोशिनो वहन्तु सोमपीतये २-१३

हे (इन्द्र) (हिरण्यये) हिरण्यये (रथे) (युक्ताः) (ब्रह्मयुजः) वैदि-
कमन्त्रेण युक्ताः (कोशिनः) केशाः ग्रीवाया उपरिवर्तमानाः सटा-
स्त्रैर्युक्ताः (शतम्) शतसङ्ख्याकाः (सहस्रम्) सहस्रसङ्ख्याका
वा (हरयः) (त्वा) त्वां (सोमपीतये) सोमपानाय (श्रो) श्रादरेण-
(श्रावहन्तु) अस्मद्यत्त मानयन्तु ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ सुनहरी ३ रथमें ४ युक्त ५ वैदिक मंत्रसे जोड़े हुए
६ केशवा ग्रीवापर सटाश्रोसे युक्त ७ सौ ८ वा सहस्र ९ घोड़े १० तुमको ११ सोम-
पानके लिये १२ श्रादरपूर्वक १३ हमारे यज्ञमें लाओ ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (इन्द्र) परमेश्वर (हिरण्यये) ज्योतिर्मये
ज्योतिर्वैहिरण्यं श० ६।७।१२ (रथे) योगरथे (युक्ताः) (ब्रह्मयुजः)
महावाचा युक्ताः (कोशिनः) क, अ, ई, शू ब्रह्मविष्णु भगवति महे
शानामुपासकाः (हरयः) मानससूर्याः (शतम्) कल्याणविस्तारक
रं (सहस्रम्) स्वकीयज्योतिषोदातारं (त्वा) त्वाम् (सोमपीतये)
आत्मप्रतिविंवस्य पानाय (श्रो) समन्तात् (श्रावहन्तु) ध्याने प्रा-
पयन्तु ॥ ३ ॥

भाषार्थः

१ हे परमेश्वर २ ज्योतिर्मय ३ योगरथमें ४ युक्त ५ महावाक्से जोड़े हुए ६ भगव
तीसहित त्रिदेवके उपासक ७ मानससूर्य ८ कल्याणविस्तारकर्ता ९ अपनी ज्यो
तिके दाता १० तुमको ११ आत्मप्रतिविंवके पानार्थ १२ सब ओरसे १३ ध्यान ह्य
रामाम करो - ॥ ३ ॥ विष्णामिन्न ऋषिर्दहती बन्द इन्द्रो देवता -

श्रोमन्दैरिन्द्रहरमीय्याहि मयूररोमभिः । मात्वा
कोचिन्निये मुरिन्न पाशिनोति धन्ववतां ७ इहि ४-२४
हे (इन्द्र) (मन्द्रैः) गम्भीरध्वनिवाद्भिः (मयूररोमभिः) मयूररोम

दृशरोमयुक्तैः (हरिभिः) अश्वैरुपेतस्त्वं (आयोहि) यज्ञं प्रत्यागच्छ (केचित्) (इत्) केचिदपि प्रतिबन्धकाः कार्यविशेषाः (त्वा) (त्वां) (मा) (नियेमुः) गमनप्रतिबन्धं माकुर्वन्तु (ने) यथा (पाशिनः) पाशहस्ताव्याधाः पक्षिणां (धन्वा) (इव) मरुस्थलानीव (तान्) प्रतिबन्धकान् (अति) अतिक्रम्य (एहि) आगच्छ ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ हे इन्द्र २ गम्भीरधनिवान् ३ मयूरसमरोमयुक्त ४ घोड़ों की सवारीसे युक्त तुम ५ यज्ञमें आओ ६, ७ कोई प्रतिबन्धक कार्यविशेष ८ तुम्हारी ९, १० रुकावट मत करो ११ जैसे १२ पाशधरव्याधपक्षियों की १३-१४ मरुस्थल की समान १५ उनको १६ अतिक्रमण करके १७ आओ - ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (इन्द्र) यजमान (मन्दैः) अनाहतशब्दवद्भिः (मयूररोमभिः) (ममेधा) (अ+अ+चक्षु) (ऊ, ऋत्रे) (यवाक्) रुरसनेन्द्रियं (र) जाठराग्निः (श्रो, रागभून्यः कामः) (ममनः) तैः सहितैः (हरिभिः) प्राणैः सहितस्त्वं (आयोहि) भृकुटिमंडलं प्रत्यागच्छ (केचित्) (इत्) कामादयः (त्वा) त्वां (मा) (नियेमुः) (ने) यथा (पाशिनः) (धन्वा) मरुस्थलानि (इव) निष्फलान् (तान्) कामादीन् (अति) अतिक्रम्य (एहि) गगनमंडलं प्राप्नुहि ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः

१ हे यजमान २ अनाहतशब्दवाले ३ चक्षु ऋत्र वाक् रुरसनेन्द्रिय जाठराग्निरागभून्यकाम श्रोत्रमनसहित ४ प्राणोंके साथ तुम ५ भृकुटिमंडलमें जाओ ६, ७ कोई भी काम आदि ८ तुमको ९, १० मनरोको ११ जैसे १२ पाशधरव्याध - १३, १४ मरुस्थल की समान निष्फल १५ उन्हें कामआदिको १६ अतिक्रमण करके १७ गगनमंडल को प्राप्त करो ॥ ४ ॥

गौतमऋषिर्ब्रह्मती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमङ्गप्रशंशिशोदेवः शोविष्ठमर्त्यम् । नत्वदन्यो
मघवन्नस्ति मर्दिनेन्द्रब्रवीमिते वचः ॥ ५ ॥

हं (शोविष्ठ) बलवत्तम (मघवन्) लक्ष्मीपते (अङ्ग) ब्रह्माणि प्रादु-
र्भूत (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तवैव (वचः) वैदिकमन्त्ररूपं (ब्रवीमि)
उच्चारयामि (त्वदन्यः) त्वत्तोऽन्यः काश्चित् (मर्दिता) सुखयिता
(ने) (अस्ति) (देव) (त्वम्) (मर्त्यम्) अहङ्कारास्पदं जीवात्मानं
(प्रशंशिवः) प्रशस्तं करोपि—॥ ५ ॥

भाषार्थः— १ हे क्लवत्तम २ लक्ष्मीपते ३ ब्रह्ममें प्रादुर्भूत ४ परमेश्वर ५
प्रापकेही ६ वैदिकमंत्ररूप वचनको ७ उच्चारण करता हूं ८ आपसे अन्य को
ई ई सुखदाता ९ नहीं ११ है १२ मायाके खिलोनेसे खेलने वाले १३ तुम १४
अहंकारास्पद जीवात्माको १५ प्रशस्त करते हो—॥ ५ ॥

नृमेधपुरुमेधावृषीर्ब्रह्मती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमिन्द्रयशोऽस्य जीषी शवसस्पतिः । त्वं वृत्रो

णिहंथं स्य प्रतिन्येक इत्युर्वनुत्तर्षणी घृतिः ६-१६

(इन्द्र) हे अन्तर्यामिन् परमेश्वर (त्वम्) (शवसस्पतिः) बलपति
रात्मारूपः (ऋजीषी) ऋजीपतुल्ये देहे व्याप्तो भूतात्मारूपः (यशः)
मानससूर्यरूपः । आदित्यो यशः प्रा० १४। १। ३२ (असि) (अनु-
त्त) नकेनापि प्रेरितो हैता भावात् (चर्षणी घृतिः) भक्तानां धारक
रुचं (एकः) (दत्) एव (अप्रतीनि) प्रायश्चित्तहीनानि (पुरु) पुरु-
णि वहनि (वृत्रोणि) पापानि (हंसि) —॥ ६ ॥

भाषार्थः— १ हे अन्तर्यामी परमेश्वर २ तुम ३ बलपति आत्मारूप ४ भूता

प्रागच्छ (सचा) ^{१४}सहवासी भूत्वा (सुपिव) ^{१५}आत्ममतिविं वंसुष्टुपिव
भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जैसे ३ गौरमृग ४ प्यासा होता ५ जलोंसे सं-
 स्कृत ६ निस्त्राणतटाकदेशको ७ प्राप्त करता है उसी प्रकार ८ साखित्व ९ प्राप्त
 होनेपर १० शीघ्र ११ हम १२ मेधावी वागादि ऋत्विजोंके बीच १३ आशो १४
 सहवासी होकर १५ आत्ममतिविंको पान करे - ॥२०॥

इति ऋषी भृगुवंशावतंस ऋषीनाधूरामसुनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते साम
 वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः खण्डः

अथ तृतीयः खण्डः

भर्ग्वत्पि र्हृती छन्द इन्द्रो देवताः

शुग्ध्यु ३ पुशचीपत इन्द्र विष्वाभि र्तिभिः । भर्गं
 नहि त्वायश सवसु विदमनु भूरचरो मसि ॥१॥ २१

हे (शचीपते) यज्ञपते । शचीतिकर्मनामनि० २। १। २२ (नो) च (भू-
 र) असुराणां जये भूर (इन्द्र) परमेश्वर (विष्वाभिः) सर्वाभिः (ऊति
 भिः) रक्षाभिः (उ) एव (भर्गम्) योगेश्वर्य (शग्ध्यु) देहि (वसुविदं)
 धनस्य योगेश्वर्यस्य वालम्भकं (यशसम्) यशस्विनं (त्वा) त्वाम्
 अनुचरामेसि) परिचरामः ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे यज्ञपते २ और हे असुरोंके जीतनेमें भूर ४ परमेश्वर ५
 सब ६ रक्षाओंके साथ ७ ही ८ योगेश्वर्यको ९ दो १० धनवा योगेश्वर्यके प्राप
 क ११ यशस्वी १२ तुमको १३ हमसेवा करने हैं ॥१॥

रेभः काश्यप ऋषी र्हृती छन्द इन्द्रो देवताः

या इन्द्र भुज आभरः स्ववा शं असुरेभ्यः । स्तोतार
 मिन्म घवन्नस्य वद्वययत्वे वृक्तो वहिपः ॥२॥ २२

हे^१(मधुवन्) धनवन्^२(इन्द्र) परमेश्वर^३(स्वर्वाङ्ग) सूर्यरूपस्त्वं^४(याः)
 (भुजः)^५यानि भोक्तव्यान् यन्नानि^६(असुरेभ्यः) मेघेभ्यः सकाशात्नि^७
 (आभरः)^८आहरः उत्पन्नानि कृतवानसितैः^९(अस्य) तव स्वरूपस्य-
 (स्तोतारम्)^{१०}(इत्) एव^{११}(वर्द्धय) (ये)^{१२}(त्वे) त्वदर्थं^{१३}(वृक्तवर्हिषः)^{१४}स्ती
 एवर्हिषः^{१५}(च) तानपि वर्द्धय ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे धनी २ परमेश्वर ३ सूर्यरूपतुमने ४ जिन ५ भोक्तव्य अन्नोको ६ मेघोंके सकाश से ७ उत्पन्न किया है उनके द्वारा ८ तेरे स्वरूपको ९ स्तोताको १० ही ११ बढ़ाओ १२ जो १३ आपके लिये १४ स्तीर्ण कुशा हैं १५ उनको भी बढ़ाओ - ॥ २ ॥ जमदग्नि ऋषि र्विहती छन्दो मित्राद्या देवताः

प्रमित्राय^२ प्रार्यमा^३ वरुणाय^४ छन्दोमयं^५ सच पथ्यम्^६ वेदोक्तं^७ वचः^८ स्तोत्रं^९ राजसु^{१०} यज्ञे^{११} प्रपठत ॥ ३ ॥

हे ऋत्विजः^१(ऋतावसः) यज्ञान्नवतो यजमानस्य^२(वरुण्ये) यज्ञ-
 गृहे^३(मित्राय) (अर्यमा)^४(वरुणो) वरुणाय^५(छन्दोमयं) छन्दोमयं (स-
 चपथ्यम्) सेवाहं वेदोक्तं^६(वचः) वचनं स्तोत्रं^७(प्रगायत) (राजसु)^८यज्ञे
 राजमानेषु^९तेषु (स्तोत्रम्)^{१०}(प्र) प्रपठत ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे ऋत्विजो १ यज्ञान्नवान यजमानके २ यज्ञ गृहमें ३ मित्र ४ अर्यमा ५ वरुणके लिये ६ छन्दोमय ७ सेवा योग्य वेदोक्त ८ स्तोत्रको ९ गाओ १० यज्ञमें उनके विराजमान होने पर ११ स्तोत्रको १२ पढो ॥ ३

अथाध्यात्मम् - वागाद्यृत्विजः^१(ऋतावसः) सत्यान्नवतो-
 योगिनः^२(वरुण्ये) यज्ञगृहे^३(मित्राय) प्राणाय^४(अर्यमा) मनसे
 (वरुणो) अपानाय^५(छन्दोमयं) छन्दोमयं (सचपथ्यम्) वेदोक्तं^६(वचः)
 स्तोत्रं^७(प्रगायत) (राजसु) योगानुष्ठाने राजमानेषु^८तेषु (स्तोत्रम्)

१२
(३) प्रपठत ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - हे वागादिऋत्विजो १ सत्यश्नन्वाले योगी के २ यज्ञ पृष्ट
में ३ प्राण ४ मन ५ श्वोर अपान के लिये ६ छन्दो मय ७ वेदोक्त ८ स्तोत्रको ९
गाओ १० योगानुष्ठान में उनके विराजमान होने पर ११ स्तोत्रको १२ पढो ॥

३ ॥ मेधातिथिऋषिर्दृहती छन्द इन्द्र रुद्रा देवताः
अभित्वा पूर्वपीतये इन्द्र स्तोमोभिरायवे । समीची
नासऋभवः समस्वरन्तुद्रो गृणान्त्पूर्वम् ॥ ४ ॥ २४
हे (इन्द्र) परमेश्वर (आयवे) मनुष्याः स्तोतारः (पूर्वपीतये) पूर्व
स्यात्मप्रतिविंवस्यपानाय (स्तोमेभिः) स्तोत्रैः (न्वा) त्वां (पूर्वम्)
आद्यं (समस्वरन्) सम्यग् स्तुवनस्य शब्दे तथा (समीचीनासः)
सङ्गताः (ऋभवः) मेधाविनः (रुद्राः) प्राणाः श० १४ । ६ । ६ । ५ (अ
भिगृणान्त्) अभ्यधुवन् ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ स्तोता मनुष्यने ३ आत्मप्रतिविंवके पाना
र्थ ४ स्तोत्रों से ५ तुम्ह ६ आद्यको ७ भले प्रकार स्तुत किया तथा ८ सङ्गत ९
मेधावी १० प्राणों ने ११ स्तुतिकी ॥ ४ ॥

द्वयौर्दमेधपुरुमेधा वृषी वृहती छन्द इन्द्र मरुता देवताः

प्रवृ इन्द्राय वृहते मरुता ब्रह्मार्चन । वृत्रं च हनति
वृत्रहा शतं कतुर्वज्राणां शतं पर्वणा ॥ ५ ॥ २५ ॥

हे (मरुतः) प्राणाः श० १४ । ६ । ६ । ५ यद्वा वागाद्युत्विजः नि० ३ । १८
(वः) युष्माकं (वृहते) महते (इन्द्राय) परमेश्वराय (ब्रह्म) आत्म
प्रतिविंव रूपान्त्रिनि० २ । ७ । २३ (प्रार्चन) प्रार्पयत यस्मात् (वृत्रहा)
पापस्य हन्ता (शतकतुः) अनन्तकर्मा परमेश्वरः (शतपर्वणा)

अनन्तधारेण (वज्रेण) ^{१६}ज्ञान वज्रेण (वृत्रेण) ^{१९}पापं (हन्ति) ^{१२}नाशयति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे प्राणों वा वागादिऋत्विजो २ तुम्हारे ३, ४ परमेश्वरके लिये ५ आत्ममतिविंवरूप अन्नको ६ माप्रकराओ ७ पापनाशक ८ अनन्त कर्माँ परमेश्वर ९ अनन्त धारावाले ११ ज्ञानवज्रसे १२ पापको १३ नाश करता है ॥ ५ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

वृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्ते मम् । येन

ज्योतिरजनयेन् नृता वृधो देवन्देवाय जागृवि ६-२६

हे (मरुतः) वागाद्यत्विजः (इन्द्राय) परमेश्वराय (वृत्रहन्ते मम्) अतिशुभेन पापविनाशकं (वृहन्) साम (गायत) (येन) साम्ना (ऋतावृधः) ऋतस्य यज्ञस्य वर्धकाः प्राणाः (देवाय) परमेश्वराय (देवम्) विद्वांसं ॥ विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३।१० (जागृवि) जागरणाशीलं (ज्योतिः) मानससूर्यं (अजनयेन्) संस्कृतम कुर्वन् ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ हे वागाद्यत्विजो २ परमेश्वरके लिये ३ अतिशुभपापविनाशक ४ वृहत्सामको ५ गाओ ६ जिस सामके द्वारा ७ यत्नवृद्धि करनेवाले प्राणोंने ८ परमेश्वरके लिये ९ विद्वांसं १० जागरणाशील ११ मानससूर्यका १२ संस्कार किया ॥ ६ ॥

वसिष्ठ ऋषिर्ब्रह्मणी ब्रह्म इन्द्रो देवता-

इन्द्रं क्रतुन् शोभरे पिता पुत्रेभ्यो यथो ॥ शिखो

णो अस्मिन् पुरुहूतयामनिजीवो ज्योति र्खीम

हि ॥ ७ ॥ २७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्मभ्यम् (क्रतुम्) प्रदानं (शोभरे)

आहूदेहि(नेः) अस्मभ्यं (शिस्त) विद्यां प्रयच्छ (यथा) (पिता)
 (पुत्रेभ्यः) हे पुरुहूत) ब्रह्मभिराहूत परमेश्वर (जीवाः) वयं (यामनि
 योग यज्ञे। यान्ति देवा यस्मिन् सयाप्रो यज्ञः (ज्योतिः) महा पुरुषं
 त्वां (अशी महि) प्राप्नुयामः ॥७॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ हमारे ३ प्रज्ञान को ४ दीजिये ५ हमारे लि
 ये ६ विद्या दीजिये ७ जैसे ८ पिता ९ पुत्रोंके लिये देता है १० हे ब्रह्म से आहूत
 परमेश्वर ११ हम जीव १२ योग यज्ञमें १३ महा पुरुष तुमको १४ प्राप्त करें ॥७॥

रेभक्तपिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

मान इन्द्र परा वृणाक भवानः सधमाद्यो त्वन्न ऊ
 ती त्वमिन्न प्राप्य मान इन्द्र परा वृणाक ॥ ८ ॥ २८

(स) सर्वव्यापिन हे (इन्द्र) परमेश्वर (नेः) अस्मान् (मा) (परा
 वृणाक) मापारित्याक्षीः। वृजी वर्जने (नेः) अस्माकं (सधमाद्ये)
 सहमादन हेतु भूते यज्ञे (भव) मादुर्भव (इन्द्र) हे परमेश्वर (त्वम्)
 (नेः) अस्माकं (ऊती) रक्षिता (त्वम्) (इत्) एव (नेः) अस्माकं
 (प्राप्यम्) ज्ञातव्यो वन्धुः (नेः) अस्मान् (मा) (परा वृणाक) मा
 पारित्याक्षीः ॥ ८ ॥

भाष्यार्थः

१ हे सर्वव्यापिन २ परमेश्वर ३ हमको ४, ५ मतत्यागो ६ हमारे ७ यज्ञमें ८ प्र
 कट हो ९ हे परमेश्वर १० तुम ११ हमारे १२ रक्षक हो १३ तुम १४ ही १५ हमारे
 १६ जानने योग्य वन्धु हो १७ हमको १८, १९ मतत्यागो— ॥ ८ ॥

मेधातिथिः कपिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

वयं इत्वा सुतो वन्तः प्रापान् वृक्तो वहिषः। पवित्र
 स्य प्रसवो णोषु वृत्रहन् परिस्तो नारश्नासने। ९-२९

हे (१) (२) (३) (४) (५) (६) (७) (८) (९) (१०) (११) (१२) (१३) (१४) (१५) (१६) (१७) (१८) (१९) (२०) (२१) (२२) (२३) (२४) (२५) (२६) (२७) (२८) (२९) (३०) (३१) (३२) (३३) (३४) (३५) (३६) (३७) (३८) (३९) (४०) (४१) (४२) (४३) (४४) (४५) (४६) (४७) (४८) (४९) (५०) (५१) (५२) (५३) (५४) (५५) (५६) (५७) (५८) (५९) (६०) (६१) (६२) (६३) (६४) (६५) (६६) (६७) (६८) (६९) (७०) (७१) (७२) (७३) (७४) (७५) (७६) (७७) (७८) (७९) (८०) (८१) (८२) (८३) (८४) (८५) (८६) (८७) (८८) (८९) (९०) (९१) (९२) (९३) (९४) (९५) (९६) (९७) (९८) (९९) (१००)

भाषार्थः - १ हे पापनाशक परमेश्वर २ सोमवाग्नात्ममतिविंवकाशभिपव करने वाले ३ स्तीर्णावर्हिवा नाडी वाले ४ स्तोता ५ हम ६ तुमको ७ ही ८ माणके ९ कमलों में १० उपासना करते हैं ११ जैसे १२ जल नदी के भिरना से स्थानों में द्वीपको घेर कर स्थित होते हैं ॥ ९ ॥

भरद्वाज ऋषि र्हेहनी छन्द इन्द्रो देवता-

यादिन्द्रनाहृषीष्वोऽभोजो नृम्याञ्च कृष्टिषु
यद्वापञ्चाक्षितीनाद्युन्नमाभरसत्वाविश्वानि
पौंथस्यो ॥ १० ॥ ३०

हे (इन्द्र) परमेश्वर (नाहृषीषु) मानवीषु । नहुष इति मनुष्यः नि० २।३।६ (कृष्टिषु) प्रजासु (यत्) (भोजः) बलं (च) (नृम्याम्) धनं (आ) आविद्यते (वा) अथवा (पञ्च) (क्षितीनाम्) ब्रह्मचारिण्यहस्थवान्मस्थसन्त्यासिपरमहंसानां ॥ क्षितय इति मनुष्यनामः नि० २।३।६ (यत्) (द्युन्नम्) बलं यानि (विश्वानि) सर्वाणि (पौंथस्यो) पौंस्यानि पुरुषार्थसाधनानि चतानि (सत्वा) सर्वदा (आभर) आहर देहि ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ मानवी ३ प्रजाओं में ४ जो ५ बल ६ और

७ धन ८ विद्यमान है ९ अथवा १०, ११ ब्रह्म चर्य गृहस्थवानमस्थ सन्यासी परम-
हंसे का १२ जो १३ बल और जो १४ सब १५ पुरुषार्थ साधन है १६ उन सबको-
१७ दीजिये ॥-॥१०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनुज्वाला मसाद शर्म विरचिते साम
वेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य तृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

मेधातिथिचरीषि वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

सत्यमित्या वृषेदासि वृषजूतिनी विता वृषाद्यु
ग्रश्रीणिवषे परावति वृषो अवीवति ऋतः ॥१॥ ३१

हे (उर्य) उत्कृष्ट परमेश्वर (सत्यम्) ब्रह्म रूपस्त्वं (इत्या) एवं प्रका
रेण (वृषा) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षकः (इत्) एव (असि) (वृषः
जूतिः) वृषे धर्मे जूतिर्वोगो यस्य स धर्मरूपस्त्वं (नेः) अस्माकं (अवि
ता) रक्षिता (वृषा) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षकः (हि) (श्रीणिवषे)
अयसे (परावति) महानारायण रूपे (वृषा) (इव) असि (अवीवति)
अवी अश्वः मानस सूर्यस्तद्वृति विष्णु महेशादिरूपे (वृषा) धर्मा
र्थकाममोक्षाणां वर्षकः (ऋतः) ॥१॥

भाषार्थः - १ हे उत्कृष्ट परमेश्वर २ ब्रह्म रूप तु म ३ इसी मकार से ४ धर्म-
कामार्थमोक्षके दाता ५ ही ई हो ६ धर्मरूप तु म ७ हमारे ८ रक्षक ९ चारों
पदार्थके दाता १० ही ११ सुने जाते हो १२ महानारायण रूपमें १३ चारों पदा-
र्थके दाता १४ ही हो १५ विष्णु महेश आदिरूपमें १६ चारों पदार्थके दाता-
१७ विख्यात हो ॥१॥ रेभचरपि वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

यच्छ्रीकासि परावति यदवीवति वृचहन् अतस्त्वा

गीभिः^३द्युगदिन्द्र^३कोशिभिः^३सुतावा^३ध्वं^३ष्पाविवासति^३२
हे(शक्र)^१शत्रुहनन्समर्थ^२(वृत्रहन) वृत्रनाशक^३(इन्द्र)^३(यद्)^३
यदा^३(परावति) दूरे^६द्युलोकदेशे^६(असि)^६(यद्)^६यद्वा^९(अर्वावति) अ
र्वाचीने^९अन्तरिक्षे^९(अतः)^९अस्मात्स्थानात्^९(सुतावान्)^९अभिषुत-
सोमवान्^९यजमानः^९(त्वां)^९त्वां^९(कोशिभिः)^९हरिभिरिवस्थिताभिः^९
(गीभिः)^{१३}(द्युगत्)^{१४}शीघ्रं^{१५}(आविवासति) आत्मीयं^{१६}यत्नं^{१६}प्रति^{१६}आग
मयति॥२॥

भाषार्थः

१ हे शत्रुहनन में समर्थ २ वृत्रनाशक ३ इन्द्र ४ जब ५ स्वर्ग में ६ दूरे ७ अथ
वा ८ अन्तरिक्ष में है ९ इस स्थान से १० अभिषुत सोम वाला यजमान ११ तु
मको १२ अश्वतुल्य स्थित १३ वेदवचनों के द्वारा १४ शीघ्र १५ अपने यत्न में
प्राप्त करता है ॥२॥

अथाध्यात्मम्

(हे(शक्र)^१सर्वशक्तिमन्^२(वृत्रहन) पापनाशक^३(इन्द्र)^३परमेश्व
र^४(यत्) यस्मात्^५(परावति) महानारायण रूपे^६(असि)^६(यत्) य
स्माच्च^७(अर्वावति) ब्रह्माविष्णु महेशादिरूपे^८सि^८(अतः)^८अस्मा-
त्कारणात्^९(सुतावान्)^९अभिषुतात्म प्रतिविंबो^९यजमानः^९
(त्वां)^९त्वां^९(कोशिभिः)^९(कु) ब्रह्मा^{१३}(अ) विष्णुः^{१४}(इ) रुद्रः^{१५}(श) महा
पुरुषः^{१६}तत्संबन्धिभिः^{१७}(गीभिः)^{१८}(द्युगत्)^{१९}शीघ्रं^{२०}(आविवासति) परि-
चरति॥२॥

भाषार्थः

१ हे सर्वशक्तिमान २ पापनाशक ३ परमेश्वर ४ जिस कारण ५ महानारा-
यण रूप में ६ है ७ और जिस कारण ८ ब्रह्माविष्णु महेश आदि रूप में है
९ इसी कारण से १० अभिषुत आत्म प्रतिविंब वाला यजमान ११ तुमको १२
जिंदेव महापुरुष संबंधी १३ वचनों के द्वारा १४ शीघ्र १५ सेवा करता है ॥२॥

वत्सञ्जऋषिर्वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

अभिवावीरमन्धसामदेषु गायगिरामहाविचे

तसम् । इन्द्रं नाम ऋत्यं शाकिनं वचो यथा ३-३३

हे (वाक्) (वः) युष्माकं (अन्धसः) आत्मप्रतिविंवस्य (मदेषु) (वीरं) कामादीनां जेतारं (नाम) शत्रूणां नामकं (विचेतसं) ज्ञानस्वरूपं (शाकिनं) सर्वशक्तिमन्नं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (महागिरा) महावाचा (अभिगाय) (यथा) (ऋत्यम्) ऋतौ भवं (वचः) वचनं कश्चित्सत्यार्थत्वेन स्तौति ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - हे वाक् १ तुम्हारे २ आत्मप्रतिविंवके ३ मदोंमें ४ काम आदिके जेता ५ शत्रुओंके अभिभविता ६ ज्ञानस्वरूप ७ सर्वशक्तिमान ८ परमेश्वरको ९ महावाक् द्वारा १० गाओ ११ जैसे १२ ऋतिभवं १३ वचनको कोई सत्यार्थतासे स्तुन करता है ॥ ३ ॥

भरद्वाजऋषिर्वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्रं त्रिधातुशरणान्त्रिवरुथं स्वस्तेये । छेदि

यच्छमघवद्भ्रमह्यञ्चयावयादिद्युमेभ्यः ४-३४

हे (इन्द्र) परमेश्वर (स्वस्तेये) कल्याणायुमोक्षाय (त्रिधातु) ब्रह्मविष्णुमहेशारब्धधातुभिर्युक्तं (त्रिवरुथम्) जन्मस्थितिमरणजदुःखानां वारकं (छेदिः) योगसमृद्ध्यादीनां । छेदिदीप्तौ (शरणम्) स्वकीयलोक रूपं गृहं (मघवद्भ्रः) नखवद्भ्रः स्वपूजकेभ्यः (वः) (मह्यम्) त्वद्भक्त्याय (अयच्छ) देहि (एभ्यः) भक्तेभ्यः सत्ताशात् (दिद्युमे) कामान्ताभ्यां प्रेरितं द्योतमानमायुधं (लायवये) समन्तान्प्रथक्कुरु ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ कल्याण मोक्ष के लिये ३ विदेवनाम धातु से युक्त ४ जन्मस्थिति मरण के दुखों के वारक ५ योग समृद्धि से दीप्त ६ निज लोक रूप गृह को ७ अपने पूजकों ८ और ९ आपके भक्त मेरे लिये १० दीजिये ११ भक्तों के सकाश से १२ काम अज्ञान से मेरित द्योतमान आयुध को १३ सब और से हटाओ ॥ ४ ॥ नृमेघ ऋषि बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

हे वागाद्यत्विजः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (विश्वो) विश्वानि सर्वाणि (जातो) जातानि (उ) च (जनिमानि) जनिष्यमाणानि (वसूनि) धनानि (इत्) एव (भक्षत) भजत (इव) यथा (सूर्यम्) (ऋयन्तः) समाङ्गितास्तस्यांशवः वयमपि योगिनः (ऋजसो) योगवलेन (प्रतिदीधिमेः) प्रतिधारयेम (ने) यथा (भागम्) पितृभ्यं भागं पुत्राः ॥ ५ ॥

भाषार्थः - हे वागादि ऋत्विजो १ परमेश्वर के २ सब ३ उत्पन्न ४ और ५ जनिष्यमाण ६ धनों को ७ ही ८ सेवन करो ९ जैसे १० सूर्य में ११ समाङ्गिता की राणो - हम योगी भी १२ योगवले से १३ धारणा करें १४ जैसे १५ पिता के भाग-पुत्र ॥ ५ ॥ पुरुहन्मा ऋषि बृहती छन्द इन्द्रो देवता

नसीमदेव आपतदिषन्दीर्घायोमर्त्यः एतग्वा चिद्य एतशो युयोजत इन्द्रो हरी युयोजते ॥ ६ ॥ ३६

हे (दीर्घायो) परमेश्वर (अदेवः) विज्ञान भून्वोः हंममत्वास्पदोमनुष्यः (सीम्) मायारूपं (इषम्) अन्नं (ने) (आपतत्) नमाप्रोति (यः) (अमर्त्यः) देवो विद्वान् विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३।१० (चित् चिदान्मा (एतग्वा) अश्वो मानससूर्यः नि० स (एतशः) मानससूर्यः

(युयोजते) योगरथं योजयति तदा (इन्द्रः) परमेश्वरः (हरी) जी-
वेशौ (युयोजते) ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ विज्ञान भूयन्ममत्वास्पदमनुष्य ३ माया
रूपः ४ अन्नको ५ ६ मात्र नही करता है ७ जो ८ विद्वान् ९ चिदात्मा १० मानस
सूर्य है ११ वह १२ योगरथको जोड़ता है तव १३ परमेश्वर १४ जीवेश्वरको १५
एक करता है ॥ ६ ॥

ऋधेधपुरुमेधा वृषी वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

ॐ नो विष्वा सुहव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत। उप-
ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋत्वीषम ७-३७
(नः) अस्माकं (ब्रह्माणि) वेदोक्तानि स्तोत्राणि (विष्वासु) सर्वासु
(समत्सु) यज्ञक्रियासु (हव्यम्) आवाहनव्यं (इन्द्रम्) परमेश्वरं
(अभूषत) अलङ्कृतहे (वृत्रहन्) पापनाशक (परमज्याः) बलव-
तां शत्रूणां नाशकः। परमान्वलेन प्रकृष्टान् शत्रून् जिनाति हि न-
स्तीति परमज्यास्मादृशस्त्वं (ऋत्वीषम्) स्तुतिभिरभिमुखी करणी
य परमेश्वर (सवनानि) (उप) उपभूषय ॥ ७ ॥

भाष्यार्थः - १ हमारे २ वेदोक्त स्तोत्र ३ सब ४ यज्ञक्रियाओं में ५ आवाहन
योग्य ६ परमेश्वरको ७ अलंकृत करो ८ हे पापनाशक ९ स्तुतिओं से सन्म-
ख करने योग्य परमेश्वर १० बलवान् शत्रुओं के नाशक तुम ११ सवनोंको
१२ शोभित करो ॥ ७ ॥ वसिष्ठ ऋषि वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

न वै दिन्द्रावमवसुत्वपुष्यसि मध्यमेम्। सत्रो वि-
ष्वस्य परमस्य राजसिने किष्टो गोपुष्टवत् ८ ॥ ३८ ॥
हे (इन्द्र) परमेश्वर (अवमम्) अधमं जीवसम्बन्धि (वसु) धनं (तव)

त) तवैव (त्वमे) (मध्यमं) ईश सम्बन्धि धनुं (पुष्यासि) (सत्रा) सत्य
स्वरूपेण (विश्वस्य) जीव समूहस्य (परमस्य) ईश समूहस्योपरि-
(राजसि) ईशिषे (किः) केऽपि (त्वा) त्वां (गोपु) किरण रूपेषु मा-
नसं सूर्येषु (ने) (वृणवते) नवारयन्ति सर्वात्म कत्वात् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जीव सम्बन्धी ३ धन ४ आपका ही है ५ तु-
म ६ मध्यम ईश सम्बन्धी धनको ७ पुष्ट करते हो ८ सत्य स्वरूपसे ९ जीव स-
मूह १० और ईश समूह के ऊपर ११ प्रकाश करते हो १२ कोई भी १३ तुमको
१४ किरण रूप मानस सूर्यो में १५, १६ निवारण नहीं करते है सर्वात्मा होने
से ॥ ८ ॥ मेघातिथिर्मेघातिथिश्चरषिर्वृहती चन्द्र इन्द्रो देवता-

के यथ के देसि पुरुत्रो चिद्धिते मनः । अलोषियु

ध्रखज कृत पुरन्दर प्रगायत्रो अगासिषुः ६-३९

हे (इन्द्र) परमेश्वर (के) कुत्र लोके (इयथ) गतवानसि (के) (इ-
त) कुत्र वा (असि) इति न (हिं) यस्मात् (ते) तव (मनः) (चित्)
चिदात्मा (पुरत्रो) ब्रह्मविष्णु महेशादीनां देहेषु वर्तते बहुरूपः सर्व
रूपश्चासित्वदन्याभावादित्यर्थः हे (पुरन्दर) कामादीनां पुरां दे-
हानां दारयतः (युष्मै) हे युद्ध कुशल हे (खजकृत) खेमहा आका-
शे जन्मयस्यत इह्ला एण्डं खजंतस्य कर्तृत्वं (अलोषि) आगच्छ (गो-
यत्राः) मन्त्राः (आगासिषुः) त्वां प्रगायन्ति स्तुवन्ति । अलोषीति
गतिकर्मानि ०२। १५ - ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ किस लोकमें ३ गये हो ४, ५ वाकहां ६ होय
हवान नहीं है जिस कारण ७ तेरा ८ मन ९ चिदात्मा १० ब्रह्मविष्णु महेश आ-
दि के देहों में वर्तमान है अर्थात् आपका अन्य न होने से बहुरूप और सर्वरूप हो

१२ हे कामपुरशरीरो केदारक १३ हे युद्धकुशल १४ हे ब्रह्माण्ड के कर्तानुम-
१५ आओ १६ मन्त्र १७ तुमको गाते स्तुत करते है ॥ ६ ॥

कलिऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता

^{३ १ २ ३} वयमेन ^{३ १ २} मिदाह्यो ^{३ १ २} पीपेमह ^{३ १ २} वज्रिणामा ^{३ १ २} तस्मो ^{३ १ २} उ

^{३ १ २} अद्य ^{३ १ २} सवने ^{३ १ २} सुत ^{३ १ २} भूषत ^{३ १ २} भूषत ^{३ १ २} ऋतु - १० ॥ ४०

(वयम्) यजमानाः (इह) अस्मिन्यज्ञे (एनम्) (वाज्रिणाम्) ज्ञ-

नवज्रयुक्तं परमेश्वरं (इत्) एव (आह्यो) अहव्याप्तौ इन्-अहि-

परमात्मा तस्य प्रतिविंब आह्यस्तेन (उ) एव (अपीपेम) आप्याय

याम। प्यायी ओप्यायी दृष्टौ हे वागाद्यत्विजः (अद्य) (सवने) (त-

स्मै) (उ) एव (सुतम्) अभिपुतात्म प्रतिविंबं (भर) देहि (नूनम्)

(ऋतु) विख्याते परमेश्वरे (आभूषत) १०—॥ ४० ॥

भाषार्थः - १ हम यजमान २ इस यज्ञमें ३ इस ४ ज्ञान वज्र धारी परमेश्वर

को ५ ही ६ आत्म प्रतिविंबार्पणद्वारा ७ ही चत्वरं ८ हे वागाद्यत्विजो अब

१० सवने ११-१२ उसीके लिये १३ अभिपुत आत्म प्रतिविंबको १४ अर्पणक

रो १५ निश्चय १६ विख्यात परमेश्वरमे १७ शोभित होओ ॥ १० ॥ ४०

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनु ज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सामवे-

दीयब्रह्म भाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४ ॥

अथ पञ्चमः खण्डः

पुरुहन्माऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

^{१ २ ३} योराजा ^{१ २ ३} चर्षणीना ^{१ २ ३} यातारथेभि ^{१ २ ३} रधिगुः ॥ ^{१ २ ३} विंशोसा

^{१ २ ३} न्तेरुना ^{१ २ ३} एतनाना ^{१ २ ३} ज्येष्ठयो ^{१ २ ३} वृत्रहो ^{१ २ ३} गृणो ॥ १ ॥ ४१

(यः) (चर्षणीनां) भक्तानां (राजा) (अधिगुः) अद्यतगमनः अचल-

सन्(रथेभिः) शरीर रूप रथैः(याता) (विष्वा साम्) सर्वासां(घटना
नां) भक्त सेनानां(तरुता) तारकः(यैः)(घृत्रहा) पापस्य हन्ता
तं(ज्येष्ठम्) महापुरुषं(गृणे) स्तौमि ॥१॥

भाषार्थः - १ जो २ भक्तों का ३ राजा ४ परमेश्वर अचल होता ५ शरीर रूप
रथों के द्वारा ६ व्यवहार में चलने वाला है ७ सब ८ भक्त सेनाओं का ९ तारक १०
जो ११ पापनाशक है उस १२ महापुरुष को १३ स्तुत करता हूँ ॥१॥

भर्गश्चरपि वृद्धिती छन्द इन्द्रो देवता

यत इन्द्र भया महतानां अभयं कृधि मघव

जन्धे गिधतवतन ऊतये विद्विषो विमृधो जाहि २-४३

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यतः) यस्मात्संसारान् (भयामहे) (ततः) तस्मा
त्(नः) अस्मभ्यं (अभयम्) (कृधि) कुरु हे (मघवन्) लक्ष्मीपते
(नः) अस्माकं (ऊतये) रक्षणाय (तव) स्वभूतं (तम्) आत्म प्रतिवि
वं (शग्धि) याचस्व (द्विषः) अस्मद्द्वेषन् कामादीन् (विजाहि) (मृधः)
अस्माद्धिसकान् विषयान् (वि) विजाहि ॥२॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जिस संसार मे ३ हम डरते हैं ४ उससे ५ हम
रेलिये ६ अभय ७ करो ८ हे लक्ष्मीपते ९ हमारी १० रक्षा के लिये ११ आपके
धन रूप १२ उस आत्म प्रतिविवको १३ मांगो १४ हमारे द्वेषा काम आदि को
१५ मारो १६ हमारे हिंसक विषयों को १७ मारो ॥२॥

इरिमिठ चरपि वृद्धिती छन्द इन्द्रो देवता

वास्तोषपते ध्रुवा स्थूणां च संत्रं च सौम्यानां मा

द्वेषः पुरा भक्तांशु श्वतीनामिन्द्रो मुनीनां च संखा ३

हे (वास्तोषपते) ब्रह्माण्डस्य स्वामिन्त्वं (स्थूणां) सुमेरु रूपः

(ध्रुवा) अचलः (सोम्यानाम्) अभिषुतात्मप्रतिविंबानां भक्तानां
 (अंसत्रम्) कवचं कवचरूपः (द्रप्सैः) द्रवाणां शीलात्मप्रतिविंबरूप
 (शश्वतीनाम्) वह्नीनां नि० ३।१ (पुराम्) बंधकारणालिङ्गदेहानां
 (भेत्ता) विदारयिता (इन्द्रः) परमेश्वरः (मुनीनाम्) महर्षीणां यो
 गिनां भक्तानां (सखा) असि ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे ब्रह्माण्ड के स्वामी तुम २ सुमेरु रूप ३ अचल ४ अभिषु
 त आत्म प्रतिविंब रूप भक्तों के ५ कवच रूप ६ द्रवाण शील आत्म प्रतिविंब रू
 प ७ बहुत ८ बंध कारण लिंग शरीरों के ९ चीरने वाले १० परमेश्वर ११ मह
 र्षी योगी भक्तों के १२ सख हौ - ॥ ३ ॥

जमदग्निर्ऋषिर्वह्नी छन्दसूर्यो देवता

वा३म१हो३ अ३सि३ सूर्य३ वडो३ दित्य३ मे३हो३ अ३सि३। मे३ह
 स्ते३ स३तो३ मे३हि३मा३पनि३ए३मे३म३न्हा३ दे३व३मे३हा३ अ३सि३ ४-४४
 हे (सूर्य) सर्वभैरुक परमेश्वरत्वं (महान्) महापुरुषः (असि) इति
 (वट) सत्यं हे (आदित्य) सूर्यरूप परमेश्वरत्वं (महान्) (असि)
 ब्रह्माण्डे व्यापकत्वात् (वट) इति सत्यं (महो) महतः (सतः)
 (ते) तव (महिमा) महत्त्वं (पनिष्टम) पनस्यते स्तोत्रभिः स्तुयते
 हे (देव) माया क्रीडनकैः क्रीडन शील परमेश्वरत्वं (मन्हा)
 महत्त्वेन (महान्) (असि) परात्परत्वात् ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वभैरुक परमेश्वर तुम २ महापुरुष ३ हो ४ यह सत्य
 है ५ हे सूर्य रूप परमेश्वर ६ महान ७ हो ब्रह्माण्ड में व्यापक होने से ८ यह
 सत्य है ९. १०. ११ तुम महापुरुष का १२ महत्व १३ स्तोत्रों से स्तुति किया
 जाना है १४ हे माया के खिलों नो से क्रीडन शील परमेश्वर तुम १५ महत्व से

१६ महान् १७ हौ परात्पर होनेसे ॥ ४ ॥

देवातिथिः ऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

अश्वीरथी सुरूप इन्द्रो मां शं इतिन्द्रते सरवा।

श्वान् भोजा वयसा सचते सदा चन्द्रयाति स

भामुप ॥ ४ ॥ ४५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तव (सरवा) भक्तः (अश्वी) अश्वैर्युक्तः

(रथी) रथवान् (सुरूपः) शोभनरूपः (इत्) एव भवति तथा (गो

मान्) गोभिर्युक्तः (इत्) एव भवति अपि च (श्वान् भोजा) धन

संयुक्तेन। श्वान् मिति धननाम नि० २। १० (वयसा) अन्नेन नि० २। ७

(सचते) समवैति सङ्गच्छते (चन्द्रैः) सर्वेषां माल्हादकैः कान्तिभिः

(सभाम्) जनसंसदं (उपयाति) उपगच्छति ॥ ५ ॥ ४५

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ तेरा ३ भक्त ४ घोड़ों से युक्त ५ रथवान् ६ शु

भरूप ७ ही होता है ८ गौशों से युक्त ९ ही होता है और १० धन संयुक्त ११ अ

न्नसे १२ संयोग को पाता है १३ सर्वाल्हादक कान्तिशों के साथ १४ सभा को

१५ जाना है - ॥ ५ ॥ ४५ पुरुहन्मा ऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता

यथा व इन्द्रते शतं शतं भूमि रूतस्युः। नत्वा

वज्रिन्सहस्रं सूर्याः अनुजानामुष्टरादसी ॥ ६ ॥ ४६

हे (वज्रिन्) ज्ञानवज्रधर (इन्द्र) परमेश्वर (यद्) यदि (ते) (द्यावः)

द्युलोकाः (शतम्) वहवः (स्युः) (उत्) (भूमिः) भूम्यः (शतम्) (न)

च (सूर्याः) (सहस्रम्) स्युः तथापि (रोदसी) द्यावा एधिव्यौ (जानम्)

महा पुरुष रूपेण यादुर्भूतं (त्वा) त्वां (न) (अन्वष्ट) नव्याप्नुवन्ति

सर्वेभ्योऽधिको सीत्यर्थः यथापादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या

मृतं दिवीत यजु० ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानवज्रधारी २ परमेश्वर ३ यदि ४ आपका ५ स्वर्गलो
क ६ शतगुण ७ होवै ८ और ९ भौमदिव्यभूमि १० शतगुण होवें ११ और १२
सूर्य १३ सहस्र होवै तौ भी १४ एधि वी स्वर्ग १५, १६ तुभमहा पुरुष रूपसे मा
दुर्भूतको १७, १८ व्याप्त नही करै - ॥ ६ ॥

देवातिथि ऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता

^{१ २ ३ ३ ३ ३ ३ क ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
यादिन्द्र प्रागपागुदुःन्यग्वाह्येसे नृभिः सिमा
^{३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
पुरू नृषूतोऽस्यानवांसि प्रशद्ध ऊर्वशे ॥ ७ ॥ ४७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यद्) यस्मात् (प्राक्) मान्यां (अपाक्) प्रती
च्यां (उदक्) उदीच्यां (वा) यद्वा (न्यक्) नीचायां दिशि (नृभिः)
प्रवृत्तपुरुषैः (सिमा) सर्वस्मिन्यज्ञे (पुरू) बहुलं (ह्येसे) आह
यसेतस्मात् हे (प्रशद्ध) प्रकर्षेण शर्द्धयितः कामादीनामभिभवि
तः (अस्य) आत्मप्रतिविंवस्य (ऊर्वशे) उरुवद्, अशभोजने वि
राड् रूपान्नं भोजनं यस्य तस्मै निवृत्तमार्गस्थे (आनवे) अनुर्देह
स्तत्र स्यात्मानि (नृषूतः) नृभिर्नैतृभिर्वागाद्यत्विग्भिः प्रेरितः (वासि) ७

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जिस कारण ३ पूर्व ४ पश्चिम ५ उनर ६ वा
७ नीची दिशामें ८ प्रवृत्त पुरुषों के द्वारा ९ सब यज्ञोंमें १० बहुधा ११ आह्वान
किये जाते हैं उस कारण १२ हे काम आदिके अभिभविता १३ इस आत्मप्रति
विवके १४ विराट् रूपान्न भक्षी १५ आत्मामे १६ वाक् आदि ऋत्विजों से प्रेरि
त १७ हो - ॥ ७ ॥ वासिष्ठ ऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता

^{३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
कुस्तमिन्द्रत्वावसवाभत्यादधर्षति। अद्धो हि
^{३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
नेमघवान्पायेदिवि वाजी वाजं ३ सिषासति। ८ ४८

हे (वसो) सर्वव्यापिन् (इन्द्र) परमेश्वर (तमे) यजुमानं (कोः) (म-
 र्त्यः) मनुष्यः शत्रुः (आधिपति) नकोपियः (मघवान्) मखवान्।
 श० १४।१।१।१३ (वाजी) मानससूर्यः श० ६।३।१।२८ (अद्धाहि-
 ते) अद्धया स्थापिते योगयज्ञे (पार्ये) पारेभवे (दिवि) भृकुल्यां
 (वाजम्) आत्ममतिविंवरूपान्नं (त्वा) त्वां (सिषासति) दानुमि-
 च्छति ॥ ८ ॥

भाषार्थः

१ हे सर्वव्यापिन् २ परमेश्वर ३ उस मानससूर्यको ४ कोन ५ शत्रु ६ निरस्त
 तकरना है अर्थात् कोई नहीं जो ७ यज्ञवान ८ मानससूर्य ९ अद्धासे स्थापि-
 तयोगयज्ञमें १०, ११ भृकुटिमंडलके बीच १२ आत्ममतिविंवरूपअन्न १३
 तुम्हको १४ देना चाहता है—॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषिर्दृहती छन्द इन्द्राग्नीदेवते-

इन्द्राग्नी अपादिय पूर्वा गात्पद्वतीभ्यः । हित्वाशि

राजिह्वयारारपञ्च रचि थं शतपदान्यकमीत् ८-४६

हे (इन्द्राग्नी) जीवेशो । इन्द्राग्नीवैसर्वदेवाः श० ६।१।२।२८ (इय-
 म्) (अपात्) पादरहिताः चला महावाक् (पद्वतिभ्यः) पादयुक्ता
 भ्यश्चलाभ्यः (सुपाद्यः) वाग्भ्यः (पूर्वा) मुख्य्यु (आगात्) प्रादु-
 र्भूता (शिरः) मानससूर्य श० ६।३।१।२८ (हित्वा) त्यक्तातेन प्रादु-
 र्भूत्वा (जिह्वया) (रारपत्) भृशं शब्दं कुर्वती (चरते) उपाधिभक्त-
 यन्ती (विंशत्) (पदानि) तत्वानि २४ शरीराणि ३ अवस्थाः ३ (न्य-
 कमीत्) अतिक्रामति सोपासनीयेत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे जीव ईश्वरो २ यह ३ अचला महावाक् ४ पादयुक्त-
 चल ५ वाक्योंसे ६ मुख्य ७ प्रकट हुई ८ मानससूर्यको ९ त्यागकर अर्थात्

उससे प्रकट होकर १० जिह्वासे ११ शब्द करती १२ और उपाधिको भक्षण करती १३, १४ चौबीस तन्वतीन शरीरतीन अवस्था इन तीसों को १५ अतिक्रमण करती है वही उपासना योग्य है—॥६॥

वाल्गविल्या ऋषयो ब्रह्मती छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रनेदीय एदिहि मितमेधाभिरुतिभिः। आश

न्तमशन्तमाभिरभिष्टिभिर्गुस्वापेस्वापिभिः १०-५०

हे (शान्तम) महाऽऽनन्दस्वरूप (स्वापे) अस्माकं बंधुभूत (इन्द्र) परमेश्वर (शान्तमाभिः) महाऽऽनन्दस्वरूपाभिः (स्वापिभिः) बंधुभूताभिः (अभिष्टिभिः) अभामायातस्या इष्टिभिः (नेदीयः) अत्यंत समीपस्थत्वं (मितमेधाभिः) मेधयामिताभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः सह (एदिहि) आगच्छ (आ) एदिहि (आ) एदिहि आगच्छ ॥ १० ॥

भाष्यः - १ हे महाज्ञानन्दस्वरूप २ हमारे बंधुभूत ३ परमेश्वर ४ महाज्ञानन्दस्वरूप ५ बंधुभूत ६ माया इष्टिओं के द्वारा ७ अत्यन्त समीपस्थ तु म८ बुद्धिनिर्मित ९ रक्षाओं के साथ १० आओ ११ आओ १२ आओ—॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्य पञ्चमः खण्डः ५ ॥

अथ षष्ठः खण्डः

नृमेधऋषिर्ब्रह्मती छन्द इन्द्रो देवता

इत ऊतीवो अजरं प्रहेतारं मप्रहितम्। आभुञ्जे

नारं थं हानारं थं रथीतं मम तूत्तन्तु यिया वृधम् ११ १५

हे भक्तजनाः (अजरम्) महापुरुषरूपेण जुरारहितं (प्रहेतारम्) ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपेण देवशत्रूणां मेरकं (अप्रहितं) नृसिंहबुधरूपा

भ्यांकेनाप्यप्रेषितं (आशुम्) वराह रूपेण समन्तात्शूशब्दस्य-
कर्त्तारं (अती) ऊत्यालील्यैवावतारेषु (जेतारम्) असुराणां जे-
तारं (वः) (होतारं) अग्नि रूपेण युष्माकं होतारं (रथीतमम्) राम-
रूपेण रथिनां ज्ञेष्ठं (अतूर्त्त) अन्तर्यामिरूपेण केनाप्यहिंसितं तु-
ग्राह्यं (११) कूर्ममत्स्यरूपाभ्यामुदके वर्धमानं परमेश्वरं (इतः) प्रा-
प्तुत ॥ १ ॥

भाषार्थः

हे भक्तजनो १ महापुरुष रूपसे जगत् रहित २ ब्रह्मविष्णु महेश रूपसे शत्रुओं
के भेदके ३ नृसिंहबुधरूपसे किसी से भी न भेजे ४ वाराह रूपसे सब ओर भूश-
ब्द करने वाले ५ अवतारों में लीलाओं से ही ६ असुरों के जेता ७, ८ अग्नि रूपसे
तुम्हारे होना ९ राम रूपसे रथियों में ज्ञेष्ठ १० अन्तर्यामी रूपमें सबके अहिंसित
११ कूर्ममत्स्य रूपमें जलमें वर्द्धमान परमेश्वर को १२ प्राप्त करो - ॥ १ ॥

वसिष्ठ उवाच -

माधुत्वो वाघतश्च नारश्च स्मन्निरीरमन् । आरा-
त्तोद्वासधमादन्न आगही हवो सन्नुप श्रुधि ॥ २ ॥

हे परमेश्वर (सुवाघतः) मेधाविनो वागाद्यत्विजः (चने) अपित्वा-
त्वां (अस्मत्) अस्मत्तः (आर) दूर (मौ) मैव (निरीरमत्) निनरां मा-
रमयन्तु (आरात्ताद्वा) योगात्पूर्वदूरेऽपि वर्त्तमानः (नः) अस्मदी-
यं (सधमादं) सह माद्यन्ति यत्र स योग यत्तस्तं प्रति (आगहि)
आगच्छ (वा) अथवा (इह) जीवात्मानि (सन्) अन्तर्यामिरूपे-
ण विद्यमानः सन् (उपश्रुधि) अस्मदीयं स्तोत्रमुपश्रुणु ॥ २ ॥

भाषार्थः - हे परमेश्वर १ मेधावी वाक् आदि उरत्विज २ भी ३ तुमको ४
हमसे ५ दूर ६ मत ७ रमाओ ८ योगसे पूर्वदूर वर्त्तमान भी ९ हमारे १० यज्ञमें ११

आप्सो १२ अथवा १३ इस जीवात्मा में १४ अन्नर्यामीरूपसे विद्यमान होते १५
हमारे स्तोत्र को सुनो ॥ २ ॥

वसिष्ठ ऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

^३ सुनोत^१ सोम^२ पावने^३ सोम^४ सिन्द्रो^५ य^६ वज्रिणो^७ । पंचता^८

^९ पक्ती^{१०} रवसे^{११} कृणु^{१२} ध्वमित्^{१३} एण^{१४} न्नि^{१५} त् प्र^{१६} एणते^{१७} मयः^{१८} ॥ ३-५३

हे मदीयाः पुरुषाः (वज्रिणो) वज्रवते (सोमपात्रे) सोमस्य पात्रे-
(इन्द्रोय) (सोमम्) (सुनोते) अभिषुणुत (अवसे) इन्द्रन्तर्पयि-
तुं (पक्तीः) पक्त्व्यान्पुरोडाशादीन् (आपचत) (कृणुध्वम्) (इत्)
इन्द्रप्रियकराणिकर्माणि च कुरुतैवसः (मयः) सुखं (एणान्नि^{१३})
यजमानाय प्रयच्छन्नेव (एणते) हवींषीति शेषः ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - हे मेरे पुरुषो १ वज्रधारी २ सोमपाता ३ इन्द्रके लिये ४
सोमको ५ अभिषवन करो ६ इन्द्रके तर्पणको ७ पकाने योग्य पुरोडाश-
आदिको ८ पकाओ ९, १० इन्द्रप्रियकारक कर्मांकोही करो ११ वह इन्द्र
सुखको १२, १३ यजमानको देनाही १४ हविषोंको भक्षण करता है ॥ ३

अथाध्यात्मम् - हे भक्तजनाः (वज्रिणो) वज्रवते (सोमपात्रे)
आत्मप्रतिविंबस्य पात्रे (इन्द्रोय) परमेश्वराय (सोमम्) आत्म-
प्रतिविंबं (सुनोते) अभिषुणुत (अवसे) तस्य तर्पयितुं (पक्तीः) प-
क्त्व्यानीन्द्रियाणि (आपचत) (कृणुध्वम्) (इत्) योग क्रियाः
कुरुतैवसः (मयः) मोक्षानन्दं (एणान्नि^{१३}) (इत्) प्रयच्छन्नेव (एण^{१४})
ते) स्वात्मानं प्रयच्छति ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - हे भक्तजनो १ ज्ञानवज्रधारी २ आत्मप्रतिविंबके पाता ३ पर-
मेश्वरके लिये ४ आत्मप्रतिविंबको ५ अभिषवन करो ६ उसका तर्पण करने-

को ७ पकाने योग्य इन्द्रियों को ८ पकाओ ९, १० योगक्रियाओं को ही करो ११ वह मोक्षानन्द को १२, १३ देता ही १४ अपने आत्मा को देता है ॥ ३ ॥

भरद्वाज ऋषि बृहणी छन्द इन्द्रो देवता-

यः सत्राहो विचर्षाणिरिन्द्रन्तं ह्रमहे वयम् । स
हस्रमन्योतु विन्दमण सत्पते भवो समत्सुनो वृ-
धे ॥ ४ ॥ ५४

(यः) (सत्राहो) सत्रेण योगयत्नेन मायोपाधीनां हन्ता (विचर्षाणि) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टा (तम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (वयम्) (ह्रमहे) आह्वयामः हे (सहस्रमन्यो) सहस्रायनन्ता मन्यवोऽहङ्कारास्पदा आत्मप्रतिविंवा यस्मिन् ससहस्रमन्युस्तत्सन्वोधनं (तु विन्दमण) बहुधनवद्भवत्वा (सत्पते) सतां पालयितः (अ) सर्वव्यापिन् (समत्सु) कामसंग्रामेषु (नः) अस्माकं (वृधे) समष्टिभावाय (भव) प्रादुर्भव ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ जो २ योगयत्नद्वारा माया की उपाधियों का नाश कर ३ सर्वद्रष्टा है ४ उस ५ परमेश्वर को ६ ह्रम ७ आह्वान करते हैं ८ हे आनन्तात्मप्रतिविंवाले ९ बहुधनीवां बहुवली १० सत्पुरुषों के पालक ११ सर्वव्यापिन् परमेश्वर १२ कामसंग्रामों में १३ हमारे १४ समष्टिभावके लिये १५ प्रकट हूँ जिये ॥ ४ ॥

परुच्छेप ऋषि बृहणी छन्दो नरनारायणो दे०

शचीभिर्नृः शचीवसू दिवान्कान्दिशस्यतम् ।
मावां रानिरुपदसत् कदाचनास्मद्वातिः क
दाचने ॥ ५ ॥ २५

हे (शचीवसू) शचीसृष्टिकर्मवधनं ययोस्तौ नरनारायणौ युवां-

(शचीभिः) अस्मदीयैः कर्मभिर्यागादिभिर्निमित्तभूतैः (दिवान्क्तम
 अहनिरात्रौ च (नः) अस्मभ्यं (दिशुस्यतं) अभिमतं दत्तं दाशतिदान
 कर्मानि० ३।२० (वां) युवयोः (रातिः) दानं (कदाचन) कदाचिदापि
 (मां) (उपदसत्) मोपस्तीणां भवेत् (अस्मद्) अस्माकमपि (रातिः)
 दानं हविरादिप्रदानं (च) (कदा) (न) नोपदसत् । अहमपि (सर्व
 दायुष्मानुद्दिश्य दद्याम् । युवामपि मदाभिमतं सर्वदा दत्तमित्यर्थः ५

भाष्यार्थः - १ हे स्तृष्टि कर्त्तानरनारायणो २ हमारे यज्ञ आदिके निमित्त
 ३ दिन रात ४ हमारे लिये ५ अभिमत दीजिये ६ तुम्हारा ७ दान ८ कभी भी ९,
 १० उपक्षय को मत पाओ ११ हमारा १२ दान १३ भी १४ कभी १५ उपक्षय-
 को मत पाओ — ॥ ५ ॥ वामदेव ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरते मर्त्यः । आदि

वन्देत वरुणां विषा गिरा धर्त्तार विव्रतानाम् ६ ॥ ५६ ॥

(यदा कदा) (स्तोता) (विषा) वाक्नि० (मीढुषे) धर्म कामार्थ मो
 क्षैः सेक्ते परमेश्वराय (जरते) स्तूयात् (आदित्) अनन्तरमेव त-
 स्मिन्काले (मर्त्यः) भूतात्मा (च) अपि (गिरा) (विव्रतानाम्) वि
 विधकमाणा (धर्त्तारम्) (वरुणाम्) एकाएव समुद्रस्ये शंमहा
 पुरुषं (वन्देत) नमस्कुर्व्यात् नमस्कार भूत्यास्तुतिरनुचितेत्यर्थः ६

भाष्यार्थः - १ जब कभी २ स्तोता ३ वाक् ४ चारों पदार्थ से सेक्ता परमेश्वर
 के लिये ५ स्तुति करे ६ उसी समय ७ भूतात्मा ८ वाक् द्वारा ९ बहु कर्माजीवों के-
 १० धारक ११ एकाएव समुद्र के स्वामी महापुरुष को १२ नमस्कार करे अर्थात्
 नमस्कार भूत्यास्तुति अनुचित है ॥ ६ ॥

मेध्यातिथि ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

पाहिगाश्नन्धसोमदइन्द्रोयमेध्यातिये। यः

सामिष्लोहयायोहिरण्ययइन्द्रोवज्रीहिरण्ययः ७-५९

(हेऽ) सर्वव्यापिन् (अतिथे) (इन्द्र) परमेश्वर (अयम्) सोमआत्मप्रतिविंबोवात्स्य (अन्धसः) सोमस्यात्मप्रतिविंबस्यवा (मदे) (एधि) एधवृद्धौ (गाः) इन्द्रियाणि (पाहि) विषयेभ्योरस्य (यः) (हिरण्ययः) ज्योतिर्मयस्त्वं (हयाः) जीवेशयोः (सामिष्लः) समिष्णयिता (यः) (वज्री) ज्ञानवज्रयुक्तः (इन्द्रः) ईश्वरः (हिरण्ययः) ज्योतिर्मयः ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ अतिथिरूप ३ परमेश्वर ४ यह सोम वा आत्मप्रतिविंब है उस ५ सोम वा आत्मप्रतिविंबके ६ मदमें ७ इन्द्रियाणि ८ इन्द्रियोंको ९ विषयोंसे रक्षा करो १० जो ११ ज्योतिस्वरूपतुम १२ जीव ईश्वरको १३ संयोग करने वाले हो १४ जो १५ ज्ञानवज्र धोश्वर १६, १७ ज्योतिर्मय है - ७ ॥

भर्गवृषिर्हृती छन्द इन्द्रो देवता -

उभयं च ऋणवचनं इन्द्रो अवीगिद वचः । सत्रा

च्यो मघवात्सोमपीतयो धिया शविष्ठ आगमत् ८-५८

(इन्द्रः) परमेश्वरः (इदम्) (उभयम्) आधिदैवाध्यात्मविषयं (वचः) वचनं (अवीगि) अस्मदाभिमुखं (ऋणवत्) ऋणोत्तु (च) (मघवान्) धनवान् लक्ष्मीपतिः (शविष्ठः) अतिशयेन बलवान् परमेश्वरः (सत्राच्या) अस्माकं यज्ञं पूजयन्त्या (धिया) बुद्ध्या (सोमपीतये) सोमस्यात्मप्रतिविंबस्य वापानाय (आगमत्) आगच्छतु ॥ ८ ॥

भाषार्थः

१ हे परमेश्वर २ इस ३ आधिदैव अध्यात्मविषयक ४ वचनको ५ हमारे सन्तु

ख६ सुनो७ शौर८ धनवान् लक्ष्मीपति९ अतिशय१० वलवान् परमेश्वर११ इमा
रेयज्ञको सराहती ११ बुद्धि के साथ १२ सोमवा आत्मप्रतिविंबके पानार्थ १३

आशो ॥ ८ ॥ द्वयोर्मेधातिथिमेध्यातिथीऋषीरुहनीछन्दइन्द्रोदे०

महेचनत्वोद्विवः पराशुल्काय दीयसे । नैसहस्वो

युनायुताय वज्रिवानशताय शतामघ ॥ ८ ॥ ५८

हे (अद्विवः) ज्ञानवज्रयुक्त (शतामघ) बहुधन (वज्रिवः) विज्ञान
वज्रधर परमेश्वरत्वं (महे) योगयज्ञे भक्ति यज्ञे वा (पराशुल्का
य) पराप्रकृतिरूपशुल्काय (न) (दीयसे) (ननु) (सहस्वाय)
सहस्रतीति सहस्रः प्रतिविंबस्तस्मै । सुसरणे (न) (अयुताय)
ब्रह्मण्यसंयुक्ताः अपरातद्रूपशुल्काय (न) (शताय) वहु रूपः
संसारस्तस्मै संसाररूपशुल्काय न दीयसे त्वानपरित्यजामि-
किन्तु मोक्षलाभाय बहुभिर्हविर्भिर्परिचरामीत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानवज्रयुक्त २ बहुधनी ३ विज्ञानवज्रधर परमेश्वर तुम
४ योगयज्ञे वा भक्ति यज्ञे ५ पराप्रकृतिरूपशुल्क के लिये ६ नही ७ दिये जा
तेहो ८ नर्द प्रतिविंबके लिये ९ न ११ अपरारूपशुल्क के लिये १२ न १३
संसाररूपशुल्क के लिये दिये जातेहो अर्थात् किसीके लिये तुमको नहीं
त्यागताहं किन्तु मोक्ष के लिये बहुविधहविर्भों से सेवा करताहूं यह अभि
प्रायहै ॥ ८ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

वस्यो१० इन्द्रा३सिमे३पितु३रुत३ भ्रातु३रभुञ्जतः३ माता३

चमे३ छदयथः३ समा३ वसो३ वसुत्व३ नो३ य३ रा३ धे३ से ॥ १० - ६०

(वसो) हे यज्ञपुरुष (इन्द्र) महापुरुषत्वं (मे) मदीयात् (पितुः)
(उते) अपिच (अभुञ्जतः) अपालयितः (भ्रातुः) आधिक स्नेह-

वान्। वसस्नेहे (आसु) (च) (समा) महालक्ष्मी (मे) मम (मा)
ता) युवाम् (वसुत्वनाय) व्यापनाय (राधसे) योगधनाय च
उभयोर्लाभाय (हृदययः) मां पूजितं कुरुयः। हृदयति र्चति
कर्मानि० ३। १४—॥ १०॥

भाषार्थः - १ हे यज्ञपुरुष २ महापुरुष तुम ३ मेरे ४ पिता से ५ और ६ अ
पालक ७ आता से ८ अधिक स्नेहवान् ९ हौं १० और ११ महालक्ष्मी १२ मेरी
१३ माता है तुम दोनों १४ व्यापन १५ और योगधनके लाभार्थ १६ मुझको
पूजित करने हौं—॥ १०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनु ज्वालाप्रसाद शर्मा विरचिते सा-
मवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य षष्ठः खण्डः ६

इति तृतीयः प्रपाठकः

अथ सप्तमः खण्डः। अथ चतुर्थः प्रपाठकः

वसिष्ठ उवाच। इन्द्रो देवता-

इमे इन्द्रोय सुन्विरे सोमो सो दध्या शिरः। तान्
आमदोय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्यो कश्चा १। ६१

हे (वज्रहस्त) इन्द्र (इमे) (दध्याशिरः) दधिभिज्जिताः (सोमासः)
सोमाः (इन्द्रोय) तुभ्यं (सुन्विरे) सुतावभूवुः (मदोय) मदार्थ-
(तान्) (पीतये) पानाय (हरिभ्याम्) अश्वभ्यां (आयाहि) आ-
गच्छ (ओके) यज्ञसदने (आ) आयाहि ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ ये ३ दधिभिज्जित ४ सोम ५ तुम इन्द्रके लिये ६
अभिषुत हुए ७ मदके लिये ८ उनके प्रानार्थ ९ हरिनामक अश्वोंकी सवा-
रीसे १० आओ ११ यज्ञशालामें १३ विराजमान हो—॥ १॥

अथाध्यात्मम् - हे (क्ञ्रहस्त) ज्ञानक्ञ्रधरं परमेश्वर (इमे) (दध्याशिरः) निरुद्धमाणमिञ्जिताः पयः प्राणाः श० १२।८।१।२० (सोमासः) इन्द्रियमनो बुद्ध्यात्मप्रतिविंवाः (इन्द्रायै) परमेश्वराय तृभ्यं (सुन्विरे) सुनावभूवुः (मदाय) (तान्) (पीतये) पानाय (हरिभ्याम्) नरनारायणरूपाभ्यां (आयोहि) आगच्छ (आके) योगयज्ञसदने भृकुटिमंडले (आ) आयाहि ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानक्ञ्रधारी परमेश्वर २ ये ३ निरुद्धमाणमिञ्जित ४ इन्द्रियमनबुद्धि आत्मप्रतिविंवा ५ तृभुक् परमेश्वरकेलिये ६ अभिषुतद्वा ७ मृदकेलिये ८ उनके पानार्थ ९ नरनारायणरूपसे १० आयो ११ योगयज्ञशालाभृकुटिमंडलमे १३ वैरौ - ॥ २ ॥

वामदेवक्ञ्रपि वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

इम इन्द्रमदायते सोमोश्चिकित्वा किंथनेः । मे

धोपपान उपनो गिरः ष्टणु रास्वस्तोत्राय गिर्विणाः २-६२

हे (गिर्विणाः) गीर्भिर्वननीय (इन्द्रे) इन्द्रपरमेश्वरवा (इमे) (उकिथनः) स्तोत्रयुक्ताः प्राणयुक्तावा श० १४।८।१४।१ (सोमाः) सोमाः । इन्द्रियात्मप्रतिविंवावा (ते) तव (मदाय) (चिकित्वा) ज्ञायन्ते कितज्ञाने । कर्मणि लिट् । इर्योरे इतिरे - इत्यादेशः (मधोः) सोमस्यात्मप्रतिविंवास्यवा (पिपानः) पानं कुर्वाणस्त्वं (नेः) अस्माकं (गिरः) स्तोत्ररूपावाचः (उपष्टणु) सम्यक् ष्ट (स्तोत्राय) स्तोत्रकर्त्रे मह्यं (रास्व) अभीष्टं स्वात्मानं वादेहि ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे वेदवचनोंसे संभजनीय २ इन्द्रवा परमेश्वर ३ ये ४ स्तोत्रयुक्तवामाणयुक्त ५ सोमवा इन्द्रियात्मप्रतिविंवा ६ तेरे ७ मृदकेलिये ८

जानेजाते हैं- सोमवा आत्ममतिविंश को १० पान करते तुम ११ हमारे १२ स्तोत्र रूप बंचनों को १३ सुनो १४ मुझ स्तोत्र कर्ताके लिये १५ अभीष्ट वाश्रपने आत्माको दो ॥२॥ मेधातिथि मेध्यातिथी ऋधी रहती छन्द इन्द्रो देवता

एके विश्वामित्र इत्याहः

आत्वा ३ घसर्वदुघां ७ इवे गायत्र वेपसम् । इन्द्र

धेनुं ७ सुदुच्चा मन्यामिष मुरुधरां मरु कृतम् । ३-६३

(अथ) (अरुं कृतम्) आत्म नालङ्कृतं (दुषम्) विराड् रूपान्न । अन्नं वै विराट् श० १२।२। ४। ५ तथा (सर्वदुघाम्) (ऋट्) निवृत्तिः सर्वनिवृत्तिदोग्धी (सुदुघाम्) सुखेन दोग्धुं शक्त्वा (उरुधारां) वज्रधारां (अन्याम्) प्राकृतधेनोरन्यां (धेनुम्) महावाचं । वाचमेव तद्देवा धेनुमकुर्वत श० १।२। १७ तथा (गायत्रवेपसम्) गायत्रेण साम्ना गतिमन्तं । वेप- कम्पे (इन्द्रम्) परमेश्वरं (आह्वये) आह्वये ३

भाषार्थः - १ अथ २ आत्मासे अलंकृत ३ विराट् रूप अन्नको तथा ४ सर्व निवृत्तिदोग्धी ५ सुखसे दोहने योग्य ६ वज्रधारा ७ प्राकृतधेनुसे अन्य ८ महा वागुपगौको ९ तथा गायत्र सामद्वारा गतिमान १० परमेश्वरको ११ में आह्वा

नकरताहं ॥ ३ ॥ नोधाऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

नत्वा वहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः । यच्छि

क्षसि स्तुवते मावते वसुन किष्टदामिना तिते ४-६४

हे (इन्द्र) श्रीरूपारूप परमेश्वर (वहन्तः) महान्तः (वीडवः) दृढाः (अद्रयः) पर्वताः (त्वा) त्वां (ने) (वरन्ते) ब्राह्मणा पुत्रानयनाय महा पुरुषलोके गन्तारं त्वाननिवारयन्ति (स्तुवते) स्तोत्रं कुर्वते (मावते) (मा) मेधा- मेधावते ब्राह्मणाय (यत्) (वसु) पुत्रधनं (क्षिसि)

ददासिनि० ३।२० (ते) तव (तत्) कर्म (किः) कश्चिन् (न) (आमि
 नाति) नहिनस्ति सर्वेश्वरत्वा^{त्वा}मीज्जहिं सायां मीनातेर्निगमे (७।३

।३१) इति ह्रस्वः ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ हे श्री कृष्णारूप परमेश्वर २ बड़े ३ दृढ ४ पर्वत ५ तुमको ई
 नहीं ७ रोकते हैं अर्थात् ब्राह्मणके पुत्रत्वाने को महापुरुषलोकमें जाते तुमको
 नहीं रोकते हैं ८ स्तोत्रकर्ता ९ मेधावी ब्राह्मणके लिये १० जो ११ पुत्रधन १२ देते
 हौ १३ आपको १४ उसकर्मको १५ कोई १६, १७ विघ्नयुक्त नहीं करता है ॥ ४ ॥

मेधातिथिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

कडू वेद सुते सचापिवन्त इदृया दधे । अययः

पुरा विभिनन्त्यो जसामन्दानः शिष्यन्धसः ५-६५

(सुते) आत्मप्रतिविंबाभिपुते सति (सचा) पराशक्त्या सह (पिवन्तम्)
 आत्मप्रतिविंबस्य पातारं (इदम्) परमेश्वरं (कैः) (वेद) वेत्तिनकोपि
 वेत्यर्थः (यः) (अयम्) (शिष्यी) (व्यः) अन्नं प्राणादिरूपं (दधे) स्वा
 त्मनि धारयति साकारेश्वरः (अन्धसः) आत्मप्रतिविंबेन (मन्दानः)
 तृप्यन्सन् । मदी तृप्तौ (श्रोजसा) बलेन (पुरः) स्थूलसूक्ष्म कार
 णशरीराणि (विभिनन्ति) इति (कत्) को जानाति नको पीत्यर्थः ५

भाष्यार्थः - १ आत्मप्रतिविंबके अभिषव होने पर २ पराशक्ति सहित ३
 आत्मप्रतिविंबका पान करने वाले ४ परमेश्वरको ५ कोई ६ जान्ता है अर्थात्
 कोई नहीं जान्ता ७ जो ८ यह ९ साकार ईश्वर १० प्राणरूपान्नको ११ आत्मा-
 में धारण करता है १२ आत्मप्रतिविंबसे १३ तृप्त होता १४ बलसे १५ स्थूल
 सूक्ष्म कारणशरीरो को १६ तोड़ता है यह भी कोई नहीं जान्ता ॥ ५ ॥

द्वयोर्बामदेवऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

यदिन्द्रशासोऽभवत्तज्यावयोसदसस्परि। अस्मा
कमांशुं शुम्भघवन्पुरुस्सहवसव्येऽधिर्वह्या ६-६६

हे (मघवन्) धनवन्लक्ष्मीपते (अ) सर्वव्यापिन् (इन्द्र) परमेश्वर
त्वं (यत्) यस्मात् (शासः) शिक्षणीयानां यज्ञविरोधिनां शिक्षक
स्तस्मात् (अभवत्) अकर्माणं यागविरोधिनां कामं (सदस) योग
यज्ञगृहात् (परिच्योवय) दूरानिः सारय (पुरुस्सहं) पुरैर्देहैः सहणीय
(अस्माकम्) (आंशुम्) आत्मप्रतिविंवरूपं सोमं (वसव्ये) वस्तव्ये
निवासयोग्ये गगनमण्डले (अधिर्वह्य) अधिकं वद्धेय ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ धनवन्लक्ष्मीपते २ सर्वव्यापिन् ३ परमेश्वरतुम् ४ जिसका
रणा ५ यागविरोधियोंके शिक्षकहोउसकारणा ६ अकर्मायोगविरोधीकामको ७
योगयज्ञशालासे ८ दूरनिकालो ९ देहोंसेसहणीय १० हमारे ११ आत्मप्रति-
विंवरूपसोमको १२ निवासयोग्य गगनमंडलमें १३ अधिकवढ़ाओ ॥ ६ ॥

विनियोगः पूर्ववत् ब्रह्मणा सप्त्याद्या देवताः

त्वष्टा नो देव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणा स्पतिः । पुत्रैर्धा
तृभिरादिति नुपातु नो दुष्टे रन्त्रामणा वचः ॥ ७ - ६७

(त्वष्टा) ज्योतिः स्वरूपः महानारायणः त्विषदीप्तौ (पर्जन्यः) सूर्यः
(ब्रह्मणास्पतिः) ब्रह्मणः विराजस्य स्वामी विष्णुः (नः) अस्मदीय
(देव्यम्) देवस्य परमेश्वरस्य सम्बन्धिनी (वचः) महावाचं (पातु)
(पुत्रैः) (धातृभिः) सहिता (आदितिः) लक्ष्मीः (नु) अपि (नः) अ-
स्माकं (दुस्तरम्) कामादिभिस्तरिणुमशक्यं (त्रामणम्) संसारा
द्रक्षकं (वचः) महावाचं पातु अत्रादिति शब्दार्थप्रकाशको मन्त्रः
आदिति र्द्यौ रदिति रन्तरिक्ष मर्दिति मृता सापिना सपुत्रः । विश्वेदे-

देवाश्चादितिः पञ्चजनाश्चादितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ऋत्० १ म
 ८ अ० ४ सू० १० मन्त्रः—॥७॥

भाषार्थः— १ ज्योतिः स्वरूपमहानारायण २ सूर्य ३ औरविष्णु ४ हमारे
 ५ परमेश्वर सम्बन्धी ७ महावाक् को ७ रक्षाकरो ८ पुत्र ९ धातासहित १० ल
 क्ष्मी ११ भी १२ हमारे १३ काम आदिसेदुस्तर १४ संसारसेरक्षक १५ महावा
 क्कोरक्षाकरो—॥७॥

वालखिल्याऋषयो वृहती छन्द उपेन्द्रो देवता-

^{३ २ ३ ३ ३ १ २ ३ १ ३ ३}
 कदाचनस्तीरसिनेन्द्रसञ्चसिदाशुषे। उपोपे
^{२ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
 न्नुमघवन्भूयद्भुतेदानदेवस्य पूच्यते ॥ ८ - ६८

(नु) विकल्पे (उपेन्द्र) हेविष्णोत्वं (कदाचन) कदाचिदपि (स्ते-
 रीः) संसारबंधनेनहिंसकः (न) (सि) मनुष्यः स्वकर्मणोववध्य
 ते (नु) किन्तु (दाशुषे) (इत्) हविर्दत्तयेज्यमानायैव (सञ्चसि)
 स्वात्मानं प्रापयसि। सञ्चतिर्गति कर्मानि हे (मघवन्) लक्ष्मीपते
 (देवस्य) द्योतनादिगुणकस्य (ते) तव (भूयः) प्रभूतं (दानम्)
 (इत्) एव (उपहच्यते) उपेत्यभवति यावत्पूर्वदानं नैवक्षीयतेता-
 वदेवददासीत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाषार्थः— १ हेविष्णुनुम २ कभी ३ संसारबंधनसेहिंसक ४ नहीं ५
 हो ६ किन्तु ७ हविदानायज्यमानकेलिये ८ ही ९ अपने आत्माको प्राप्त क
 रतेहो १० हे लक्ष्मीपति ११, १२ नुभज्योतिस्वरूपका १३ बड़ा दान १४ प्राप्त
 होतारहता है अर्थात् पहिले दानके व्ययसे पहिलेही दूसरे दानको देते हो। ८

मेध्यातिथिऋषिर्वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ १ २ २ ३ १ ३ ३ १ ३ ३}
 युङ्स्वाहिवृत्रहन्तमहरीन्द्रपरावतः। अर्वा

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसुनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते साम
वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोच्यारख्यानत्तृतीयाध्यायस्य सप्तमः खण्डः ७

अथाष्टमः खण्डः

वसिष्ठ ऋषिर्वहती छन्दो महाविद्यादेवता-

प्रत्यु^२ अदृश्या^३ यित्यु^३ च्छन्ती^३ दुहिता^३ दिवः^३ । अपौ^३ मे^३

ही वृणुते^३ चक्षुषा^३ तमा^३ ज्योति^३ कृणोति^३ सूनुरी^३ १-७२

(आयती) फलदानकालरूपा दीर्घरूपावा (व्युच्छन्ती) तमां-
सि वर्जयन्ती (दिवः) महापुरुषलोकस्य (दुहिता) महाविद्या (उ)
एव (प्रत्यदर्शि) योगिजनैः प्रतिदृश्यते सा (मही) सर्वाधारभूता
(सूनुरी) (उ) ईशः (नरः) जीवः सुषुजीवेशरूपा पराशक्तिः (उ)
एव (चक्षुषा) ज्ञानचक्षुर्दानेन (तमः) अज्ञानं (अपवृणुते) अप
वृणोति (ज्योतिः) ज्ञानप्रकाशं (कृणोति) करोति ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ फलदानकालरूपवादीर्घरूप २ अन्धकारनाशक ३
महापुरुषलोककी ४ दुहिता महाविद्या ५ ही ६ योगियोंसे देखीजानी है
वह ७ सर्वाधाररूप ८ जीवेशरूप पराशक्ति ९ ही १० ज्ञानचक्षुके दानसे ११
अज्ञानको १२ दूर करती है १३ ज्ञानप्रकाशको १४ करती है ॥ १ ॥

वसिष्ठ ऋषिर्वहती छन्दोऽश्विनो देवते-

इमा^३ उवा^३ न्दि^३ विष्टयु^३ उस्वा^३ हवन्ते^३ अश्विना^३ । अयु^३

वा^३ महे^३ वसे^३ शची^३ वसु^३ विशो^३ विश^३ थं^३ हि^३ गच्छथः^३ २ ॥

हे (अश्विना) सर्वेषु व्याप्तौ नरनारायणौ (उस्वौ) रसानां ज्योतिषा
न्वाधारभूतौ (वामु) युवां (उ) एव (इमाः) (दिविष्टयः) दिवमि
च्छन्त्यः मजाः (हवन्ते) आह्वयन्ति तस्मात् हे (शचीवसु) स्सृष्टि

कर्मधनौ (युवाम्) (अवसे) संसाराद्रक्षणाय (आव्हे) आह्वयानि-
 (हि) यस्मात् (विशंविशं) प्रत्येकयजमानं प्रति (गच्छतः) ॥२॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापनरनारायण २ रसवाज्योतिके आधाररूप ३
 तुमदोनों को ४ ही ५ ये ६ स्वर्गकामाभजा ७ आह्वान करते हैं उस कारण ८ हे
 सृष्टिकर्मधनवाले ९ तुमदोनों को १० संसारसे रक्षा के लिये ११ आह्वान कर
 ताहूँ १२ जिसकारण १३ प्रत्येक यजमान के १४ ध्यानमें प्राप्त होते हैं - २॥

अश्विनौ वैवस्वता वृषी वृहती छन्दोः श्विनौ देवते ॥

कुष्ठः कौवाम श्विना तपानो देवो मर्त्यः घ्नता वा

मश्न याक्षयमाणो थं श्मुनेत्यमु आह्वन्यथा ॥३-७३

हे (देवो) देवो माया की डनकैः जीडन शीलौ (अश्विनो) अश्विनो
 नरनारायणो (वाम्) युवां (कुष्ठः) कौषथिव्यां वर्तमानः (कः)

(मर्त्यः) मनुष्यः (तपानः) परमहंस रूपेण स्वतेजसा तपानो भवति
 नको पीत्यर्थः (यथा) (घ्नता) पीडकया (अश्नया) क्षुधया (क्षय
 माणः) क्षीयमाणः (आह्वन्) भक्षणकर्त्ता तमो भवति (इत्यमु)
 एवमेव (वाम्) युवां (अश्नुना) सोमेनात्मप्रतिविवेन तप्तौ भवतम् ३

भाषार्थः - १ हे मायाके खिलोनोंसे जीडन शील २ नरनारायण ३ तुम
 दोनों को ४ भूमिस्थ ५ कोन ६ मनुष्य ७ परमहंस रूपद्वारा अपनेतेजसे तप
 ताहै अर्थात् कोई नही ८ जैसे ९ पीडक १० क्षुधासे ११ क्षीयमाण १२ भक्ष
 णकर्त्ता तप्त होता है १३ इसी प्रकार १४ तुमदोनो १५ आत्मप्रतिविवे से तप्त
 होते हैं ॥३॥ प्रस्काएव ऋषि वृहती छन्दोः श्विनौ देवते-

अथ वाम्मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविषिषु तमो श्वि
 नापिवतन्निरो अन्ध्य धत्त थं रत्नानि दाशुषे ॥४-७४

हे (अभिना) अभिनौ नर नारायणौ (दिविष्टिपु) योगयज्ञेषु (अ
 यम्) (मधुमत्तम्) ज्ञानवत्तम आत्म प्रतिविंबः (सुतः) अभिपुतः
 (तम्) (तिरोअन्हाम्) देवयान पितृयान मार्गौ तिरस्कृतौ येन तमा
 त्म प्रतिविंबं (पिवतम्) (दाप्नुये) हविर्दत्त वते योगिने (रत्नानि)
 योगैश्वर्याणा (धत्तम्) मयच्छतम् ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे नर नारायण २ योग यज्ञों में ३ यह ४ बड़ा ज्ञानी आत्म
 प्रतिविंब ५ अभिपुत हुआ ६ उस ७ देवयान पितृयान मार्ग का तिरस्कार कर
 ने वाले आत्म प्रतिविंब को ८ पान करो ९ हवि दाता योगी के लिये १० योगैश्व-
 र्यो को ११ दीजिये ॥ ४ ॥

मेधा तिथि मेध्या तिथी ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

आत्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन् नृज्या ।
 भूरीमृगन्न सवनेषु चुक्रुध कर्द्वं शाननयानि-
 षत् ॥ ५ ॥ ७५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (भूरीमृ) भूमिं नयति भूरीं वराहावतारस्तद्रू-
 पं (ने) च (मृगम्) नृसिंह रूपं (त्वा) त्वां (सवनेषु) योगयज्ञेषु (सो-
 मस्य) आत्म प्रतिविंबं सम्बन्धि न्या (गल्दया) महा वाचा नि० १।
 ११ (सदा) (याचन्) (अहम्) (आचुक्रुधम्) यस्मात् (ज्या) क्षय-
 शीलया बुद्ध्या युक्तः (कः) कामः (ईशानम्) ईश्वरं त्वां (ने)-
 (याचिषत्) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ वाराह रूपधारी ३ और ४ नृसिंह रूपधारी
 ५ तुमको ६ योग यज्ञों में ७ आत्म प्रतिविंबं सम्बन्धी ८ महा वाक् द्वारा ९ स-
 दा १० याचना करता ११ में १२ क्रोधित हुआ १३ जिस कारण क्षय शील बु-

द्विसे युक्त १४ कामने १५ तु भर्द्वाचर को १६ नहीं १७ याचना किया ॥५॥

देवातिथिः ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवताः

अध्वर्यो द्रावयात्वे सोममिन्द्रः पिपासति । उपोन्नू
नयुयुजे वृषणा हरी आचजगाम वृत्रहा ॥६-७६

हे (अध्वर्यो) मनोरूपाध्वर्यो मनोवाऽ अध्वर्युः श० १।५।१। २९ (सो
मम्) आत्मप्रतिविंबु (द्रावये) अभिषुणु (अ) सर्वव्यापी (इन्द्रः) पर
मेश्वरः (उ) एव (पिपासति) पानुमिच्छति (वृषणा) वर्धितारो (हरी)
जीवेशो (नूनम्) (उपयुयुजे) उपयोजितवान् (च) (वृत्रहा) पाप
नाशकः परमेश्वरः (आजगाम) स्वरूपं प्रादुश्रकार् ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हेमनरूप अध्वर्यु २ आत्मप्रतिविंबु को ३ अभिषवन करो ४
सर्वव्यापी ५ परमेश्वर ६ ही ७ पान करना चाहता है ८ उसने वृषि कर्ता ९ जीव
ईश्वर को १० निश्चय ११ अपने आत्मा में संयुक्त किया १२ और १३ पापनाश
क परमेश्वरने १४ अपने स्वरूपको प्रकट किया ॥ ५ ॥

द्वयोर्वसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

अभीषतस्तदाभरेन्द्रज्यायः कनीयसः पुरुवसुहि
मघवनवभूविथभरेभरेचहव्यः ॥७॥७७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (अभीषत) अभीच्छतः । इपवाञ्छयां (कनीय
सः) जीवात्मनः (तत्) (ज्यायः) प्रशस्तं योगधनं (आभरे) आहर
देहि हे (मघवन्) लक्ष्मीपतेत्वं (पुरुवसुः) बहुधनः (हि) (वभूविथ)
(भरेभरे) मत्येक यज्ञे (च) (हव्यः) होतव्यो वभूविथ ॥७॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ इच्छावानं ३ जीवात्माके ४ उस ५ प्रशस्त
योगधनको ६ दीजिये ७ हे लक्ष्मीपतेतुम् ८ बहुधनी ९ ही १० हो ११ मत्येक य

ज्ञमं १२ भी १३ आह्वान योग्यहौ ॥ ७ ॥ विनियोगः पूर्ववत्-

यादिन्द्रयावत्स्त्वमेतावद्दहमीशीयस्तोतारामद्
धिषेरदावसो न पापत्वाय रंथंसिषं ॥ ८ ॥ ७८

हे (रदावसो) धनानां दातः (इन्द्र) परमेश्वरत्वं (यावत्) ऐश्वर्यस्ये
शिषे (यद्) यदि (एतावत्) एतावत् ऐश्वर्यस्य । पश्यात्कुं सुपांसुलु
गित्यादिना (अहम्) (इंशीय) ईश्वरो भवेयंतदा (स्तोतारम्) (इत्)
वाचमेव (दाधिषे) आत्मनि धारयेयं मौनी भवेयं (पापत्वाय) पाप-
भावाय (न) (रंसिषम्) नदद्याम् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे धनों के दाता २ परमेश्वर तुम ३ जितने ऐश्वर्य के स्वामी
हो ४ यदि ५ इतने ऐश्वर्य का ६ में ७ स्वामी होऊं तब ८, ९ वाणी को ही १० आ-
त्मा में धारणा करूं अर्थात् मौनी हो जाऊं ११ औंस उस वाणी को पापत्व के लिये-

१२, १३ मकट नहीं करूं ॥ ८ ॥ नृमेधऋषिर्दहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभिषिष्वो असि स्पृधेः । अशस्ति
हाजनिता वृत्रनूरसित्वतूर्यतरुष्यतः ॥ ९ ॥ ७९-

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (प्रतूर्तिषु) प्रकर्षणात्तूर्यन्ते हिंस्यन्ते-
यत्र स प्रतूर्तिर्योग यज्ञस्तेषु (विष्वोः) सर्वाः (स्पृधेः) कामसेनाः
(अभ्यासि) अभिभवसि (अशस्तिहा) अकीर्तेर्नाशकः (जनिता)
कीर्तिर्जनयिता (वृत्रनूरः) पापस्य हन्ता (असि) तस्मात् (त्वम्) (त-
रुष्यतः) वधेच्छून् कामादीन् (तूर्य) प्रतिहिंस ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुम ३ योग यज्ञों में ४ सब ५ कामसेनाओं
को ६ जय करते हो ७ अकीर्तिकर्ता नाशक ८ कीर्ति के उत्पादक ९ पापनाश
क १० हो ११ उस कारण १२ तुम १३ वधेच्छू काम आदि को १४ मारो - ॥ ९ ॥

नोधाऽपि र्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

प्रयोरिरेक्षे शो जसा दिवः सदोभ्यस्परि नत्वा वि

व्याचरज इन्द्र पार्थिवमति विश्वववक्षिथं ॥ १०-८०

हे (इन्द्र) परमेश्वरत्वं (दिवः) स्वर्गस्य (सदोभ्यः) आब्रह्मलोके
भ्यः (परिरेक्षे) प्रकर्षेणाधिकोऽसि। रिचेर्लीटि वङ्गलञ्छन्दसीति
श्लुः। प्रत्ययस्वरः (पार्थिवम्) पार्थिव्यां भवं (रजः) लोकसमूहः (त्वा
त्वां (न) (परिविव्याच) समन्तान् व्याप्नोति (यः) त्वं (विश्वम्) स
र्वब्रह्माण्डं (शो जसा) तेजसा वलेन च (अति) अतिक्रम्य व्याप्य-
(ववक्षिथं) महानसि नि० ३। ३॥ - १०॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर तुम २ स्वर्गके ३ स्थान ब्रह्मलोक तकसे ४ अ
धिक हो ५ पार्थिवी सम्बन्धी ६ लोकसमूह ७ तुमको ८ व्याप्त नहीं करता है-
१० जो तुम ११ सर्व ब्रह्माण्डको १२ तेज वा वलसे १३ व्याप्त कर १४ महान हो
॥ १०॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते
तेसामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्याष्टमः खण्डः ८॥

अथ नवमः खण्डः

द्वयोर्वसिष्ठः ऋषिस्त्रिष्टुप छन्द इन्द्रो देवता-

असाविदेव गोऽरुजी के मन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुष
मुवोच। वोधो मसित्वा हर्यश्वयज्ञे वोधानः स्तोम म
न्धेसोमदेषु ॥ १॥ ८१॥

(देवम्) मायाक्रीडाणकैः क्रीडाणशीलं (गोऽरुजीकम्) गोभिरिन्द्रि
यैर्भिन्नितं (अन्धः) आत्मप्रति० रूक्षान्नं (असावि) अभिषुतं (इन्द्रो)
परमेश्वरः (अस्मिन्) आत्मप्रतिविंबे (जनुषा) योगसंस्कारेणाल-

भ्यं (ईम्) शान्तिं न्यवोच (नितरामुक्तवान् हे (हर्यश्च) ब्रह्मविष्णु
 महेशेषु व्यापक (त्वा) त्वां (यज्ञैः) अर्चाप्रभावैः (बोधामसि) बोध-
 यामः (अन्धसः) आत्मप्रतिविंवरूपान्नस्य (मदेषु) (नः) अस्माकं
 (सोमम्) स्तोत्रं (बोध) बुध्यस्व ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ मायाकेखिलो नो से कीडनशील २ इन्द्रियों से मिश्रित
 ३ आत्म प्रतिविंवरूप अन्न ४ अभिषुत हुआ ५ परमेश्वरने ६ इस आत्म प्रति-
 विंवरूप ७ योग संस्कार से लभ्य ८ शान्ति को ९ उपदेश किया १० हे विदेव मे व्या-
 पक ११ तुमको १२ अर्चाप्रभावों से १३ जतलाते हैं १४ आत्म प्रतिविंवरूप-
 अन्नके १५ मदों में १६ हमारे १७ स्तोत्र को १८ जानो - ॥ १ ॥ विनियोगः पूर्वक

योनिषु इन्द्र सदने अकारितमानृभिः पुरुहूतप्रयाहि।

असौ यथानो वितो वृधश्चिद्वदो वसूनि ममदश्च सोमैः २-८

हे (पुरुहूत) बृहभिराहूत (इन्द्र) (सदने) यज्ञगृहे (ते) तव (योनि)
 स्थानं (अकारि) अहं कृतवानस्मि (नृभिः) नेतृभिर्मरुद्भिः सार्द्धं (तम)
 स्थानं (आप्रयाहि) (यथा) (वृधः) महान्त्वं (नः) अस्माकं (अवितो)
 रसुकः (चित) आपि (असः) भवासि (वसूनि) धनानि (ददः) दोहि
 (सोमैः) (ममदः) ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे बहूत से आहूत २ इन्द्र ३ यज्ञ गृहमें ४ तेरा ५ स्थान ६ में
 ने संस्कृत किया ७ नेनामरुद्गणों के साथ ८ उस स्थानको ९ प्राप्त करो १० जैसे
 ११ महान्तुम १२ हमारे १३ रसुक १४ भी १५ होओ १६ धनों को १७ दो १८
 सोमों से १९ मंद को पाओ - ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (पुरुहूत) बृहभिराहूत (इन्द्र) परमेश्वर (नृ-
 भिः) वागाद्यत्विभिः सहितो हं (सदने) योग यज्ञ गृहे भृकुटिमाण्ड

ले (ते) तव (योनिः) स्थानं (अकारि) संस्कृतवानस्मि (तम्) (आप्त
 याहि) (यथा) (वृधः) ज्योतिस्वरूपत्वं वृधदीप्तौ (नः) अस्माकं (अ
 विता) संसाराद्द्रक्षकः (चित्) अपि (असः) (वसूनि) योगधनानि
 (ददः) (सोमैः) इन्द्रियप्राणात्मप्रतिविंवैः (ममदः) ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे वृद्धतसे आहूत २ परमेश्वर ३ वागाद्यृत्विजों से सहित मैंने
 ४ योगयज्ञ गृह भृकुटि मंडलमें ५ आपके ६ स्थानको ७ संस्कृत किया ८ उ
 सको ९ प्राप्त करो १० जैसे ११ ज्योतिस्वरूपतुम १२ हमारे १३ संसार से रक्षा क
 रने वाले १४ भी १५ होवें १६ योगधनोंको १७ दो १८ इन्द्रिय आत्म प्रतिविंव
 से १९ मदको पाओ - ॥ २ ॥ गानुर्धरेषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

अददुरुत्समस्तजो विषानित्वमेणवान्वेद्वधनां च्छ
 रमाः महान्तो मिन्द्रपर्वतवियद्दः स्तजद्धारो अवयद्द
 नवान्हन ॥ ३ ॥ ८२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) तदा तदा (उत्सम्) वाचं। मनो वै सरस्वा
 न्वाक्षरस्वत्येतौ सारस्वताः उत्सौ श० ७। ५। १। ३२ (अददः) मौन
 साधनाय विदारितवानसि (खानि) इन्द्रियाणि कमलानि वा (व्य
 स्तजः) ऊर्ध्वं मुखान्यन्तर्मुखानि वा कृतवानसि (वृध्धानान्) व
 द, स्थैर्ये - वधसंयमने - स्थैर्येणानिरुद्धाः (अणवान्) मनो वृत्ती
 मनो वै समुद्रः श० ७। ५। २। ५२ (अरमाः) योगे विस्तेष्ट वानसि
 (महान्तम्) (पर्वतम्) गगनमण्डलमेघं (विवः) विवृत वानसि
 (धारो) अमृतधाराः (विस्तेजत्) व्यस्तजः विसर्जितवानसि (यद्)
 (यद्) यदा यदा (दानवान्) कामादीन् (अवहन्) अभिहतवान
 सि ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुमने तव तव ३ वाणीको ४ यौन साधनके लिये
 विदारण किया है ५ इन्द्रियोवा कमलोंको ६ ऊर्ध्वमुखवा अन्नर्मुखकिया
 है ७ स्थिरता से निरुद्ध ८ मनोवृत्तियोंको ९ योगमें रमाया है १०, ११ गगन
 मंडलके मेघको १२ प्रकट किया है १३ अमृत धाराओंको १४ छोड़ा है १५
 १६ जवजव १७ काम आदिको १८ मारा है ॥ ३ ॥

एथोवैन्यऋषिस्त्रिष्टुपृच्छन्दइन्द्रो देवता-

सुष्वाणासइन्द्रस्तुमासित्वा सनिष्यन्तोश्चित्तुवि
 नृम्णा वाजम् । आनाभरसुवित यस्य कोना तनात्म
 नो सह्यामा त्वाताः ॥ ४ ॥ ८४ -

हे (तुवि नृम्णा) वहु बल वहु धनवा (इन्द्र) परमेश्वर (सुष्वाणासः)
 सोम मात्म प्रतिविंवाः भिषुत वन्नः (वाजम्) चरु पुरोडाशादि-
 लक्षणांभूतात्म रूपम्वाऽन्नं (सनिष्यन्तः) सम्भक्तवन्तो वयं (त्वो-
 चित्) त्वामेव (स्तुमासि) स्तुमः (नः) अस्माकं (सुवितम्) सुप्रमत्या
 हारेण युक्तं यज्ञं योग यज्ञंवा (आभर) आहर प्रयच्छ (अ) हे सर्व-
 व्यापिन् (यस्य) यज्ञस्य (कोनाः) कः कामस्तेन - ऊनाः निष्का-
 माः (त्वाताः) त्वयि श्रोताः श्रोता वयं (त्मना) आत्मन् आत्मनि बु-
 ष्ठी (तना) तनानि सांसारिक धनानि (सह्याम) अभिभवाम । सह-
 अभिभवे ॥ ४ ॥

भाषार्थः

१ हे बहु बली वा वहु धनी २ परमेश्वर ३ सोमवा आत्म प्रतिविंवा का अभिपवक
 रनेवाले ४ चरु पुरोडाश आदि वाभूतात्मारूप अन्नको ५ विभाग करने वाले
 हम ६ तुमको ७ ही ८ स्तुत करते है ९ हमारे १० सुप्रमत्याहार से युक्त यज्ञवा
 योग यज्ञको ११ सिद्ध करो १२ हे सर्व व्यापिन् १३ जिस यज्ञके १४ निष्काम-

१५ श्रौतगन्तुभमें प्रोतहम १६ बुद्धिमें १७ सांसारिक धनों को १८ तिरस्कारकों

॥४॥ सप्तगुर्जरपिच्छिपुषु छन्द इन्द्रो देवता-

जगृह्णानेदाक्षिणामिन्द्रहस्तवसूर्यवो वसुपतेवसु
नाम ॥ विद्मोहित्वां गोपतिं भूरगोनामस्मभ्यचि
त्रवृषणां रयिन्द्रोः ॥ ५ ॥ ८५

हे (१) सर्वव्यापिन् (वसुपते) धनानां स्वामिन् (इन्द्र) परमेश्वर
(वसूर्यवः) धनकामावयं (ते) तव (दाक्षिणम्) (हस्तम्) (जगृह्ण)
गृह्णीमः हे (२) सर्वव्यापिन् (भूर) (त्वाम्) (हि) (गोपतिम्) गो-
पालं श्रीकृष्णां (विद्म) जानीमत्वं (अस्मभ्यम्) (वसूनाम्) स्व-
णीदीनां (गोनाम्) गवां (चित्रम्) नानारूपधारणो नाद्भुतं (वृषणा
म्) दधिदुग्धघृतानां वर्षकं (रयिम्) धनं (दाः) देहि ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ धनों के स्वामी ३ परमेश्वर ४ धनकामा-
हम ५ आपके ६ दाहिने ७ हाथको ८ पकडते हैं ९ हे सर्वव्यापिन् १० भूर ११ तु-
मको १२ ही १५ गोपाल श्री कृष्ण १४ जानते हैं तुम १५ हमारे लिये १६ स्वर्ण
आदि १७ गौश्रों के १८ नानारूपधारणसे अद्भुत १९ दधिदुग्धघृतों के वर्षक
२० धनको २१ दीजिये ॥ ५ ॥ वसिष्ठऋषिच्छिपुषु छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्रनरोनेमाधिताहवन्ते यत्पायायुनजतो धिय
स्ताः । भूरानुषाता भ्रवसभ्रव काम आगो मतित्रजे
भजात्वना ॥ ६ ॥ ८६

(यद्) यदा (ताः) (पाय्याः) पारलौकिकाः (धियः) बुद्धयुः (युनजते)
प्रयुज्यन्ते तदा (नरः) प्राणानां नेतारो योगिनः (नेमाधिना) नेमोः
न्तद्वीयते यत्र सनेमाधितो यस्तस्तेन योग यत्नेन (इन्द्रम्) परमेश्व

रं(त्वा) त्वां(हवन्ते) ह्यन्तिहे परमेश्वरतस्मिन्काले (शूरः) (नृषा
 ता) भक्तानां दातात्वं (श्रवसेः) योगवलस्य (चकामे) चकानेका
 म्यमाने सति (गोमति) (वृजे) गोमिरिन्द्रियैर्युक्ते गोष्ठे मनसि (नः)
 अस्मान् (भज) सेवय ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ जव २ वे ३ पारलौकिक ४ बुद्धियां ५ आत्माने युक्त हो
 ती है तव ६ प्राणोंके नेता योगी ७ योग यज्ञ द्वारा ८, ९ नुभ परमेश्वर को १०
 आवाहन करते है हे परमेश्वर उस समय ११ शूर १२ भक्तोंके दाता तुम १३
 योग वलके १४ काम्य मान होने पर १५ इन्द्रिय युक्त १६ मनमें १७ हम
 को १८ सेवन करो - ॥ ६ ॥ गौरिवीत ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रमिधु मेधा ऋषयो नाधु
 मानाः । अपध्वान्तमूर्णो हि पूष्टिन्वक्षु मुमुग्धाः ३स्मा
 निधयेव वद्धान् ॥ ७ ॥ ८ ७

(प्रियमेधाः) प्रिया मेधा येषान्ते (ऋषयः) साक्षात्कृतधर्माणां
 (नाधमानाः) मज्ञां याचमानाः नि० ३। ४ (वयः) पक्षि सदृशाः (सु
 पर्णाः) जीवाः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उपसेदुः) उपसृन्ना अभवन् हे
 परमेश्वर (ध्वान्तम्) अन्धकाररूपमज्ञानं (अपोर्णो हि) परिहर (च
 क्षुः) ज्ञानचक्षुः (पूष्टिः) पूर्य। नि० ४। ३ (अस्मान्) (निधयो) नि
 धापाश्रया भवति पाश्रया पाश समूहः, जन्म मरणादि पाश समूहे
 न (एव) (वद्धान्) (मुमुग्ध) मोचय ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ मेधा जिनकी प्रिय है उन धर्मको साक्षात् करने वाले ३
 मज्ञा याचक ४ पक्षी सदृश ५ जीवां आत्माओंने ६ परमेश्वर को ७ उपासना
 किया है परमेश्वर ८ अन्धकार रूप अज्ञान को ९ दूर करो १० ज्ञानचक्षुको

११ परिपूर्णकरो १२ ह्रम १३ जन्म मरण आदिपाश समूह से १४ ही १५ वद्धों को १६ बुदाशो ॥७॥ वेनोभार्गवऋषिस्त्रिष्टुपच्छन्दः सूर्योदेवता-

नाके सुपर्णीमुपयन्तन्तं हृदावेनन्तो अभ्येक्ष
तत्वा ॥ हिरण्यपक्षवरुणास्य दूतयमस्य योनौ शकुने
भुरायुम् ॥ ८ ॥ ८८

(यत्) यस्मात् (हृदा) हृदयेन मनसा (उपवेनन्तः) समीपे पूजय-
न्तः वेनति र्व्वितिकर्मानि० ३ १४ तस्मात् (नाके) स्वर्गे (पतन्तम्)
गच्छन्तम् (हिरण्यपक्षं) ब्राह्मज्योतिः पक्षीयस्य त्नादृशं (सुपर्णी)
(वरुणास्य) एकाणिवेशस्य महानारायणास्य (दूतम्) (यमस्य)-
(योनौ) स्थाने संसारे (शकुनेम्) शक्तं समर्थं सूर्य आत्मा जगस्तस्य
षश्वेति मन्त्रात् (भुरायुम्) शीघ्रगामिनं नि० २ १५ (त्वां) त्वां सूर्य-
रूपमीश्वरं (अभ्येक्षते) अभिपश्यन्ति यथा वज्जानन्तीत्यर्थः ॥ ८

भाषार्थः - १ जिस कारण २ हृदयमनसे ३ समीप पूजन करने वाले हुए उस कारण ४ स्वर्गमें ५ जाते ६ ब्राह्मज्योतिरूप पक्ष वाले ७ पक्षीरूप ८ एकाणिवेश महानारायणाके ९ दूत १०, ११ संसारमे १२ समर्थ १३ शीघ्रगामी १४ तु भ्रूसूर्यरूप परमेश्वरको १५ यथावत् जान्ते हैं ॥ ८ ॥

बृहस्पतिर्निकलोवाऋषिस्त्रिष्टुपच्छन्दः सूर्योदेवता-
ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् द्विसीमतः सुरुचोवेनशो
वः । सवुभ्यो उपमांशस्य विधाः सतश्च योनि मसतश्च
विवः ॥ ९ ॥ ८९

(पुरस्तात्) पूर्वस्मिन् काले (प्रथमम्) स्तृष्ट्यादौ (जज्ञानम्) प्रादुर्भूतं
(ब्रह्म) सूर्यरूपं ब्रह्म श० ७ १ ४ १ १४ (सीमतः) ब्रह्माण्डस्य मध्यतः

श०७।४।१।२४ (सुरुचैः) शोभमानानि मानूलोकान् श०७।४।१।२४
 (विभावः) स्वप्रकाशेन विवृतान करोत् (सः) (वेनः) कामनीयो मेधा
 वीसूर्यः (उपमाः) सावकाशाः (चै) (अस्य) जगतः (विष्टोः) विविध
 स्थानरूपाः (बुभ्याः) दिशाः श०७।४।१।२४ तथा (सतः) मूर्त्तस्य
 घटपटादेः (चै) (असतः) अमूर्त्तस्य वा व्यादेः (योनिम्) प्रभवंब्रह्मा
 एडं (विवः) प्रकाशयति सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चेति मन्त्रात् ।
भाषार्थः - १ पूर्वकालमें २ स्थिती की आदिमें ३ प्रादुर्भूत ४ सूर्यरूपब्रह्मने
 ५ ब्रह्माएड के मध्य ६ इन शोभनलोकों को ७ अपने प्रकाश से विवृत किया
 ८ वह ९ कामनीय मेधावी सूर्य १० अवकाशवान् ११ और १२ इस १३ जगत
 की विविध रूप १४ दिशाओं को तथा १५ मूर्त्तघटपट आदि १६ और १७ अमूर्
 त्तवायु आदि के १८ प्रभव ब्रह्माएड को १९ प्रकाशित करता है ॥ ८ ॥ ८९

सहोत्ररूपिस्त्रिषुषु खन्दो महानारायणो देवता-

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महवीराय तवसे नुरायो विर

प्सिने वज्रिणो शन्तमानि वचांस्यस्मै स्थविराय तस्युः २०

स्तोतारः (महे) यज्ञे उत्सवे वा (अस्मै) (वीराय) असुराणां मारयित्रे
 (तवसे) ब्रह्मवते (नुराय) (न) विष्णुः (उ) शिवः (र) ब्रह्मा त्रिदेवरूपा
 य (विरप्सिने) विशेषेण वेदानां वक्ते महते वा । एष व्यक्तवाक्ये (वज्रि
 णो) ज्ञानवज्रवते (स्थविराय) ब्रह्माय महानारायणाय (अपूर्व्या)
 पूर्व्या णियेषां सन्तानि (पुरुतमानि) बहुतमानि (शन्तमानि)
 आनन्दरुतमानि (वचांसि) वेदस्तुतिरूपाणि वाक्यानि (तस्युः) त
 तस्युः । तस्यतिः करोतीत्यर्थः ॥ २० ॥

भाषार्थः - स्तोता मनुष्यों ने १ यज्ञवाउत्सव में २ इस ३ असुरनाशक ४

बलवान् ५ त्रिदेवरूप ६ विशेषं करवेदोके वक्ता वामहान् ७ ज्ञानवज्रधारी ८
 वृद्धमहानारायणके लिये ९ अपूर्ववेदोक्त १० वज्रतम ११ अन्यानन्दकन्ती
 १२ वचनोंको १३ उच्चारणाकिया ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम घृणुज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते सा
 मवेदीयब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य नवमः खण्डः ९

अथ दशमः खण्डः

द्वयोर्द्युतान चरपि स्त्रिष्टुप् छन्द आत्मा देवता-

अवद्रेप्सु अथं भुमती मतिष्ठदा यानेः कृषादिश
 भिः सहस्रैः । आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमपस्त्रीहि
 तिनृमणा अधद्रोः ॥ १ ॥ ९ ॥

(कृषाः) तमप्रधानः (सहस्रैः) सहस्रवत्तस्य दातृभिः (दशभिः)

इन्द्रियैः (इयानः) इयमानः (द्रुप्सुः) आत्मप्रतिविंवरूपोरसः (अंशु

मनीम्) मनोरूपां नदी (अवातिष्ठत्) (शच्या) कर्मणानि ० २। १

(तम्) (धमन्तम्) अहंममेति शब्दं कुर्वन्त आत्म प्रतिविं (इन्द्रः)

आत्मारूपयजमानः । इन्द्रो वै यजमानः श० १। १। २। ११ आत्मा वै य

ज्ञस्य यजमानो ऽङ्गान्यत्विजः श० ९। ५। २। १६ (आवत्त) प्राञ्चोत्-

(अध) अनन्तरं पश्चात् (नृमणाः) नृपुने तृपु वागा दृत्वि सु मनो यस्य

स आत्मारूपयजमानः (स्त्रीहितम्) हिंसित्री कामसेना (अपद्रोः)

अपगमयत् ॥ १ ॥

भाषार्थः

१ तमप्रधान २, ३, ४ वत्तदाता इन्द्रियोंके साथ गतिमान ५ आत्म प्रति विंवरूप

रस ६ मनरूपनदीमें ७ स्थित इन्द्रा ८ आत्मारूपयजमानने ९ कर्मद्वारा १० उस

११ में मेरा यह शब्द करनेवाले आत्म प्रति विंवरूपको १२ मामाकिया १३ पीछे १४

वाक्शादिमेंमनकरनेवालेआत्मारूपयजमानने १५ हिंसक कामसेनाको

१६ हटादिया ॥ १ ॥ इन्द्रोदेवताशेषंपूर्ववत्-

वृत्रस्यत्वाश्वसथादीषमाणोविश्वेदेवाः अजहुयस
खायः । मरुद्भिरिन्द्रसख्यन्तैश्स्त्वयमाविश्वः पृ-
तनाजयासि ॥ २ ॥ ६२

हे(इन्द्र) यजमानते(यै)(सख्यः)(विश्वेदेवाः) शमदमादयः(वृत्र
स्य) पापस्य(श्वसथात्) श्वासादीनाः । श्वसेरौणादिकोऽयप्रत्ययः
(ईषमाणाः) सर्वतः पलायमानाः(त्वा) त्वां(अजहुः) त्यक्तवन्तः
(ते) तव(सख्यम्)(मरुद्भिः) माणैः(अस्तु)(अथ) अनन्तरं(इमाः)
(पतनाः) कामसेनाः(जयासि) स्ववलेनाभिभवसि ॥ २ ॥

भाषार्थः—हेयजमानतेरे २ जो ३ सखा ४ शमदमशादिहैं ५ पापके
६ श्वाससेभययुक्त ७ श्वशोरभागतेउन्होंने ८ तुमको ९ न्याग किया १० तेरी
११ मित्रता १२ माणोंकोसाथ १३ हो १४ फिर १५ इन्द्र १६ कामसेनाओंको-
१७ अपनेवलसेजय करोगे ॥ २ ॥

बृहदुकथञ्चरषिस्त्रिष्टुप् छन्द आत्मादेवता-

विधुन्दुद्राणां थं समनेवहना युवान् थं सन्नं पलि
तोजगार । देवस्य पश्य काव्यं माहित्वा घाममारसह्यः
समान ॥ ३ ॥ ६३

(पलिता)(उ) वृद्धावस्थैव(विधुम्) देहस्यधारयितारं(समने)
संग्रामे(वहनाम्) कामादीनां(द्राणाम्) द्रावकं(युवानम्)(स-
न्नम्) यजमानं(जगार) निर्गिरतस्म(काव्यम्) क वित्वं(पश्य)
(देवस्य) विद्वतः(माहित्वात्) माहात्म्येन(या) पलिता(ममार)-

(सह्यः) ^{१६} ईशेनै कत्वं प्राप्तो योगी (समान) ^{१७} जीवन्मुक्तोऽभवत् ॥३॥
भाषार्थः - १२ वृद्धाश्रवस्थानेही ३ देह धारक ४.५.६ संग्राममें बहु
 त काम आदिके भगाने वाले ७ युवान ८ होने यजमान को ९ निगला १० बुद्धि
 मानों को ११ देखो १२ विद्वानके १३ महात्म्य से १४ जो पलिता १५ मरी १६ परमे
 श्वरसे एकत्व को प्राप्त योगी १७ जीवन्मुक्त हुआ - ॥३॥

द्युतानञ्चरिषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

^३ त्वं ^३ हत्यत्सप्त ^३ भ्याजयमानो ^३ शत्रुभ्यो ^३ अभवः
^३ शत्रुरिन्द्रः । ^३ गूढे ^३ द्यावा ^३ पृथिवी ^३ अन्व ^३ विन्दो ^३ विभु
^३ मध्यो ^३ भुवनेभ्यो ^३ रणान्धाः ॥ ४ ॥ ६४

हे (इन्द्र) यजमान (ह) खलु (त्वमे) (यत्) यस्मात् (जायमानः)
 योगसंस्कारेण जायमानः सन् (सप्तभ्यः) (शत्रुभ्यः) कामकोध-
 लोभमोहाहङ्कारममत्वमत्सरेभ्यः (शत्रुः) (अभवः) (गूढे) गुप्ते (द्या
 वापृथिवी) मनोभृकुटी (अविन्दः) अलभथाः (तत्) तस्मात् (विभु-
 मध्यः) भुवनपालयुक्तेभ्यः (भुवनेभ्यः) चतुर्दश भुवनेभ्यः (रणान्)
 युद्धं (धाः) धारय कुरु मोक्षार्थी भवेत्यर्थः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे यजमान २ निश्चय ३ तुम ४ जिस कारणसे ५ योग संस्का
 रसे संस्कृत होते ६ ७ सान शत्रु कामकोधलोभमोह अहंकारममत्वमत्सरेके
 लिये ८ शत्रु ९ हुए १० गुप्त ११ मनभृकुटिको १२ लब्धकिया १३ उस कारणसे १४
 भुवनपालयुक्त १५ चतुर्दश भुवनों से १६ युद्ध १७ करो अर्थात् मोक्षार्थी हो

वामदेवञ्चरिषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

^३ मोडि ^३ न्तवा ^३ वज्रिणा ^३ म्भृष्टि ^३ मन्त ^३ स्पूरु ^३ धस्मान
^३ वृषभं ^३ स्थिर ^३ प्सुम् । ^३ करो ^३ ष्यथ ^३ स्तरुपी ^३ दुवस्यु

रिन्द्रद्युक्षदृत्रहृणां गृणीषे ॥ ५ ॥ ६५

हे (इन्द्र) यजमान (दुवस्युः) दुवः परिचरणां स्तुत्यादिलक्षाणां तदिच्छुः (अर्यः) इन्द्रियाणामीशत्वं (मेडिम्) महावाचं नि० १।११।१६ (तरुपीः) तारकायोगभक्तिभूमिञ्च (करोषि) लभसितस्मात् (वज्रिणम्) ज्ञानवज्रधरं (भृष्टिमन्नम्) असुराणां भूर्जनवन्तं (पुरुधस्मानं) वहनां व्यष्टिसमष्टिदेहानां धारकं (वृषभम्) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षकं (स्थिरप्सुम्) स्थिररूपमच्युतस्वरूपं (दृत्रहृणां) पापनाशकं (द्युक्षम्) महानारायणलोके वर्तमानं परमेश्वरं (नत्व) नमस्कृत्य (गृणीषे) स्तौषि ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे यजमान २ स्तुति आदि सेवाके चाहने वाले ३ इन्द्रियों के स्वामी तुम ४ महावाक् को ५ और योगभक्ति की भूमियों को ६ लब्ध करते हो उस कारण ७ ज्ञानवज्रधारी ८ असुरों के नाशक ९ बहुत व्यष्टि समष्टि देहों के धारक १० चारोंपदार्थके दाता ११ स्थितरूप अच्युत स्वरूप १२ पापनाशक १३ महानारायणलोकमें वर्तमान परमेश्वर को १४ नमस्कार करके १५ स्तुत करते हो - ॥ ५ ॥ वसिष्ठऋषिस्त्रिपदाविराट् छन्द इन्द्रो देवना-

प्रवोमहे महे दृधे भरध्वं प्रचेतसे प्रसुमति कृणु

ध्वं। विशः पूर्वीः प्रचर चर्षणि प्राः ॥ ६ ॥ ६६

हे भक्तजनाः (महे) (महे) प्रत्येकोत्सवे यज्ञे वा (वे) युष्माकं (प्रचेतसे) ज्ञानस्वरूपाय (दृधे) महापुरुषाय (प्रभरध्वम्) पुष्पचन्द्रादीनि वस्तूनि प्रार्पयत (सुमतिम्) सुष्ठु तिञ्च (प्रकृणुध्वम्) प्रकुरुत हे परमेश्वर (चर्षणि प्राः) कामैर्भक्तानां पूरयितात्वमपि (पूर्वी) (विशः) यज्ञाः स्वपूजकान् (प्रचर) अभिगच्छ ॥ ६ ॥ ६६

भाषार्थः - हे भक्तजनो १, २ मन्त्येक उत्सववायज्ञमें ३ तुम्हारे ४ ज्ञानस्वरूप
५ महापुरुषके लिये ६ पुष्पचन्दन आदिवस्तुओंको अर्पण करो ७ भेष्ट स्तुति
को ८ करो हे परमेश्वर ९ कामनाओंसे भक्तोंके पूरकतुमभी १० अपनी पूजा
कमजाको ११ प्राप्त करो - ॥ ६ ॥ ६६

विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

भुन^३थं^२ हु^३वे^२म^३ म^३घ^३वा^३ना^३मि^३न्द्र^३ मा^३स्मि^३न्^३ नरे^३ नृ^३त^३म^३ वा^३
ज^३सा^३तो^३ । भृ^३ए^३व^३न्त^३ मु^३य^३ मृ^३त^३य^३ स^३म^३त्सु^३ घ^३त^३ वृ^३चा^३णि^३
स^३ज्जि^३त^३ ध^३ना^३नि ॥ ७ ॥ ६७

वेदोपदेशः (वाजसातो) हविषांदानं यस्मिन्नास्मिन्यज्ञे (जतेये)
संसारदक्षिणाय (अस्मिन्) (नरे) जीवात्मुनि (नृतमम्) अन्त-
र्यामिरूपं (भुनम्) आनन्दस्वरूपं (मघवानम्) धनवन्तं (उग्रम्)
ईशस्वरूपं (समत्सु) कामयुद्धेषु (वृचाणि) पापानि (घतम्) हिं-
सन्तं (धनानि) असुराणां धनामि (सज्जितम्) सम्यग्जेतारं (भृ-
एवन्तं) स्तुतिं भृएवन्तं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (हुवेम) आह्वयेम ॥ ७

भाषार्थः - वेदका उपदेश १ हविदानवाले यज्ञमें २ संसारसे रक्षाके लि-
ये ३ इस ४ जीवात्मा में ५ अन्तर्यामीरूप ६ आनन्दस्वरूप ७ धनवान् ८ ईश
रूप ९, १०, ११ कामयुद्धोंमें पापोंके नाशक १२, १३ असुरोंके धनोंको जीतने
वाले १४ स्तुतिके जोता १५ परमेश्वरको १६ हम आह्वान करते हैं ॥ ७ ॥

वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

उ^३द^३ब्र^३ह्मा^३ ए^३यै^३र^३त^३ भ्र^३व^३स्ये^३न्द्र^३ स^३म^३य^३े मह^३या^३ व^३सि^३ष्ठ^३ ।
आ^३यो^३ वि^३श्व^३ानि^३ भ्र^३व^३सा^३त^३ त्वा^३ना^३ प^३भ्र^३ा^३ता^३ म^३इ^३व^३ता^३
व^३चा^३थं^३ सि^३ ॥ ८ ॥ ६८

(वसिष्ठ) हेवाक् । वाग्वैवसिष्ठाश० १४। १। २। २ (समेधे) यज्ञे (अव
 स्या) अवणीयानि (ब्रह्माणि) वैदिक स्तोत्राणि (उ) एव (उदै
 त) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (महय) पूजय (यः) (अः) सर्वव्यापी (वि
 श्वानि) सर्वाणि भुवनानि (अवसा) अन्नेन (आतनान) (मे) म
 म (ईवतः) शान्तिवतः वीजको० (वचांसि) स्तुतिरूपाणि वाक्या
 नि (उपज्ञोता) अन्तर्यामिरूपत्वात् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हेवाक् २ यज्ञमें ३ अवणयोग्य ४ वैदिक स्तोत्रों को ५ ही
 ६ उच्चारण करो ७ परमेश्वरको ८ पूजो ९ जैसे १० सर्वव्यापीने ११ सब भुवनों
 को १२ अन्न सहित १३ विस्तृत किया १४ बहुत १५ शान्ति वानके १६ स्तु
 तिरूपवचनोको १७ अन्तर्यामी रूपसे सुन्ने वाला है - ॥ ८ ॥

गौरिवीति ऋषिष्विष्णुषु छन्दो विष्णुर्देवता-

३ १२ २२ ३ १२ २२ ३ १२ २२ ३ १२ २२ ३ १२ २२ ३ १२ २२
 चक्र यदस्याश्चानिषत्तमुतानदस्मै माध्विच्च छद्धा
 त् । एधिच्या मतिषितं यदूधः पयो गाश्वा दधा औ
 षधीषु ॥ ८ ॥ ८ ८

(अस्य) विष्णोः (तत्) (चक्रम्) सूर्यख्यं (अप्सु) अन्नरिक्षोपुष्पा
 निषत्तं) सर्वतो निषण्णमासीत् (यत्) (अस्मै) विष्णावे (मधु) (इत्)
 यज्ञजुममृतरसमेव (वच्छद्धान्) प्रापयति (उत्) आपिच (यत्)
 (अतिषितं) अतिशितं चूकं (एधिच्याम्) (जोषधीषु) (गोषु) (उ)
 (अपि) ऊधः पयः) (आदधा) आदधानि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ इस २ विष्णुका ३ वह ४ सूर्यरूपचक्र ५ अन्नरिक्षोंमें ६
 सब ओर विद्यामान हुआ ७ जो ८ इस विष्णुके लिये ९ यज्ञज अमृतरसको
 १० ही ११ प्राप्त कराना है १२ और १३ जो १४ अतिशित चूक १५ एधिवी १६ जोष

धि १६ और गौश्लोमें १७ भी १८ अमृत दुग्धके स्तनोंको १९ धारण करता है
इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाभसादशर्मविरचिते सा-
मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्य दशमः खण्डः १०

अथैकादशः खण्डः ११

ताक्ष्यपुत्रोऽरिष्टनेमिऋषिष्विष्टुषु छन्दो गरुडो देवता-

त्यमूषु वाजिनन्देवजूतं संहोवानं तं तरुतारं
रथानाम् । अरिष्टनेमिपुत्रनाजमाभु स्वस्तये
ताक्ष्यमिहाहुवेम ॥ १ ॥ १००

(इह) यज्ञे (स्वस्तये) क्षेमाय (तम्) (यम्) बालं (देवजूतं) सोमा
हरणाय देवेषु प्रेरितं (सुवाजिनम्) सुपुत्रवन्तं त्वं (सहोवानम्)
वलवन्तं । सुहस्रशब्दाहनिप मत्वर्थायः (पुत्रनाजम्) देवसेनाया
जेतारं (आमृतम्) शीघ्रगामिनं (अरिष्टनेमिम्) इन्द्रस्य वज्रेणा-
हिंसितं नि० २।२० (रथानाम्) वैष्णावरथानां (तरुतारम्) वृक्षज-
ध्वजायास्तारकं (ताक्ष्यम्) ईशावतारं गरुडं (उ) अपि (आहुवेम)

भाषार्थः - १ इसयज्ञमें २ क्षेमकेलिये ३ उस ४ बालक ५ सोमला
नेकेलिये देवताश्लोमें प्रेरित ६ पिताके वताये अन्नसे त्वम् ७ बलवान् ८
देवसेनाके जेता ९ शीघ्रगामी १० इन्द्रके वज्रसे अहिंसित ११ वैष्णावरथों
की १२ ध्वजाके तारक १३ ईशावतार गरुडको १४ भी १५ हम आह्वानक
रते हैं ॥ १ ॥

भरद्वाज ऋषिष्विष्टुषु छन्दो देवता-

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवे
भूरमिन्द्रम् । हवनुशकं पुरु इतमिन्द्रमिदं
हविमघवावत्विन्द्रः ॥ २ ॥ १०१

र्मवाले ३ घोड़ोंके ४ आनेता ५ इन्द्रको ६ सोमनामहविषोंसेहम पूजनकरते हैं वह ७ डाढ़ी मूछोंको ८ बारम्बार कंपित करता ९ ऊंची धारण करता १० प्रकट होता है ११ मरुद्गणादिकी सेनाओंसे १२ शत्रुओंको कंपाता १३ धनकेद्वारा १४ विशिष्ट होता है ॥ ३ ॥ १०२ ॥

अथाध्यात्मम् - वागाद्यत्विजां वचनं वयं (वज्रदाक्षिणाम्) - ज्ञानवज्रधरं (इन्द्रम्) आत्मारूपं यजमानं (विब्रतानाम्) विविधकर्मणां (हरीणाम्) प्राणानां (रथ्या) मार्गेण (यजामहे) आत्मप्रतिविंवारव्यहृविषा पूजयामः सः (श्मश्रुभिः) श्मश्रुप्रभृतिरोमैः सहदेहं (दोधुवत्) कम्पयन् सन्माणां (ऊर्ध्वधाः) (विभुवत्) किञ्च (सेनाभिः) श्मादिसेनाभिः (भयमानः) कामादीन्कम्पयन्सन् (राधसा) योगैश्वर्येण (वि) विशिष्टो भवति ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः वाक् आदिऋत्विजोंका वचन हम १ ज्ञानवज्रधारी २ आत्मारूपयजमानको ३ विविधकर्मवाले ४ प्राणोंके ५ मार्गसे ६ आत्मप्रतिविंवा नामहवि केद्वारा हम पूजते हैं वह ७ श्मश्रु आदि रोमों सहित देहको ८ कंपित करता ९ प्राणको १० ऊंचा धारण करनेवाला ११ होता है और १२ श्मश्रु आदि सेनाओंसे १३ काम आदि को कंपित करता १४ योगैश्वर्यसे १५ विशिष्ट होता है - ॥ ३ ॥ निस्त्रेणां वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता -

सत्राहणादा धृषितु भ्रमिन्दे महामपार वृषभं सु

वज्रम् । हन्ता यो वृषं सानिता तवाजन्दाता मघानि

मघवासुराधाः ॥ ४ ॥ १०३

(यः) परमेश्वरः (वृषम्) पापं (हन्ता) (मघवा) मघवान् धनवान् (वाजम्) अन्नं (सानिता) दाता (उत्त) अपिच (सुराधाः) शोभनधन

युक्तः तं (मघानि) धनानि (दाता) (सत्राहणं) रुद्ररूपेण सर्वस्य
 हन्तारं (दाधीपिं) विष्णु रूपेणाति शयेन धर्षकं (नुषुम्) अन्नर्यामि
 रूपेण सर्वस्य प्रेरकं । नुमिः प्रेरणकर्मा (महां) महापुरुष रूपेण महान्
 न्तं (अपारम्) ब्रह्मात्मनाऽपारं (वृषभम्) सूर्यरूपेण वर्धितारं (सु
 वज्रम्) इन्द्ररूपेण वज्रधरं वेदास्तुवन्तीत्यर्थः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ जोपरमेश्वर २, ३ पापनाशक ४ धनवान् ५, ६ अन्नदाता
 ७ और ८ शोभनधनवाला ९, १० धनदाता है उस ११ रुद्ररूपसे सब के हन्ता
 १२ विष्णु रूपसे अति शय धर्षक १३ अन्नर्यामी रूपसे सबके प्रेरक १४ महापु
 रुष रूपसे महान् १५ ब्रह्म नामसे अपार १६ सूर्यरूपसे कृषि कर्ता १७ इन्द्र
 रूपसे वज्रधारीको वेद स्तुति करते हैं - ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत्-

यो नो वनुष्यन्नेभिदाति मत्त उगोणा वामन्यमान
 स्तुरावा । क्षिधी युधा शवसा वातमिन्द्राभीष्याम
 वृषमाणस्त्वोताः ॥ ५ ॥ १०४

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यः) (मत्तः) मनुष्यः (वनुष्यन्) इन्नुमिच्छन्
 (नः) अस्मान् (अभिदाति) आभिमुख्येन छिनत्ति (वा) अथवा (उग
 णाः) भूतप्रेतादयः (वा) (मन्यमानः) अहंकारास्पदं (तुरः) हिंसकं
 मनःतुर्वतिवधकर्मानि ० २ । १८ (वा) (क्षिधी) क्षिस्रयेधीयते कि
 यते अनेनेति स्रयकरः कामः (युधा) युद्धेन पीडयति (वृषमाणः)
 वृषांडुवाचरन्तः (त्वोताः) त्वया उता रक्षित्वा वयं (तम्) शत्रुसमूहं
 (शवसा) वलेन योगवलेन वा (अभीष्याम) अभिभवेम ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जो ३ मनुष्य ४ मारना चाहता ५ हमको ६
 सन्मुख होकर घायल करता है ७ अथवा ८ भूतप्रेत आदि ९ वा १० अहंका-

रास्पद ११ हिंसक मन १२ वा १३ क्षयकर्ता काम १४ युद्धसे पीडा देता है १५
 वृषकी समान घूमते १६ आपसे रक्षित हूँ १७ उस शत्रु समूह को १८ बलवायो-
 गत्रलसे १९ जय करे-॥ ५॥ विनियोगः पूर्ववत्-

य^३वृ^३त्रेषु^३क्षि^३तय^३स्प^३र्द्धमा^३नाय^३ यु^३क्तेषु^३तुर^३यन्तो^३हवन्ते^३
 य^३थ^३भूर^३सातो^३यम^३पामु^३पज्म^३न्य^३वि^३प्रा^३सो^३वा^३ज^३यन्ते^३
 स^३इ^३न्द्रः^३॥६॥१०४

(क्षि^३तयः) मनुष्याः नि० २। ३ (वृ^३त्रेषु) पापेषु (स्प^३र्द्धमा^३नाः) सन्तः
 (यम्) (हवन्ते) आह्वयन्ति (युक्तेषु) प्राणोन्द्रियाणामात्मनि युक्ते
 षु (तुरयन्तः) कामादीन् हिंसन्तः (यम्) आह्व० (भूरसातो) काम
 संग्रामे (यम्) आह्व० (अपामु) अमृतोदकानां (ज्मन्) ज्मनि भू-
 मौगगनमाडले (यम्) (उप) उपाह्वयन्ति (विप्रासो) मेधाविन-
 (यम्) (वाजयन्ते) पूजयन्ति वाजयतीति अर्चति कर्माणि ०३। १५
 (सः) (इन्द्रः) परमेश्वरः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ मनुष्य २ पापोंमें ३ स्पर्द्धाकरते ४ जिसको ५ आह्वान क-
 रते हैं ६ प्राणोन्द्रियोंके आत्मा में युक्त होनेपर ७ काम आदि को मारते ८
 जिसे आह्वान करते हैं ९ काम संग्राममें १० जिसे आह्वान करते हैं ११ १२ अ-
 मृतजलोंकी भूमि गगन मंडल में १३ जिसे १४ समीप आह्वान करते हैं १५
 मेधावी ब्राह्मण १६ जिसे १७ पूजते हैं १८ वही १९ परमेश्वर है ॥ ४ ॥

विश्वामित्र ऋषिस्त्रिषुपृच्छन् इन्द्रा पर्वता देवते-

इन्द्रो^३पर्वता^३वृहता^३रयन^३वामी^३रिष^३आ^३वृह^३त^३
 सु^३वीराः^३। वी^३त^३थं^३ह^३व्या^३न्य^३ध्वरे^३षु^३दे^३वा^३वृ^३द्ध^३था^३ङ्गी^३
 भिरि^३ड्या^३मद^३न्ता^३म् ॥७॥ १०५

हे (इन्द्रा^१पर्वता) हे इन्द्रा^२पर्वतौ नरनारायणौ । जीवरूप^३पर्वीणि
 सन्तियस्यसपर्वतो नरः (बृहता^४) महता (रथेन^५) आगत्य (वा-
 मीः) सम्भजनीयाः (सुवीरोः^६) शोभनपुत्रोपेताः (दुषः^७) अन्नानि
 (आवहन्तम्) अस्मासु धारयन्तं प्रयच्छन्तमित्यर्थः किञ्च हे-
 (देवा^८) देवौ नरनारायणौ (अध्वरेषु^९) यज्ञेषु (हव्यानि^{१०}) हवींषि (वी-
 तम्) भक्षयन्तमूतथा (इडयो^{११}) अस्माभिर्दत्तेनान्नेनानि० २।७
 (मदन्ता^{१२}) मदन्तौ हृष्यन्तौ युवां (गीर्भिः^{१३}) स्तुतिभिः (वर्द्धथां^{१४}) प्रवृ-
 द्धौ भवतौ ॥ ७ ॥

भाष्यार्थः - १ हे नरनारायण २ बड़े ३ रथकी सवारी से आकर ४ सेवनये
 ग्य ५ श्रेष्ठ पुत्र से युक्त ६ अन्नों को ७ हमें दो ८ हे नरनारायण देवताओं ९ यज्ञों
 में १० हविषों को ११ भक्षण करो तथा १२ हमारे दिये अन्न से १३ हर्षित तुम दो
 नों १४ स्तुतियों से १५ प्रवृद्ध हूजिये ॥ ७ ॥

रेणु ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता-

इन्द्रो^१यगिरो^२अनि^३शित^४सर्गाः^५अपः^६प्रैरयन्सगरस्य^७
 बुभ्रातु^८। यो^९अक्षोणवच^{१०}क्रियो^{११}शचीभि^{१२}विष्वक्तस्त-
 म्भृथिवी^{१३}मुनद्याम् ॥ ८ ॥ १०७

(अनिशित सर्गाः) शान्तिरूपसङ्घातवन्तः (गिरोः^१) अनाहतशब्दा
 (सगरस्य) गगनांतरिक्षस्थानि० १।२ (बुभ्रातु) प्रदेशात् (इन्द्रोय)
 आत्मारूपयजमानाय (अपः) अमृतोदकानि (प्रैरयन्) (यः) आ-
 त्मा (शचीभिः) कर्माभिः नि० २।१ (भृथिवीम्) (उत) अपिच (द्याम्)
 दिवं मनोभृकुटीवा (विष्वक्) सर्वतः (तस्तम्भ) अस्तम्भात् (द्व)
 यथा (चक्रियो) द्यचक्रौचक्रतुल्यो मनः प्राणौ (अक्षोण) योग

रथाक्षेण ॥८॥

भाषार्थः

१ शान्तिरूपसंघात बाले २ अनाहतशब्दोंने ३ गगनान्तरिक्षके ४ प्रदेशसे
५ आत्मारूपयजमानके लिये ६ अमृतजलोंको ७ प्रेरितकिया ८ जिसआ-
त्माने ईर्ष्यासे ९ पृथिवी १० और ११ स्वर्गवाभृकादि मनको १२ सब ओ-
रसे १३ स्तम्भितकिया १४ जैसे १५ चक्रनुत्यमनमाण १६ योगरथाक्ष-

द्वारा ॥८॥

वामदेवऋषिष्विष्टुषु चन्द्रो देवता-

आत्वा^३ सर्वायः^१ सर्वा^३ ववृत्त्यु^३ स्तिरः^३ पुरु^३ चिद^३ ए^३
वा^३ ज्जु^३ ग^३ म्याः^३ ॥ पि^३ तु^३ न^३ पा^३ त^३ मा^३ द^३ धी^३ त^३ वे^३ धा^३ अ^३ स्मि^३
न^३ क्ष^३ ये^३ प्र^३ त^३ र^३ा^३ दी^३ द्या^३ नः^३ ॥ ८ ॥ १०८

हे परमेश्वर (सर्वायः) भक्तजनाः (सर्वा) भक्तिभावेन (त्वा) त्वां
(ववृत्त्युः) अभिमुखं कुर्वन्ति यस्मात् (वेधा) मेधावीत्वं (तिरः)
तिर्यग्भूत्वा (पुरु चिद ए) मनः। मनोवैसमुद्रः शं०
७। १। २। ५२ (जगम्याः) अगच्छः (अस्मिन्) (क्षये) शरीर रूपगृहे
(एतराम्) प्रकृष्टं (दीद्यानः) अन्नर्यामि रूपेण दीप्यमानः सन्-
(पितुः) महानारायणस्य (नपातम्) पौत्रमात्मप्रतिविंबं (आदधी-
त) महानारायणस्य पुत्र ईशस्तस्य पुत्र आत्मप्रतिविंब इति ॥ ८ ॥

भाषार्थः -

हे परमेश्वर १ भक्तजन २ भक्तिभावसे ३ तुमको ४ सन्मुख करने हैं ५ जिस कारण मेधावी तुम ६ तिरछे होकर ७ विस्तीर्ण ८ मनमें-
ई विराजमान हुए ९ इस ११ शरीर रूप गृहमें १२ प्रकृष्ट १३ अन्नर्यामीरु-
पसे दीप्यमान होते १४ महानारायण के १५ पौत्र आत्मप्रतिविंबको १६ स-
पने आत्मा में धारण करो - ॥ ८ ॥

मोतमऋषिष्विष्टुषु चन्द्रो जीवेशौ देवते-

कोऽद्य युक्ते धुरिगा ऋतस्य शिमी वतो भामिनो दु
 हृणा यून । आसन्नेषा मप्सु वाहो मयो भून्य एषा
 भृत्या मृण धत् सजीवात् ॥ १० ॥ १०८

(अद्य) अस्मिन्काले (ऋतस्य) सत्यस्य योगरथस्य (धुरि) शि
 मीवतः) योगक्रियोपेतान् नि० २।१ (भामिनः) तेजसा युक्तान्
 (दुहृणायून) परैर्दुसहेन् क्रोधेन युक्तान् नि० ३।१३ (अप्सुवाहो
 अन्तरिक्षेषु मापकान् (मयोभून) सुखप्रदान् (गाः) माणान् (क
 प्रजापतिरेव । कं वै प्रजापतिः श० २।५।२।१३ (युङ्क्ते) (यः) यो
 गी (एषाम्) प्राणरूपाश्वानां (आसन्) आस्ये मुखे (भृत्याम्) भ
 रणयोग्यां योग रक्षानां (ऋण धत्) धारयति । ऋणाद्धि परिचर
 ण कर्मानि० ३।५ (सः) (जीवात्) जीवन्मुक्तो भवेत् ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ अद्य २ योगरथकी ३ धुरिमें ४ योगक्रियावान् ५ तेजस्वी
 ६ शत्रुओंके दुःसह क्रोधसे युक्त ७ अन्तरिक्षोंमें पहुंचाने वाले ८ सुखदाता
 ९ प्राणोंको १० प्रजापति ही ११ युक्त करता है १२ जो योगी १३ इन प्राणरूप
 घोड़ोंके १४ मुखमें १५ धारण योग्य १७ योग रक्षनाको १६ धारण करता है
 १७ वह १८ जीवन्मुक्त होवै ॥ १० ॥ १०८

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वाला प्रसादशर्मविरचिते साम
 वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्यैकादशः खण्डः

इति त्रैष्टुभमैन्द्रम् - अथ द्वादशः खण्डः

मधुच्छन्दा ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता

गायन्ति त्वा गायत्रिणा चन्त्यकं मकिणः । ब्रह्मा
 एस्त्वा शतकृत उद्धं शमिवये मिरे ॥ १॥ १२०



हे (शतक्रतो) वृद्धकर्मन्परमेश्वर (त्वा) त्वां (गायत्रिणां) गायत्रं
 सामतस्योद्गतारः (गायन्ति) स्तुवन्ति नि० ३।१४ (अर्चिणां) अर्च-
 च्चन हेतुमन्त्रयुक्ताहोतारः (अर्चन्ते) अर्चनीयं त्वां (अर्चन्ति)।
 शास्त्रगतैर्मन्त्रैः प्रशंसन्ति (ब्रह्मणाः) ब्रह्मभृतयः दूतरे ब्राह्म-
 णाः (त्वा) त्वामेव (उद्येभिरे) उन्नतिं प्रापयन्ति (द्वे) यथा (वंश-
 म्) पुत्राः स्वकीयं कुलमुन्नतं कुर्वन्ति ॥ १॥

भाषार्थः - श्वेदकर्मपरमेश्वर २ तुमको ३ गायत्रसामके गाना ४
 गाने है ५ होता ६ तुम पूजनीयको ७ प्रशंसा करते हैं ८ ब्रह्मा आदि ब्राह्म-
 ण ९ तुमको ही १० उन्नति प्राप्त करते हैं ११ जैसे १२ पुत्र अपने कुल को
 उन्नत करते हैं - ॥ १॥ जैतां माधुश्चन्द्रसक्तरिणुषु च्छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रं विश्वांश्वी वृधन्समुद्रव्यचसदिरः । रथी

तमथं रथानां वाजानां थं सत्यतिं पातिम् ॥ २ ॥ १११

(विश्वाः) सर्वाः (गिरः) वेदस्तुतयः (समुद्रव्यचसं) मनो व्याप्तव-
 न्तं मनो वै समुद्रः शू० ७।५।२।५२ (रथीनाम्) योगरथयुक्तानां
 योगिनां (रथीतमम्) योगेश्वरं (वाजानां) यज्जानां (पातिम्)
 स्वामिनं (सत्यतिम्) सन्मार्गवर्तिनां भक्तानां पालकपरमेश्वरं
 (श्वीवृधन्) वर्द्धितवत्यः । नान्यंतस्य सर्वरूपत्वात् ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ सव २ वेदस्तुति ३ मनमेव्याप्त ४ योगरथारूढ योगियों
 के ५ योगेश्वर ६ यज्ञोंके स्वामी ७ भक्तपालक ८ परमेश्वरको ही ९
 बढ़ाती हैं उसके सर्वरूप होनेसे ॥ २ ॥

गौतमक्तरिणुषु च्छन्द इन्द्रो देवता-

इमामिन्द्रसुताम्पिवज्येषु ममत्यमदम् । भुक्तस्य

३क १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
 त्वाभ्यक्षरन्धारां ऋतेतस्य सादने ॥ ३ ॥ ११२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ज्येष्ठम्) योगप्रभावाज्ज्येष्ठं (मदम्) मदरूपं (अमर्त्यम्) तवांशत्वाद् विनाशिनं (सुतम्) अभिषुतं (इमम्) आत्ममतिविवं (पिव) यस्मात् (ऋतस्य) योगयज्ञस्य (सादने) अ + सदाने ललाटरूपगृहे (शुक्रस्य) मानससूर्यस्य । एष वै भुक्तो य एष तपति श० ४। ३। १। २६ (धाराः) इन्द्रियशक्तिरूपधाराः (त्वा) त्वां (अभ्यक्षरन्) त्वां प्राप्तुं सयमेवागच्छन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ योगप्रभावसे ज्येष्ठ ३ मदरूप ४ आपका अंश होनेसे अविनाशी ५ अभिषुत ६ इन्द्र आत्ममतिविंवको ७ पानकरो जिस कारण ८ योगयज्ञके ललाटरूपगृहमें ९ मानससूर्यकी १० इन्द्रियशक्तिरूपधारा १२, १३ तुम्हें प्राप्त करने को आपही आती हैं ॥ ३ ॥

अत्रि ऋषि रनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

यदिन्द्र चित्रम इह नास्ति त्वादात मदिवः । रा

धस्तन्ना विदद्वस उभया हस्त्याभर ॥ ४ ॥ ११३

हे (चित्र) सर्वेभ्यो विलक्षणत्वाद्भुत (अद्विव) विराडात्मसूर्यानां धारका विदद्वसो) ज्ञानधनविद ज्ञाने (इन्द्र) परमेश्वर (यतमे) मम (राध) धनं (इह) अस्मिन् लोके (न) (अस्ति) (त्वादातम्) त्वया दातव्यं (तत्) धनं योगधनंच (उभयो) ऐहिकपारलौकिकभेदवत्या (हस्त्या) हस्तगृहीतया धनशक्त्वा (न) अस्मभ्यम् (आभर) आहर देहि ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वविलक्षण होनेसे अद्भुत २ विराडात्मासूर्योके धारक ३ ज्ञानधन ४ परमेश्वर ५ जो ६ मेरा ७ धन ८ इन्द्रलोकमें ९ नहीं १०

हे ११ तुभसे देने योग्य १२ वह धनवा योगधन १३ रोहिक पारलौकिक भेद
वती १४ हस्तगृहीत धनशक्ति द्वारा १५ हमारे लिये १६ दीजिये ॥ ४ ॥

तिरश्ची आङ्गिरस ऋषि रनुपुष्ये इन्द्रो देवता-

^{३ १३} ^{२२} ^{३ २३} ^{३ १} ^{३ १} ^{३ १} ^{३ १}
अधो हवन्ति रश्म्या इन्द्रयस्त्वा सपर्यति सुवी
^{३ १} ^{३ १} ^{३ १} ^{३ १} ^{३ १} ^{३ १}
र्यस्य गोमतो रायस्पृद्धि महो थं स्पृसि ॥ ५ ॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यः) जीवात्मापशुः (तिरश्च्या) बुद्धिरूपपत्न्या
सह (त्वा) त्वां (सपर्यति) परिचरतितस्य (हवम्) आह्वानं (अधो)
भृणु (सुवीर्यस्य) शोभनवीर्योपेतस्य (गोमतः) गोलोकस्य (रा
यः) धनं (स्पृद्धि) पूरय देहि यस्मात्त्वं (महान्) महापुरुषः (स्पृसि)

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जीवात्मापशु ३ बुद्धिरूपपत्नी के साथ-
४ तुमको ५ सेवन करता है ६ उसके आह्वानको ७ सुनो ८ शोभन बल युक्त
९ गोलोकके १० धनको ११ दो जिस कारण तुम १२ महापुरुष १३ हो ॥ ५ ॥

गौतम ऋषि रनुपुष्ये इन्द्रो देवता-

^{१ २} ^{३ १२} ^{३ १} ^{३ १} ^{३ १} ^{३ १} ^{३ १}
असाविसोम इन्द्रते शविष्ठ धृषावागहि आत्वा
^{३ २३} ^{३ २} ^{३ ३} ^{३ ३} ^{३ १}
पृणात्किन्द्रियं रजः सूर्यान् रश्मिभिः ॥ ६ ॥ ११५

हे (शविष्ठ) अति शयेन बलवन् (धृषावा) असुराणां धर्षयितः
(इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदर्थं (सोमः) आत्मप्रतिविवः (असाविवृ)
अभिषुतोः भूत् (आगहि) आगच्छ प्रादुर्भव (त्वा) त्वां (इन्द्रिय
म्) इन्द्रिय समूहः (आपृणात्कु) व्याप्नोतु । एव सम्पर्क (ने) य-
था (सूर्यः) (रजः) लोकान् (रश्मिभिः) किरणैर्व्याप्नोति ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे अति शय बली अंसुरोंके जीतने वाले ३ परमेश्व
र ४ आपके लिये ५ सोमवा आत्म प्रतिविव ६ अभिषुत हुआ ७ आसो ८

तुमको ९ इन्द्रियसमूह १० प्राणकरो ११ जैसे १२ सूर्य १३ लोकोको १४ किरणों से व्याप्त करना है ॥ ६ ॥

कण्वोनीपातिथिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो देवता-

एन्द्रयाहिहरिभिरुपकएवस्य सुष्टुनिम् । दिवो
अमुष्यशासतो दिवययदिवावसो ॥ ७ ॥ ११६

हे (दिवोवसो) सूर्यरूप (इन्द्र) परमेश्वर (दिवः) भृकुटेः (शास-
तः) (अमुष्य) (कएवस्य) मेधाविनो योगिनः (सुष्टुनिम्) शोभ-
नां स्तुतिं प्रति (हरिभिः) ब्रह्मविष्णु महेशादिरूपैः (उपायाहि)
आगच्छ (दिवम्) स्वलोकं (यय) प्रापय । यागतौ ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे सूर्यरूप २ परमेश्वर ३ भृकुटिका ४ शासन करते-
५ इस ६ मेधावी योगी की ७ शोभनस्तुतिप्रति ८ ब्रह्मा विष्णु महेशादि
रूपों से ९ आओ १० अपनेलोकको ११ प्राप्त कराओ - ॥ ७ ॥

द्वयोस्तिरश्चीरुषिरनुष्टुप्छन्दो देवता

आत्वो गिरो रथी रिवोस्थः सुतेषु गिर्विणाः । अभित्वो
सुमनूपत गावो वत्स न धेनवः ॥ ८ ॥ ११७

हे (गिर्विणाः) गीर्भिर्वननीयपरमेश्वर (सुतेषु) सोमेषु । प्राणोन्द्रि-
यात्मप्रतिविवेष्वभिपुतेषु सत्सु (गिरैः) वेदस्तुतयः (रथी) (द्व-
व) (त्वो) त्वाम् (आस्थुः) अभिमुख्येन शीघ्रं गच्छन्ति तथा-
(त्वा) त्वां (अभि) अभिलक्ष्य (समनूपत) सम्यक् स्तुवन्ति (ने-
यथा (धेनवः) (गावः) (वत्सम्) अभिलक्ष्य हम्भारवादिशब्दं
कुर्वन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः

१ हे वेदवाक्यों से संभजनीय परमेश्वर २ सोमवा प्राण इन्द्रियआत्मप्र-

तिविंवके अभिषुत हाने परं ३ वेद स्तुति ४ रथीके समान ६ आपके ७ सन्मुख शीघ्र
जाती हैं तथा ८ तुमको ९ सन्मुख देखकर १० भले प्रकार स्तुति करती हैं ११ जै
से १२-१३ धेनुगौ १४ बछड़ेको देखकर हम्भा आदि शब्द को करती हैं ॥ ८ ॥

विश्वामित्र ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

एतोन्विन्द्रं स्तवाम भुद्धं भुद्धेन साम्ना । भुद्धे
रुक्थैवावृध्वां सथं भुद्धे राशीर्वान्ममत्तु ॥ ८-११८

हे ऋत्विजः (तु) सिप्रं। नि० २। १५ (एतो) आगच्छतैव (भुद्धेन)
(साम्ना) (भुद्धे) (रुक्थै) शस्त्रैः (भुद्धं) (इन्द्रम्) इन्द्रं परमेश्व-
रं वा (स्तवाम) स्तुयाम (आशीर्वान्) गव्यादिभिः संस्कृतः सोमः ।
निरुद्ध प्राणेन सहित आत्मप्रतिविंवा (भुद्धे) सामभिरुक्थैश्च
(वावृध्वांसं) वर्द्धमानमिन्द्रं परमेश्वरं वा (ममत्तु) मादयतु (माद्यते)
श्चान्दसः श्नुः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - हे ऋत्विजो १ शीघ्र २ आशोही ३ भुद्ध ४ साम ५ और भु-
द्ध ६ शस्त्रों से ७ भुद्ध ८ इन्द्र वा परमेश्वर को ९ स्तुत करे १० गव्य आदि से
संस्कृत सोमवानिरुद्ध प्राण सहितात्मप्रतिविंवा ११ भुद्ध साम और शस्त्रों
से १२ वर्द्धमान इन्द्र वा परमेश्वर को हर्षित करो ॥ ८ ॥

शंयुर्वाहीस्पत्यऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

योरयि वोरियेन्मोयोद्युन्नेद्युमन् वत्तमः । सामः
सुतः सइन्द्रतः स्तिस्वधापते मदः ॥ १० ॥ ११९

हे (स्वधापते) (इन्द्र) परमेश्वर (यः) (वः) निवृत्तात्मा (रायिम्) तव ध-
नरूपः परारूपत्वात् (रायिन्तमः) अतिशयेन योगधनवान् (यः) (द्यु-
न्ने) यशोभिः (द्युमन्वत्तमः) अतिशयेन यशस्वी (सः) (सुतः) अभि-

धुतः (सोमः) ^{१२} आत्मप्रतिविंबः (ते) ^{१३} नव (मदः) ^{१४} (अस्ति) ^{१५} ॥१०॥

भाषार्थः - हे अमृतपति २ परमेश्वर ३ जो ४ निवृत्तात्मा ५ तेरा धन रूप है परा रूप होने से ६ जो महा योग धनवान है ७ जो ८ यज्ञों के द्वारा ९ प्रति यशस्वी है १० वह ११ अभिपुत्र १२ आत्मप्रतिविंब १३ तेरा १४ मदरूप- १५ है ॥१०॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य द्वादश-खण्डः ॥

अथ चतुर्थाध्याय आरभ्यते

तत्र प्रथमः खण्डः

भरद्वाज ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

^१ प्रत्यस्मै ^२ पिपीषते ^३ विश्वानि ^४ विदुषे भर। ^५ अरुद्रमायै ^६ जग्मये ^७ अपश्चाद्दध्वने नरः ॥ १ ॥ १२० ॥

हे (अध्वर्यो योगिनु (नरः) प्राणानां नेतस्त्वं (अस्मै) (पिपीषते) पानुमिच्छते (विश्वानि) सर्वाणि (विदुषे) सर्वज्ञाय (अरुद्रमायै) पर्याप्तगमनाय (जग्मये) यज्ञेषु प्रादुर्भावशीलाय (अपश्चाद्दध्वने) सर्वेषामग्रगामिने सर्वगत्वात् दधिर्गति कर्मानि० २। १४ परमेश्वराय (प्रतिभर) सोममात्मप्रतिविम्बं वा प्रतिहरप्रयच्छ ॥१॥

भाषार्थः - हे अध्वर्यु वा हे योगी १ प्राणों के नेता तुम २ इस ३ पानेच्छु ४, ५ सर्वज्ञ ६ पर्याप्तगमनवाले ७ यज्ञों में प्रादुर्भावशील ८ सर्वगन होने से सबके अग्रगामी परमेश्वर के लिये ९ सोमवा आत्मप्रतिविंब को दो - ॥१॥

वामदेवः शाक पूतो वा ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

^१ आना ^२ वयावयः ^३ शयमहान्त ^४ गह्वरेषा ^५ महान्तो ^६ पूर्वे ^७ नेष्टाम्। ^८ उग्रवचो ^९ अपावधीः ॥ २ ॥ १२१ ॥

वागाद्यत्विजां प्रार्थनाहे परमेश्वर (नः) अस्माकं (वयः) जीवरूपं
 सुपर्णतथा (वयः शयं) जीवरूपः सुपर्णः शय्यायस्यतं (महान्तम्)
 अन्नयीमिनं (गह्वरेष्वां) मानसगुहायां वर्तमानं (महान्तम्) म
 नः (पूर्वनेष्टाम्) पूर्वकर्त्तरि स्थितां बुद्धिञ्च (आ) आहर स्वात्मनि
 स्थापय (उग्रम्) भयंकरं (वचः) क्षुधितो हन्तृषितो हामित्यादिः (अ
 पावधीः) अपजहि ॥ २ ॥

भाषार्थः - वाक् आदि ऋत्विजों की प्रार्थना - हे परमेश्वर २ हमारे २ जी
 वरूप सुपर्णको तथा ३ अन्नयीमी ४ मानसगुहामें वर्तमान ५ मनको ७ पूर्वक
 र्त्तामें स्थित बुद्धिको ८ अपने आत्मामें स्थापन करो ९ भयंकर १० में भूतामें
 प्यासइस वचनको ११ दूर करो - ॥ २ ॥

प्रियमेध ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

आत्वारथं यथा तय सुन्नायै वर्त्तयामसि । तु विकृ
 मि मृतीषहं मिन्द्रं शविष्ठ सत्यतिम् ॥ ३ ॥ १२२

हे (शविष्ठ) बलवन्तम् (तु विकृमिम्) बहुब्रह्माण्डानां कर्त्तारं (ऋती-
 षहं) हिंसकानामभिभवितारं (सत्यतिम्) सतां पालकं (इन्द्रम्)
 परमेश्वरं (त्वा) त्वां (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (सुन्नाय) मोक्षसु-
 खाय च (आवर्त्तयामसि) आवर्त्तयामः (यथा) (रथम्) रक्षणाय सु-
 खाय च वर्त्तयन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे महाबली २ ब्रह्मण्डानोंके कर्त्ता ३ हिंसक जयी ४ सत्पु
 रुषपालक ५ परमेश्वर ६ तुमको ७ संसारसे रक्षाकेलिये ८ और मोक्षसुखके
 लिये ९ अनुभवगोचर करते हैं १० जैसे ११ रथको रक्षा और सुखके लिये आमकर

॥ ३ ॥ प्रगाथ ऋषिरनुष्टुप् छन्दो वेनो देवता

^{२३}सृष्ट्या ^३महाना ^३वेनः ^२ऋतु ^३भिरानजे । ^३यस्य ^३द्वार ^३मनुः ^३पिता ^३देव ^३पु ^३धिय ^३आनजे ॥ ४ ॥ १२३-

(सः) (वेनः) मेधावी (महानोम्) मघोनां योगधनवतां मध्ये (पूर्व्यः) मुख्यः यः (ऋतुभिः) योगयज्ञैः (आनजे) आत्मतत्त्वं व्यक्ती करोति (मनुः) द्युस्थानदेवता (यस्य) (द्वारा) द्वाराणि प्राप्त्युपायानि (धिय) कर्माणि बुद्धीर्वा (आनजे) व्यक्ती करोति । अनजव्यक्तौ स (देवेषु) विद्वत्सु । विद्वं सोहि देवाः श० ३।७। ३।१० (पिता) पितृवत्पूज्यः ॥ ४

भाषार्थः - १ वह २ मेधावी ३ योगधनियोंके मध्य ४ मुख्यहै जो प्रयोग यज्ञोंसे ६ आत्मतत्त्वको अनुभव करता है ७ स्वर्गका देवता ८ जिसके ९ प्राप्तिउपायोंको १० और कर्मवाबुद्धिको ११ प्रकट करता है वह १२ विद्वानोंमें १३ पिताकी समान पूज्य होता है ॥ ४ ॥

श्यावाश्व आत्रेयऋषि रनुषु चन्द्र आत्मा देवता-

^३यदी ^३वहन्त्या ^३शवी ^३भ्राज ^३माना ^३रथेषु ॥ ^३पिवन्तो ^३म ^३दिर ^३मधु ^३तत्र ^३अवा ^३थ्सि ^३कृएवते ॥ ५ - १२४

(यदी) यत्र समाधि काले (भ्राजमानाः) दीप्यमानाः (आश्वः) क्षिप्रगामिनः आत्मा रूपयोगिनः (रथेषु) कमलेषु (आवहन्ति) स्वात्मानं प्रापयन्ति (तत्र) (मदिरम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदस्य कर्त्तारं (मधु) आत्म प्रतिविंबं (पिवन्तः) (अवाथ्सि) स्थूल सूक्ष्म कारण देह रूपान्ता नि (कृएवते) हिंसन्ति कृन्हिंसायां ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ जिस समाधिकालमें २ दीप्यमान ३ शीघ्र गामी आत्मारूपयोगी ४ कमलोंमें ५ अपने आत्माको प्राप्त करते हैं ६ वहां ७ में ब्रह्महं इत्यमदके कर्त्ता ८ आत्मप्रतिविंबको ९ पान करते १० स्थूल सूक्ष्म कारणरूप अन्तोंको ११

नाशकतेहै ॥५॥ शंयुंरूपिनुष्टुपुखन्द इन्द्रो देवता-

न्यमुवाञ्च प्रहृणं गृणीषे शवसस्पतिम् । इन्द्रं विश्वा

साहनरथं शचिष्ठं विश्ववेदसम् ॥६॥ १२५

(य) हेयोगिन् (वः) निवृत्तात्मात्वं (तम्) (अप्रहृणं) अप्रहर्त्तारं भ
क्तानामनु ग्राहकं (शवसस्पतिम्) वलपतिं (विश्वासाहं) सर्वश
चोरं भिवितारं (नरम्) नेतां (शचिष्ठं) उत्पत्तिपालनसंहारक-
र्माणस्थितं (विश्ववेदसम्) महाधनपतिं परमेश्वरं (उ) एव (गृणी
षे) नान्यंतस्यान्याभावात् ॥६॥

भाषार्थः - १ हे योगी २ निवृत्तात्मा तु म ३ उत ४ भक्तानु ग्राही ५ क्लप
ति ६ सर्वजयी ७ नेता ८ उत्पत्तिपालनसंहारकर्मणो स्थित ९ महाधनपतिप
रमेश्वरको १० ही ११ स्तुत करते हैं - ॥६॥

वामदेवऋषिरनुष्टुपुखन्दो दधिक्रावादेवता

दधिक्रावाणो अकारिषं जिषो रश्वस्य वाजिनः ।

सुरभिनी मुखो करत्पुन आयूथं प्रतारिषत् ७-१२६

वागाद्युत्विजां क्वचनं (जिषोः) कामजयशीलस्य (वाजिनः) वेग
वानः (दधिक्रावाः) प्राणः पयः श० ६।५।४।१५ निरुद्धः प्राणोद
धितेनोर्ध्वं कामतितस्य (अश्वस्य) मानससूर्यस्य श० ६।३।१।२६
संस्कारं (अकारिषं) (नः) अस्माकं (मुखो) मुखानि (सुरभी) सुर-
भीणि (करत्) करोतु (नः) अस्माकं (आयूथि) (प्रतारिषत्) प्रव-
र्द्धयतु ॥७॥

भाषार्थः

वाक् आदिऋत्विज कहते हैं १ कामजयशील २ वेगवान् ३ निरुद्धप्राणदा
राऊपरचलने वाले ४ मानससूर्यका ५ संस्कार किया वह ६ हमारे ७ मुखों

कोऽ सुगंधितकरे ईहमारी १० आयुको ११ वहासो ॥ ७ ॥

जेतामाधुखन्दसत्ररपिरनुपुषं खन्दइन्द्रो देवता-

पुराभिन्दयुवाकविरामितोजा अजायत इन्द्रो वि
श्वस्य कर्मणो धर्ता वञ्ची पुरुष्टुतः ॥ ८ ॥ १२७

तेन संस्कारोऽ (इन्द्रः) आत्मारूपयजमानः (पुराम्) देहानां (भि-
न्दुः) भेत्ता (युवा) अजरामरः (कविः) मेधावी (शमितोजा) मभूत
बलुः (विश्वस्य) सर्वस्य (कर्मणः) ब्रह्माण्डस्य तस्य कर्मरूपत्वात्
(धर्ता) (वञ्ची) ज्ञानवञ्चयुक्तः (पुरुष्टुत) ब्रह्मभिः स्तुतः (अजायत)

भाषार्थः - उप्तसंस्कारसे १ आत्मारूपयजमान २ स्थूलसूक्ष्मकारणा
देहोका ३ भेत्ता ४ अजरामर ५ मेधावी ६ ब्रह्मबली ७, ८ सव ब्रह्माण्डका ईधा
रक १० ज्ञानवञ्चयुक्त ११ ब्रह्मसे स्तुत १२ ब्रह्मा - ॥ ८ ॥

इमिन्ती भृगुवंजा वनंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालामसादशर्म विरचिते साम
वेदीय ब्रह्मभाष्ये खन्दो व्याख्याने चतुर्थेऽध्यायस्य प्रथमः खण्डः १

अथ द्वितीयः खण्डः

प्रियमं पात्ररपिरनुपुषं खन्द इन्द्रो देवता-

प्रप्रवास्तिपुभमिपवन्दे हीरायन्देव । धियावाभेध
सानये पुरन्द्या विवासानि ॥ १ ॥ १२८

हे वागाशुत्विजः (वः) युष्माकं (वन्दे हीराय) योवीगान् प्राणान् स्तो-
तितस्मै । प्राणावेदशवीरः श० १२। ८। १। २२ (इन्द्रो) आत्मयानं
विवाय (विदुभं) (दुपम्) ज्ञानारूपमन्त्रं । आत्मावे विदुषु श० ६। ४
२। ६ (म्) प्रभान (म्) प्रभानयः (मेधसातये) यज्ञसम्भजनाय
(पुरन्द्या) ब्रह्मज्ञप्ता (धिया) कर्मणानि ० २। १ (वः) युष्मान-

(आविधासति) परिचरति नि० ३।५-॥१॥

भाषार्थः - हेवाक् आदिऋत्विजो १ तुम्हारे २ माए लोता ३ आत्मप्रतिबिंबके लिये ४, ५ आत्मा रूपधन्वको ६ अर्पण करो ७ अर्पण करो ८ जोकि यज्ञसंभजनके लिये ९ वद्ध मन्त्रावान १० कर्मके द्वारा ११ तुमको १२ सेवन करता है ॥१॥ वामदेवऋषिरनुष्टुप् छन्दो नरादेवते -

कश्यपश्च स्वर्षिदोयावाहुः सयुजा विनि। ययोर्वि
श्वमपि व्रत यज्ञधीरो निचाप्य ॥ २ ॥ १२९

(स्वर्षिदोः) स्वर्ग भृकुटि मण्डलं लब्धवन्तः (धीरोः) पंडिताः योगिनः (यज्ञम्) योग यज्ञं (निचाप्य) निश्चित्य समाप्य (आहुः) (यो) जीवेशो (कश्यपस्य) कश्यमहंकार रूपं मूढं पितृतीति कश्यपो भूतात्मा तस्य (सयुजो) सहवर्त्तिनो (विश्वम्) सर्वं ब्रह्माण्डं (अपि) (ययोः) जीवेशयोः (व्रतम्) कर्म (दति) ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ भृकुटि मंडलको पानेवाले २ पंडित योगियोंने ३ योगयज्ञको ४ समाप्त करके ५ कहा ६ कि जीव ईश्वर ७ भूतात्माके सहवर्त्ती हैं ८ सब ब्रह्माण्ड ९ भी ११ जिस जीवेश्वरका १२ कर्म है - ॥२॥

प्रियमेधऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता -

अर्चन् प्रार्चन्तानरः प्रियमेधासो अर्चन्त। अर्चन्तु
पुत्रका उत पुरभिर्दधृषावर्चन्त ॥ ३ ॥ १३०

(प्रियमेधासः) प्रिये परमेश्वर मेधा बुद्धिर्येषांते (नरः) इन्द्रियाणां नेतारो भक्ताः (अर्चन्त) गंधपुष्पादिभिः पूजयत (प्रार्चन्त) स्तोत्रपाठेन पूजयत (अर्चन्त) ध्यानेन पूजयंत (उत) अपिच (पुत्रकाः) (पुरम्) मूर्तिमयं परमेश्वरं (दत्) एव (अर्चन्तु) (दधृषु) (धधात्री)

(ऋ, गणेशः) (घ, सूर्यः) (ए, विष्णुः) (उ, शिवः) रूपाणि यस्यतं पर
रमेश्वरं (अर्चत) - ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वरमें बुद्धि लगाने वाले २ इन्द्रियोके नेता भक्तो ३
गधपुष्प आदिसे परमेश्वरको पूजो ४ स्तोत्रपाठ से पूजो ५ ध्यानसे पूजो ६ श्लो-
र ७ तुम्हारे बालक पुत्र ८ भूर्नि मय परमेश्वरको ९ ही १० पूजो ११ शक्ति गणो
शसूर्यविष्णुशिव स्तत्रवाले परमेश्वरको १२ पूजो - ॥ ३ ॥

मधुच्छन्दाऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता

उक्तथमिन्द्राय शो^३थं^२स्यं^३वर्द्धनं^३पुरुनिषि^३षि^३धे^३। शं^३को^३
यथा^३सुते^३पु^३नो^३रा^३रा^३त्स^३ख्ये^३षु^३च ॥ ४ ॥ १३२

पुरुनिषिधे) पुरूणां वहनां कामादीनां निषेधकारिणे (इन्द्राय)
परमेश्वराय (वर्द्धनम्) वृद्धिसाधनं (उक्तयम्) शस्त्रं (शंस्यम्) अ-
स्माभिः शंसनीयं (यथा) (शक्तः) सर्व शक्तिमान् परमेश्वरः (नः) अ-
स्मदीयेषु (सुतेषु) अभिपुत्रेषु प्राणोन्द्रियादिषु (च) (सख्येषु) भ-
क्तिभावेषु (रारणात्) वरं ब्रूहीति शब्दं कुर्यात् ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ वहन कामादिके निषेधकर्त्ता २ परमेश्वरके लिये ३ वृद्धि
साधन ४ शस्त्र ५ हमसे उच्चारण योग्य है ६ जैसे ७ सर्व शक्तिमान् परमेश्वर
८ हमारे ९ अभिपुत्र प्राण इन्द्रिय आदि १० श्लो ११ भक्ति भावां में १२ वर मा
गौ यह शब्द उच्चारण करे - ॥ ४ ॥

प्रियमेधऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

विश्वानरस्य वस्पति मनो नतस्य शर्वसः । एवैश्वं
षीनामृती हुवे रथानाम् ॥ ५ ॥ १३२

हे वागाद्यत्विज आत्मारूप यजमानोऽहं (रथानाम्) देहानां (एवैः)

मकृतौ गमनैः (चुर्षणीनाम्) कृताकृतज्ञानवतां वागाद्यत्विजां-
 (वः) युष्माकं (च) मय्यात्मनि गमनैः सह (विश्वानरस्य) सर्वजु-
 नानां (अनानतस्य) अप्रहस्य (शवसः) योगवलस्य (पातिम्)
 परमेश्वरं (ऊती) ऊतये रक्षणाय (हुँवे) आह्वयामि ॥ ५ ॥

भाषार्थः - हे अत्यन्त शक्तिशाली आत्मा रूपयजमान में १ देहो के २ प्रकृति में गमन
 ३ और कृताकृतज्ञानवाले ४ तुमवाक् आदि अत्यन्त शक्तिशाली के ५ मुझ आत्मा में
 गमनो के साथ ६ सब मनुष्यों के ७ पूज्य ८ योगवल के ९ स्वामी परमेश्वर को
 १० संसार से रक्षा के लिये ११ मैं आह्वान करता हूँ ॥ ५ ॥

भारद्वाजः अत्रिः पुरुषोत्तमो ब्रह्मन्द्वादेवता-

सघायस्ते दिवा नराधिया मत्स्य श्मत्तः । ऊती
 सहस्रतो दिवा द्विषांश्च १२ ह्यनूतरति ॥ ६ ॥ १३३

हे परमेश्वर (श्मत्तः) शान्तस्य (मत्स्ये) देहस्य मध्ये (यः) (नर-
 जीवः) (ते) तव (धिया) पूजन कर्मणा (दिवः) कमल समूहस्य-
 (सखा) (स) (सघायः) सहायः सहस्रतोऽनुकूलः । हस्य घत्वं (द्वि-
 हतः) महतः (दिवः) कमल समूहस्य (ऊती) ऊत्या रक्षया (द्वि-
 षः) द्वेषून् कामादीन् (अहः) (न) पापमिव (तरति) अतिकाम-
 ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः

हे परमेश्वर १ शान्त २ देह के मध्य ३ जो ४ जीव ५ आपके पूजन कर्म से ६ क-
 मल समूह का ७ सखा है वह १० सहस्र २ भक्त ११, १२ कमल समूह की १३ र-
 खा द्वारा १४ द्वेषाकाम आदिको १५, १६ पापकी समान १७ अतिकामाण कर-
 ता है ॥ ६ ॥ अत्रिः पुरुषोत्तमो ब्रह्मन्द्वादेवता-

विभोष्टु इन्द्राधिसो विभ्वीरतिः शतक्रतो । अथो

नोविश्व चर्षणोद्युम्नं सुदत्रमथंहय ॥७॥ १३३४
 हे (सुदत्र) कल्याणदान (विश्वचर्षणो) सर्वस्यद्रष्टः (शतकतो)
 बहुकर्मन्परमेश्वर (विभोः) प्रभूतस्य (राधसे) धनस्य योगधन
 स्यवा (ते) तव (रातिः) दानं (विन्वी) महत् (अथ) अतः कारणात्
 (ने) अस्मभ्यं (द्युम्नं) धनं योगधनम्वा (महये) प्रयच्छन्नि० ३१२०

॥७॥

भाषार्थः

१ हे कल्याणदान २ सबकेद्रष्टा ३ बहुकर्मापरमेश्वर ४, ५ बहुतधनवा योगधनका ६ तेरा ७ दान ८ बड़ा है ९ इसकारणा १० हमारे लिये ११ धनवा योगधनको १२ दीजिये ॥७॥ प्रस्तावः ऋषिरनुष्टुप् चन्द्रोऽषादेवता-

वयोश्चित्तेपतत्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि। उपः पारै
 न्तूथं रनुदिवो अन्तेभ्यस्परि ॥८॥ १३५

हे (अर्जुनि) शुभ्रवर्णो (उपः) उपो देवते समाधिकाल (ते) तव (चत
 तून्) ब्राह्ममुहूर्त्नकालान् (अनु) अनुलक्ष्य (द्विपात्) नरो जीवा
 त्मा (चतुष्पात्) प्राणः। प्राणो वै पशुः श० ३। ८। ३। १५ (पतत्रिणा)
 पतनशीलाः (वयः) (चित्) पक्षिणा इव (दिवः) भृकुट्यादि कमल
 समूहस्य (अन्तेभ्यः) प्रान्तेभ्यः (परि) उपरि गगनमण्डले (प्रान्त
 प्रकषेण गच्छन्ति। अश्छति गति कर्मानि० २। १४। ३५-॥८॥

भाषार्थः - हे शुभ्रवर्ण २ उपानाम समाधिकाल ३ तेरे ४ ब्राह्ममुहूर्त्न रूप
 कालोंको ५ देखकर ६ जीवात्मा ७ प्राण ८ पतनशील ९, १० पक्षियोंकी सम
 न ११ भृकुटि प्पादिकमल समूहके १२ प्रान्तोंसे १३ ऊपर गगनमंडलमें १४
 जाते है-॥८॥ प्राणोऽस्ति तत्र ऋषिरनुष्टुप् चन्द्रो देवादेवताः-

३ १२ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २ २ २ २ ३ ३ ३
 अमीयेद्वास्थनमध्यःपाराचनदिवः। कहु चरत

कदमृतकोप्रत्नोवशाहुतिः ॥ ६ ॥ २३६

तत्रसमष्टिज्ञानायप्रश्नान्कुर्वन्तिहे(देवाः) कमलस्थाः(यो)
 (अमी) यूयं(दिवः) पिण्डस्थस्वर्गस्य(आरोचने) दीप्तिविषये-
 (न) च(मध्ये) अधः कमलसमूहे(स्थ)तेषां(वः) युष्माकं(स्त-
 तम्) यज्ञं(कत) कुत्रभवति(अमृतं) सोमं(कत) कुत्रास्ति(वः)-
 युष्मदीया(प्रत्नो) पुराणी(आहुतिः)(का) = ॥ ६ ॥

भाषार्थः - वहां समष्टि ज्ञानके लिये प्रश्नों को करते हैं - १ हे कमलस्थ
 देवताओं २ जो ३ तुम ४ पिण्डस्थस्वर्गके ५ दीप्तिविषय ६ और ७ नीचेके क-
 मलसमूहके मध्य ८ होउन ९ आपका १० यज्ञ ११ कहां होता है १२ सोम १३
 कहां है १४ तुम्हारी १५ पुराणी १६ आहुति १७ कौन है - ॥ ६ ॥

वामदेवत्रधिरनुष्टुप् छन्द ऋक्सामे देवने

ऋचं सामं यजामहे याभ्यां कर्माणि कर्तव्ये

वितसदसि राजतो यज्ञन्देवेषु वक्षतः ॥ १० ॥ २३७

उत्तरं लब्ध्वा कथयति वयम् (ऋचं) (सामं) (यजामहे) पूजयाम-
 (याभ्याम्) ऋक्सामाभ्यां (कर्माणि) शस्त्र स्तोत्र प्रमुखानि-
 (कर्तव्ये) होतार उद्गातारश्च कुर्वन्ति (ते) ऋक्सामे (सदसि)
 सदोमण्डपे (विराजतः) स्तोत्र शस्त्ररूपेण विशेषेण प्रकाशयतः
 (देवेषु) (यज्ञं) (वक्षतः) प्रापयतः । तत्र जपयन् एव भवतीत्यर्थः १०

भाषार्थः उत्तरको पाकर कहता है हम १ ऋग्वेद २ सामवेद को ३ पूजने हैं
 ४ जिनके द्वारा ५ शस्त्र स्तोत्र रूपके र्माके ६ होतार और उद्गाता करते हैं ७ वे ऋ-
 ग्वेद सामवेद ८ सदोमंडपमें ९ स्तोत्र शस्त्ररूपसे विशेष प्रकाश करते हैं १०
 देवताओंमें ११ यज्ञको १२ प्राप्त करते हैं वहां जप यज्ञही होता है यह आभि-

प्रायहे ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामधनुज्वालाप्रसादशर्मा
विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयः
खण्डः ॥ २ ॥

अथ तृतीयः खण्डः

रेभस्वरापिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ ३ १ २} विष्वाः ^{३ १ ३ ३ २ २} पृतना अभिभूतरं ^{३ १ ३} नरः ^{३ १ ३} सजूस्तुतसुरिन्द्रं ^{३ १ ३} ज्ज
^{३ १ २ ३ १ ३} जनुश्चराजसो ^{३ १ २ ३ १ ३} क्रत्वे वरस्थमन्या ^{३ १ ३} मुरी ^{३ १ ३} मुनी ^{३ १ ३} यमोजि
ष्ठन्तरंसतरस्विनम् ॥ १ ॥ २३८

(नरः) नेत्र्यः (सजूः) परस्परसङ्गताः (विष्वाः) सर्वाः (पृतनाः) प्रा-
णादीनां सेनाः (अभिभूतरं) कामादीनामन्वर्थमभिभवितारं (इ-
न्द्रं) यजमानं (ततसुः) योगकुठारेण (च) किञ्च (राजसे) आ-
त्मनोविराजनार्यस्तुमर्थेभ्यसेप्रत्ययः (उत) अपिच (क्रत्वे) यज्ञ-
लाभाय (वर) श्रेष्ठे (स्थेमानि) अचलेब्रह्मणि (आमुरिम्) कामा-
दीनां मारयितारं (उग्रम्) रुद्रस्वरूपं (ओजिष्ठम्) ओजस्वितमं-
(तरसम्) बलवन्तं (तरस्विनम्) वेगवन्तं (जजनुः) जनयामसुः ॥

भाष्यार्थः - १ नेत्ररूप २ परस्परसंगत ३ सब ४ प्राणा आदिकी सेनाने ५
काम आदिके जेना ६ यजमानको ७ योग कुठार से ८ और ९ आत्माके विरा-
जन १० और ११ यज्ञलाभके लिये १२ श्रेष्ठ १३ अचल ब्रह्ममें १४ कामादिके
नाशक १५ रुद्रस्वरूप १६ तेजस्वी १७ बलवान १८ वेगवान् परमेश्वरको १९
संस्कृतवाचानदृष्टिगोचरकिया - ॥ १ ॥

सुवेदः शैलपिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता

^{१ २ ३} अतदधामि ^{३ १ २ ३ ३ ३ ३} प्रथमाय ^{३ १ ३} मन्यव ^{३ १ ३} हन्यव ^{३ १ ३} हस्युन्नय ^{३ १ ३} विवरपः ॥
^{३ १ ३} उभयत्वारो ^{३ १ ३} दसो ^{३ १ ३} धावता ^{३ १ ३} मनुभ्यसा ^{३ १ ३} नेशु ^{३ १ ३} प्मात्पृथिवी

चिददिवः ॥२॥ १३६ ॥

हे (अदिवः) ^१ज्ञानवच्चवन्नात्मारूपयजमान (ते) ^२तव (प्रथमोय) ^३मुख्याय (मन्यवे) ^४रुद्ररूपाय (अद्भ्यामि) ^५अद्भ्यां करोमि (यते) -
^६यस्मात् (नर्याम्) ^७नराणां जीवानां सम्बन्धिनं (दस्युं) ^८कामं (अ-
^९हन्यत्) (अपः) ^{१०}अमृताप (विवे) ^{११}प्रत्यागमयः हे रुद्ररूप परमेश्व-
^{१२}र (उभे) (रोदसी) ^{१३}द्यावापृथिव्यौ (त्वा) ^{१४}त्वां (अनुधावताम्) ^{१५}त्वद-
^{१६}धीने भवतः (पृथिवी) ^{१७}अन्तरिक्षानि० १।३।६ (चित्) ^{१८}आपि (शुष्मा-
^{१९}त्) ^{२०}त्वदीयाह्वानानि० २।६ (भ्यसाते) ^{२१}भयेन कम्पते ॥२॥

भाषार्थः -

१ हे ज्ञानवच्च धर आत्मारूपयजमान २ मुझ ३ मुख्य ४ रुद्ररूपके लिये ५ अद्भ्यां करता हूँ ६ जिस कारण ७ जीव सम्बन्धी ८ चौर का मकोर्द मारा ९ अमृत जलोको १० उतारा ११ दोनो १२ पृथिवी स्वर्ग १३, १४ तेरे आधीन होते हैं १५ अन्तरिक्ष १६ भी १७ तेरे बल करके १८ भयसे कांपता है

-॥२॥

वामदेवऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

समेतविश्वोऽशोजसापतिदिव्यैकद्वुरातिथि
 जनानाम्। सपूव्या नूतनमाजिगीषन्वन्तनी
 रनुवाचतएकद्वत् ॥३॥ १४०

हे (विश्वोः) ^१विश्वदेहाभिमानिनो ^२जनाः (अशोजसा) ^३भक्तिबलेन
 (दिव्यैः) (पातिम्) ^४गोलोकस्वामिनं ^५परमेश्वरं (समेत) ^६सम्यक्प्रा-
^७प्तुत (सः) (एकः) (द्वत्) ^८एव (जनानाम्) ^९भक्तानां (अतिथिः) (भू-
^{१०}भवंतिसः) (पूर्याः) ^{११}आद्यपुरुषः (एकः) (द्वत्) ^{१२}एव (आजिगीषन्तं) का-
^{१३}मादीन् जेतुमिच्छन्तं (नूतनम्) ^{१४}संस्कृतं भक्तं (अनुवाचते) अनु-
^{१५}वर्तयति सामिप्यं ददाति ॥३॥

भाषार्थः— ११ विश्वदेहाभिमानी मनुष्यो २ भक्ति बलसे ३, ४ गोलोक-
स्वामी परमेश्वरको ५ भले प्रकार मामको ६ वह ७ अकेला ८ ही ९ भक्तों
का १० अतिथि ११ होता है १२ वह १३ अकेला १४ ही १५ कामादि को जीत
ना चाहते १६ संस्कृत भक्त को १७ सामिप्य मोक्ष को देता है—॥ ३ ॥

सव्यं आद्विरस ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

^३ इमे^१ त^२ इन्द्र^३ ते^४ वयं^५ पुरु^६ षुते^७ ये^८ त्वार^९ भ्य^{१०} चरा^{११} मसि^{१२} सप्रभू^{१३}
वसा^{१४} । नहि^{१५} त्वद^{१६} न्या^{१७} गिर्व^{१८} णो^{१९} गिरः^{२०} सघ^{२१} क्षो^{२२} णी^{२३} रिव^{२४}
प्रति^{२५} न ह्य^{२६} र्थ^{२७} नो^{२८} वचः^{२९} ॥ ४ ॥ २४१

हे (प्रभूवसो) प्रभूतधन (पुरुषुते) बहुभिः स्तुत (इन्द्र) परमेश्वर
(ये) (वयं) (त्वो) (त्वां) (स्वारभ्य) आप्नायतयावलंब्य (चरामसि) चरा-
मः कर्मोपासनयोर्वर्त्ता गहे (ते) (इमे) (ते) तव स्वभूताः हे (गिर्व-
णो) गीर्भिर्वननीय परमेश्वर (त्वत्) त्वत्तः (अन्यः) (गिरः) स्तुतीः
(नहि) (सघत्) प्राप्नोति त्वदन्या भावात् (क्षोणी) (द्वे) भूमारू-
पस्त्वं (नः) अस्माकं (तत्) (वचः) (प्रति ह्यर्थ) कामयस्व नि० २।
६-॥ ४ ॥

भाषार्थः

१ हे महाधनी २ बहुतसे स्तुत ३ परमेश्वर ४ जो ५ हम ६ तुमको ७ आप्नाय-
मानकर ८ कर्मउपासनाके द्वारा सेवन करते हैं ९ वे १० ये ११ आपके ही हैं
१२ हे वेदवचनों से संभजनीय परमेश्वर १३ आपसे १४ अन्यदेवता १५ स्तु-
तिश्रियोंको १६, १७ प्राप्नही करता है अर्थात् आप सर्वात्मा हो १८, १९ भूमा-
रूपतुम २० हमारे २१ उस २२ वचनको २३ चाहो—॥ ४ ॥

विश्वामित्र ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

^३ चर्ष^१ णी^२ धृतं^३ मघ^४ वान^५ सु^६ कथ्यो^७ ३ मिन्द्र^८ गिरो^९ वृह^{१०}

तीरभ्यनुषतं । वावृधानुं पुरुहूतं १२ सुवृक्तिभिरे
मर्त्यञ्जरमाणान्दिवेदिवे ॥ ५ ॥ १४२

(वृहती) महतीः वेदोक्ताः (गिरः) वाचः (चर्षणीघृतं) भक्ताना
मभिमत्फलप्रदानेन धारकं पोषकं (मघवानं) धनवन्तं (उ-
क्थ्यम्) उक्थैः शस्त्रैः शंसनीयं (वावृधानं) भक्तानां स्तोत्रैर्व
र्द्धमानं (पुरुहूतम्) बहुभिः स्तोत्रभिराहूतं (अमर्त्यम्) अविना
शिनं (सुवृक्तिभिः) शोभनस्तुतिवाक्यैः (दिवे दिवे) मर्त्यहं (जर-
माणम्) स्तूयमाणानि० १४ (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अभ्यनुषत)
अभितः सर्वस्तुवन्तु ॥ नि० ३१४— ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ महती २ वेदोक्तवाणी ३ अभीष्टफलदानसे भक्तोंकेपो-
षक ४ धनवान ५ शस्त्रोंसे शंसनीय ६ भक्तोंके स्तोत्रोंसे वर्द्धमान ७ वहुत-
स्तोत्रोंसे आहूत ८ अविनाशी ९ शोभनस्तुतिवचनोंसे १० ११ प्रतिदिन १२
स्तूयमान १३ परमेश्वरको १४ सबशोरसे स्तुतकरो— ॥ ५ ॥

कृष्णआङ्गिरसऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

अच्छाव इन्द्र मर्त्यस्वयुवः सधीची विष्वा उशती
रनुषत । परिष्वजन्त जनयो यथा पतिमयन शुध्यं
मघवान मृतये ६ ॥ १४३

(वेः) युष्माकं भक्तानां (स्वयुवः) आत्मनि मिश्रायि त्र्यः (सधीचीः)
सङ्गताः (ने) च (उशतीः) कामयमानाः (विष्वाः) सर्वाः (मृतयः)
स्तुतयः बुद्धयोवा (ऊतये) संसाराद्दक्षिणाय (मघवानम्) धन-
वन्तं (मुन्ध्यम्) भुङ्क्षन्मायारहितं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अच्छा)
अभिमुख्येन (अनुषते) (ने) च (परिष्वजन्त) (यथा) (जनयः)

जायाः^{१८} (मर्याम्) मनुष्यं^{१९} (पतिम्) ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ तुमभक्तोंकी २ आत्मा में मिश्रित करने वाली ३ सद्गुण ४ और ५ कामयमान ६ सब ७ स्तुति वा बुद्धियां ८ संसार से रक्षा के लिये दीध नवान् ९ शुद्ध माया रहित १० परमेश्वर को ११ सन्मुख होकर १२ स्तुत करे १३ और १४ मिलो १५ जैसे १६ स्त्रियों १७ सन्मुख १८ पतिको ॥ ६ ॥

सव्य ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-
 ३ ३३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
 अभित्यं मेष पुरुहूत मृगिमय मन्दु गामि मदता
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 वस्वा अणवम् । यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं
 ३
 भुजे मधुं हिष्टमभि विप्रमर्चत ॥ ७ ॥ २४४ ॥

(तम्) (मेषम्) मामाया - इषमन्नं यस्य तं (पुरुहूतम्) बहुभिर
 हुतं (ऋगिमयम्) ऋग्भिः स्तुति वन्तं (अवस्वः) वसुः रुशमः । त-
 मोभूतस्य समाष्टि देहस्य (अणवम्) वासुस्थानं (मं हिष्टम्) अति
 शयेन प्रवृद्धं (विप्रम्) मेधाविनं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (यम्) महा
 पुरुषं (गामिभिः) वेद स्तुतिभिः (अभिमदता) अभिमुख्येन हर्षं प्राप
 यत (अभ्यर्चत) अभिपूजयत (यस्य) महापुरुषस्य (द्यावः) र
 शमयः (भुजे) भोगाय (मानुषम्) लोकं (नं) (विचरन्ति) तस्य-
 निर्गुणत्वात् ॥ ७ ॥ **भाषार्थः**

१ उस २ मायारूप अन्नवाले ३ बहुत से साहुन ४ ऋचाओं से स्तुतिवान
 ५ समाष्टि देह के ६ वासस्थान ७ अति शय प्रवृद्ध ८ मेधावी ९ परमेश्वर १० म
 हापुरुष को ११ वेद स्तुतिओं से १२ हर्षित करो १३ और पूजो १४ जिस महा-
 पुरुषकी १५ किरणों १६ भोगके लिये १७ मनुष्यलोक में १८ नहीं १९ विच
 रती हैं उसके निर्गुण होनेसे - ॥ ७ ॥

सव्यऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता

त्यं^{२३} सु^३मे^३ष^३मह^३यास्वा^३विदे^३थं^३ शतं^३ यस्य^३ सु^३भुवः^३ सा^३कमी^३
 रते। अत्यं^३ नवा^३जं^३ थं^३ हव^३स्य^३ दे^३थं^३ रथ^३मेन्द्रं^३ ववृ^३त्या^३ मे^३व
 से^३सु^३वृ^३क्तिभिः॥८॥१४५

(यस्य) परमेश्वरस्य (सुभुवः) योगभूमिस्थाः भक्ताः (साकम्) पुत्र
 दिभिः सह (यम्) (मेषम्) अभक्तैः स्पृष्टमानं (स्वविदम्) स्वभक्तै
 ल्भिः। आत्मनो लब्ध्वा स्व (हवनस्य दम्) आह्वानं प्रति गन्तारं।
 स्यन्दति गति कर्मा (शतम्) बहु रूपं (रथम्) मूर्ति रूपं (सुमहया)
 सुपूजया (इरते) प्रेरयन्ति (तम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (यम्) महापुरु
 षं (सुवृक्तिभिः) सुस्तुतिभिः (अवसे) (न) तर्पणायैव (अत्यम्) भक्ष
 णीयं (वाज) आत्मप्रतिविंवरूपा न्प्रति (आववृत्त्याम्) प्रावर्तयेयम्

भाषार्थः - १ जिस परमेश्वरके २ योगभूमिस्थ भक्त ३ पुत्र आदिके साथ
 ४ जिस ५ अभक्तों से स्पृष्टमान ६ निजभक्तों से लभ्य ७ आह्वान होने पर आने
 वाले ८ बहु रूप ९ मूर्ति रूपको १० ओष्ठपूजाके द्वारा ११ प्रेरित करते हैं १२ उस १३
 परमेश्वर १४ महापुरुषको १५ ओष्ठस्तुतिके द्वारा १६ रक्षा १७ और तर्पणके लि
 ये १८ भक्षणीय १९ आत्मप्रतिविंवरूपाके समीप २० प्राप्त करूं ॥ ८ ॥

भरद्वाजऋषिर्जगती छन्दो वरुणो देवता-

घृती^३वती^३भुवना^३नाम^३भि^३ज्जि^३या^३वी^३ष्ट^३थी^३मधु^३दु^३घे^३
 सु^३पश^३सा। द्या^३वा^३पृथि^३वी^३वरुण^३स्य^३ध^३मे^३णा^३विष्क
 मिते^३अ^३जरे^३भूरि^३रेतु^३सा ॥ ८ ॥ १४६

(भुवनानाम्) (अभिजिया) अन्नयंभूते (उर्वी) विस्तीर्णी (पृ
 वहुकार्यरूपेण प्रथिते। मधुदुघे) आहुतिजलरूपस्य रे

(सुपेशसा) सुरूपे (अजरे) नित्ये (भूरितेसा) बहुरेतस्के (घृतवती)
दीप्तिमत्यौ (द्यावापृथिवी) द्यावापृथिव्यौ (वरुणस्य) एकाएव
पतेर्महापुरुषस्य (धर्मणा) धारणाशक्त्या (विष्कभिते) धारिते

भाषार्थः - १ भुवनोंके २ आत्मरूप ३ विस्तीर्ण ४ बहुकार्यरूपसे प्रस्थित
५ आहुतिजलरूपसके दाना ६ सुरूप ७ नित्य ८ बहुवीर्यवान ९ दीप्तिमान
१० पृथिवी स्वर्ग ११ एकाएव पति महापुरुषकी १२ धारणाशक्तिसे १३ धारित
हैं ॥८॥ मेधातिथिः अपिर्महापंक्तिम्ब्रन्दइन्द्रो देवता-

उभेयादिन्द्रो रोदसी आप प्रोथोषा इव । महान्तं त्वा
महीनाम् १० संभ्राज च्वर्षणीनाम् । देवीजनिञ्जी
जुनेद्राजनिञ्जीजनत् ॥ १० ॥ १४७ ॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यत्) यस्मात् त्वं (उभे) (रोदसी) द्यावापृथि
व्यौ (आपप्रोथ) स्वतेजसा आपूरयसि । आपूरणो आदादिकः (प०)
ब्रन्दसोत्तिद् (इव) यथा (उपा) स्वभासा सर्वजगदापूरयति (तम
महीनाम्) महतां देवानामपि (महान्तं) स्वर्षणीनाम्) भक्तानां
(सम्भ्राजम्) स्वामिनं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (त्वा) त्वां (देवी) (जनि
ञ्जी) अपराशक्तिः (अजीजनत्) भूतात्मरूपेणाजनयत् (जुनेर्ण
न्तात्लुङि-चडिः रूपमेतत्) तथा (भद्रा) परारूपा (जनयिञ्जी)
(अजीजनेत्) जीवेशरूपेणाजनयत् ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जिस कारण तुमने ३ दोनों ४ पृथिवी स्वर्ग
को ५ अपने तेजसे पूर्ण किया ६ जैसे ७ उपा अपने प्रकाशसे सब जगत् को
८ उत्त ९ महान् देवताओंके भी १० महान्त ११ भक्तोंके १२ स्वामी १३ परमे-
श्वर १४ तुमको १५, १६ अपराशक्तिने १७ भूतात्मरूपसे प्रकट किया १८

१८ पररूपमात्माने २० जीवर्द्देशरूपसे प्रकट किया ॥ १० ॥

कुत्सऋषिर्जगती छन्द आत्मा देवता-

प्रमन्दिनेपितुमदर्वतावचोयः कृषागर्भानि
रहन्नुजिश्चना । अक्स्यवावृषणवज्रदाक्षिण
मरुत्वन्तं सरव्याय हुवेमहि ॥ ११ ॥ १४८

हे भूतात्मानः (मन्दिने) स्तुतिमूते आत्मारूपयजमानाय (पितु
मत्) स्वात्मारूपान्नेनोपेतं (वचः) स्तुतिलक्षणं वचनं (प्रार्थित)
प्रकर्षणोच्चारयत (यः) (जिश्चना) स्थैर्यवत्या बुद्ध्या साहि
तः सन् (कृषागर्भाः) कृषांमनुस्तस्य गर्भभूताः कामवृत्तीः (नि
रहन्) नितुरामवधीत् (अक्स्यवः) रक्षणोच्छ्रवणं वागाद्यत्वि
जः (वृषणम्) अमृतस्य वर्धितारं (वज्रदाक्षिणं) ज्ञानवज्रयुक्ते
नदाक्षिण हस्तेनोपेतं (मरुत्वन्तम्) प्राणवन्मात्मारूपयज
मानं (सरव्याय) सरव्युः कर्मणो (हुवेमहि) आह्वयामः ॥ ११ ॥

भाषार्थः - हे भूतात्माओ १ स्तुतिमान आत्मारूपयजमानके लिये २ अ
पने आत्मारूप अन्न से युक्त ३ स्तुतिरूप वचन को ४ उच्चारण करो ५ जिसने ६
स्थिर बुद्धि के साथ ७ कामवृत्तियों को ८ निरन्तर नष्ट किया ९ रक्षाकामाहम
वाक् आदि ऋत्विज १० अमृतवर्षक ११ ज्ञानवज्रधारी १२ प्राणवान आत्मा
रूपयजमान को १३ सरवा कर्मके लिये १४ आह्वान करते हैं - ॥ ११ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सनु ज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते साम
वेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

नारदऋषिरुषिण क् छन्द इन्द्रो देवता-

१ २ ३ २ ३ २ २ ३ २ ३ ३क २२ ३ २ ३ १
 इन्द्रसुतेपुसामिपुक्रतुम्पुनीपउकथ्यम् । विदेवृध
 स्यदक्षस्यमहो^३ं^२हिपः ॥ २ ॥ १४६

हे (इन्द्र) परमेश्वर (सामेपु) प्राणोन्द्रियप्रतिविंवेपु (सुतेपु) अभि
 पुतेपुसत्सु (क्रतुम्) योग क्रिया मयं योगिनं (उकथ्यम्) प्रशस्यं
 नि० ३।८।६ (वृधस्य) वर्द्धकस्य (दक्षस्य) योगबलस्य (विदे)
 लाभाय (पुनीपे) शोधयसि (हि) यस्मात्त्वं (महान्) (षः) वासु-
 देवः ॥ १ ॥

भाषार्थः

१ हेपरमेश्वर २ प्राणइन्द्रियप्रतिविंवेके ३ अभिपुनहोनेपर ४ प्रशस्य ५
 योगक्रियामययोगीको ६ शद्धिकर्त्ता ७ योगबलकेलाभार्थ ८ शोधनक
 रतेहो ९ जिसकारणानुम १० महान् १२ वासुदेवहो ॥ १ ॥

द्वयोर्गीपुक्तश्वसृक्त्तिनावृथ्युष्णिक छन्दइन्द्रो देवता-

१ २ ३ २ ३ २ ३ ३ २ ३ ३ ३ ३
 तमु^३अभिप्रगायतपुरुहूतं^३ं^३पुरुपुतम् । इन्द्रो^३
 भिस्तिविपमाविवासत ॥ २ ॥ २५०

(तम्) (पुरुहूतम्) बहुभिराहूतं (पुरुपुतम्) बहुभिस्तुतं (तविपम)
 महान्तं नि० ३।३ (इन्द्रो) परमेश्वरं (उ) एव (गीर्भि) स्तुतिभिः (४)
 अभिप्रगायत) अभिमुखं प्रकर्षेण स्तुध्वम् (आविवास्तन) परि-
 चरत नि० ३।५ — ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ उत २ वद्धतसेआहूत ३ वद्धतसेस्तुत ४ महान्त ५ परमे
 श्वरको ६ ही ७ स्तुतिद्वारा ८ सन्मुखहोकर स्तुनकरो ९ सेवाकरो - ॥ २ ॥

विनियोग पूर्वयत्-

३ ३ २ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
 तन्नमदङ्गीमासृष्ट्यामृष्टसुसासहिम् । उला
 कस्तुमाद्विवाहारेभ्यम् ॥ ३ ॥

हे (अद्विवः) अद्विवन् अद्विः सूर्यः बहु भिव्यष्टि समष्टि सूर्यै रूपेण-
 महापुरुष (ते) त्वदीयं (तमे) (वृषणम्) धर्मार्थकाम मोक्षाणां व-
 र्धितारं (एक्षु) (पसावित्री) (अनिवृत्ति) (क आत्मा) तेषु (सासे
 द्विम्) विभानामभिभवितारं (लोक कृत्नुमो ब्रह्माण्डस्य कर्त्तारं (ह
 रिश्रियम्) हरीभिर्ब्रह्म विष्णु महेशादिभिः अयणी यंसेव्यं (उ)
 एव (मदम्) (गृणीमसि) गृणीमः प्रशंसामः । गृशब्देत्तपादिः
 प्वादीनां ह्रस्वः (७।४।८०) इदन्तोमसि (७।१।४६) इति मसद्-
 कारागमः ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे बहुत व्यष्टि समष्टि सूर्यो से युक्त महापुरुष २ आपके उ-
 तस ४ चारोंपदार्थ के दाना ५ सावित्री निवृत्ति और आत्मा में ६ विघ्ननाश-
 क ७ ब्रह्माण्ड के कर्त्ता ८ विदेवसे सेव्य ९ मद्रको १० ही ११ हम प्रशंसाक
 रते हैं ॥ ३ ॥ पर्वत अरु पृथिवी क छन्द इन्द्रो देवता

यत्सोममिन्द्रविष्णोर्विद्यदोघात्रित आत्ये । यद्वा
 मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥ ४-॥ १५२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (विष्णोर्वि) अन्तर्यामिनि (यत्) (सोमम्)
 आत्मं प्रति विंवरूपा मृतं (वा) अथवा (आत्ये) अपाम्पुत्रे (त्रिते)
 जीवात्मानि (यत्) (वा) अथवा (मरुत्सु) प्राणेषु (यत्) (घ) प्र-
 सिद्धतैः (इन्दुभिः) आत्मप्रति विंवे (सम्मन्दसे) सम्यक् माद्यसि ४

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ अन्तर्यामी में ३ जो ४ आत्म प्रति विंवरूपा
 अथवा ६, ७ जीवात्मा में ८ जो आत्म प्रति विंवरूपा ९ अथवा १० प्राणों से ११
 जो आत्म प्रति विंवरूपा १२ प्रसिद्ध है १३ उन आत्म प्रति विंवरूपा से १४ आप भले
 प्रकार हर्षित होते हैं - ॥ ४ ॥

तिष्ठणां विश्वमनावैयश्वन्नरपिरुणिक् छन्दो महापुरुषो देवता-
 एतमधोमदिन्तरं^{२३१२३३२३} सिञ्चाध्वयो^{३१३२३} अन्धसः। एवौ^{३३३}
 हि वीरस्त्ववते सदा वृधः॥ ५॥ १५३

हे (अध्वयो) ज्ञानचक्षुः। चक्षुर्वैयज्ञस्याध्वर्युः श० १४। ६। १। ६।
 (मधोः) प्राणस्य। प्राणो वै मधु श० १४। १। ३। ३० (उ) च (अन्धसः)
 अन्नरूपस्यात्मप्रतिविंबस्य (मदिन्तरम्) अत्यर्थमादयित्व तमू-
 मात्मारूपरसं (इत्) एव (आसिञ्च) अभिस्तर (हि) यस्मात् (स-
 दा वृधः) सदा वृद्धियुक्तः (वीरः) असुराणां जेता (अः) महापुरुषः
 (एव) (स्त्ववते) स्तोत्रशस्त्रादिभिः स्तूयते नान्य इत्यर्थः॥ ५॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानचक्षु २ प्राणों के ३ और ४ अन्नरूप आत्मप्रतिविंब
 के ५ अतिहर्षकारक आत्मारूपरसको ६ ही ६ सींचो ७ जिस कारण ८ सदा
 वृद्धियुक्त ९ असुरजयी १० महापुरुष ११ ही १२ स्तोत्रशस्त्र आदिके द्वारा १३
 स्तुतिकिया जाता है ॥ ५॥ विनियोगः पूर्ववत्

एन्दुमिन्द्राय सिञ्चते पिवाति सोम्य मधु। प्ररा
 धौ^{३३} सिचोदयते महित्वेना॥ ६॥ १५४

हे योगिनः (इन्दुम्) आत्मप्रतिविंबरूपसोमं (इन्द्राय) परमेश्व-
 राय (आसिञ्चते) अभिमुख्येन प्रत्याक्षरयतसः (सोम्यम्)
 सोमस्यात्मप्रतिविंबस्य दानारं (मधु) प्राणं (पिवाति) समाधौ
 पिवाति पुनः (महित्वेना) स्वमहत्वेनैव (राधांसि) योगैश्वर्याणि
 (प्रचोदयते) वृद्धयति ॥ ६॥

भाषार्थः - हे योगिजनो १ आत्मप्रतिविंबरूपसोमको २ परमेश्वरके-
 लिये ३ अर्पण करो ४ वह आत्मप्रतिविंबके दाना ५ प्राणको ६ समाधिमें

पान करता है फिर ७ अपनेमाहात्म्य सेही ८ योगेश्वर्योंको देता है-६।

विनियोगः पूर्ववत्

एतो^३न्विन्द्र^३ं^३ स्त^३वाम^३सखायः^३ स्तोम्यन्^३नरम्^३।

कृ^३षीयो^३विश्वो^३अभ्यस्ते^३क^३इत् ॥७॥ १५५

हे (सरखायः) वागाद्यत्विजः (नु) क्षिप्रं (एतउ) आगच्छतैव-
(स्तोम्यम्) स्तोमार्हं स्तवार्हं (नरम्) सर्वस्यनेतारं परमेश्वरं
(स्तवाम्) (युः) (एकः) (इत्) एव (विश्वो) सर्वाः (कृषीः) असुर
रसेनाः (अभ्यस्ति) अभिभवति नानावतारैः ॥७॥

भाषार्थः - १ हेवाक् सादिऋत्विजो २ शीघ्र ३ ही आशो ४ स्तुति-
योग्य ५ सवकेनेतापरमेश्वरको ६ स्तुतकरे ७ जो ८ एकला ९ ही १० सव ११
असुरसेनाको १२ नानाप्रकारके अवतारोंसेजय करता है ॥७॥

नृमेधऋषिरुषिणाक् छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्राय^३ साम^३गायत^३विप्राय^३ वृहते^३ वृहत् । वृहत्कृ^३

तैविपश्चिते^३पनस्यवे^३ ॥८॥ १५६

हे भक्तजनाः (विपश्चिते) विदुषे (पनस्यवे) अर्चनमिच्छते (वृ
हत्कृते) तपः कर्त्तुं (विप्राय) वामननिष्कलंक परशुरामादिरूप-
वते (वृहते) महते (इन्द्राय) परमेश्वराय (वृहत्) (साम) (गा
यत) ॥८॥

भाषार्थः

हे भक्तजनो १ विद्वान् २ पूजाचाहते ३ तपकर्त्ता ४ वामननिष्कलंकं परशु
राम आदिरूपवाले ५ महान् ६ परमेश्वरके लिये ७, ८ वृहत्सामको ९-
गाशो-॥८॥

गौतमऋषिरुषिणाक् छन्द इन्द्रो देवता-

या^३ एक^३इ^३द्वि^३दयते^३वसु^३मती^३यदा^३भुषे^३। इ^३शानो^३अ^३

प्रतिष्कृत इन्द्रो अद्भुतः ॥ ८ ॥ १५७

(यः) (अप्रतिष्कृतः) प्रतिष्कृत शब्द रहितः सर्वेश्वरत्वात् (देशानुः) सर्वस्य जगतः स्वामी (इन्द्रः) परमेश्वरः (एकः) (इत्) एव (दाभु) (पे) हविर्दत्तवते (मर्त्याय) मनुष्याय भक्ताय (वसु) धनं योग-
धनं वा (अद्भुतः) क्षिप्रं नि० ५ ॥ १७ (विदयते) विशेषेण ददाति ॥ ८ ॥
भाषार्थः - १ जो २ सर्वेश्वर होनेसे प्रतिष्कृत शब्द रहित ३ सब जगत का स्वामी ४ परमेश्वर ५ अकेला ६ ही ७ हविदाता ८ भक्त के लिये ९ धन वा योगधनको १० शीघ्र ११ देता है ॥ ८ ॥

विश्वमनाऽऽपि रुषिणा क्व छन्द इन्द्रो देवता-

सखाय आशिषामहे ब्रह्मन् द्राय वज्रिणे । स्तुषे
ऊषुवानृतमाय घृणावे ॥ १० ॥ १५८

हे (सखायः) योगिनो भक्ताः वयं वेदाः (वज्रिणे) ज्ञानवज्रधरा
य परमेश्वराय (उ) एव (ब्रह्म) स्तोत्रं (आशिषामहे) आशास्म
हे शास शासने वाग्यूपहोता कथयति हे चक्षुराद्यत्विजः (वः) यु
ष्माकं (घृणावे) कामादीनां धर्षणा शीलाय (नृतनाय) नेत्रत
माय यजमानाय (उ) एव (सुस्तुषे) सुष्टुस्तौ मितमेव परमेश्वर
॥ १० ॥ **भाषार्थः** - १ हे योगी भक्तो २ हम वेदज्ञानवज्रधारी परमेश्वर
के लिये ३ ही ४ स्तोत्रको ५ उच्चारण करते हैं वाक् रूपहोता कहता है हे
चक्षुः आदिवत्त्विजो ६ तुम्हारे शत्रु ७ काम आदिके धर्षणा शील ८ मह
नेता यजमान के लिये ९ ही १० उस परमेश्वर की स्तुति करता हूँ ॥ १० ॥
इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामधनुज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते साम वे
दीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४

इतिचतुर्थःप्रपाठकः

अथपञ्चमःखण्डः।अथपंचमःप्रपाठकः

भरद्वाजःअपिरुषिणःकच्छन्दःइन्द्रोदेवता-

गृणोतदिन्द्रतेशवउपमान्देवतातये। यद्धृत्थं
सिञ्चन्मोजुसाशचीपते ॥१॥१५८॥

हे(इन्द्र)(तन्)(ते) तव(उपमाम्) सर्ववलानां उपमाभूतं(शवः)
वलं(देवतातये) यज्ञार्थं(गृणो) स्तुवेहे(शचीपते)(यत्)यस्मा
त्(हृत्थम्)(मोजुसा) वलेन(हंसि) ॥१॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ तेरे ३ उस ४ सब वलों का उपमा रूप ५ वल को ६ यज्ञ के लिये ७ स्तुत करता हूँ ८ हे शचीपति ९ जिस कारण तुम १० हृत्तासुर को ११ वल से १२ मारते हो - ॥१॥ द्वितीयोर्थः

हे(इन्द्र) यजमान(ते) तव(तत्) (उपमाम्) उपमाभूतं(शवः) यो
गवलं(स्तुवे) हे(शचीपते) योगकर्मिणां स्वामिन् नि० २।१।२३
(यत्) यस्मात्वं(देवतातये) योगयज्ञाय(मोजुसा) योगवलेन-
(हृत्थम्) पापं(हंसि) - ॥१॥

भाषार्थः - १ हे यजमान २ तेरे ३ उस ४ उपमा रूप ५ योग वल को ६ स्तुत करता हूँ ७ हे योग कर्मों के स्वामी ८ जिस कारण तुम ९ योग यज्ञ के लिये १० योग वल से ११ पाप को १२ नाश करते हो - ॥१॥

भरद्वाजःअपिरुषिणःकच्छन्दःइन्द्रोदेवता-

यस्यत्यच्छ्वरमेददिवोदासाय रन्धयन्। अ
यत्थं ससोम इन्द्रते सुतःपितृ ॥२॥१६०

हे(इन्द्र) परमेश्वर(यत्) यस्मात्(यस्य) आत्मप्रतिविम्बस्य(मेद)

होर्पेपानजनिने सनि (शम्बरम्) शुम्बंदरिंद्रानिददानि सशम्बरः
 कामस्तं (दिवः) गोलोकस्य (दासाय) भक्ताय (रन्धयन्) हन्ता-
 भवसि (तत्) तस्मात् (सः) (अयम्) (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (ते)
 त्वदर्थं (सुतः) अभिपुतस्तं (पिव) ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जिस कारण ३ आत्मप्रतिविंबके ४ पान
 जानित हर्षमे ५ कामको ६, ७ गोलोक कामा भक्त के लिये ८ नाश करते हो
 ईउस कारण १० वह ११ यह १२ आत्मप्रतिविंब १३ तेरे लिये १४ अभिपुत
 हुआउसको १५ पान करो ॥ २ ॥ **द्वितीयोर्थः**

हे (इन्द्र) (यत्) यस्मात् (यस्य) सोमस्य (मद) सनि (दिवः) स्व-
 र्गस्य (दासाय) यज्ञानुष्ठात्रे यज्ञमानाय (शम्बरम्) मेघनि ११
 १० (रन्धयन्) हन्ता भवसि (तत्) तस्मात् (सः) (अयम्) (सोमः)
 (ते) त्वदर्थं (सुतः) अभिपुतस्तं (पिव) ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ जिस कारण ३ सोमका ४ मद होने पर ५ स्वर्गके
 ६ यज्ञानुष्ठाता यज्ञमान के लिये ७ मेघको ८ वर्षों के लिये ताड़ित करते हो
 ईउस कारण १० वह ११ यह १२ सोम १३ तेरे लिये १४ अभिपुत हुआउसको
 १५ पान करो ॥ २ ॥ नृमेघञ्चपिरुषिणक् इन्द्र इन्द्रो देवता-

एन्द्र नोगाधिप्रियसत्राजिदगोह्य। गिरिर्नविश्व
 तः पृथुः पातोदिवः ॥ ३ ॥ १६९

हे (प्रिय) सर्वेषां प्रियतम (सत्राजित) सर्वेषामसुराणां जेतः (अगो-
 ह्य) असंवरणीय (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर वा (गिरि) (ते) पर्वत इ-
 व (विश्वतः) सर्वतः (पृथुः) विस्तीर्णः (दिवः) स्वलोकस्य (पाति)
 ईश्वरस्त्वं (ने) अस्मान्प्रति (आगहि) आगच्छ ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे सबके प्रियतम २ सब असुरोंके जेता ३ असंवरणीय ४ इन्द्रवा परमेश्वर ५ पर्वत की समान ७ सब ओरसे ८ विस्तीर्ण ९ स्वर्गलोक के १० ईश्वरतुम ११ हमारे पास १२ आओ - ॥ ३ ॥

पर्वत ऋषिरुषिणक् छन्द इन्द्रो देवता-

^{१ ३} य^{३ १ २ ३ ३ १ ३} इन्द्र^{३ १ ३} सोमपाते^{३ १ ३} मोमदः^{३ १ ३} शविष्ठ^{३ १ ३} चेतति । येनो^३
^३ हं^{३ १ ३} सिन्या^{३ १ ३} ३^{३ १ ३} त्रिणान्त^{३ १ ३} मीमहे ॥ ४ ॥ २६२

हे (शविष्ठ) बलवत्तम (इन्द्र) परमेश्वर (यः) (मदः) अहं ब्रह्मास्मि
तिमदः (चेतति) सर्वजानाति (सोमपातेमः) सोमस्यात्मप्रतिवि
वस्थपानात्वं (येन) मदेन (अत्रिणाम्) अन्तारं कामं (निहंसि)
निहिनस्सिनि कृष्णं हिंसां प्रापयसि (तम्) मदं (ईमहे) याचा
महे नि० ३।१६।१ - ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे महाबली २ परमेश्वर ३ जो ४ अहं ब्रह्मास्मिरूपमद ५
सबको जानता है ६ सोमवा आत्मप्रतिविंवके पातानुम ७ जिसमदसे ८ भ
सक कामको ९ मारने हो १० उसमदको ११ हममांगते हैं - ॥ ४ ॥

द्विर्मित ऋषिरुषिणक् छन्दो त्रिदेवा देवताः

^{३ १ २ ३ १ ३} त^{३ १ ३} चेतुनाय^{३ १ ३} तत्सुना^{३ १ ३} द्राघीय^{३ १ ३} आयुजीवसे । आ^{३ १ ३}
^{३ १ ३} दित्यासः^{३ १ ३} सुमहसः^{३ १ ३} कृणोतन ॥ ५ ॥ २६३

हे (सुमहसा) शोभनतेजस्काः (आदित्यासः) अदितेः पराशक्ते
पुत्रा ब्रह्म विष्णु महेशाः (नः) अस्माकं (तुचे) पुत्राय नि० २।२
(तुनायै) पौत्राय । तनोति कुलमिति । उकारोपजनृश्चान्दसः
(जीवसे) जीवनाय (तत्) (द्राघीयः) दीर्घतमं (आयुः) (सु) सु
ष्टु (कृणोतन) कुरुत ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे ऋषतेजवाले २ पराशक्ति के पुत्र ब्रह्माविष्णु महेशो ३ हमारे ४ पुत्र के लिये ५ पौत्र के लिये ६ और जीवन के अर्थ ७ उस पव्हत वड़ी ८ आयु को ९-११ दान कीजिये—॥ ५॥

विश्व मनाञ्चरपि रुषिणाक् छन्दो इन्द्रो देवताः

वेत्था^३हिनि^{१२}ञ्चरतीना^३वञ्च^३हस्त^३परि^३वृजम्^३। अह^१
रहः^३मुन्ध्युः^३परि^३पदामिव^३ ॥ ६ ॥ २६४

हे (वञ्चहस्त) ज्ञानवञ्च युक्त (अ) सर्वव्यापिन् परमेश्वरत्वं (हि)
(निञ्चरतीनाम्) नानामृत्यूनां (परिवृजम्) परित्यागं वृजत्या
गे (वेत्थ) जानीये (द्व) यथा (मुन्ध्युः) शोधनहेतुः सूर्यः (अ
हरहः) प्रतिदिनं (पदाम्) लोकानां (परि) परित्यागं ॥ ६॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानवच धारी २ सर्वव्यापी परमेश्वर तुम ३ ही ४ नाना
प्रकार की मृत्यु के ५ परित्याग को ६ जानते हो ७ जैसे ८ शोधन हेतु सूर्य ९ प्र
तिदिन १० लोकों के ११ परित्याग को—॥ ६॥

इरिमिठञ्चरपि रुषिणाक् छन्दो विदेवा देवताः

अपामीवाम^{१२}पस्र्ध^३मपसेधत^३दुर्मतिम्^३। आदि^३
त्यासो^३युयोतनानो^३अं^३हंसः^३ ॥ ७ ॥ २६५

हे (आदित्यासः) आदितेः पराशक्तेः पुत्राः ब्रह्माविष्णु महेशाः (अ
मीवाम्) संसाररोगं (अपसेधत) अस्मत्तोपगमयत (स्त्रिधम्)
वाधकं कामं (अप) अपसेधत (दुर्मतिम्) दुष्टां बुद्धिं (अप) अपसे
धत (नः) अस्मान् (अं हंसः) पापात् (युयोतन) पृथक्कुरुत तस
नमनथनाञ्च (७।१।४५) इति तस्य तनादेशे रूपम्—॥ ७॥

भाषार्थः - १ हे पराशक्ति के पुत्र ब्रह्माविष्णु महेशो २ संसाररोगको

३हमज्ञेदूर करो ४ वाधकं कामको ५ दूरकरो ६ दुष्टावुद्धिको ७ दूरकरो ८हम
को ९ पापसे १० पृथक् करो—॥७॥

वासिष्ठत्रयपि विराट् छन्द इन्द्रो देवता-

पिवा^३स^३सो^१मामिन्द्र^२मन्द^३तु^३त्वा^३यन्त^३सुषा^३वह^३र्य

श्वो^३द्रिः^३। सो^३तु^३वाहु^३भ्या^३ सु^३यतो^३ नो^३वी^३। ८। १६६

हे^३(हर्य^३श्व^३)(इन्द्र^३)(सोम^३म्)(पि^३व^३)(सो^३)(अ^३)अमृत^३:(त्वा^३)त्वां^३
(मन्द^३तु^३)मादय^३तु^३(सो^३तुः^३)अभिप^३व^३कर्त्तुः^३(वाहु^३भ्याम्^३)(अ^३र्वा^३)
(न^३)अश्व^३इव^३(सु^३यतः^३)सु^३पु^३परि^३गृही^३तः^३(श्वो^३द्रिः^३)ग्रा^३वा^३(ते^३)त्वद^३
र्थ^३(सोम^३म्)(सुषा^३व^३)॥८॥

भाषार्थः - १ हे हरिनाम अश्वपते २ इन्द्र ३ सोमको ४ पानकरो ५ व
ह ६ अमृत ७ तुमको ८ हर्षित करो ९ अभिपव कर्त्ता की १० भुजाओं से ११
१२ घोड़े की समान १३ ग्रहण किये हुए १४ पापाणने १५ तैरे लिये १६ सोम
को १७ अभिपुत्र किया—॥८॥

अथाध्यात्मम् - हे^३(हर्य^३श्व^३)हरि^३पु^३ब्रह्म^३विष्णु^३महेश^३पु^३मा^३
नस^३सूर्य^३रूप^३(इन्द्र^३)परमेश्वर^३(सोम^३म्)आत्म^३प्रति^३विं^३व^३(पि^३व^३)
(सो^३)(अ^३)अमृत^३रूपः^३(त्वा^३)त्वां^३(मन्द^३तु^३)मादय^३तु^३(सो^३तुः^३)अभि
पव^३कर्त्तु^३र^३आत्मा^३रूप^३यज^३मान^३स्य^३(वाहु^३भ्याम्^३)ग्रह^३ण^३शक्ति^३भ्यां^३
(अ^३र्वा^३)(न^३)अश्व^३इव^३(सु^३यतः^३)निरुद्धः^३(श्वो^३द्रिः^३)ग्रा^३णाः^३। ग्रा^३णा^३वै^३
ग्रा^३वा^३णाः^३ १४। २। २। ३३ (सोम^३)आत्म^३प्रति^३विं^३व^३(सुषा^३व^३)॥८॥

भाषार्थः - १ हे विदेवमें मानस सूर्यरूप २ परमेश्वर ३ आत्मप्रतिविं
को ४ पानकरो ५ वह ६ अमृतरूप ७ तुमको ८ हर्षित करो ९ अभिपव कर्त्ता
आत्मारूपयजमान की १० ग्रहणशक्तियों से ११, १२ घोड़े की समान निरु

छ १४ प्राणान् १५ आत्मप्रतिविंबको १६, अभिपुतकिया ॥ ८ ॥
इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सप्तज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सा
मवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य पंचमः खण्डः ५

अथ षष्ठः खण्डः

सौभरिर्ऋषिः ककुप् छन्द इन्द्रो देवता-

^३अभ्रातृव्यो ^{२३}अना ^३त्वमना ^{२७}पिरिन्द्र ^३जनुषो ^२सनादे
सि। ^३युधे ^३दोषे ^३त्वमिच्छ ^३षे ॥ १ ॥ १६७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (जनुषो) प्रादुर्भावकालात् (सनादे)
चिरादेव (अभ्रातृव्यः) सपत्नरहितः सर्वरूपत्वात् (अना) अने
त्वकः ब्रह्मरूपत्वात् (अनापि) बन्धुवर्जितः । अद्वैतत्वात् (सिसि)
तथापि (युधा) (इत्) कामयुद्धे नैव निमित्तेन (आपित्वं) भ
क्तैः सहवान्धवत्वं (इच्छसे) इच्छसि भक्तवत्सलत्वात् व्य
न्सपत्ने (४।१।१४५) इति व्यन्प्रत्ययः (अना) ऋत छन्द
सि (५।४।१५८) इति कपः प्रतिषेधः ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुम ३ प्रादुर्भावकाल ४ दीर्घकाल से ५ स
र्वरूप होने के कारण शत्रुहीन ६ ब्रह्मरूप होने से अनेता ७ अद्वैत होने से
बंधुरहित ८ होतौभी ९, १० कामयुद्ध के निमित्त ११ भक्तों के बांधवत्व को
१२ चाहते हो ॥ १ ॥ सौभरिर्ऋषि रुषिणा क् छन्द इन्द्रो देवता-

^३योनइदमिदं ^२पुरा ^३प्रवस्य ^{२७}आनि ^३नायत ^२मुवस्तुपो।
सखाय इन्द्र मृतये ॥ २ ॥ १६८

वेदोपदेशः हे (सखायः) भक्ताः (युः) (वस्यः) निवास योग्यः वस
निवासे (पूर्वम्) स्थापित काले (इदम्) (इदम्) इकामस्तस्य दा-

तारमज्ञानं (माणिनाय) प्रकर्षेण नीतवान् कूर्मफलैः (तम्)
 (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उं) एव (वै) युष्माकं (ऊतये) संसाराद्
 क्षणाय (स्तुषे) स्तोमि ॥ २ ॥

भाषार्थः— वेदकहना है १ हेमक्तो २ जिसं ३ निवास योग्य परमेश्वरने
 ४ सृष्टिकालपर ५ इन्द्र ६ अज्ञानको ७ कर्मफलोंके द्वारा प्राप्त कराया उस
 ८ परमेश्वरको ९ ही ११ तुम्हारी १२ संसार संरक्षाके लिये १३ स्तुत करता-
 हूँ ॥ २ ॥ सौभरिर्ऋषिः रुषिणाक् छन्दो मरुतो देवताः

अगन्ता मारि प्रणयत प्रस्था वानो मापे स्यात्स
 मन्यवः । दृढा चिद्यमयिष्णावः ॥ ३ ॥ १६६

हे (प्रस्थावानः) प्रस्थातारः प्रगुन्तारः (मरुतेः) देवाः (आगन्त)
 अस्माना गच्छन्त (मा) (रिषणयत) अना गमने नूनोऽस्मान्मा
 हिंसिषत हे (समन्यवः) समानतेजस्काः (दृढा चित्) दृढान्य
 पिपर्वतादीनि (यमयिष्णावः) नियमयितृ शीलाः । नियमयि
 तारः (मा) (अपस्थात्) अस्मन्नो न्यत्रमा तिष्ठत ॥ ३ ॥

भाषार्थः— १ हे गति शील २ मरुद्गण देवताओ ३ आओ ४, ५ न जाने
 से हमको हिंसित मत करो ६ हे समानतेज वालो ७ दृढपर्वत आदिके भी ८
 नियमन शीलानुम ९, १० हमसे दूर मत जाओ— ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम्— हे (प्रस्थावानः) प्रगुन्तारः (मरुतेः) प्राणाः
 (आगन्त) अन्तरा गच्छन्त (मा) (रिषणयत) समाधित्यागे
 नूनोऽस्मान्मा हिंसिषत हे (समन्यवः) समानतेजस्काः (दृढा
 चित्) दृढानपि कामादीन् (यमयिष्णावः) नियमयितारः (मा)
 (अपस्थात्) समाधेरन्यत्रमा तिष्ठत अस्मा स्वेवा वतिष्ठध्वमि

त्यर्थः ॥३॥

भाषार्थः

१ हे गति शील २ माणो ३ हृदयमें आणो ४ ५ समाधित्याग से हमको हिं
सित मन करो ६ समानते जस्वी ७, ८ दृढ काम आदि को बश में करने वाले
नुम ९, १० हृदय से दूर मन जाओ अर्थात् समाधि स्थिर हो— ॥ ३ ॥

सौभरिर्ऋषिः रुषिणा क्वन्द्वन्दो देवता-

^{१ २ ३ २३} ^{३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३}
आयाह्यामिन्द्वेष्वपते गोपते उर्वरपते। सौ

मैथं सोमपते पिव ॥ ४ ॥ २७०

हे (अश्वपते) अश्वानां स्वामिन् (गोपते) गवां पालयितः (उर्व
रपते) सर्वशस्याह्या भूमि रुर्वरा तस्याः पते हे इन्द्र (इन्द्रदेव)
सोमपानाय (आयाहि) आगच्छ हे (सोमपते) (सोमम्)
(पिव) — ॥ ४ ॥

भाषार्थः

१ हे अश्वपते २ हे गोपालक ३ हे भूमिपते इन्द्र ४ सोमपान के लिये ५ आ
णो ६ हे सोमपते ७ सोमगो ८ पान करो — ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् — हे (अश्वपते) मानस सूर्यस्य स्वामिन्
(गोपते) इन्द्रियाणां पालयितः (उर्वरपते) योगभूमिपते पर-
मेश्वर (इन्द्रदेव) आत्म प्रतिविंब पानाय (आयाहि) अनुभवगो-
चरो भव हे (सोमपते) जीवेश्वर (सोमम्) आत्म प्रतिविंब (पिव)
॥ ४ ॥ भाषार्थः — १ हे मानस सूर्य के स्वामी २ इन्द्रियपालक ३ योग
भूमि के अधिपति परमेश्वर ४ आत्म प्रतिविंब के पानार्थ ५ अनुभवगोचर
हृदिये ६ हे जीवेश्वर ७ आत्म प्रतिविंब को ८ पान करो — ॥ ४ ॥

सौभरिर्ऋषिः रुषिणा क्वन्द्वन्दो देवता-

^{१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३}
त्वया ह्यस्विद्युजावयप्रतिश्वसन्तं वृषभब्रुवी

माहि^३सं^{२१}स्थ^{३२}जन^३स्य^१गौ^३मतः ॥ ५ ॥ १७१

(दृष्यमानं) धर्मार्थकाममोक्षाणां वर्धितः परमेश्वर (गौमतः) इन्द्रिययुक्तस्य (जनस्य) जीवात्मनः (संस्थे) स्थानेशूरीरे (श्वसन्तमं) कामं (युजो) सहायेन (त्वया) (इत्) एव (वयम्) योगिनः (सुसुप्तु) प्रतिब्रुवीमहि प्रतिबचनं कुर्मः ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे चारोंपदार्थकेदाता परमेश्वर २ इन्द्रिययुक्त ३ जीवात्माके ४ स्थानशरीरमें ५ स्वांसलेते कामको ६ ७ तुम्हसहायकके साथ ८ ही देहमयोगी १०, ११ अच्छेउनरदानाहोते हैं ॥ ५ ॥

सौभरिर्ऋषिरुषिणकच्छन्दो मरुतो देवताः

गा^१वो^३श्चि^३ह्वा^३सम^३न्य^३वः^३सं^३जा^३त्ये^३न^३म^३रु^३तः^३सं^३वन्ध^३
वः^३रि^३हते^३क^३कु^३भो^३मि^३थः ॥ ६ ॥ १७२

हे (समन्यवः) समानतेजस्काः (मरुतः) प्राणाः (संजात्येन) समानजातित्वेन (सवन्धवः) समानबन्धुकानि (गावः) इन्द्रियाणि (चित्) अपिमिथः परस्परं (ककुभः) योगभूमोर्दिशः (रिहते) लिहन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ हे समानतेजवाले २ प्राणो ३ समानजन्मा होनेसे ४ समानबन्धुरूप ५ इन्द्रियां ६ भी ७ परस्पर ८ योगभूमि की दिशा को ९ स्पर्शकरती हैं ॥ ६ ॥

द्वयोर्नृमेषः ऋषिरुषिणकच्छन्द इन्द्रो देवता-

त्व^३न्^३इ^३न्द्रो^३भ^३र^३ः^३श्री^३जो^३नृ^३मो^३थं^३श^३त^३क^३तो^३वि^३च^३र्य^३
णो^३। श्रा^३वो^३र^३ह^३त^३नो^३स^३ह^३म् ॥ ७ ॥ १७३

(हे (शतकतो) बहुकर्मन् (विचर्यणो) विशेषदृष्टः परमेश्वर (त्वम्) (नः) अस्मभ्यं (शोजः) योगबलं (नृमोम्) योगधनञ्च (श्री

भर) आहरदेहि (वीरम्) वीर्योपेतं (एतनासहं) असुरसेनानाम-
भिभवितारंत्वां (आ) आह्वयामहे ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे बहुकर्मा २ विशेषदृष्टा परमेश्वर ३ तुम ४ हमारे लिये ५
योगबल ६ शौरयोगधनको ७ दीजिये ८ वीर ९ असुरसेनाके जेतानुमको १०
हम आह्वान करते हैं ॥ ७ ॥ विनियोगः पूर्ववत्.

अधाहीन्द्र गिर्वणा उपत्वा कामेद्महे सस्तुगम
हे उद्वग्मन्त उदभिः ॥ ८ ॥ २७४

(अध) अयहे (अ) सर्वव्यापिन् (गिर्वणाः) गीर्भिर्वननीय (द्वन्द्व
परमेश्वर (कामे) निमित्तं सति (त्वा) त्वां (हि) (द्महे) याच्नाम-
हे नान्यत्वदन्याभावात् (उपसस्तु नामहे) तन्कामाञ्च समीप-
संयोजयामः (इव) यथा (उद्वग्मन्तः) ऊर्ध्वं गच्छन्तः सूर्यादयः
(उदभिः) उदकेः । उपसंयुक्ता भवन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः १ तदनन्तर २ हे सर्वव्यापी ३ वेदवचनोंसे संभजनाय ४ परमे-
श्वर ५ कामनाके निमित्त ६ तुमको ७ ही ८ हमयाचना करते हैं ९ शौरउन-
कामनाओं को प्राप्त करते हैं १० जैसे ११ ऊंचे चलने सूर्य आदि १२ जनोंमेंमें

पुनः पुनः ॥ ८ ॥ द्वयोः सोभारिर्जरीपिरुषिणक चन्द्रद्वन्द्वो देवता-

सोदन्तस्तनवयो यथा गोभ्रान्ते मधो मतिरिवि-
क्षणे । अभित्वा मिन्द्रनानुमः ॥ ९ ॥ २७५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (गोभ्रान्ते) इन्द्रियैर्मिञ्जते (मतिर) मदक-
रे (विविक्षणे) महावाचं वक्तुमिच्छते (ते) त्वदीये (मधा) आत्मम-
तिविवे (वयः) (यथा) प्राज्ञाणा इव (सोदन्तः) निवसन्तो वागा-
द्यान्विजो वयं (त्वाम्) (आभि) आभिमुख्येन (नानुमः) पुनः पुनः

भृशं वास्तुमः ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ इन्द्रियों से मिश्रित ३ मदकर्ता ४ महावाकू कहना चाहते ५ आपके ६ प्रतिविम्बें ७, ८ पक्षी की समान ९ निवास करते वाक् आदि ऋत्विज हम १० तुमको ११ सन्मुख होकर १२ नमस्कार वास्तुतिकरते हैं ॥ ९ ॥ सौभरि ऋषिः ककुप छन्द इन्द्रो देवता-

वयमुत्त्वामपूर्यस्थूरनकाच्चिद्वरन्तोवस्यवः।

वज्रिच्चित्रं हवामहे ॥ १० ॥ १७६

हे (वज्रिन्) ज्ञानवज्रयुक्त (अपूर्य) पूर्वे रक्तसर्वकारणरूपपरमेश्वर (अवस्यवः) रक्षा मात्मनश्च्छन्तः (न) च (त्वाम्) (उ) एव (भरन्तः) हविर्भिः पोषयन्तः (वयम्) (कच्चित्) कच्चित् (स्थूरः) स्थूलं दृष्टिगोचरं (चित्रं) स्वरूपं विष्णवादिकं (हवामहे) आह्वयामः ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानवज्रयुक्त २ सर्वकारणरूपपरमेश्वर ३ अपनी रक्षा चाहते ४ और ५, ६ तुमको ही ७ हविषों से तृप्त करते ८ हम ९ किसी १० स्वरूप ११ स्थूलदृष्टि विषय विष्णु आदिको १२ हम आह्वान करते हैं - ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वाला मसादशर्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य षष्ठखण्डः ॥ ६ ॥

इत्यौषिाहं काकुभम् ॥ अथ सप्तमः खण्डः

गौतम ऋषिः पङ्क्ति छन्दो गौर्यो देवता-

स्वादोरित्थो विष्वतो मेधोः पिवन्ति गौर्यः । या इन्द्रो

था एतयावरी वृषणा मदन्ति शोभस्वीरनुस्वराज्यम् १ (गौर्यः) महापुरुषस्य रश्मयः (इत्थो विष्वतः) इत्थमनेन प्रका

रेण देहे व्याप्तस्य विपुल्व्याप्तौ (स्वादोः) स्वादुभूतस्य (मर्धाः) आ-
 त्मप्रतिविंबस्य (पिवन्ति) पानं कुर्वन्ति (योः) रश्मयः (वृषणा)
 धर्मकामार्थमोक्षाभिवर्षकेण (इन्द्रेण) महापुरुषेण (सथाव-
 रीः) सह गच्छन्त्यः सत्यः (मदन्ति) दृष्टा भवन्ति हे (वस्वीः) योग
 धनवन्त्यः रश्मयः यूयं (स्वराज्यम्) ब्रह्माण्डान्तर्गतं स्वकीयं
 राज्यं (अनु) अनुलस्य (शोभथाः) ॥१॥

भाषार्थः - १ महापुरुषकी किरणों २ इस प्रकार देहमें व्याप्त ३ स्वादुभूत
 ४ आत्मप्रतिविंबका ५ पान करती हैं ६ जो किरणों ७ चारों पदार्थके दाता ८
 महापुरुषके साथ रहती ९ १० हर्षित होती हैं ११ हे योगधनवती किरणोत्तम
 १२ ब्रह्माण्डान्तर्गत निजराज्यको १३ देखकर १४ शोभित होती हो-॥१॥

गोतम ऋषिः ऋग्वेद इन्द्रो देवता-

इत्याहि सोम इन्मेदा ब्रह्मचकार वद्धेनम। शविष्ठवज्रि
 न्नाजसापथिव्यानिःशशा अहिमचन्नुस्वराज्यम् २-१५

(इत्याहि) इत्यमेव। अनेन प्रकारेणैव (सोमः) आत्मप्रतिविंबः
 (इत्) एव (ब्रह्म) महावाचं (मद्वद्धेनम्) अहं ब्रह्मास्मीति मूढ
 वर्द्धनं (उ) एव (चकार) हे (शविष्ठ) अतिशयेन बलवन् (वज्रि)
 ज्ञानवज्रवन् परमेश्वरत्वं (स्वराज्यम्) स्वकीयं राज्यं (अन्वचन्नु)
 प्रशंसयन् (शोजसा) बलेन (अहिम्) आहन्तारं कामं (सापथिव्या)
 मानसभूमेः सकाशात् (निःशशाः) निरगमय शशपुतगतौ ॥२॥

भाषार्थः - १ इस प्रकार से २ आत्मप्रतिविंबने ३ ही ४ महावाक्को ५ मद्व
 दाने वाला ईही ६ किया ७ हे महाबली ८ ज्ञानवज्रधर परमेश्वर तुम ९ नि-
 जराज्यको ११ प्रशंसा करते १२ बलसे १३ पीडक कामको १४ मानसभूमि

से १५ निकालो ॥ २ ॥ गौतमऋषिः पंक्तिश्चन्द्रइन्द्रोदेवता-

^२इन्द्रो^३मदाय^२वा^३वृधे^२शवसे^३वृत्रहा^२नृभिः^३। तामिन्म

^२हस्त्वा^३जिघृति^२मम^३हवामहे^२सवाजेषु^३प्रनोविषत्^२३-१७^३

(वृत्रहा) पापस्यहन्ता (इन्द्रः) परमेश्वरः (मदाय) ज्ञानन्दार्थं (शवसे) योगवलार्यञ्च (नृभिः) यज्ञस्यनेत्रभिर्वीगाद्यत्विजैः (वावृधे) स्तोत्रशस्त्ररूपाभिः स्तुतिभिः प्रवर्द्धितो बभूव (तम्) (ऊतिम्) रक्षास्वरूपं रक्षकं (महत्सु) (आजिषु) उपाधिनां संग्रामेषु (अर्भ) अल्पे कामसंग्रामे (इत्) एव (हवामहे) (स) (वाजेषु) पूर्वोक्तसंग्रामेषु (नः) अस्मान् (प्राविषत्) प्रावतु प्रकर्षणा रक्षतु । अवतेर्लेटि रूपम् ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ पापनाशक २ परमेश्वर ३ ज्ञानन्दवल ४ और योगवल्केलिये ५ यज्ञकेनेतावाक् आदि ऋत्विजोंसे ६ स्तोत्रशस्त्ररूपस्तुतियोंसे वर्धित हुआ ७ उस ८ रक्षास्वरूपरक्षकको ९ उपाधियोंकेसंग्राममें १० कामसंग्राममें ११ ही १२ इस आह्वानकरतेहैं १३ वह १४ पूर्वोक्तसंग्रामोंमें १५

हमको १६ रक्षाकरो - ॥ ३ ॥ गौतमऋषिः पंक्तिश्चन्द्रइन्द्रोदेवता-

^३इन्द्रो^३तुभ्य^३मिदं^३द्विवो^३नुत्तं^३वाजिन्वीर्यम्^३। यद्धृत्य

^३मायिनं^३मृगन्तवत्यन्मायया^३वधी^३स्वन्ननु^३स्वरो

ज्यम् ॥ ३ ॥ १८०

हे (आद्विवः) आद्विवन् प्राणवन् (वाजिने) ज्ञानवन्वन् (इन्द्र) आत्मारूपयज्ञमान (त्यत्) (अनुत्तं) शत्रुभिरतिरक्तं (वीर्यम्) योगवलं (तुभ्यम्) (इत्) एव (यद्ध) यस्मादेव (वृत्रम्) पापं (मायया) संसारस्थमिध्यात्बुद्ध्या (अवधीः) हतवानसि (तव)

१४ (त्यत्) तत् (स्वराज्यम्) आत्मराज्यं (अन्वर्चन्) विद्वांसः ॥ ४ ॥
 भाषार्थः - १ हे प्राणवान् २ ज्ञानवज्रधर ३ आत्मारूपयजमान ४ वह-
 ५ शत्रुओं से अनिरसकृत ६ योगवल ७, ८ तेरे ही लिये है ९ जिसके द्वारा ही
 १० पापको ११ संसारके मिथ्यात्व बुद्धि द्वारा १२ नाश किया १३ तेरे १४ उस
 १५ आत्मराज्यको १६ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ४ ॥

गोतमऋषिः पंक्तिश्छन्दोद्भूतो देवता-

प्रेह्य^३भीहि^१ धृष्ण^३हि^३ नते^३ वज्रो^३ नियं^३ सते^३ । इन्द्रे^३ नृ^३
 मां^३ थं^३ हिने^३ शवो^३ हनो^३ वृत्र^३ ज्ञया^३ अपा^३ च^३ न्ननु^३ स्व-
 राज्यम् ॥ ५ ॥ - १८२

हे (इन्द्र) आत्मारूपयजमान (प्रेहि) प्रकर्षणा गच्छ (अभीहि)
 कामादीन् शत्रून् आभिमुरख्येन प्राप्नुहि (धृष्णहि) तानभिभव-
 (ते) तव (वज्रो) ज्ञानवज्रः (न) (नियंसते) कामादिभिः ननिय-
 म्यते अप्रतिहतगतिरित्यर्थः (ते) तव (शवो) योगवलं (नृमा-
 म्) नृणां नेत्राणामिन्द्रियाणां नामकं । अभिभावकं (हि) य-
 स्मादेवं तस्मात् (वृत्रम्) पापं (हनो) जहि (अपः) कमलान्तरि-
 क्षाणि (जयोः) जयतव (स्वराज्यम्) आत्मराज्यं (अन्वर्चन्)
 विद्वांसः ॥ ५ ॥ भाषार्थः

१ हे आत्मारूपयजमान २ चलो ३ कामादि शत्रुके सन्मुख हो ४ उनको जी-
 तो ५ तेरा ६ ज्ञानवज्र ७, ८ नहीं रूकता है ९ तेरा १० योगवल ११ इन्द्रियों का
 वशमें करने वाला है १२ उसी कारण १३ पापको १४ मारो १५ कमलान्तरि-
 क्षोंको १६ जीतो १७ तेरे आत्मराज्यको १८ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ५ ॥

द्वितीयोर्थः

हे (इन्द्र) (मेहि) प्रकर्षेण गच्छ (अभीहि) हन्तव्यान् शत्रून्
 आभिमुख्येन प्राञ्चहि प्राप्य च (धृषाहि) अभिभव (ते) तव (व
 ज्रः) (न) (नियंसते) शत्रुभिः न नियम्यते (ते) तव (शवः) वलं
 (नृणाम्) नृणां पुरुषाणां नामकं अभिभावकं (हि) यस्मादे-
 वंतस्मात् (वृत्रम्) मेघम् (हनः) जहि (अपः) उदकानि (जयां)
 जयतव (स्वराज्यं) (अन्वर्चन्) विद्वांसः ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ चलो ३ मारण योग्य शत्रुओं को सम्मुखमा-
 स करो ४ उनको जीतो ५ तेरा ६ वज्र ७, ८ शत्रुओं से नहीं रोका जाता है ९
 तेरा १० बल ११ माणियों को जय करने वाला है १२ उसी कारण १३ मेघ को
 १४ वर्षा के लिये ताड़न करो १५ जलों को १६ बरसाओ १७ आपके निज-
 राज्य को १८ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ५ ॥

गोतमऋषिः पंक्तिश्चन्द्र इन्द्रो देवता-

यददीरत आजयो धृषावे धीयते धनम् । युद्ध्वा
 मदच्युता हरी कं हनः कन्वसौ दधोस्मां
 इन्द्र वसौ दधः ॥ ६ ॥ १८२

(यद्) यदा (आजयः) काम सङ्गामाः (उदीरते) उद्गच्छन्निउत्प-
 द्यन्ते तदानीं (धनम्) योगधनं योगैश्वर्यं (धृषावे) कामजे च
 (धीयते) निधीयते हे (इन्द्र) आत्मा रूप यजमान (मदच्युता)
 कामादीनां गर्वस्य च्यावयितारौ (हरी) जीवेशौ (आयुद्ध्वा)
 योजय (कम्) कामं (हनः) हन्याः (कम्) स्वात्मानं (वसौ)
 योगधने (दधः) स्थापय (अस्मान्) त्रागाद्यत्विजः (वसौ) यो-
 गधने (दधः) स्थापय ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ जव २ कामसंग्राम ३ प्राप्तहोता हैतमी ४ योगैश्वर्य ५ कामजयी के लिये ६ नियत किया जाता है ७ हे आत्मा रूपयजमान ८ का मादिगर्वदूर करने वाले ९ जीवईश्वर का १० संयोग करो ११ कामको १२ मारो १३ अपने आत्मा को १४ योगधनमें १५ स्थापन करो १६ हमवाक् आदि ऋत्विजों को १७ योगधनमें १८ स्थापन करो - ॥ ६ ॥

गोतम ऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

^{२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ ३}
 अक्षन्मीमदन्तह्यवप्रिया अधूषत । अस्तोष-
^{२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३}
 तस्वभानवा विभानविष्टयामती योजान्विन्द-
^{१ २}
 ते हरी ॥ ७ ॥ १८ ३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (हिं) यस्मान् (स्वभानवः) आत्मांशुरूपाः
 (विषाः) वागाद्यत्विजः (अक्षन्) भुक्तवन्तः (अमीमदन्त) तस्मा
 आसन् (प्रियाः) (तन्) अङ्गानि (अवाधूषत) त्वन्निर्हर्षेणाकम्प
 यन् (नविष्टया) अनिशयेन संस्कृतया (मती) मत्यास्तुत्या (अ-
 स्तोषत) अस्तुवन्तस्मान् (ते) त्वदीयौ (हरी) किरणौ जीवेशौ
 (नु) क्षिप्रं (योज) स्वात्मनि योजय ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जिस कारण ३ आत्मांशुरूप ४ मेधावी
 वाक् आदि ऋत्विजों ने ५ भगवत्प्रसादरूप भोगोंको भोगा ६ त्वत्प्रद ७-
 ८ प्रिय संगोंको ९ त्वन्निर्हर्षसे कंपित किया १० अनिशय संस्कृत ११ स्तुति
 से १२ स्तुत किया उस कारण १३ अपनी १४ किरण जीवईश्वरको १५ शी-
 घ १६ अपने आत्मा में संयुक्त करो ॥ ७ ॥

गोतम ऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता

^{३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३}
 उपाषु ऋणुही गिरो मधवन्मातया इव । कदी-

तेपनीयसीसमिद्धीदयतिद्यवीपथं स्तोत्रभ्य

आभर ॥ १ ॥ १८७

हे (देव) माया^१ क्रीडन^२ कैः क्रीडन^३ शील (आग्ने) आत्मा-
 ग्ने (ते) तव (द्युमन्तुम्) दीप्ति मन्तं (अजरं) जरा रहितस्वरूपं-
 (आ) सर्वतः (इधीमाहि) दीपयामः (यद्ध) यत् खलु (ते) त्वदी-
 या (पनीयसी) स्तुत्यर्हा (समिद्ध) प्राणरूपा । प्राणवै समि-
 धः शु० १।५।४।१ (स्था) सा । यकारो योगवाचकः (द्यवि) हृदये
 (दीदयति) दीप्यते (स्तोत्रभ्यः) (इषम्) विराड् रूपान्नं (आभर)
 आहर देहि ॥ १ ॥ १८७

भाषार्थः - १ हे माया के खिलोनों से क्रीडन शील २ आत्माग्ने ३ ते

रे ४ दीप्यमान ५ निर्जरा मररूपको ६ सब ओर से ७ हम दीप्त करते हैं ८
 निम्नय जो ईतेरी ९ स्तुतियोग्य १० वह ११ प्राण रूप समिध १२ हृदय
 में १३ प्रज्वलित है आप १४ स्तोताओं के लिये १५ विराट् रूप अन्न को
 १६ दीजिये ॥ १ ॥ १८७ विमदत्रयिः पंक्तिश्चन्द्रोभिर्देवता-

आग्निं स्ववृत्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे । शौरं
 म्पावकं शोचिषं विवा मदे यज्ञेषु स्तीर्णं वहिषं
 विवक्षसे ॥ २ ॥ १८८

(होतारम्) महापुरुषपुरुषाणा माह्वतारं (शीरम्) इन्द्रियेषु नु-
 शायिनं (पावकं शोचिषम्) शोधक दीप्तिं (न) च (यज्ञेषु) योग
 यज्ञेषु (स्तीर्णं वहिषं) आसादितसुषुम्नं (आग्निम्) आत्माग्निं (त्वा)
 त्वां (स्ववृत्तिभिः) आत्मप्रकाशकभिः स्तुतिभिः (वृणीमहे) संभ-
 जामहे (विमदे) विगतमदे सति (वक्षसे) वक्षस्थलाय (विवः)

प्रादुर्भव ॥ - २ ॥

भाषार्थः

१ महापुरुष पुरुषों के आह्वाता २ इन्द्रियो में अन्नशायी ३ शोधक दीप्तिवा
ले ४ और ५ योग यज्ञों में ६ सुपुत्रा को प्राप्त करने वाले ७, ८ तुम्हारे आत्मामि
कोर्ट आत्मिककाशक स्तुतियों के द्वारा १० हम भजते हैं ११ हे आत्मा मे मद्
के विगत होने पर १२ वसुस्थल के लिये १३ प्रकट हुईये ॥ २ ॥

सत्यम्नवा ऋषिः पंक्तिश्छन्द उपादेवता-

महे^३ना^२ अद्य^३वा^३धयो^३षो^३राय^३दिवि^३त्मनी^३ । यथा^३चि^३न्ना^३
अ^३वा^३धयः^३ सत्य^३म्नव^३सि^३वाय्य^३सुजा^३त^३अ^३श्व^३सूनु^३ते^३ ३-१८
हे^३सुजा^३ते^३ (अ^३श्व^३सूनु^३ते^३) आदित्य^३भार्ये^३ (उपे^३) उषा^३देवि^३ (यथा^३
चित्^३) यथैव^३ (चाय्ये^३) गति^३शीले^३ । वय^३गतौ^३ (सत्य^३म्नव^३सि^३) सत्य-
कीर्ति^३वति^३देहे^३ (नः^३) अस्मान्^३ (अ^३वा^३धयः^३) तथैव^३ (अद्य^३) (दिवि-
त्मनी^३) दीप्ति^३मती^३त्वं^३ (नः^३) अस्मान्^३ (महे^३) महापुरुषो^३त्सवाय^३ (रा-
ये^३) योगधनाय^३ (वोधय^३) ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे सुजन्मा २ आदित्यभार्या ३ उषादेवि ४ जैसे ५ गति
शील ६ सत्यकीर्ति मान देह में ७ हमको ८ जगाया ९ उसी प्रकार १०
दीप्ति मती तुम ११ हमको १२ महापुरुषोत्सव १३ और योगधन के लिये

१४ जगाओ - ॥ ३ ॥ विमदऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

भद्र^३न्ना^३ अपि^३वा^३तय^३मना^३दक्ष^३मुत^३क्रतु^३म् । अथा^३तस^३
ख्य^३अ^३न्ध^३सा^३विवा^३मद^३रणा^३ गावा^३नय^३वु^३सि^३वि^३वसु^३से^३ ४-१८
(अ^३) हे^३परमे^३श्वर^३ (भद्रम्^३) कल्याण^३रूपं^३ (मने^३) (दक्षम्^३) जीवा
त्मानं^३ (उत^३) अपि^३च^३ (क्रतु^३) ज्ञानं^३ (अपि^३) (नः^३) अस्मभ्यं^३ वा-
गाद्य^३त्विग्भ्यः^३ (वातय^३) प्रापय^३ (अथ^३) अनन्तरं^३ वागाद्य^३त्विजः^३

(अन्धसः) आत्मप्रतिविम्ब रूप सोमात् (ते) (मदे) सति (ते) तव-
 (मन्व्ये) (विराणोः) विशेष प्रीति युक्ता भवन्तु (ने) यथा (गावः)
 (यवसे) घासेत्वञ्च (वक्षसे) वक्षः स्थलाय (विवः) प्रादुर्भव ॥ ४

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २, ३ कल्याण रूप मन ४ जीवात्मा ५ और ६ ज्ञान
 नको ७ भी ८ हम वाक् आदि ऋत्विजों के लिये ९ प्राप्त कराओ १० तदनन्तर
 वाक् आदि ऋत्विज ११ आत्मप्रतिविम्बरूप सोमसे १२ आपका १३ मदहो
 ने पर १४ तेरी १५ भक्तिमें १६ विशेष प्रीति युक्त हों १७ जैसे १८ गौ १९ घा
 सके लिये और आप २० वक्षस्थल के लिये २१ प्रकट हूजिये ॥ ४ ॥

गीतमन्त्रः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवना-

क्रत्वामहा^१ अनुष्व^२ धभीम^३ आवा^४ वृते^५ शवः^६ श्रिय^७
 ऋष्व^८ उपा^९ कयो^{१०} निशि^{११} पीह^{१२} रिवा^{१३} दध^{१४} हस्ते^{१५} यो^{१६} वञ्च^{१७}
 माय^{१८} सम^{१९} ॥ ५ ॥ २९ ॥

(क्रत्वा) अवतार सम्बन्धिकर्मणा (भीमः) असुराणां भयंकरः
 (महान्) महापुरुषः (अनुष्वधं) आत्मप्रतिविम्बलक्षणस्याच्च
 स्थपाने सति (शवः) योगवलं (आवावृते) आभिमुख्येन प्रवर्त
 यत् (ऋष्वः) महान् (शिपी) साकारः (हरिवान्) विष्णुस्वरू
 पोभूत्वा (उपाकयोः) समीपवर्तिनोः नि० २। १६ (हस्तेयोः) आ
 त्मारूपयजमानस्य वाहोः (आयसम्) अचलं। अयः गमने।
 (वञ्चम्) ज्ञान वञ्च (श्रिये) योगलक्ष्म्यर्थ (निदधे) निदधा
 ति स्थापयति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ अवतार सम्बन्धी कर्मसे २ असुरों का भयंकर ३ महापु
 रूप ४ आत्मप्रतिविम्बरूप अन्न का पान होने पर ५ योगवल को ६ देता है ७

८ वह महासाकार ९ विष्णु स्वरूप हो कर १० समीपवर्ती ११ आत्मा रूप यजमान की भुजाओं में १२ अचल १३ ज्ञान वज्र को १४ योग लक्ष्मी को लिये १५ स्थापन करता है ॥ ५ ॥ गोमन्त्रापिः पंक्तिश्छन्दो बुन्दो देवता-

सघान्तृषाणं रथमधिनिष्ठाति गोविदमयः
पात्रं हारियोजनम् पूर्णमिन्द्रोचिकेतनियो
जान्विन्दते हरी ॥ ६ ॥ १६२

(सः) यजमानः (घो) मेधया (तम्) (दृषाणं) ज्ञानाभि वर्षकं (गो विदं) महावाचां लम्भयितारं (रथम्) वेद रूपं रथं (आधिनिष्ठाति) अधिनिष्ठति । अकारो ऽ ध्यात्म ज्ञापकः (यः) रथः (हारियोजनम्) छन्दो मयं । छन्दां सुवैहारियोजनः शा० ४।४।२।२। (पूर्णं) (पात्रम्) (आचिकेतानि) ज्ञापयति हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीयौ (हरी) किरणौ जीवेशौ (नु) क्षिप्रं (योज) योजय ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ वह यजमान २ बुद्धि द्वारा ३ उस ४ ज्ञान दृष्टि कर्ता ५ महावाकों के प्रापक ६ वेद रूप रथ में ७ सवार होना है ८ जो वेद रूप रथ ९ छन्दो मय १० ११ पूर्ण पात्र को १२ जनलाना है १३ हे परमेश्वर १४ अपने १५ किरण रूप जीव ईश्वर को १६ शीघ्र ७ संयुक्त करो ॥ ६ ॥

वसुश्चतुष्टपिः पंक्तिश्छन्दोग्निर्देवता-

अग्निमन्यया वसुरस्तययन्ति धेनवः । अस्तम
यवन्त आशवास्तानित्यासो वाजिन इपं स्तो
तृभ्य आभर ॥ ७ ॥ — १६३

(तम्) (अग्निम्) आत्माग्निं (मन्ये) स्तोमि (यः) (वसुः) ब्राह्मर-

शिमरूपः (यम्) ^६ (अंस्तम्) ^७ गृहरूपं (घेनवः) ^८ इन्द्रियाणि (यन्ति) ^९
 गच्छन्ति (आशवः) ^{१०} शीघ्रगामिनः (अर्वन्तः) ^{११} प्राणाः यं (अस्तं) ^{१२}
 गृहरूपं गच्छन्ति (नित्यासः) ^{१३} (वाजिनः) ^{१४} मानससूर्याः यं (अस्तं) ^{१५}
 गृहरूपं गच्छन्ति हे आत्माग्ने (इषम्) ^{१६} विराड् रूपान्नं (स्तोत्-
 म्यः) ^{१७} अस्मभ्यम् (आभर) ^{१८} आहर देहि ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ उ स २ आत्माग्नि को ३ स्तुत करता हं ४ जो ५ ब्राह्मर-
 शिमरूप है ६ जिस ७ गृहरूप आत्माग्नि को ८ इन्द्रियां ९ प्राप्त करती हैं १०
 शीघ्र गामी ११ प्राण १२ जिस गृहरूपको प्राप्त करते हैं १३ नित्य १४ मान
 ससूर्य १५ जिस गृहरूपको प्राप्त करते हैं हे आत्माग्ने १६ विराड् रूप अन्न-
 को १७ हम स्तोनाओंके लिये १८ दीजिये ॥ ७ ॥

अहो मुग्धामदेव्य ऋषि रूपि विराट् वहनी ब्रह्मो मित्राद्या देवताः

^{२३} नतमै ^२ थं ^३ हान ^३ दुरित ^३ देवासो ^३ अष्ट ^३ मर्त्यम् । सजोषसो

^१ यमयमा ^३ मित्रा ^३ नुयति ^३ वरुणा ^३ अति ^३ द्विषः ॥ ८ ॥ १८ ॥ ४

हे (देवासः) ^१ विद्वांसः (तम्) ^२ (मर्त्यम्) ^३ मनुष्यं (अहः) ^४ पापं (न) ^५ च
 (दुरितं) ^६ तत्फलरूपं (न) ^७ (आष्ट) ^८ नव्याप्नोति नि० २। २८ (यम्) ^९
 (सजोषसः) ^{१०} सद्गताः (अयमा) ^{११} मनः (मित्रः) ^{१२} प्राणाः (वरुणाः) ^{१३}
 अपानः (द्विषः) ^{१४} द्वेषन् कामादीन् (अति) ^{१५} अतिक्रम्य (नयति) ^{१६}
 आत्मनि प्रापयन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः - अहो विद्वानो २ उ स ३ मनुष्यको ४ पाप ५ और ६ पापफल
 ७ नहीं ८ व्याप्त करते हैं ९ जिसको १० मिले हुए ११ मन १२ प्राण १३ अपा-
 न १४ द्वेष कांम आदि को १५ अतिक्रमण कर १६ आत्मा में प्राप्त करते हैं ८
 इति श्रीभृगुवंशो वतंस श्रीनाथूरामसूनु ज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते सा

मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्याष्टमः खण्डः ॥ ८ ॥

अथ नवमः खण्डः

आद्यानां षण्णां ऋणा - असदस्यू सहिता वृषी द्विषदा पंक्तिश्छन्दः सोमो दे

वता-

पवमानो देवता तत्रादि द्विपदा

परिप्रधन्वेन्द्राय सोमस्वादुभिर्त्राय पूषा भुगाय १-२६५

हे (सोम) आत्मप्रतिविंव (स्वादुः) स्वादुरसस्त्वं (इन्द्राय) महा
पुरुषाय (पूषो) विष्णावे (भुगाय) सूर्याय (परिप्रधन्व) परितः
कमलरूप पात्रेषु प्रक्षर ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंव २ स्वादुरसरूप तुम ३ महापुरुष ४ विष्णु
५ श्वोरसूर्यकेलिये ६ सब श्वोरसे कमलरूपपात्रों में गिरो ॥ १ ॥

त्रिपदा अणुपुपिपीलिक मध्या सोमो देवता-

पर्युषु प्रधन्व वाजसातये परिष्ट्राणि सक्षाणि

द्विषस्तरध्या ऋणायानुईरसे ॥ २ ॥ १६६

हे (सोम) आत्मप्रतिविंव (सुवाजसातये) सुष्ट्राणोन्द्रियरूप
न्नानां दानाय (परिप्रधन्व) परितः प्रगच्छ (सक्षाणि) सहन
शीलस्त्वं (वृत्राणि) पापानि (उ) एव (परि) परिगच्छ (नः) अ-
स्माकं वागाद्यन्विजां (ऋणाय) ऋणानां यापयिता विनाश
यितात्वं (द्विषः) द्वेषन् कामादीन् (तरध्या) तरीतुं हन्तुं (ईरसे)
परिगच्छसि ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंव २ आणुन्द्रियरूप अन्नोके दानार्थ
३ सब श्वोरसे चलो ४ सहनशील तुम ५ पापोंपर ६ ही ७ धावा करे ८ हमवा
रुआदि ऋन्विजां के ९ ऋणानाशक तुम १० द्वेषाकाम आदिके ११ नारने

को १२ धावा करते हैं ॥ २ ॥ द्विपदापंक्तिश्छन्दः सोमो देवता-
^{१ २} ^{३ ४} ^{५ ६} ^{७ ८} ^{९ १०} ^{११ १२} ^{१३ १४} ^{१५ १६} ^{१७ १८} ^{१९ २०}
 पवस्व सोम महत्समुद्रः पिता देवानां विश्वा
^{२१} ^{२२}
 भिधाम ॥ ३ ॥ १६७

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (महान्) समाधिभावापन्नः (देवानाम्)
 इन्द्रियाणां (पिता) (समुद्रः) मनोरूपस्त्वं (विश्वा) विश्वानि स-
 र्वीणि (धाम) धामानि कमलानि (अभिपवस्व) अभिगच्छ ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ समाधिभावापन्न ३ इन्द्रियों को ४
 पिता ५ मनरूपतुम ६ सब ७ कमलों को ८ सन्मुख प्राप्त करो ॥ ३ ॥

विनियोगः पूर्ववत् -

^{१ २} ^{३ ४ ५} ^{६ ७} ^{८ ९} ^{१० ११} ^{१२ १३} ^{१४ १५} ^{१६ १७}
 पवस्व सोम महद्दक्षायोश्वा ननित्तो वाजीध-
^{१८} ^{१९}
 नाय ॥ ४ ॥ - १६८

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (नित्तः) देहाभिमानेन लज्जितः (श्वे-
 तः) इव (वाजी) वेगवानूत्वं (महे) महापुरुषस्योत्सवाय (द-
 क्षाय) योगवलाय (धनाय) (योगधनाय (पवस्व) गच्छ ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ देहाभिमान से लज्जित ३, ४, ५ घोड़े
 की तुल्य वेगवान तुम ६ महापुरुषोत्सव ७ योगवला ८ और योगधनके लि-
 ये ९ ऊपर को चलो - ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत् -

^{१ २} ^{३ ४} ^{५ ६} ^{७ ८} ^{९ १०} ^{११ १२} ^{१३ १४} ^{१५ १६}
 इन्दुः पविष्ठ चारु मृदायापोमुपस्थे कविभगाय ४-
^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०}
 चारुः कल्याणरूपः (कविः) मेधावी (इन्दुः) आत्मप्रतिविंबः

(अंषाम्) कमलान्तरिक्षाणां (उपस्थे) (मृदाय) अहं ब्रह्मास्मी
 ति मृदार्थं (भगाय) योगैश्वर्याय (पविष्ठ) पवने गच्छति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ कल्याणरूप २ मेधावी ३ आत्मप्रतिविंब ४ कमलान्त

न करने वाले होते हैं ॥७॥ पदपंक्ति रामेयी वामदेवऋषिः

अग्नेतमृद्याश्वन्स्तोमैः क्रतुन्नभद्रं हृदिस्पृ

शम्। ऋध्यामान शोहैः ॥ ८ ॥ २०२

(अतः) हे (अग्ने) आत्माग्ने (अद्य) (तम्) (अश्वं) (न) सूर्यरूप
पं (कुतं) (न) भूतात्मरूपं (भद्रम्) अन्तर्यामी रूपं (हृदिस्पृ-
शम्) हृदये वर्तमानं त्वां (शोहैः) ऊहगानीयैः (स्तोमैः) स्तो-
त्रसमूहैः (ऋध्यामे) समर्द्धयामः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ इसकारण २ हे आत्माग्ने ३ अश्व ४ उस ५, ६ सूर्यरूप ७, ८
भूतात्मारूप ९ अन्तर्यामीरूप १० हृदयमें वर्तमान तुम्हको ११ ऊहगानों-
१२ और स्तोत्रसमूहों से १३ हम बढ़ाते हैं - ॥ ८ ॥

पुरउषिणक्छन्दोऽर्वन्तो देवताः

आविर्मया आवाजं वाजिनो अगमन्देवस्य सवि

तुः सवम् स्वर्गं अर्वन्तो जयत ॥ ९ ॥ २०३

(मर्या) मरणधर्मा माया (आविः) प्रकटीभूता (वाजम्) विराट्
रूपान्नं (आ) प्रकटीभूतं (वाजिनः) इन्द्रियात्म प्रतिविंवाः (स-
वितुः) (देवस्य) प्रेरकस्य परमेश्वरस्य (सवम्) योगयज्ञं (अगम-
न्) अगमन्हे (अर्वन्तः) प्राणाः (स्वर्गम्) भृकुटिचक्रं (जयते)

भाषार्थः - १ मरणधर्मा माया २ प्रकट हुई ३ विराट् रूप अन्न ४ प्रक-
ट हुआ ५ आत्मप्रतिविंवा सहित इन्द्रियों ने ६ प्रेरक ७ ज्योतिस्वरूप पर-
मेश्वरके ८ योगयज्ञ को ९ प्राप्त किया १० हे प्राणो ११ भृकुटिचक्रको १२ ज-
यकरो - ॥ ९ ॥ ऐश्वरयोषिषायाऋषयः। द्विपदा छन्दः सोमो देवता-

पवस्व सोमद्युम्नी सुधारो महां अवीना मनु

पूर्व्यः ॥२०॥२०४

हे^१(सोम^२) आत्मप्रतिविं^३व (द्यु^४न्नी) यशस्वी^५ (सुधार^६) अमृतस्य^७
दाता^८ (पूर्व्यः) पुरातनः^९ (महान्) समाष्टिभावं^{१०} प्राप्तस्त्वं^{११} (अवी^{१२}नी
म्) कमलस्थ^{१३} सूर्याणां^{१४} (अनु) समीपे^{१५} (पवस्त्वं) गच्छ ॥२०॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविं २ यशस्वी ३ अमृतका दाता ४ पुरा-
तन ५ समाष्टिभावापन्नतुम ६ कमलस्थ सूर्योके ७ समीप चलो-२०॥
इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सनु ज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सा-
मवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य नवमः खण्डः ६

इति पञ्चमस्यार्धः प्रपाठकः

अथ दशमः खण्डः

द्विपदा छन्द इन्द्रो देवता-

विश्वतो^१ दावन्विश्वतो^२ न आभर^३ यत्वा^४ शविष्टः^५
मीमहे ॥२॥२०५

हे^१ (विश्वतो दावन्) सर्वतोदानवन् परमेश्वर^२ (विश्वतः) सर्वतः^३
(नः) अस्मभ्यं^४ (आभर) आहरुदेहि^५ (यम्) (शविष्टम्) अतिशये
नवलवन्तं^६ (त्वा) त्वांपति^७ (इमहे) अभीष्टं यान्चा महे ॥२॥

भाषार्थः - १ हे सवशोर सेदाना परमेश्वर २ सवशोरसे ३ हमको ४ दे
५ जिस ६ महावली ७ तुमसे ८ हम अभीष्टको मांगते है - ॥२॥

विनियोगः पूर्ववत्

एष^१ ब्रह्माय^२ ऋत्विष्य^३ इन्द्रो नाम^४ श्रुतो^५ गृणो ॥२-२०६

(ऋत्विष्यः) स्पष्टिसमये प्रादुर्भूतः^६ (यः) (इन्द्रः) परमेश्वरः^७ (ना
मश्रुतः) नाम्ना विश्रुतः^८ (एषः) (ब्रह्मा) तमहं^९ (गृणो) स्तोमि ॥२

भाषार्थः - १ स्तुति समयमें आदुर्भूत २ जो ३ परमेश्वर ४ नामसे विख्यात हुआ ५ यह ६ ब्रह्माहें में उसकी ७ स्तुति करता हू ॥ २ ॥

त्रसदस्युः ऋषिर्द्विपदा छन्दो देवता-

ब्रह्माणा इन्द्रं महं यन्तो अर्केरवर्द्धयन् हयह
न्तवाउ ॥ ३ ॥ २०७

(अहये) (हन्तवै) पापस्य नाशाय (अर्केः) मानससूर्यः (महं यन्तः) पूजयन्तः (ब्रह्माणाः) योगिनः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अवर्द्धयन्) ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १, २ पापनाशकके लिये ३ मानससूर्योसे ४ पूजने ५ योगियोंने ६ परमेश्वरको ७ बढ़ाया - ॥ ३ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

अनवस्तरथमश्वायतक्षुस्त्वष्टावज्रम्पुरुहुत
द्युमन्तम् ॥ ४ ॥ २०८

हे (पुरुहुत) बहुभिराहुत परमेश्वर (ऋभवः) मानससूर्यरश्मिरूपाः नि० ११।१६ (अनवः) वागाद्युत्विजुः (तेष्वदीयाय अश्वाय) मानससूर्याय श० (रथम्) योगरथं (तक्षुः) कृतवन्तः तक्षतनूकरणो (त्वष्टा) अन्तर्यामीत्वं (द्युमन्तम्) दीप्तिमन् (वज्रम्) ज्ञानवज्रं दत्तवानसि ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे बहुवहुतसे आहुत परमेश्वर २ मानससूर्यकी किरणरूप ३ चाकू आदि ऋत्विजोंने ४ तुम्ह ५ मानससूर्यके लिये ६ योगरथको ७ बनाया ८ अन्तर्यामीतुमने ९ दीप्तिमान १० ज्ञानवज्रको दिया ॥ ४ ॥

द्विपदापंक्तिश्छन्दोऽत्रतो देवता-

शम्पदमद्यथरयीषिणानकाममव्रतो हिनोति

^२नस्पृशद्वि^३यिम् ॥ ५ ॥ — २०६

(रथीपिणः) रथिंधनं हविर्नक्ष्णं प्रेषयन्तो जनाः (शम्) सुखं
(मघम्) धनं योगधनम्वा (पदम्) परंपदं लभन्ते इति शेषः (अत्रे
तः) उभयव्रत रहितः पुरुषः (न) (हिनोति) न प्राप्नोति (कामम्)
अभीष्टं (रथिम्) धनं (न) (स्पृशत्) न स्पृशति ॥ ५ ॥ २०६

भाषार्यः १ हविः अर्पण करने वाले भक्त २ सुख ३ धन वा योगधन ४ औ
परंपद को प्राप्त करते हैं ५ दोनों व्रत से रहित पुरुष ६ नहीं ७ पाता है ८ अभी
ष्ट धन को १० नहीं ११ पाता है — ॥ ५ ॥ २०६

द्विपदा पंक्तिश्रुन्दो विश्वेदेवा देवता.

^२सदा^३गावः^३भुच^३यो^३विश्व^३धायसः^३सदा^३देवा^३श्रै^३
पसः ॥ ६ ॥ २१० ॥

(गावः) वेदवाचः नि० १। ११। ४ (सदा) (भुचयः) पवित्राः (विश्व-
धायसः) विश्वधारकान् वत्यः (देवाः) तासां देवाः (सदा) (श्रैप
सः) निष्पापाः शुद्धाः ॥ ६ ॥ २१० ॥

भाषार्यः - १ वेदवाणी २ सदा ३ पवित्र ४ श्रैर विश्व धारक अन्नवती
हैं ५ उनके देवता ६ सदा ७ निष्पाप शुद्ध है — ॥ ६ ॥ २१०

सम्पात ऋषि द्विपदा पंक्तिश्रुन्दो इन्द्रो देवता-

^१आयाहि^३वन^३सासह^३गावः^३सचन्त^३वर्त्तिन^३यदु^३धाभिः^३

हे परमेश्वर (वनसा) रश्मिना तेजसा (सह) (आयाहि) आगच्छ
(यत्) यस्मात् (गावः) गोरूपा वेदवाचः (ऊर्धाभिः) स्वधा स्वाहा-
दिभिः (वर्त्तिन) यज्ञमार्गं (सचन्त) पचपेचने। यथां श्रुतिः वा
चंधेनुमुपासीत तस्याश्रुत्वारस्तनाः स्वाहा कारो वपद्गारो हन्त

कारः स्वधाकारस्तस्यैद्वौस्तनौ देवा उपजीवन्ति स्वाहाकारं च
 षट्कारं च हन्तकारं मनुष्याः स्वधाकारं पितरस्तस्याः प्राणः ऋषभो
 मनोवृत्तः श० १४।८।१२-॥७॥

भाषार्थः - हे परमेश्वर १ तेजस्वी तुम ३ आसो ४ जिस कारण ५
 गौरूपवेदवचनों ने ६ स्वधास्वाहा आदि स्तनों के द्वारा ७ यज्ञमार्ग को ८ सी
 चा ॥७॥

सम्पातः ऋषिर्दिपदापंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-
^{१ २ ३ १२ २२} उपप्रक्षेमधुमतिक्षियन्तः ^{३ ३ ३ १ ३ ३ ३ १ २} पुष्येमरयेन्धीमहे

त इन्द्र ॥ ८ ॥ २१२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीये (मधुमति) ज्ञानान्विते श० १४।
 ५।५।१६ (क्षे) योगक्षेत्रे (उपक्षियन्तः) उपवसन्नो वयं (रयिमे)
 योगधनं (प्रपुष्येम) प्रपोषयेम किञ्चत्वां (धीमहे) अनुध्यायेम

भाषार्थः - हे परमेश्वर २ आपके ३ ज्ञानान्वित ४ योग क्षेत्रमें ५
 वास करते हम ६ योगधनको ७ पुष्ट करें और तुमको ८ ध्यान करें ॥ ८ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

^{१ ३ ३ ३ ३ १ ३ ३ २ ३ ३ ३ ३ ३ ३} अर्चन्त्यके मरुतः स्वकी आस्तो भति श्रुतो यु
^{३ १ ३ २} वास इन्द्रः ॥ ९ ॥ - २१३

यदा (स्वकीः) शोभनान्नाः नि० ५।४ (मरुतः) प्राणाः (अर्कमे)
 अर्चनीयं परमेश्वरं (अर्चन्ति) आत्मप्रतिविंबहविषा पूजयन्ति
 तदा (सः) (युवा) अजरामरः (श्रुतः) विख्यातः (इन्द्रः) परमेश्वरः
 (आस्तो भति) तेषां शत्रून् कामादीन् समन्तात् हि नास्ति ॥ ९ ॥

भाषार्थः - जब १ शोभन अन्नरूप २ प्राण ३ पूजनीय परमेश्वरको
 ४ आत्मप्रतिविंबहविसे पूजते हैं तब ५ वह ६ अजरामर ७ विख्यात ८ परमेश्वर

रर्षेणकेशत्रुकाम आदि को सब शोर से मारना है ॥ ६ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

^{३ ३ १ ३} प्रवड्न्द्राय ^{३ १ ३} वृत्रहन्त ^{३ १ ३} मायविमोय ^{३ १ ३} गाथ ^{३ ३} गायतय
^३ जुजोषते ॥ १० ॥ २१४

(विषाय) मेधाविने (वृः) युष्माकं (वृत्रहन्तमाय) अतिशयेन
पापस्यहन्तमाय (न्द्राय) परमेश्वराय (गाथम्) स्तोत्रं (प्रगा
यत) प्रकर्षेणपठत (यम्) स्तोत्रं (जुजोषते) सेवते ॥ १० ॥

भाषार्थः - १मेधावी २ शौरतुम्हारे ३ अतिशयपापनाशक ४ परमे-
श्वरकेलिये ५ स्तोत्रको ६ पढ़ो ७ जिस स्तोत्र को ८ वह सेवन करता है ॥ १० ॥
वृत्तिश्रीभृगुवंशावतंस श्ली नाथूराम सून ज्वाला मसादशर्म विरचिते सामवे
दीयव्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्या ध्यायस्य दशमः खण्डः १०

अथैकादशः खण्डः ११

सम्पात ऋषिर्द्विपदापंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

^{१ २ ३} अचेत्यमि ^{२ २} श्चिकिति ^{३ २ ३} हव्यवाड् ^{३ १ ३} नसुमद्रथः ॥ १ ॥ २१५

(हव्यवाट्) हविषां वोढा (चिकितिः) विशिष्ट प्रज्ञः (न) च (समु
द्रथः) सम्यग् उद्यतयोगरथः (अग्निः) आत्माग्निः (अचेति) सर्व
जानाति व्यत्ययेन कर्त्तरि प्रत्ययः (३।१।८५) - ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हविषां काधारक २ विशिष्ट प्रज्ञावान ३ शौर ४ उद्य-
तयोगरथवान् ५ आत्माग्नि ६ सबको जानता है - ॥ १ ॥

बन्धुर्ऋषिर्द्विपदापंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

^{२ ३ ३} अमेत्वेन्ना ^{३ २ ३} अन्तमउत्त ^{३ १ ३} त्राताशिवा ^{३ ३} भुवोवरूथ्यः ॥ २ ॥ २१५
हे (अग्ने) आत्माग्ने (वरूथ्यः) निवासयोग्यगृह रूपः (उत्त) अपि च

(४) (त्रुता) रक्षकः (शिवः) सुखरूपः (त्वम्) (नः) अस्माकं (अन्नम्) (भुवः) भव ॥ २ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्माग्ने २ निवासयोग्य गृहरूप ३ शौर ४ रक्षक ५ आनन्दस्वरूपत्वम् ६ हमारे ७, ८ अन्नमर्हजिये ॥ २ ॥

वन्द्यत्रयिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

भगो नु चित्रो अग्निर्महानानन्दधातिरुन्नम् ॥ ३ ॥ २१७

(भगः) (नः) सूर्यइव (चित्रः) अद्भुतः (अग्निः) आत्माग्निः (रुन्नम्) रमणीयमात्मप्रतिविंबं (दधाति) स्वात्मानिधारयति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १, २ सूर्यकी समान ३ अद्भुत ४ आत्माग्नि ५ रमणीय आत्मप्रतिविंबको ६ अपने आत्मा में धारण करता है - ॥ ३ ॥

वन्द्यत्रयिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

विश्वस्य प्रस्तोभपुरावासन्यद्विवहनूनम् ॥ ४ ॥ २१८

हे परमेश्वर (इह) अर्चाकाले (विश्वस्य) सर्वस्य भक्त समूहस्य (यतः) (पुरो) बहु (वा) (नूनम्) नस्तुतिस्तेनो नमस्यं (इव) एव सत् भवेत्तत् (प्रस्तोभ) प्रशंस गृह्णीष्वनि० ३। १४ यथा गीतायाम् पत्रं पुष्यं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति तदहं भक्तपुपहतमश्नामि प्रयत्नः अ० ८ श्लोक २६ - ॥ ४ ॥

भाषार्थः - हे परमेश्वर १ यहां पूजनकालपर २ सब भक्त समूह का ३ जो ४ बहुत ५ अथवा ६ अल्प ७ ही ८ होवै ९ उसको ग्रहण करो - ॥ ४ ॥

सम्बर्तत्रयिः द्विपदापंक्ति छन्द उपा देवता-

उषा अपस्व सुष्टमः सम्बर्तयति वर्तनि थं सुजो ततो ॥ ५ ॥ - २१९

यदा (उषाः) समाधिकालः (स्वसुः) भगिन्याः रात्रेः (तमैः)
 अन्धकारं (अपसंवर्त्तयति) आत्मीयेन तेजसा अपगुमयति त
 दा (सुजा) योगेन संस्कृता जीवात्मारूपा परा (वर्त्तनि) योग-
 मार्गमति (तता) व्याप्ता भवति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - जब १ समाधिकाल रूस उषा २ भगिनी रात्रिके ३ अन्ध-
 कारको ४ अपने तेजसे दूर करनी है तब ५ योगसे संस्कृत जीवात्मारूप प-
 रा ६ योगमार्गमें ७ व्याप्त होती है - ॥ ५ ॥

भौवन आत्यञ्जपि द्विपदापंक्तिम्वन्द इन्द्रो देवता-

इमानु कम्भुवना सीपधे मेन्द्रश्च विभ्वे च देवाः ॥ ६ ॥ २२ ॥
 (इन्द्रः) आत्मा (च) (विभ्वे देवाः) माणाः शः २४। २। २। ३७ (इमा-
 इमानि (भुवना) भुवनानि कमलानि (वयम्) वागाद्यात्विजः (च-
 सापि (कम्) परमेश्वरं। कंवै प्रजापतिः शः २। ५। २। २३ (नु) सि-
 प्रं (सीपधेम) साधयामः वशी कुर्मः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ आत्मा २ शौर ३ माणा ४ इन्द्र ५ कमलोंको ६ शौर इन्द्र-
 याक सादिञ्जपि त्विज ७ भी ८ परमेश्वरको ९ शीघ्र १० साधन करें - ॥ ६ ॥

कवपएलुपञ्जपि द्विपदापंक्तिम्वन्द इन्द्रो देवता-

वित्तुतयो यथापथाद्य इन्द्रत्वत्तुरातुयः ॥ ७ ॥ २३ ॥
 हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वत्) त्वत्समीपे (रातयः) द्वावर्त्तिसृष्टानि
 दानानि (यंतु) गच्छन्तु (यथा) (वित्तुतयः) विविधा मार्गाः (पु-
 था) राजमार्गिणा सह संयोगं प्राप्नुवन्ति ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ आपके समीप ३ द्विविध रूपदान ४ प्राप्त करें
 ५ जैसे ६ नाना प्रकारके मार्ग ७ राजमार्गके साथ संयोगको प्राप्त हों ॥ ७ ॥

भरद्वाजः ऋषिर्द्विपदापंक्तिश्चन्द्रः प्रार्थनादेवता

अथावाजन्देवहितं सनेममदेम शतहिमाः सुवीराः ।
(अथा) विधिना (देवहितम्) ईश्वरेणादत्तं (वाजम्) अन्नं (सने
म) सम्भजेम (सुवीराः) कामयुद्धे सुवीरावयम् (शतहिमाः) पूर्णा
युपर्यन्तं हिमारात्रिः सादिव्यत्वात् वर्षमितेत्यर्थः (मदेम) हृष्याम

भाष्यार्थः - १ इति विधिसे २ ईश्वरके दिये हुए ३ अन्नको ४ हम विभाग
करें ५ काम युद्धमें ओष्ठ वीर हम ६ पूर्ण युपर्यन्त ७ सुखी रहें ॥ ८ ॥

आत्रेयः ऋषिर्द्विपदापंक्तिश्चन्द्र इन्द्रादयो देवताः

ऊर्जा मित्रावरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषडुः

एणही न इन्द्र ॥ ९ ॥ २२३

हे (इन्द्र) आत्मन् (मित्रः) प्राणः (वरुणः) अपानः त्वञ्च सर्वे यू
यं (ऊर्जा) अमृतसेन (ड्डो) इन्द्रियात्मप्रतिविंवरूपान्नानि (पि
न्वते) सिञ्चत पिन्वसेचने किञ्च (पीवरी) प्रवृद्धा (इषम्) अमृत
वर्षा (नः) अस्मभ्यं (कणुहि) कुरु ॥ ९ ॥

भाष्यार्थः - १ हे आत्मन् २ प्राण ३ अपान और तुम भी ४ अमृतसेसे ५
इन्द्रिय आत्मप्रतिविंवरूप अन्नों को ६ सींचो और ७ बहुत बढ़ी ८ अमृतव
र्षाको ९ हमारे लिये १० करो - ॥ ९ ॥

एकपदाष्टाक्षरा गायत्रीवसिष्ठऋषिरिन्द्रो देवता-

इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥ १० ॥ २२४

यतः कारणात् (इन्द्रः) परमेश्वरः (विश्वस्य) सर्वस्य ब्रह्माण्डस्य
परि (राजति) दीप्यते तस्यान्या भावात् ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - जिस कारण १ परमेश्वर २ सब ब्रह्माण्डके ऊपर ३ प्रका

शकरता है ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंसंज्ञीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसाद
शर्माविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्यै
कादशः खण्डः ११ ॥ इति द्वैपदमेन्द्रं समाप्तम् ॥

अथ द्वादशः खण्डः

गृत्समद्वयपिराष्ट्रिच्छन्दो जीवेशो देवते-

त्रिकद्रुकेषु महिषायवाशिरन्तुविशुष्मे स्त्रिम्प
सोममपिविष्णुना सुतयथावशम् । स इम्मेना
दमहिकर्मकर्त्तवमहो मुरुथं सञ्च देवो देव थं स
इत्यइन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥ १ ॥ २२५

(महिषः) महान्नि० ३।३ (तुविशुष्म) बहुवलः परमेश्वरः नि०
२।१ तथा २।६ (त्रिम्पत्) तृप्तवान् कथं (त्रिकद्रुकेषु) स्थूल सूक्ष्म
कारणाख्यकामवृक्षरूपदेहेषु (सुतम्) अभिपुत्रं (यवाशिरम्)
प्राणैः मिश्रितं । अन्नं हि प्राणः श० (सोमम्) (विष्णुना) अन्नया
मिना सह (यथावशं) यथोत्साहं (अपवित्) (सः) आत्मप्रतिविं
वः (महाम्) महान्तं (उरुम्) विस्तीर्णं (इम्) पराशक्तिं (इन्द्रम्)
परमेश्वरञ्च (महि) महत् (कर्म) (कर्त्तव) कर्त्तुम् मोक्षदानाय
(ममाद्) अमादयत् (सः) (सत्यः) (देवः) (इन्दुः) जीवात्मा (सं-
त्यम्) (देवम्) (एनम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (सञ्चत्) व्याप्नोतु-
स्पृचति गीति कर्मानि० २।१४—॥ १ ॥

भाषार्थः - १ महान् २ बहुवली परमेश्वर ३ तृप्तवृक्षा ४ जिस कारण-
स्थूल सूक्ष्म कारणानाम कामवृक्षरूप देहों में ५ अभिपुत्र ६ प्राणों से मिश्रि-
त ७ आत्मप्रतिविंबको ८ अन्नया मी के साथ ९ उत्साह पूर्वक १० पान किया ११

आत्मप्रतिविम्बने १२ महान्त १३ विस्तीर्ण १४ पराशक्ति १५ और परमेश्वर
को १६ १७, १८ महत्कर्मकरने अर्थात् मोक्षदानके लिये १९ त्वत्तकिया
२० वह २१ सत्य २२ विद्वान् २३ जीवात्मा २४ सत्य २५ देव २६ इत्स २७
परमेश्वर को २८ व्याप्त करो ॥१॥

गौराङ्गिः रसः ऋषिर्जगती इन्द्रः सूर्यो देवता-

अयं सहस्रमानवा दृशः कवीनाम् मतिज्यो
तिविधर्मः । ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः
सचेतसः स्वसरे मन्यु मन्ताश्चितागोः ॥२॥ २२६

यदा (सहस्रमानवः) अनन्ताभक्ता यस्त्यसः (दृशः) द्रष्टा (क
वीनाम्) मेधाविनां (मतिः) मेधा (विधर्म) विधातृ (ज्योतिः)
तेजः (अयम्) (ब्रध्नः) सूर्यरूपः परमेश्वरः (समीचीः) भुद्धाः नि-
र्मलाः (अरेपसः) पापरहिताः (सचेतसः) समानचित्ताः (उषसः)
(समैरयत्) सम्यक् प्रेरयति तदा (गोः) मानस सूर्यस्य नि० २१६
(मन्यु मन्तः) मन्युः प्रकाशस्तद्वन्तः नि० २१६ वागाद्यत्विजः
(स्वसरे) आत्मनद्यां (चिताः) भवन्तीति शेषः ॥२॥

भाषार्थः - जव १ अनन्तभक्त रखनेवाला २ द्रष्टा ३ मेधाविशोंका
४ मेधारूप ५ विधाता ६ तेजस्वी ७ यह ८ सूर्यरूप परमेश्वर ९ भुद्ध निर्मल
१० पापरहित ११ समानचित्तवाली १२ उपाशोंको १३ भले प्रकार प्रेरणा क
रता है तव १४ मानससूर्यके १५ प्रकाशमान्वाक् आदि ऋत्विज १६ आत्मा
रूपनदीमें १७ प्रवेश करते हैं ॥२॥

परुच्छेपः ऋषिपरत्याङ्गि इन्द्रो देवता-

इन्द्रया ह्युपनः परावतो नाथ मच्छा विदधानी

वसत्यातिरस्ता राजवसत्यातिः । इवामहेत्वा
 प्रयस्वन्तः सुतेष्वपुत्रासानपितरवाजसा
 तयमथं हिष्ठवाजसातये ॥३॥ २२७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (परावतः) ब्रह्मणः प्रादुर्भूत्वा (नः) अस्मान्
 (उपायाहि) अस्मत्समीपं प्रत्यागच्छ (न) यथा (अयम्) (सत्प-
 तिः) सुतामृत्विजां पालको यजमानः (विदधानीव) यज्ञानीव-
 (अच्छ) आभिप्राप्तुं यज्ञगृहमागच्छति (इव) यथा (सत्पतिः)
 (राजा) (अस्ता) गृहाणि यस्मात् (प्रयस्वन्त) इविलक्षणान्
 वन्नो वयं (त्वा) त्वां (सुतेषु) अभिपुत्रेषु प्राणोन्द्रियात्मप्रतिविं-
 वेषु (वाजसातये) विराड् रूपान्नलाभाय (आह्वामहे) आभि-
 मुख्येनाह्वयामहे (न) यथा (पुत्रासः) पुत्राः (महिष्ठम्) पूज्यत-
 मं (पितर) (वाजसातये) अन्नस्य सम्भजनाय ॥३॥ २२७

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ ब्रह्म से प्रकट होकर ३ हमारे ४ समीप
 आओ ५ जैसे ६ यह ७ ऋत्विजों का पालक यजमान ८ यज्ञोंको ही ९ मा-
 मकरने को यज्ञशाला में आता है १० अथवा जैसे ११ सत्यरूपों का पालक
 १२ राजा १३ राजभवनों में प्रवेश करता है जिसकारण १४ इविरूप अन्न
 वान् इम १५ तुमको १६ प्राण इन्द्रिय आत्म प्रतिविं के अभिपुत्र होनेपर
 १७ विराटरूप अन्नके लाभार्थ १८ आह्वान करते हैं १९ जैसे २० पुत्र २१
 पूज्यतम २२ पिताको २३ अन्न संभजनके लिये — ॥३॥

रेभावरपिरनिजगती चन्द्र इन्द्रो देवता-
 तमिन्द्रज्जो हवीमि मेघवो नमुग्रं सत्रादधान
 मप्रतिष्कृतं अवां सिभूरि मं हिष्टो गी

भिराच्यन्ति यो ववर्त्त राये नो विष्वा सुपथा कृ-
णो नुवञ्जी ॥ ४ ॥ - २२८

(तम्) (मघवानम्) इन्द्ररूपं (उग्रम्) शिवरूपं (सत्रां) सत्ये
नसत्यप्रतिश्रया (भूरि) भूरीणि (अवांसि) वलानि रामकृ-
ष्णादिरूपस्थानि (दधानम्) तेष्वतारेषु (अप्रतिष्कृतम्) श-
त्रुभिरप्रतिरोधनीयं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (जोहवीमि) पुनः पुन
राह्वायामि (मंहिष्ठः) पूज्यतमः (यज्ञियः) यज्ञार्हः (वञ्जी) ज्ञा-
नवञ्जवान् परमेश्वरः (गीर्भिः) स्ममदीयाभिः स्तुतिभिः (आवे-
वर्त्त) यज्ञेष्वभिमुख्येन वर्त्तमानोऽभवत् (राये) योगधनाय
(विष्वा) सर्वाणि (सुपथा) सुमार्गीणि (कणोतु) करोतु ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ उ३२ इन्द्ररूप ३ शिवरूप ४ सत्यप्रतिज्ञासे ५ बहुत
६ वलरामकृष्णादिरूपस्थानोंको ७ धारणा करने वाले ८ शत्रुओंसे
प्रतिरोधनीय ९ परमेश्वरको १० बारम्बार आवाहन करता हूँ ११ बहुपू-
ज्यतम १२ यज्ञ योग्य १३ ज्ञानवञ्ज धारी परमेश्वर १४ हमारी स्तुति-
द्वारा १५ यज्ञोंमें सन्मुख वर्त्तमान हुआ १६ योगधनके लिये १७ सब १८
सुमार्गीनोंको १९ शोधनकरो ॥ ४ ॥

पुरुच्छेप इन्द्रपितृष्विन्द्रो मीन्द्रवायवो देवताः

अस्तु अषट्पुरोभिर्गिधिया दधेऽनुत्यच्छदो
दिव्यवृणी मह इन्द्र वायु वृणी मह । यद्भ्रुको
णाविवस्वते नाभो सन्दायनव्यसे । अधप्रसू
नमुपयन्ति धीतयो देवो थं अच्छोयन धीत
यः ॥ ५ ॥ २२९

(पुरः) प्रचुरः समाष्टिभावापन्नोः^१ हं (आग्निमे)^२ आत्माग्निन् (धियो)^३
 योगबुद्ध्या^४ (द्वे) धारित वानास्मि (त्यत्) तत् । यकारो योगज्ञापकः
 (दिव्यमे) (शब्दः) योगवलं (नु) क्षिप्रं (आवृणीमहे) वागाद्यत्ति
 जो वयमाभिमुख्येन सम्भजामहे किञ्च (इन्द्रवायु)^{१०} मनः प्रा-
 णौ । मन एवेन्द्रः श० १२। १। १३ (वृणीमहे) (यद्) यस्मादे-
 वतौ (नव्यसे) नवतराय संस्कृताय (विवस्वते) मानस सूर्या-
 य (नाभौ) नाभौ योगयज्ञे (सन्दाय) संयुज्य (क्राणां) योग
 क्रियायाः कुवीणौ भवतः (अशौषट्) अस्याः स्तुतेः अत्राणां (अ-
 स्तु) (अध) अथ अनन्तरं (ने) (धीतयः) अस्माकं वागाद्य-
 त्विजां योगसम्बन्धीनि कर्माणि (प्रसूनम्) जातं संस्कृतं जी-
 वात्मानं (उपयन्ति) उपगच्छन्ति (ने) यथा (अयनधीतयः)
 उत्तरायणसम्बन्धीनि कर्माणि (देवान्) (अच्छ) आभिमुख्ये-
 न प्राप्तुं गच्छन्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ समाष्टिभावापन्नमेने २ आत्माग्निको ३ योग बुद्धि-
 द्वारा ४ धारण किया है ५ उस ६ दिव्य ७ योगवल को ८ शीघ्र ९ हमवा-
 क आदि ऋत्विज सेवन करते हैं १० और मन प्राणों को ११ मर्त्यनाक-
 रते हैं १२ जिस कारण वेदों में १३ संस्कृत १४ मानस सूर्यके लिये १५
 योग यज्ञ में १६ संयोग करके १६ योग क्रियाके कर्त्ता होते हैं १७ इसस्तु-
 तिकां अत्राणां १८ हो १९ तदनन्तर २० हमवाक आदि ऋत्विजों के २१ योग सम्ब-
 धीकर्म २२ संस्कृत जीवात्मा को २३ प्राप्त होते हैं २४ जैसे २५ उत्तरायण-
 सम्बन्धीकर्म २६ देवान् को २७ सन्मुख प्राप्त करने के लिये जाते हैं - ५

एवयामरुदापिरतिजगतीच्छन्द इन्द्रो देवता-

प्रवामहे मतयो यन्तु विषावे मरुत्वते गिरिजा
एव यामरुत । प्रशुद्धाय प्रयज्येव सुखादयेते
वसे भन्द दिष्टये धुनिव्रताय शवसे ॥ ६ ॥ २३०

(स्तनयः) स्तनयः (वः) युष्माकं (महे) महते (मरुद्वृते) प्राण
वते (विषावे) अन्नर्यामिने (प्रयन्तु) प्रगच्छन्तु (याः) मरु
द्विरिजाः) समष्टि प्राणास्य वाचि संभूताः स्तनयः (प्रशुद्धाय)
महाबल रूपाय (प्रयज्येव) प्रकर्षेण यष्टव्याय (सुखादये)
सुखप्रदाय (तवसे) योगबलवते (भन्द दिष्टये) स्तुति रूप यज्ञ
वते (धुनिव्रताय) अमृत मेघस्य चालनं कर्म यस्य तादृशाय
(शवसे) धनवते परमेश्वराय (एव) तस्यान्याभावात् ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - १ स्तुतियां २ हमारं ३ महान् ४ प्राणवान् ५ अन्नर्या-
मी के लिये ६ जाओ ७ जो ८ समष्टि प्राण की वाणी में प्रकट स्तुतियां
९ महाबल रूप १० पूजनीय ११ सुखदाता १२ योगबलवान् १३ स्तुति
रूपवत्त्वान् १४ अमृत मेघके प्रेरक १५ धनवान् परमेश्वरके लिये १६
ही है उसके अद्वैत होनेसे ॥ ३ ॥

आनानतः पारुच्छे पित्र्यैः पितृष्विन्द्रः सोमो देवता-

प्रयास्वाहुरिया पुनानो विश्वादेषो अंसितर
ति सयुग्वाभिः सुरानस युग्वाभिः । धाराष्ट्रस्य
रोचते पुनानो अरुषो हरिः । विश्वायद्रूपा परि
यात्युक्ताभिः सप्तास्यैभिर्ऋक्ताभिः ॥ ७ ॥ २३१

(सयुग्वाभिः) सह युक्तैर्वागाद्यन्विभिः सहितः (पुनानः) पूय-
मानः । अहं ममत्वादिदोषैरहितः संस्कृत आत्मप्रतिबिंबः (अ-

या) चैतन्यया अयगतौ (हरिण्या) वैष्णव्या (रुचा) पराख्य
 दीप्त्या (विश्वो) सर्वाणि कामादीनि (द्वेषांसि) द्वेषाणि रक्षांसि
 (तरति) विनाशयति (न) यथा (सूरः) सूर्यः (सयुग्वाभिः) सह
 युक्तै रश्मिभिर्नमांसिहि नस्ति (यद्) यद् (पुनानः) (अरुषः)
 आरोचमानः (हरिः) मानससूर्यः (सप्तास्यैभिः) सप्तमुखतुल्यै
 (अरुक्ताभिः) वागाद्युत्विग्रूप स्वकीयतेजोभिः (विश्वो) सर्वाणि
 (रूपाणि) कमलस्थानां देवानां रूपाणि (परियोति) परितः प्रा
 प्नोति तदा (प्रष्टस्य) गगनमण्डलप्रष्टस्य (धारा) अमृतधारा
 (अट् कभिः) तेजोभिः (रोचते) दीप्यते ॥७॥

भाषार्थः - १ सह योगीवाक् आदि अट्विज सहितं २ अहं ममत्व
 दोषों से रहित संस्कृत आत्म प्रतिबिंब ३ चैतन्य ४ वैष्णवी ५ परानाम दी
 प्तिके द्वारा ६ सब ७ द्वेषा राक्षस वा काम आदि को ८ विनाश करता है ९ जे
 से १० सूर्य ११ सहवर्ती किरणों से १२ जब १३ शुद्ध १४ आरोचमान १५
 मानस सूर्य १६ सप्त मुख तुल्य १७ वाक् आदि अट्विज रूप अपने तेजों से १८
 सब १९ कमलस्थ देवताओं के रूपों को २० सब ओर से प्राप्त करता है २१
 तव गगनमंडल एष्टि की २२ अमृत धारा २३ तेजों से २४ प्रकाश करती
 है ॥७॥ नकुल अट्वि रति शकरी छन्दः परमेश्वरो देवता-

अभित्यन्देव १७ सविता रमाण्याः १८ कवि क्रतुम्
 चोमि सत्यसव १९ रत्नधामभिप्रियम्मेतिम् २०
 द्वायस्यामेति भो आदि द्युतत सर्वा मनि हिरण्य
 पाणि रामि मीत सुक्रतुः कृपास्वः ॥८॥ २३३

(त्यम्) तं (कवि क्रतुम्) मेधाविनां यत्तपुरुषं (सत्यसवम्)

सत्यमेरुणं (रत्नधां) रमणीयानां धनानां दातारं (अभिप्रिय-
 म्) सर्वतः प्रियं सर्वेश्वरत्वात् (मतिम्) मननीयं स्तुत्यं (स
 वितारं) सर्वस्य मेरुकं सर्वात्मत्वात् (देवम्) माया क्रीडनकैः
 क्रीडाण शीलं परमेश्वरं वाक् व्यापारेण (अभ्यर्चामि) सर्वतः
 पूजयामि (यस्य) (सवीमनि) प्रसवे सति (उर्ध्वा) उन्नता
 (भा) दीप्तिरूपा पराशक्तिः (अमतिः) जडात्मिका अपरा प्र-
 कृतिश्च (ओरायोः) द्यावा पृथिव्योः रूपे (अदिद्युतत्) प्रका-
 शितवान् (हिरण्यपाणिः) ज्योतिर्हस्तः (सुकृतुः) दिव्य-
 यज्ञवान् विष्णुः (रूपा) स्तुत्या भक्तानां स्तुतिनिमित्तेन (स-
 र्वैः) सूर्यं (अभिमीत) निर्मितवान् द्यावा पृथिव्यो मायां शे-
 सूर्यस्तु पुरुषांशः पुरुषावतार इत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाष्यार्थः - १ उस २ मेधावियोंके यज्ञपुरुष ३ सत्यमेरुण ४ रमणी
 यधनोंके दाता ५ सब ओर से प्रिय ६ स्तुति योग्य ७ सबके मेरुक ८ माया
 के खिलोनों से क्रीडाण शील परमेश्वर को वाक् व्यापार से ९ पूजनकर-
 ताहं १० जिसकी ११ आज्ञा होनेपर १२ उन्नत १३ दीप्तिरूपा पराशक्ति
 १४ और जडात्मिका अपरा प्रकृति ने १५ पृथिवी स्वर्ग के रूपोंको १६ प्र-
 कट किया १७ ज्योतिरूपहस्त वाले १८ दिव्य यज्ञवान् विष्णुने १९ भक्तों
 की स्तुति निमित्त २० सूर्यको २१ निर्माण किया - ॥ ८ ॥

परुच्छेप ऋषिरत्याष्टि ऋन्दोमिर्देवता-

अग्निं^३ धे^{१२} द्योतारं^{३२} मन्ये^३ दा^३ स्वन्तं^३ वसोः^३ सन्नु^३ धं^३
 सहसो^३ जात^३ वेदसं^३ विप्रं^३ नजात^३ वेदसम्। यजु^३
 इया^३ स्वध्वरो^३ देवा^३ देवा^३ च्या^३ रूपा^३ घृतस्य^३ विधा^३

^३१^२ ^३२ ^३२ ^३१ ^३२ ^३१ ^३२ ^३१ ^३२
 ष्टिमनुभुक्तशौचिषःपूजह्वानस्यसर्पिषः६-२३३
 (होतारम्) देवानामाह्वारं (वसोः) धनस्य योगधनस्य वा
 (दास्वन्तम्) अतिशयेन दानवन्तं । दासति दीनकर्मा नि० ३
 ॥२०॥३ (सहस्रः) ब्राह्मज्योतिषः (सूनम्) पुत्रं (जातवेदसम्)
 सर्वज्ञं (विप्रम्) मेधाविनं (न) च (जातवेदसम्) जातधनं
 धनवन्तं (अग्निम्) अग्निमात्माग्निस्वा (मन्ये) स्तौमि (यः)
 (स्वधरेः) शोभनयज्ञवान् (देवः) (ऊर्ध्वयो) उन्नतया उत्कृष्ट
 या (देवाच्या) देवान्पूजयन्त्या (रूपा) सामर्थ्यलक्षणाया कृ
 पया युक्तः सन् (भुक्तशौचिषः) दीमतेजस्कस्य मानससूर्य-
 तेजोरूपस्य वा श० ४॥३॥१॥२६ (आजुह्वानस्य) आसमन्ता-
 द्दृश्यमानस्य (सर्पिषः) सरणशीलस्य घृतस्येन्द्रियशक्तेर्वी
 प्राणाः पयः शीर्षस्तन्याणं श० ६॥५॥४॥१५ (विभ्राष्टिम्) विशेष
 पदीमि (अनुवाष्टि) कामयते स्वीकरोतीत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः — १ देवताओके आह्वाना २ धनवा योगधनके ३ दाता
 ४ ब्राह्मज्योतिके ५ पुत्र ६ सर्वज्ञ ७ मेधावी ८ और ९ धनवान् १० अग्नि-
 वा आत्माग्नि को ११ स्तुत करता हूँ जो १२, १३ शोभन यज्ञवाला १४ देव-
 ता १५ उत्कृष्ट १६ देवपूजक १७ सामर्थ्यरूप रूपासे युक्त होना १८ दी-
 मतेजस्क वा मानस सूर्यके तेज रूप १९ होमेहुए २० घृतवा इन्द्रियशक्ति
 की २१ विशेष दीमि को २२ स्वीकार करता है — ॥ ६ ॥

गुत्समदःत्रपिरतिशक्ती छन्दोजीवेश्वरो देवते
^२३ ^२२ ^२२ ^३२ ^३२ ^३२ ^३२ ^३२
 तवत्यन्तयन्तृपातुन्दप्रथमस्युव्यन्दिवि
^३२ ^३२ ^३२ ^३२ ^३२ ^३२ ^३२ ^३२
 प्रवाच्यदुतम् । यादेवस्य शवसाप्रारिणाश्च

सुरिणान्नपः^{२ ३ २ ३ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ ३} । भुवो विभ्वसुभ्यदेवभोजसावि^३
देदृजं^३ शतक्रतुविदेदिषम् ॥ १० ॥ २३४

हे (चतः) वागाद्यृत्विजानर्तयितः (इन्द्र) यजमान (तव) (त्य
त्) तत् यकारो योगज्ञापकः (कृतम्) (अपः) कर्म (नयम्) न
राणां पुत्रादीनां हिनकरं (प्रथमम्) मुख्यम् (पूर्वम्) सनातनं
(दिवि) स्वर्गलोके (प्रवाच्यम्) श्लाघनीयं प्रकर्षणावक्तव्यं (त्यः)
त्वं (देवस्य) इष्टदेवस्य (शवसा) वलेन (असुरिणम्) असुं प्रा
णं रिणान् प्रेरयन् (अपः) अमृतोदकांनि (अरिणः) गगनमंडला
त्प्रेरय (शतक्रतुः) बहुकर्मा परमेश्वरः (विभ्वम्) सर्व (अदेवम्)
क्रोधादि समूहं (भोजसा) वलेन (अभिभुवत्) अभिभवतु पर
मेश्वर एव (ऊर्जम्) योगवलं (इषम्) विराड् रूपान्नं (विदेत्)
लम्भयेन्नान्य इत्यर्थः ॥ १० ॥

भाषार्थः— १ हे वाक् आदि ऋत्विजों के नचाने वाले २ यजमान ३ ते
रा ४ वह ५ किया हुआ ६ कर्म ७ पुत्र आदि का हिनकारी ८ मुख्य ९ सनातन
१० स्वर्ग में ११ श्लाघा योग्य है १२ जोतुमने १३ इष्टदेवके १४ वलसे १५ प्राण
को प्रेरणा करते हुए १६ अमृतजलोंको १७ गगनमंडलसे प्रेरणा किया १८
बहुकर्मा परमेश्वर १९ सब २० क्रोध आदि समूहको २१ वलसे २२ निरस्का
रकरो परमेश्वरही २३ योगवल २४ और विराट् रूप अन्नको २५ प्राप्तकरा
वेन दूसरा यह अभिप्राय है ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते सा
मवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य द्वादशः खण्डः

समाप्तश्चतुर्थः अध्यायः ४

समामम् ऐन्द्रं पर्व ऐन्द्रकाण्डं वा
इति द्वितीयं पर्व-

ओं नमः सामवेदाय

अथ पञ्चमाध्यायः

गतमाग्नेयं पर्व, गतञ्चैन्द्रमद्दानीमिदं तृतीयं सम्प्रवर्त्तते अत्र-
पर्वणिण सोमस्य संस्तुतिः, ब्रह्माणो यत्प्रादुर्भवति तत्सर्वं सोम ए-
व यथा श्रुतयः सोमो वैराजायज्ञः प्रजापतिः । तस्यैतास्तन्वो या-
एता देवताः श० १२।६।२।१ सोमा हुतयो हवाऽ एता देवानाम्
यत्सामानि ११।५।६।६ प्राणः सोमः श० ७।२।४।२ प्राणो वै
सोमः श० ७।३।१।४५ ज्योतिः सोमः श० ५।१।५।२८ सोमो वै-
भ्राट् ३।२।४।६ इत्यादयः एवं सति यत्र योर्यः संभविष्यति तं क-
थायिष्यामः ॥ अमही युर्कृषि गयित्री छन्दः सोमो देवता

उच्चाते जान्मन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रं
शर्ममाहि ऋवः ॥ १ ॥

आत्मारूपयजमानः कथयति हे आत्मप्रतिविम्ब (ते) तव-
(अन्धसः) अन्नरूपस्य (जानम्) जन्म (उच्चा) उत्कृष्टचैतन्य
शक्त्या परयाऽस्ति (उग्रम्) उत्कृष्टं (शर्म) सुखं (माहि) मह-
त्नि० ३।४।१ (ऋवः) विराड् रूपान्नि० २।७ (दिवि) महापु-
रुषलोके (सत्) विद्यमानं (भूम्या) योगभूम्या (आददे) गृ-
ह्णामि ॥ १ ॥

भाषार्थः - आत्मारूपयजमानकहताहै हे आत्मप्रतिविम्ब १ तुम्ह
२ अन्नरूपका ३ जन्म ४ उत्कृष्टचैतन्यशक्तिपरासेहै ५ उत्कृष्ट ६ सुख

७) ८ श्रौरविराटरूपमहा अन्नको षोडशोकि महा पुरुष लोकमे १० विद्यमान है उसे ११ योग भूमिद्वारा १२ ग्रहण करता है ॥ २ ॥

मधुच्छन्दाः ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता-
^२स्वादिष्ट्या^३मदिष्ट्या^३पवस्व^३सोमधारया^३। इ^१
^३न्द्राय^३पातु^३वे^३सुतः^३ ॥ २ ॥ २

हे (सोम) (इन्द्राय) (पातुवे) पातुं (सुतः) अभिषुतस्त्वं (स्वादिष्ट्या) स्वादुतमया (मदिष्ट्या) अतिशयेन मादयिष्या (धारया) (पवस्व) क्षर ॥ २ ॥ २

भाषार्थः - १ हे सोम २ इन्द्र के ३ पानार्थ ४ अभिषुत तुम ५ वड़ी स्वादु ६ वड़ी मादक ७ धारा के साथ ८ पात्र में गिरो - ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् हे (सोम) आत्म प्रति विंव (इन्द्राय) (पातुवे) परमेश्वरस्य पानाय (सुतः) अभिषुतस्त्वं (स्वादिष्ट्या) स्वादुतमया (मदिष्ट्या) अतिशयेन मादयिष्या (धारया) (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्म प्रति विंव २ परमेश्वर के पानार्थ ४ अभिषुत तुम ५ स्वादिष्ट ६ वड़ी मादक ७ धारा के साथ ८ सुषुम्णा मार्ग से चलो ॥ २ ॥

भृगुर्वारुणि ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता-

^१तृषो^३पवस्व^३धारया^३मरुद्धते^३चमत्सरः^३। विश्वा^३
^३दधाने^३श्रोजसा^३ ॥ ३ ॥

हे आत्म प्रति विंव (मत्सरः) पातु रात्मनः मदकरः मदि धातो रौणादिके संरप्रत्यये रूपम् (च) (श्रुषो) मानस सूर्य रूपस्त्वं (श्रोजसा) योगवत्नेन (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि योगेश्वर्या

६
 णि (दधानः) धारयन् (प्ररुद्धते) वागाद्यंत्विग्भिः संयुक्तायाः
 ९
 त्मारूप यजमानायानि० ३।१८ (धारया) ज्योतिर्धारया (प
 वस्व) सुषुम्णा मर्गेण गच्छ ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे आत्मप्रतिविंब १ आत्माके मदकारक २ और ३ मा-
 नस सूर्य्य रूपतुम ४ योगवल से ५ सब योगैश्वर्यो को ६ धारण करते ७ वा
 क आदि ऋत्विज संयुक्त आत्मारूप यजमान के लिये ८ ज्योतीरूप धा-
 रके साथ ९ सुषुम्णा मार्ग से चलो ॥ ३ ॥

अमही युर्दपि शेषं पूर्ववत्

२ ३ ३ ३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
 यस्ते मदी वरेण्ये स्तेना पवस्वान्धसा । देवावी
 रघशं सहा ॥ ४ ॥ ४

हे आत्मप्रतिविंब (ते) तव (यः) (देवावीः) देवकामः वीकान्तौ
 कान्तिरिहेच्छा (अघशंसहा) अघं पापं यः शंसति तस्य काम
 स्य हुन्ता (वरेण्येः) सर्वैर्वरेण्यः (मदः) अहं ब्रह्मास्मीति मदः
 (तेन) (अन्धसा) अन्नरूपेण (आपवस्व) आत्मन्या गच्छ ४

भाषार्थः - हे आत्मप्रतिविंब १ तेरा २ जो ३ देवकामा ४ कामनाशक
 ५ सबसे वरण योग्य ६ अहं ब्रह्मास्मि नाम मद है ७ उस ८ अन्नरूपके सा
 ९ आत्मा में प्राप्त हो ॥ ४ ॥ वितर्कपि शेषं पूर्ववत्

३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३
 तिस्रो वाच उदीरते गावोमि मन्ति धेनवः । हरि
 रेति कनिक्कदन् ॥ ५ ॥ ५

(तिस्रः) (वाचः) ऋग्यजुः सामूलक्षणा (उदीरते) ऋत्विज उ
 च्चारयन्ति (धेनवः) (गावः) (मिर्मन्ति) होहार्य शब्दा यन्ति तस्मि
 न्काले (हरिः) मानस सूर्यः (कनिक्कदन्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्द

कुर्वन् (एति) गगनमंडलं गच्छति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १, २ ऋग्यजुसामरूपतीन प्रकारके वचनों को ३ ऋत्विज उच्चारण करते हैं ४ दुग्धदाता ५ गौ ६ दोह के लिये शब्द करती हैं उस समय पर ७ मानस सूर्य = अह ब्रह्मास्मि यह शब्द करता ८ गगन मंडल को जाता है ॥ ५ ॥ कश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्-

इन्द्रो^१येन्द्रो^२ मरुत्वने^३ पवस्व^४ मधुमत्तमः^५ अर्के^६
स्य^७ योनिमा^८ सदम् ॥ ६ ॥ ६

हे (इन्द्रो) सोम (मधुमत्तमः) अतिशयेन मधुमान्त्वं (अर्के-स्य) अर्चनीयस्य यज्ञस्य (योनिम्) स्थानं (आसदम्) उपवे-
पुं (मरुत्वेने) (इन्द्राय) इन्द्रार्थं (पवस्व) क्षर ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे सोम २ अत्यन्त मधुमान् तुम ३ पूजनीय यज्ञके ४ स्थानमें ५ स्थित होनेको ६ मरुद्गण युक्त ७ इन्द्रके लिये ८ पात्रमें गिरो ९

अथाध्यात्मम् - हे (इन्द्रो) आत्मप्रतिविंबं (मधुमत्तमः) विज्ञानवान्त्वं (सदम्) सदैव (मरुद्गते) वागाद्यत्विग्वते (इन्द्राय) आत्मारूप यजमानाय (अर्केस्य) अर्चनीयस्य महा-
पुरुषस्य (योनिम्) स्थानं गगनमण्डलं (आपवस्व) सुषुम्णा
मार्गेणा गच्छ ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंबं २ विज्ञानी तुम ३ सदैव ४ वागादि ऋत्विजवान् ५ आत्मारूप यजमानके लिये ६ पूजनीय महापुरुषके ७ स्थान गगन मंडल को ८ सुषुम्णा मार्गसे जाओ ॥ ६ ॥

जमदग्निऋषिः शेषं पूर्ववत्-

असाव्यं^१ धुर्मदाया^२ प्सुदक्षो^३ गिरिष्ठाः^४ श्ये^५

नौनयोनिमासदत् ॥७॥७

(गिरिष्ठाः) देहेस्थितः (अभुः) आत्मप्रतिविंबुः (मदाय) अहंब्र
ह्मास्मीति मदाय (असावि) अभिपुतः (अप्सु) कमलान्तरि-
क्षेषु (श्येने) (न) इव शीघ्र गमनः (अयम्) आत्मप्रतिविंबुः
(योनिम्) स्थानं गगनमण्डलं (आसदत्) प्राप्तवान् ॥७॥७

भाषार्थः - १ देहेनेस्थित २ आत्म प्रतिविंबु ३ अहंब्रह्मास्मि मदके
लिये ४ अभिपुत हुआ ५ कमलान्तरिक्षोंमें ६ श्येनकी तुल्य शीघ्रगा-
मी ७ इस आत्म प्रतिविंबुने ८ गगन मंडल नाम स्थान को ९ प्राप्त किया
-॥७॥-७

दृढच्युत आगस्त्य ऋषिः शेषपूर्ववत्

पवस्वदक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे मरु
द्ध्यौर्वायवे मदः ॥ ८ ॥ ८

हे (हरे) हरितवर्ण सोम (दक्षसाधनः) बलस्य साधकः (मदः)
मदरूपत्वं (देवेभ्यः) (मरुद्भ्यः) (वायवे) पीतये) पानाय (पव
स्व) सर ॥ ८ ॥ ८

भाषार्थः

१ हे हरितवर्ण सोम २ बलसाधक ३ मदरूपतुम ४ देवताओं ५ मरुद्भ्यों
६ और वायुके ७ पानार्थ ८ पावमे गिरो - ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् हे (हरे) मानससूर्य (दक्षसाधनः) योग
बलस्य साधकः (मदः) मदरूपत्वं (मरुद्भ्यः) प्राणोभ्यः (वाय
वे) समष्टिप्राणाय (देवेभ्यः) महापुरुष पुरुषेभ्यः (पीतये)
पानाय (पवस्व) सुपुम्णा मार्गेण गच्छ ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे मानससूर्य २ योगबलके साधक ३ मदरूपतुम ४
प्राणों ५ समष्टिप्राण ६ और महापुरुष पुरुषोंके ७ पानार्थ ८ सुपुम्णा

मार्गसेचलो-॥८॥ अस्याः परस्याञ्च कश्यपोः सितः करपिः शेषं पूर्ववत्-

परिस्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत् । मदेषु

सर्वधा असि ॥ ८ ॥ ८

(स्वानः) सुवानः अभिषूयमाणः (गिरिष्ठाः) गिरौ वर्तमानः (सोमः) (पवित्रे) ऊर्णमये दशा पवित्रे (पर्य्यक्षरत्) परिक्षरति सत्त्वं (मदेषु) (सर्वधा) सर्वेषां देवानां धारकः (असि) - ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ अभिषूयमान २ पहाड़ी ३ सोम ४ ऊर्णमय दशा पवित्रपर ५ गिरता है वह तुम ६ मदे में ७ सर्व देवताओं के धारक - हो - ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् - (स्वानः) आत्मैवानो यस्य सः (गिरिष्ठाः) महावाचिस्थितः (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (पवित्रे) प्राणे । पवित्रं वै प्राणोदानौ व्यानञ्च श ० १ १ ३ १ (पर्य्यक्षरत्) सत्त्वं (मदेषु) अहं ब्रह्मास्मीति मदेषु (सर्वधा) सर्वस्य ब्रह्माण्डस्य धारकः (असि) ॥ ८ ॥

भाषार्थः

१ आत्मरथस्य २ महावाक् में स्थित ३ आत्मप्रतिविंब ४ प्राण में ५ स्थित हुः आवह तुम ६ अहं ब्रह्मास्मि मदे में ७ सब ब्रह्माण्ड के धारक - हो ॥ ८ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

परिप्रियादिवः कविर्वया थं सिन स्याहितः स्वा

नैयीति कविः क्रतुः ॥ १० ॥

(कविः) मेधावी (कविः क्रतुः) योग यत्नानुष्ठाता (न स्याः) मनोहृदययोर्मध्ये (हितः) निहित आत्मप्रतिविंबः (स्वानैः) स्वकीयवागाद्यात्विग्भिः सह (दिवः) कमल समूह रूप स्वर्गस्य (प्रिया) प्रियाणि (वयांसि) ईशरूपाणि यथा - ह्यमुपार्ण सयुजा सरवा

यासमानंवृक्षं परिष्वजानेतयोरन्यः पिप्लवं स्वहृत्त्यनश्नन्न
न्योऽभिचाकशीति म. १३. २२ सू. १६४ (परियाति) गच्छति १०

भाषार्थः - १ मेधावी २ योगयज्ञका अनुष्ठाता ३ मनहृदयमें ४ स्था
पित आत्म प्रतिविंब ५ अपने वाक् आदि ऋत्विजों के साथ ६ कमल समूह
रूप स्वर्गके ७ मिय - ईश रूप देवताओंको ८ प्राप्त करता है - ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते-
सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पंचमाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ५

अथ द्वितीयः खंडः

श्यावाश्व ऋषिः शेषं पूर्ववत् -

^{१२} प्रसो^{२२}मासो^३ मद^३च्युतः^३ ऋव^{१२}सेनो^३मघो^३नाम्^३। सुतो^३
^३विदथे^३ अक्रमुः ॥ १॥ ११

(सुतोः) अभिषुताः (मदच्युतः) अहं ब्रह्मास्मीति मदस्त्राविणः
(सोमासः) प्राणाः (मघोनाम्) योगधनवतां योगिनां (विदथे)
यज्ञेनिः (ऋवसे) विराड् रूपान्नाय यथा श्रुतिः यदिदं किंचा
भुभ्य आक्रिमिभ्य आकीटपतङ्गेभ्यस्त त्वाणस्यान्नं १४। ६। २
१४ (प्रक्रमुः) प्रगच्छन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ अभिषुत २ और अहं ब्रह्मास्मि मदके उन्पादक ३ प्राणा
४ योगधनी योगियोंके ५ यज्ञमें ६ विराड् रूप अन्नके लिये ७ जाते हैं ॥ १॥

वित ऋषिः शेषं पूर्ववत् -

^१ प्रसो^{२२}मासो^३ विप^३श्चितो^३ पो^३न^३ यन्त^३ ऊ^३र्मय^३ श्वना^३
^३निमृ^३हिषो^३ इव ॥ २ ॥ १२

(विपश्चितः) मेधाविनः (सोमासः) प्राणाः (मनयन्त) कमले

पुगच्छन्ति^४ (इव) यथा (जर्मयः) (अपः) वा (महिषाः) प्रवृद्धा
मृगाः (वनानि) गच्छन्ति ॥२॥

भाषार्थः - १ मेधावी २ प्राण ३ कमलों में जाते हैं ४ जैसे ५ लहरें ६
जलों को और ७ बड़े मृग ८ वनों को प्राप्त करते हैं ॥२॥

अमहीयुर्वरिषिः शेषं पूर्ववत्

पवस्वेन्दो^१ वृषा^२ सुतः^३ कृधा^४ नो^५ यश^६ सो^७ जने^८ । वि
श्व^९ अपा^{१०} हिषा^{११} जहि ॥३॥ १३

हे (वृषा) मानससूर्यरूप (इन्दो) आत्मप्रतिविंब (सुतः) अ
भिषुतस्त्वं (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ (जने) योगिपुत्रः
अस्मान् (यशसः) यशस्विनः (कृधि) कुरु (विश्व) सर्वान्
(हिषः) हेष्टनकामादीन् (अपजहि) मारय ॥३॥

भाषार्थः - १ हे मानससूर्यरूप २ आत्मप्रतिविंब ३ अभिषुततुम ४ सुषु
म्णा मार्ग से चलो ५ योगियों के मध्य ६ हमको ७ यशस्वी ८ करो ९ सब १०
हेष्टाकाम आदि को ११ मारो - ॥३॥ १३

भृगुर्वरिषिः शेषं पूर्ववत्

वृषा^१ ह्यसि^२ भानुना^३ द्युमन्तन्त्वा^४ हवामहे^५ । पव
मान^६ स्वदृशम् ॥४॥ १४

हे (पवमान) शोध्यमानात्मप्रतिविंबत्वं (वृषा) मानससूर्य
रूपः (असि) (स्वदृशं) सर्वस्य द्रष्टारं (भानुना) तेजसा (द्युम
न्तं) दीप्तिमन्तं अतिशयेन तेजस्विनं (त्वा) त्वां (हि) (हवाम
हे) आह्वयामहे ॥४॥

भाषार्थः - १ हे शोध्यमानात्मप्रतिविंबतुम २ मानससूर्यरूप ३

हो ४ सवकेद्रा ५ तेजसे ६ दीप्तिमान ७ तुमको ८ ङी ९ ह्रम आह्वान करते हैं—॥ ४ ॥ अस्याउत्तरस्याश्च कश्यपञ्चरथिः शेषं पूर्ववत्-

इन्द्रः प्रविष्टचेतनः प्रियः कवीनाम्मतिः । स्तज्ज

दश्च रथीरिव ॥ ५ ॥ १५

(चेतनः) चैतन्यः (प्रियः) इन्द्रियाणां प्रियः (कवीनाम्) मेधाविनामात्मारूपयोगिनां (मतिः) प्रज्ञारूपः (इन्द्रुः) आत्मप्रतिविंबः (प्रविष्ट) सुषुम्णा मार्गेणा गच्छत (स्तज्जत्) स्वकीयात्मानं ब्रह्मणि स्तज्जत् (इव) यथा (रथी) (अश्वम्) भाषार्थः—१ चैतन्य २ इन्द्रियोकाप्रिय ३ मेधावी आत्मारूपयोगियों का ४ प्रज्ञारूप ५ आत्मप्रतिविंब ६ सुषुम्णा मार्गसेचला ७ अपने आत्माको ब्रह्ममें छोड़ा ८ जैसे ९ रथी १० घोड़े को—॥ ५ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

प्रस्तसत प्रवाजिनो गव्यासोमासो अश्वयो ।

भुक्तासो वीरयोशवः ॥ ६ ॥ १६

(वाजिनः) बलवन्तः (आशवः) वेगवन्तः (भुक्तासः) भुद्धा वीर्यरूपाः (सोमासः) सोमाः (गव्या) इन्द्रियशक्तिरूपेण (वीरयो) प्राणशक्तिरूपेण प्राणावैदशवीराः शं १२। २। २२ (अश्वयो) मानससूर्यशक्तिरूपेण असौवाऽ आदित्य एषोऽश्व शं ६। ३। १। २ (प्रस्तसत) प्रकर्षणा स्तज्यन्ते ॥ ६ ॥ १६

भाषार्थः—१ बली २ वेगवान ३ भुद्धवीर्यरूप ४ सोम ५ इन्द्रियशक्तिरूप ६ तथा प्राणशक्तिरूप ७ शौरमानससूर्यशक्तिरूपसे ८ अभिपुत कियेजाते हैं ॥ ६ ॥ १७ विधुविः कश्यपञ्चरथिः शेषं पूर्ववत्

^{१२}पवस्व^{३१}देव^२ आयुष^{३१२}गिन्द्र^{२२}ङ्गच्छ^{३१२}तुते^{३१२}मदः^{३१२} वायुमा^{३१२}
^{१२}रोह^{३१}धर्मेणा ॥ ७ ॥ १७

हे (आयुषक) माणसम्बद्धजीवात्मन्ः शू० ४।२।३।१ (देवः) वि
द्वान्त्वं (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेणा गच्छ (ते) तव (मदः) अहं म-
मेति मदः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गच्छतु) त्वञ्च (धर्मणा) योग-
धारणाया (वायुम्) माणं (आरोह) ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे माणसम्बद्धजीवात्मन् २ विद्वान्तुम ३ सुषुम्णा
मार्गसेचलो ४ तेरा ५ मेमेरा यह मद ६ परमेश्वर को ७ माण करो और तुम
८ योगधारणाके द्वारा ९ माणपर १० चढो - ॥ ७ ॥

मही युर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

^{१२}पवमानो^{३२} अजीजन^{३१२}द्विविचित्रं^{२२} नतन्यतुम्^{३२}।

^१ज्योतिर्वैश्वानरम्वृहत् ॥ ८ ॥ १८

(पवमानः) संस्कृतः शुद्ध आत्म प्रतिविंबः (वृहत्) महत् (वैश्वान-
रम्) (ज्योतिः) ब्राह्मज्योतिः (अजीजनत्) मादुष्प्रकारयत्-
(दिवः) द्युलोकस्य (चित्रम्) विचित्रं (तन्यतुं) (न) अशनिमि
वास्ति ॥ विद्युद्ब्रह्मेत्याहुः ॥ विद्वानाद्द्विद्युद्द्विद्यत्येन ७ सर्वस्मात्पा
प्सुनो य एवं वेद विद्युद्ब्रह्मेति विद्युद्धेव ब्रह्मा श० १४।८।७।१-॥ ८

भाषार्थः - १ संस्कृत शुद्ध आत्म प्रतिविंबने २ महान् ३ वैश्वानर ४
ब्राह्मज्योति को ५ अनुभवकिया जोकि ६ स्वर्गलोक की ७ विचित्र ८ वि-
जली के ९ समान है ॥ ८ ॥ द्वयोः काश्यपोः सितऋषिः शेषं पूर्ववत्

^{१२}परिस्वानास^३ इन्द्रो^{३१} मदाय^२ वहणा^{३१२} गिराम^{३१२}
^३धो^{३१} अर्षन्ति^{३१२} धारया ॥ ९ ॥ १९

हे (मधो) प्राण। प्राणो वै मधुश० २४। १। ३। ३० (स्वनासुः) आ
 त्मैवानोयेषांते (इन्द्रवः) इन्द्रियात्मप्रतिविंवाः (वर्हेणा) म
 हत्या (गिरा) महावाचा (धारया) (पर्यर्षन्ति) समन्ताद्गच्छ
 न्ति तस्मात्त्वमपि गच्छेत्यर्थः ॥ ९ ॥

भाष्यार्थः - १ हे प्राण २ आत्मारथस्य ३ इन्द्रियआत्मप्रतिविं ४.
 ५ ६ महावाक् रूप धारा के साथ ७ सब ओर जाते हैं उस कारण तुम भी
 चलो ॥ ९ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

परिप्रासिष्यदत्कविः सिन्धो रूमीवधिञ्जि
 तः। कारुम्बिभ्रत्पुरुस्पृहम् ॥ १० ॥ २०

(सिन्धोः) मनसः मनोवैसुमुद्रः श० ७। ५। २। ५२ (ऊर्मो) (सु
 धिञ्जितः) आञ्जितः (कविः) मेधावी। आत्मप्रतिविंवाः (पुरु
 स्पृहं) बहुभिः स्पृहणीयं (कारुं) कर्त्तारमन्तर्यामिनभात्मा
 नं (विभ्रत्) धारयन् (परिप्रासिष्यदत्) परिस्यन्दते ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ मनकी २ लहरमें ३ आञ्जित ४ मेधावी आत्मप्रतिविंवा
 वहुतके स्पृहणीय ६ कर्त्ता अन्तर्यामी आत्मा को ७ धारणा करता ८ ऊप
 रको जाता है ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्र
 सादशर्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्या
 यस्य द्वितीयः खण्डः २॥ इति पंचमः प्रपाठकः

अथ षष्ठः प्रपाठकः

अथ तृतीयः खण्डः

अमही युज्वरीपिः शेष पूर्ववत्

उपोषु जानमभुरङ्गोभिर्भङ्ग म्परिष्कृतम्। इन्दु

^३१ ^३२
१ न्देवा अयासिषुः ॥ १ ॥ २२

(सुजातम्) सुसंस्कृतं (अधुरम्) कमलान्तरिक्षेषु वेगवन्तं (भङ्गम्) देहेन प्रथमभूतं (गोभिः) इन्द्रियैः (परिष्कृतम्) अलङ्कृतं (इन्दुम्) आत्मप्रतिविंबं (देवाः) (उपायासिषुः) उपगच्छन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ अच्चे संस्कृत २ कमलान्तरिक्षों में वेगवान् ३ देहाभिमानसे प्रथम ४ इन्द्रियों से ५ अलंकृत ६ आत्मप्रतिविंबको ७ देवता ८ दर्शन देते हैं - ॥ १ ॥

^३ पुनानो ^३ अक्रमी ^३ द्भि ^३ वि ^३ श्वा ^३ मृ ^३ धा ^३ वि ^३ च ^३ र्षा ^३ णिः ॥

^३ शु ^३ म्भ ^३ न्ति ^३ वि ^३ प्र ^३ ण्धी ^३ ति ^३ भिः ॥ २ ॥ २२

(विचर्षाणिः) द्रष्टा (पुनानः) संस्कृत आत्मप्रतिविंबः (विश्वाः) सर्वाः (मृधः) कामसेनाः (अभ्यक्रमीत्) अभिक्रामितं (विप्रमेधाविनं देवाः) (धीतिभिः) प्रज्ञाभिः (शुम्भन्ति) अलंकुर्वन्ति ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ द्रष्टा २ संस्कृत आत्मप्रतिविंब ३ सब ४ कामसेनाओंको ५ सन्मुख होना है उस ६ मेधावी को देवता ७ प्रज्ञाओंसे ८ अलंकृत करते हैं - ॥ २ ॥ २२

^३ आ ^३ वि ^३ श ^३ न्क ^३ ल ^३ श ^३ थं ^३ सु ^३ नो ^३ वि ^३ श्वा ^३ अ ^३ र्ष ^३ न्नि ^३ भि ^३ णि

^३ यः ॥ इ ^३ न्दु ^३ रि ^३ न्द्रो ^३ य ^३ धी ^३ यते ॥ ३ ॥ २३

(सुतः) अभिपुत्रः (इन्दुः) सोमः (विश्वाः) सर्वाः (भ्रियः) सम्पदः (अभ्यर्षन्) अभितो गमयन् (कलशम्) द्रोणं (आविशन्) (इन्द्राय) (धीयते) दशापवित्रे अर्घ्युभिर्निधीयते ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ अभिपुत्र २ सोम ३ सब ४ सम्पदाओंको ५ सब ओरसे प्राप्त कराना ६ द्रोणकलशमें अर्घ्य कराना ७ इन्द्रके पानार्थ दशापवि

त्र परस्थापन किया जाता है - ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - (सुतः) अभिषुतः (इन्दुः) आत्मप्रतिविम्बः
(विम्बोः) सर्वाः (अभियः) योगसम्पदः (अभ्यर्षन्) अभितोग-
मयन् (कलशम्) अन्नर्यामिनं । प्रजापतिर्वेद्रोण कलशः श
४। ३। १। ६ (आविशन्) (इन्द्राय) परमेश्वराय (धीयते) प्राणे
निधीयते ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ अभिषुत २ आत्मप्रतिविम्ब ३ सब ४ योगसम्पदाओं
को ५ सबशोरसे प्राप्तकरना ६ अन्नर्यामीमें ७ प्रवेशकरता ८, ९ परमेश्व-
रके पानार्थप्राणपरस्थापन किया जाता है ॥ ३ ॥

प्रभुवसुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
**असजिरथ्यो यथा पवित्रं चम्बो सुतः । कार्ष्म-
न्वाजीन्य क्रमीत् ॥ ४ ॥ २४ ॥**

(चम्बोः) अधिपवणफलकयोः (सुतः) अभिषुतः सोमः (पवित्रं
(असर्जि) सृष्टोः भूत (रथ्यः) (यथा) अश्वद्व (वाजी) वेगवा-
नसोमः (कार्ष्मन्) देवानामाकर्षणा वतियज्ञे (न्यक्रमीत्)
नितरां क्रामति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ अधिपवणफलोंपर २ अभिषुतसोम ३ पवित्रपर ४
गिरा ५, ६ तबघोड़ेकी नुत्य ७ वेगवानसोम ८ यज्ञमें ९ प्राप्तहोता है ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् - (चम्बोः) प्राणापानयोः । चम्बगतौ (सुतः)
अभिषुत आत्मप्रतिविम्बः (पवित्रं) प्राणे पवित्रं वै प्राणो दानौ व्य-
नश्वश १० ११ ३। १२ (असर्जि) सृष्टोः भूततदा (रथ्यः) (यथा) अ-
श्वद्व (वाजी) वेगवान् (कार्ष्मन्) कार्ष्मिनिदेवानामाकर्षणा

स्थाने कमल समूहे (न्यक्रमीत्) नितरां क्रामति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ प्राण अपानके मध्य २ अभिषुत आत्म प्रति विंव ३ प्राण में ४ प्रवेश हुआ तब ५, ६ घोड़े की तुल्य ७ वेगवान बह ८ कमल समूह में ९ भास होता है - ॥ ४ ॥

मेघ्यातिथिर्ऋषिः गीयत्री छन्दो गावो देवताः

^{२३} प्रयद्वा^३वान^१भूर्ण^२यस्त्वेषा^३ अयासौ^३ अक्रमुः^३।

घ्नन्तः^३ कृष्णामपत्वचम्^३ ॥ ५ ॥ २५

(यत्) यस्मात् (भूर्णयः) भ्रमण शीलाः (त्वेषाः) दीप्ताः त्विषदी सौ (न) च (अयासः) गमन कुशलाः । अयगतौ (गावः) इन्द्रियाणि वागाद्या त्विजोवा (अपत्वचम्) स्तं पीडितं (कृष्णां) कामं (अपघ्नतः) निरस्यन्तः (याक्रमुः) योग यज्ञं प्रवर्तयन्ति स्म ॥ ५

भाषार्थः - १ जिस कारण २ भ्रमण शील ३ दीप्ति ४ और ५ गमन कुशल ६ इन्द्रियों वा वाक् आदि ऋत्विजों ने ७ पीडित ८ काम को ९ भगते हुए १० योग यज्ञ को प्रवर्त किया - ॥ ५ ॥

अस्याः परस्याश्च निघृविर्ऋषिः गीयत्री छन्दः सोमो देवताः

^३ अपघ्न^१न्पवसे^३ मृधः^३ क्रतुर्वित्सोम^३ मत्सरः^३ । नुद^३

स्वादवयुजनम् ॥ ६ ॥ २६

परमेश्वरोपदेशः हे (सोम) आत्म प्रति विंव (मत्सरः) मायि गति शीलः (क्रतुवित्) योग यज्ञस्य ज्ञातात्वं (मृधः) हिंसकान्कामा दीन् शत्रून् (अपघ्नन्) मारयन् (पवसे) गच्छसितस्मात् (अदेवयुम्) अदेव कामं मनः (नुदस्व) योग कर्मणि प्रेरय ॥ ६ ॥

भाषार्थः - परमेश्वर का उपदेश १ हे आत्म प्रति विंव २ मुझमें गति

शील ३ योग यज्ञकेज्ञातानुम ४ हिंसक शत्रु काम आदिको ५ मारते ६ चल
तेहो उसकारण ७ अदेव कामामनको ८ योग कर्ममें प्रेरण करो-॥ ६॥

विनियोगः पूर्ववत्

^{१ २} अयापवस्व ^{३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २} धारया यया सूर्यमरोचयः ^३ हिन्वा
^{१ २} नो मानुषी ^{३ २} रपः ॥ ७ ॥ २७

हे आत्म प्रतिविंबु (मानुषीः) नरसम्बन्धीनि (अपः) कमलान्त
रिक्षाणि (हिन्वानः) सेवमानस्त्वं। द्विविभीणाने (स्वा० प०) (अया)
आत्मरूपया (धारया) (पूर्वस्व) ब्रह्मणि गच्छ (यया) आत्मरू
पधारया (सूर्यम्) (अरोचयः) प्रकाशयः ॥ ७ ॥

भाषार्थः— हे आत्म प्रतिविंबु १ नरसम्बन्धी २ कमलान्तरिक्षों को ३ से
वन करते तुम ४ आत्मरूप ५ धाराके साथ ६ ब्रह्ममें जाओ ७ जिस आत्मा
रूप धाराके द्वारा ८ सूर्यको तुमने प्रकाशित किया है-॥ ७ ॥

अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

^{१ २} सपवस्व ^{३ २ ३} य आविथ ^{३ १ २ ३ २ ३ १ २} न्द्र वृत्राय हन्तवे। ^३ वृत्रा १०
^{२ ३} समहीरुपः ॥ ८ ॥ २८

(यः) त्वं (वृत्राय) पापस्य (हन्तवे) हन्तुं (महीः) महान्ति (अपः)
कमलान्तरिक्षाणि (वृत्रिवांसम्) नानादेवरूपैः निरुन्धानं (ड
न्द्रम्) परमेश्वरं (आविथ) तर्पयसि। अवतर्पणो (स) त्वं (पवस्व)
ब्रह्मणि गच्छ ॥ ८ ॥ २८

भाषार्थः— १ जो तुम २, ३ पापनाशकेलिये ४ महान् ५ कमलान्तरिक्षों
को ६ नानादेव रूपसे व्याप्त करने वाले ७ परमेश्वर को ८ त्वत्प्रकरते हो ९ व
ह तुम १० ब्रह्ममें जाओ ॥ ८ ॥ अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अया वीती परिस्त्रव यस्त इन्द्रो मदेष्वा । अवाह
नवतीर्नव ॥ ९ ॥ २९

हे (इन्द्रो) आत्मप्रतिविंव (अयो) आत्मरूपेण (वीती + आ) वी
त्यायोगमार्गेण (परिस्त्रव) परिगच्छ (यः) (ते) तव योगमार्गः (म
देषु) अहं ब्रह्मास्मीति मदेषु (नवतीर्नव) नवनवति संख्याकारुपा
धीः (अवाहन्) जघान ॥ ९ ॥

भाषार्थः — १ हे आत्मप्रतिविंव २ आत्मारूप ३ योगमार्गसे ४ चलो ५
जिस ६ तेरे योगमार्गेने ७ अहं ब्रह्मास्मि मदे में ८ नवनवति संख्यावाली
उपाधियोंको ९ नष्ट किया — ॥ ९ ॥ उवथ्य ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

परिद्युक्षुं सनद्रयिभ्रद्वाजन्नो अन्धसा । स्वा
नो अर्षपवित्रे ॥ १० ॥ ३०

हे आत्मप्रतिविंव (स्वानः) आत्मैवानो यस्य सत्वं (नुः) अस्माकं वा
गाद्यत्विजां (द्युक्षुम्) द्युतौ क्षियन्तं दीमं (सनद्रयिम्) सनातन-
धनवन्तं (भ्रद्वाजम्) मनः । मनो वै भ्रद्वाज ऋषिः श० ८ । १ । १९
(अन्धसा) भूतात्मारूपान्नेन सह गृहीत्वा (पवित्रे) प्राणो (अर्ष-
र्ष) पर्यर्षिपरिगच्छ ॥ १० ॥ ३०

भाषार्थः — हे आत्मप्रतिविंव आत्मरथस्थनुम २ हमवाक आदि ऋ
त्विजोंके ३ दीप्त ४ सनातनधनवान ५ मनको ६ भूतात्मारूप अन्न सहित
लेकर ७ प्राणमें ८ प्रवेश करो — ॥ १० ॥ ३०

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म विरचिते साम-
वेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

मेधातिथिर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अचिक्रदृषाहरिमहोन्मित्रो न दर्शतः । स^{१२}थं^{३२}
सूर्येण दिद्युते ॥१॥ ३१

यदा (मित्रः) (न) सूर्य इव (दर्शतः) दर्शनीयः (महान्) वागाद्य^४
त्विग्भिः पूज्यः (दृषा) धर्मात्मा (हरिः) मानससूर्यः (अचिक्रदत्^५
महावाचमुच्चारयति तदा (सूर्येण) समष्टिसूर्यरूपेण (दिद्युते)
दिवि प्रकाशते ॥१॥

भाषार्थः - जव १,२ सूर्यकी समान ३ दर्शनीय ४ वाक् आदि ऋत्वि^५
से पूज्य ५ धर्मात्मा ६ मानससूर्य ७ महावाक् को उच्चार^८ करता है तव ८ स
मष्टिसूर्यके साथ ९ स्वर्गमें प्रकाश करता है ॥१॥

भृगुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

आनदक्षुम्मयो भुवं वह्नि मद्यावृणीमहे । पा^२
न्तमापुरुस्सहम् ॥२॥ ३२

वागाद्यत्विजः कथयन्ति हे आत्म प्रति विं व (अद्य) (मयो भुवम्) जी^३
न्मुक्ति सुखस्थ भावयितारं (ते) तव (दक्षम्) बलं (आवृणीमहे)
सम्भ्रजामहे (वह्निम्) मोक्ष प्रापकं बलं (आ) आवृणीमहे (पु^४
रुस्सहम्) वह्निभिः स्पृहणीयं (पान्त्तम्) संसारदक्षकं बलं (आ)
आवृणीमहे ॥२॥

भाषार्थः - वाक् आदि ऋत्विज कहते हैं हे आत्म प्रति विं व १ अद्य २
जीवन मुक्ति सुख के दाता ३ तेरे ४ बल को ५ हम सेवन करते हैं ५ मोक्ष प्रा
पक बल को ६ सेवन करते हैं ७ वह्नि के स्पृहणीय ८ संसार से रक्षक बल
को ९ सेवन करते हैं ॥२॥

उच्यन्तः ऋषिर्गायत्री छन्दोऽध्वर्युर्देवता-
^१अध्वर्योः^२अद्रिभिः^३सुतं^४सोमम्पवित्रं^५आनय।

पुनाहीन्द्रायपानवे ॥ ३ ॥ ३३

हे (अध्वर्योः) (अद्रिभिः) ग्रावभिः (सुतम्) अभिषुतं (सोमं) (पवित्रं) (आनय) प्रापय (इन्द्राय) (पानवे) इन्द्रस्य पानाय (पुनाहि) पूतं कुरु ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे अध्वर्यु २ ग्रावाओं से ३ अभिषुत ४ सोम को ५ पवित्र पर ६ धारण करो ७, ८ इन्द्र के पानार्थ ९ पवित्र करो - ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (अध्वर्योः) ज्ञानचक्षुः। चक्षुर्वै यज्ञस्य अध्वर्युः श० १४। ६। १। ६ (अद्रिभिः) प्राणैः। प्राणा वै ग्रावाणः शू० १४। २। २। ३३ (सुतम्) अभिषुतं (सोमम्) आत्म प्रतिविंबं (पवित्रं) प्राणे (आनय) (इन्द्राय) (पानवे) परमेश्वरस्य पानाय (पुनाहि) पूतं कुरु ॥ ३ ॥

भाषार्थः

१ हे ज्ञानचक्षु २ प्राणों से ३ अभिषुत ४ आत्म प्रतिविंब को ५ प्राण पर ही ६ धारण करो ७, ८ परमेश्वर के पानार्थ ९ पवित्र करो - ॥ ३ ॥

अवत्सारः ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता-

^१तरत्सं^२मन्दी^३धावति^४धारा^५सुतस्यान्धसः।^६तरत्सं^७मन्दी^८धावति ॥ ४ ॥ ३४

(सः) (मन्दी) अहं ब्रह्मास्मीति मदरतः प्रतिविंबस्थ आत्मा (सुतस्य) अभिषुतस्य (अन्धसः) अन्नरूप प्रतिविंबस्थ (धाराः) इन्द्रियरूपाधाराः (तरत्) तरन् सन् (धावति) ब्रह्माणि गच्छति (सः) (मन्दी) आत्मा (तरत्) मायोपाधिं तरन् (धावति) ब्रह्म

णि गच्छति ॥ ४ ॥

भाषार्थः

१ वह २ अहं ब्रह्मास्मि मदमें प्रीति मान प्रति विंवस्थ आत्मा ३ अभिपुत ४
अन्नरूप प्रति विंवकी ५ इन्द्रियरूप धाराओंको ६ तरना ७ ब्रह्ममें जाता-
है ८ वह ९ आत्मा १० मायोपाधिको तरना ११ ब्रह्ममें प्राप्त होता है ॥ ४

द्वयोर्निधुविर्ऋपिः शेषं पूर्ववत्-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५
आपवस्व सहस्रिणो रयिं सोमसुवीर्य्य
म् । अस्मे अवां सिधारय ॥ ५ ॥ ३५

वागाद्यत्विजः मर्थ यन्ति हे (सोम) आत्म प्रति विंवत्वं (सह-
स्त्रिणम्) सहस्रः प्रकाशको महानारायणस्तत्सम्बन्धिनं (सुवी-
र्य्यम्) सुवृत्त सम्पन्नं (रयिम्) योगधनं (आपवस्व) अभिमु-
ख्ये नृक्षर अपिच (अस्मे) अस्मासु (अवांसि) योगार्हान् जानि-
(धारय) स्थापय ॥ ५ ॥ ३५

भाषार्थः - वाक् आदि चरत्विज मर्थना करते हैं १ हे आत्म प्रति विव-
तुम २ महानारायण सम्बन्धी ३ सुवृत्त सम्पन्न ४ योगधनको ५ प्राप्त करा
ओ ६ और हमारे पास ७ योग योग्य अन्तोंको ८ स्थापन करो - ॥ ५ ॥

विनि योगः पूर्ववत्-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
अनुप्रत्नास आयवः पदन्न वीयो अक्रमुः ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
रुचं जनन्त सूर्य्यम् ॥ ६ ॥ ३६

(प्रत्नासः) पुराणाः (आयवः) प्राणाः (नवीयः) नवतरं (पदम्)
स्थानुं ब्रह्माण्डं (अन्वक्रमुः) व्याप्तवन्तः (सूर्य्यम्) मानस सूर्य्य
(रुचं) ब्राह्मज्योतिषि (जनन्त) जनयन्त । जीव एव ब्रह्माण्डो
पांथेः कारणस्तस्मान्नस्य सायुज्य एवोपाधेर्नाश इत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ पुण्ये २ आणोने ३, ४ नवतर स्थान ब्रह्माण्डको ५ व्या प्रकिया ६ मानस सूर्य्य को ७ ब्रह्मज्योति सूर्य्यमें ८ स्थापन किया ॥ ६ ॥

भृगु ऋषिः शेषं पूर्ववत्
^{१ २} अषीसोमद्युमत्तसोभिद्रो ^{३ १ २ ३ १ २} णानिरोरुवत् ।
^{३ १ २ ३ १ २} सीदन्यो नौवनेष्वो ॥ ७ ॥ ३ ७

हे (सोम) आत्म प्रतिविंब (द्युमत्तमः) अतिशयेन दीप्तिमान्त्वं (रोरुवत्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कुर्वन् (वनेषु) अन्नरिक्षेषु (द्रोणानि) कमलानि (आसीदन्) (योनौ) ब्रह्माणि (अर्ष) गच्छ ॥ ७ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्म प्रतिविंब २ महादीप्तिमाननुम ३ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को उच्चारण करते ४ अन्नरिक्षों में ५ कमलों को ६ प्राप्त करते ७ ब्रह्ममें ८ प्रवेश करो ॥ ७ ॥

कश्यप ऋषिः शेषं पूर्ववत्-
^{१ २} वृषासोमद्युमांश्च ^{३ १ २ ३ १ २} असिवृषादेववृषेव्रतः ।
^{३ १ २ ३ १ २} वृषाधर्माणि दधिषे ॥ ८ ॥ ३ ८

हे (देव) विद्वन् (सोम) आत्म प्रतिविंब (वृषा) धर्मरूपः (वृषा) मानस सूर्य्य स्त्वं (द्युमान्) दीप्तिमान् (वृषेव्रतः) धर्मव्रतः (असि) (वृषा) समष्टि सूर्य्यरूपस्त्वं (धर्माणि) धारणा योग्यानि लोकानि (दधिषे) दधिषे धारयसि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे विद्वन् २ आत्म प्रतिविंब ३ धर्मरूप ४ मानस सूर्य्यनुम ५ दीप्तिमान ६ धर्मव्रत ७ हौं ८ समष्टि सूर्य्यरूपनुम ९ धारणा योग्यलोकों को १० धारण करते हो ॥ ८ ॥

कश्यप ऋषिः शेषं पूर्ववत्-
^{३ १ २ ३ १ २} वृषेपवस्वधारया सृज्यमानो मनीषिभिः ।

^१इन्द्रो^२रुचा^३भिगा^४इहि^५॥६॥३६

हे (इन्द्रो) आत्मप्रतिविंब (मनीषिभिः) मेधाविभिर्वागाद्यत्विभिः
(मृज्यमानैः) शोध्यमानस्त्वं (इषे) अमृत वृष्यै (धारया) (पव-
स्व) ऊर्ध्वगच्छ पुनः (रुचा) दीप्त्या (गाः) इन्द्रियाणि (अभीहि)
उत्थाने प्राप्नुहि ॥ ६ ॥ **भाषार्थः**

१ हे आत्मप्रतिविंब २ मेधावी वाक् आदि ऋत्विजों से ३ शोध्यमान तुम ४
अमृत वर्षों के लिये ५ धारा द्वारा ६ ऊँचे को चलो फिर उत्थान में ७ दीप्ति द्वा-
रा ८ इन्द्रियो को ९ प्राप्त करो ॥ ६ ॥ असित ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

^३मन्द्रयो^४सोम^५धारया^६वृषा^७पवस्व^८देवयुः^९।^३अव्या^४
^५वारे^६भिरस्मयुः^७॥१०॥४०

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (अस्मयुः) उत्थाने अस्मत्कामः (देवयुः)
समाधौ देवकामः (वृषा) मानससूर्यस्त्वं (अव्यावारेभिः) सूर्येण
त्वया आच्छादितैर्वागाद्यत्विभिः सहितः सन् (मन्द्रयो) अहं
ब्रह्मास्मीति गम्भीरधनिवत्या (धारया) (पवस्व) ऊर्ध्वगच्छ ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ उत्थानमें हमको चाहने वाले ३ समा-
धिमें देव कामा ४ मानससूर्यतुम ५ वाक् आदि ऋत्विज सहित ६ अहं ब्र-
ह्मास्मि नाम गंभीरधनि वाली ७ धाराके साथ ८ ऊपरको चलो - ॥ १० ॥

कविः ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

^३अव्या^४सोम^५सुकृत्यया^६महात्सनभ्यवर्द्धयाः^७।^३
^४मन्दान^५इहोपायसे^६॥११॥४१

हे (सोम) आत्मप्रतिविंबत्वं (सुकृत्यया) (अव्या) शोभनकृत्या
रूपपराशक्त्या (महान्) (सन) (अभ्यवर्द्धयाः) वृद्धिमाप्नोसि (

७ (मन्दानः) ब्रह्मानन्दयुक्तः (इत्) एव (वृषायसे) वृषवदाचर
सि ॥ ११ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्मप्रतिविंबुतम् २, ३ शोभन कृत्यारूपपराशक्ति द्वारा ४ महान् ५
होते ६ वृद्धि को प्राप्तो ७ ब्रह्मानन्दयुक्त ८ ही ९ वृषभकी समान आचरण
करते हो ॥ ११ ॥

जमदग्निऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अयं विचर्षाणिहितः पवमानः । सचेतनि । हि
न्वान् आप्यं वृहत् ॥ १२ ॥ ४२

(अयम्) (विचर्षाणिः) विद्वष्टा (हितः) योगमार्गे निहितः (हिन्वा
नः) प्रेरितः (पवमानः) संस्कृत आत्मप्रतिविंबुतः (आप्यम्) गगना
न्तरिक्षस्थं (वृहत्) ब्रह्म (सचेतनि) सम्यगानयति प्रापयति ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ यह २ विशेषद्वष्टा ३ योगमार्ग में स्थापित ४ प्रेरित ५ सं
स्कृत आत्मप्रतिविंबुत ६ गगनान्तरिक्षस्थ ७ ब्रह्मको ८ प्राप्त करता है ॥ १२ ॥

अयास्यऋषिः शेषं पूर्ववत्-

पुनइन्दो महतुन ऊर्मिन्नं विभ्रदषसि । अभि
देवोऽं अयास्यः ॥ १३ ॥ ४३

हे (इन्दो) आत्मप्रतिविंबुतत्वं (नः) अस्माकं वागाद्यत्विजां (महे
(तुने) महाधनाय योगधनाय (प्रार्थसि) प्रगच्छसि (नः) च (अः)
अमृतरूपस्त्वं (ऊर्मिम्) योगोर्मि (विभ्रत्) धारयन् (देवान्) म
हापुरुषपुरुषान् (अभ्ययासि) मापयसि । अयगतौ ॥ १३ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंबुतम् २ हमवाक् आदिऋत्विजों
के ३, ४ महाधनयोगधनके लिये ५ योगमार्ग में चलते हो ६ और ७ अ
मृतरूपतुम् ८ योगोर्मि को ९ धारण करते १० महापुरुषपुरुषों को ११

प्राप्त कराने हो-॥१३॥ अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

अपघ्नन्पवते मृधोपसोमो अरावाः । गच्छ

निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥१४॥ ४४

(सोमः) आत्मप्रतिविंबः (अरावाः) अदानशीलान् (मृधः) हिंसकान्कामादीन् (अपघ्नन्) ताडयन् (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (निष्कृतम्) संस्कृतं लोकं (गच्छन्) (पवते) संस्कृतो भवति १४

भाषार्थः - १ आत्मप्रतिविंब २ अदानशील ३ हिंसक कामआदिको ४ ताडनकरता ५ परमेश्वरके ६ संस्कृतलोकको ७ प्राप्तकरता ८ संस्कृतहोता है-॥१४॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य चतुर्थखंडः

अथ पञ्चमः खण्डः ५

भरद्वाजादयः सप्तऋषयः बृहती छन्दः सोमो देवता-

पुनानः सोमधारयो पावसानो अर्षसि । आ
रुन्धायानि मृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्य
यः ॥१॥ - ४५

हे (सोम) जीवात्मन् (देवः) विद्वान् (हिरण्ययः) (उत्सः) ज्योतिर्मयजलप्रवाह रूपः (पुनानः) अस्माकं वागाद्यत्विजां शोधकस्त्वं (अर्षः) कमलान्तरिक्षाणि (धारया) (वसानः) आच्छादयन् (अर्षसि) गच्छसितथा (रुन्धा) योगधनानां धारकस्त्वं (ऋतस्य) ब्रह्मणः (योनिर्भू) लोकं (आसीदसि) ॥१॥

भाषार्थः - १ हे जीवात्मन् २ विद्वान् ३, ४ ज्योतिर्मयजलप्रवाह

रूप ५६ मवाक आदि अरन्विजोंके शोधकतुम ६, कमलान्तरिक्षोंको ७ धारासे
 ८ आच्छादन करते ९ चलते होतया १० योग धनोंके धारकतुम ११, बलके १२
 लोकको १३ प्राप्त करते हैं ॥ १ ॥ अरिषिञ्चन्दश्च पूर्ववत्-

^{२ ३ १ २} परितापिञ्चतासुतं ^{३ ३ ३} सोमायउत्तमं ^{३ १ ३ ३ ३} हविः । द

^{३ ३ ३} धन्वाङ्गोनया ^{३ ३ ३} अपस्वा ^{३ ३ ३} अतुरा ^{३ ३ ३} सुषाव ^{३ ३ ३} सोममादिभिः २४

हे (आः) आत्मारूपयजमानाः (सुतम्) अभिषुतमात्म प्रतिविंव
 (इतः) मानसकमलादूर्ध्वं (परिषिञ्चत) (अः) ज्ञानचक्षुः (सोम-
 म्) यमात्मप्रतिविंव (अदिभिः) प्राणैः (आसुषाव) अभिषुतंचका
 र (यः) (सोमः) आत्मप्रतिविंवः (उत्तमम्) (हविः) (यः) (नर्यः)
 नरयोग्यः (अप्सु) ^{१५} कमलान्तरिक्षेषु (अन्तः) मध्ये (दधन्वान्)
 प्राप्नोभवति ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मारूपयजमानो २ अभिषुत आत्म प्रतिविंव ^{को}
 इस मानस कमल से ऊपर ४ सींचो ५ ज्ञान चक्षुने ६ जिस आत्म प्रतिविंव
 को ७ प्राणोंसे ८ अभिषुत किया ९ जो १० आत्म प्रतिविंव ११, १२ उत्तम ह
 वि है १३ जो १४ नरयोग्य १५ कमलान्तरिक्षों के १६ मध्य १७ प्राप्त होता
 है ॥ २ ॥

अरिषिञ्चन्दश्च पूर्ववत्सोमो देवता-

^{३ १ २ ३} आसोमस्वाना ^{३ १ २ ३} आदिभिस्तिरा ^{३ १ २ ३} वाराण्यव्यया ।

^{३ १ २ ३} जनानपुरिचम्बो ^{३ १ २ ३} विशद्वरिः ^{३ १ २ ३} सदावनुषुदधिपे ३-४९

हे (सोम) आत्मप्रतिविंव (अदिभिः) प्राणैः (स्वानः) अभिषूयमा
 णस्त्वं (अव्ययावाराण) अव्ययेन सूर्येणाच्छादितान्लोका
 न् (तिरः) तिरस्कुर्वन् (आपवसे) सुषुम्णामार्गीण गच्छसितथा
 (हरिः) मानससूर्यस्त्वं (चम्बोः) प्राणापानयोर्मध्ये। चम्बगतौ-

(विशत) प्रविष्टः सन् (वनेषु) कमलान्तरिक्षेषु (सदः) स्थानं
(दाधिषे) दाधिषे (ने) यथा (जनः) (पुरि) ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ प्राणों से ३ आभिष्यमाण तुम ४
सूर्य से आच्छादित लोकों को ५ तिरस्कार करते ६ सुपुत्राण मार्ग से जाते हो
तथा ७ मानस सूर्यनुम ८ प्राण अपान के मध्य ९ प्रविष्ट होते १० कमलान्त
रिक्षों में ११ स्थान को १२ करते हो १३ जैसे १४ मनुष्य १५ पुरी में - ॥ ३ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

प्रसोमदेववीतये सिन्धुनीपिप्ये अर्णोसा। अशो
शाः पयसा मदिरानजागृवि रच्छाकोशमधुश्रु
तम् ॥ ३ ॥ ४८

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (मदिरः) मयात्मना प्रेरितः (न) च (जा
गृविः) जागरण शीलस्त्वं (देववीतये) देवस्य तर्पणाय (अशोः)
ब्रह्मांशुरूपस्य स्वकीयात्मनः (पयसा) प्राणो न श० ६। ५। ४। १५
(अर्णोसा) नदीरूपेन्द्रियसमूहेन। अर्णोः नद्यः नि० (मधुश्रुतं)
ब्रह्मज्ञानस्य क्षारयितारं श० १४। ५। ५। २६ (कोशम्) गगनम
ण्डलं (अच्छ) आशुं (प्रापिप्ये) प्रवर्द्धसे ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ मुझ आत्मा से प्रेरित ३ और ४ जा
गरणशील तुम ५ देवताके तर्पणार्थ ६ ब्रह्मांशुरूप अपने आत्मा ७ प्राण ८
और नदी रूप इन्द्रिय समूह के साथ ९ ब्रह्मज्ञानदाता १० गगनमंडल के ११
प्राप्त करने को १२ बड़ी वृद्धि पाते हो ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

सोम उष्वाणः सोहाभिरधिष्णुभिरवीनाम्।

अश्वये वहरितायानि धारयामन्द्यापुतेधारया

(सोमभिः) पुण्वदिर्वीगांश्चत्विभिः (ध्वानेः) सुवानोऽभिषूय-
 माणाः (उः) आत्मप्रतिविंबः (अवीनाम्) अन्नवतां प्राणानां ।
 अश्वः अन्नं नि० (षण्भिः) नाडीभिः सुपुम्णादिभिः (आधियाति)
 आधिकं गच्छति तथा (अश्वया) मानससूर्यरूपया (मन्द्रया)
 अहं ब्रह्मास्मीति गम्भीरध्वनिवत्या (धारया) (याति) (इव) य-
 था (हरिता) हरितवर्णवत्या (धारयो) (सोमः) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ अभिषवण कर्त्ता वाक्सादिऋत्विजो से २ अभिषूय-
 मान ३ आत्मप्रतिविंब ४ अन्नवान प्राणोंकी ५ नाडी सुपुम्णा आदिके द्वा-
 रा ६ अधिकचलता है ७ तथा मानस सूर्यरूप ८ अहं ब्रह्मास्मि गम्भीर-
 ध्वनिवाली ९ धारके साथ १० जाता है ११ जैसे १२ हरित वर्णवती १३ धा-
 राके साथ १४ सोम—॥५॥ विनियोगः पूर्ववत्

तवाहं^३ सोम^२ रारणा^३ सरव्य^२ इन्द्रो^३ दिवे^२ दिवे^३ ।
 पुरूणि^३ वध्ना^३ विचरन्ति^३ मामव^३ परिधी^३ रति^३
 तां^३ इहि^३ ॥ ६ ॥ ५०

हे (वध्ना) अग्निरूप (सोम) ईश्वर (अहम्) (दिवेदिवे) अन्वहं
 (तव) (सरव्य) सारिव कर्मणि (रारणाः) रमे (रणोर्लिङ्गउत्तमेण-
 लिरूपम्) (पुरूणि) स्थूलसूक्ष्मकारणा शरीराणि (न्यवचरन्ति)
 नीचीनं चरन्ति वाधन्ते (तान्) (परिधीन्) देहान् (अतीहि) अ-
 गच्छ (माम्) (अव) रक्ष ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्नि २ सोम ३ ईश्वर ३ में ४ प्रतिदिन ५ आपकी ६ भक्ति
 में उरमाण करता हूँ परन्तु ८ स्थूलसूक्ष्मकारणा शरीर ९ वाधा करते हैं १० उ-
 न ११ शरीरोंको १२ मामको १३ सौर मुक्तको १४ रक्षा करो ॥ ६ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

मृज्यमानः^{३ १ २} सुहस्त्या^{३ १ २} समुद्रवाचं^{३ १ २} मिनवासि^{३ १} रायिं^{३ १}
 पिशंगम्बहुल^{३ १ २} पुरुस्पहं^{३ १ २} पवमानाभ्यर्षसि^{३ १ २} ॥७॥५९

हे (पवमान) मायातीत परमेश्वर पूशोधे (सुहस्त्या) शोभन कर्म
 बुद्ध्या (मृज्यमानः) शोधमानो ज्ञातस्त्वं (समुद्रे) मनसि (वाचम्)
 महावाचं (इन्वेसि) मेरयासि (पिशङ्गं) पिशः पापनिर्मुक्त आत्मा तत्र
 वर्तमानं (बहुलं) प्रभूतं (पुरुस्पहं) बहुभिः स्पृहणीयं (रायिम्)
 योगधनं (अभ्यर्षसि) प्रयच्छसि ॥७॥

भाषार्थः - १ मायातीत परमेश्वर २ शोभन कर्म वाली बुद्धिसे ३ शो-
 ध्यमान तुम ४ मनमें ५ महावाक् को ६ प्रेरणा करते हो ७ निष्पाप आत्मा में व-
 र्तमान ८ महान् ९ बहुत के स्पृहणीय १० योग धनको ११ देते हो ॥७॥

विनियोगः पूर्ववत्

आभिसोमास^{३ १ २} आयवः^{३ १ २} पवन्ते^{३ १ २} मद्यम्मदम्^{३ १ २} । समुद्र^{३ १ २}
 स्याधि^{३ १ २} विष्टपे^{३ १ २} मनीषिणो^{३ १ २} मत्सरसो^{३ १ २} मदच्युतः^{३ १ २} ॥८॥५९

(मनीषिणः) मेधाविनः (मत्सरसः) मूयाऽन्तर्यामिना मेरिताः स्-
 गतौ (मदच्युतः) मयाऽभिन्नाः (आयवः) गमनु शीलाः अयगतौ
 (सोमासः) प्राणाः (समुद्रस्य) मनसः (आधिविष्टपे) आधिके स्व-
 र्गे भृकुटि मंडले (मद्यं) अहं ब्रह्मास्मीति मदकरं (मदं) आत्म प्र-
 ति विवं (अभिपवन्ते) अभिनो निर्गमयन्ति ॥८॥

भाषार्थः - १ मेधावी २ मुक्त अन्तर्यामी से मेरित ३ मुक्तसे अभिन्न
 ४ गमन शील ५ प्राण ६ मनके ७ स्वर्ग भृकुटि मंडल में ८ अहं ब्रह्मास्मि मदके
 कर्ता ९ आत्म प्रति विंव को १० चारों ओर से प्राप्त होते हैं ॥८॥

विनियोगः पूर्ववत्-

पुनानः^३ सोमजागृवि^२ रव्यावारैः^३ परिप्रियः^३ । त्ववि^३
 प्रा^३भवो^३ङ्गिर^३ स्तम^३ध्वा^३ यज्ञमि^३मिक्षा^३णः^३ ॥ ५३
 हे (सोम) आत्मप्रतिविंबु (जागृविः) जागरणशीलः (प्रियः) वा
 गाद्यत्विजां प्रियः (पुनानः) शोध्यमानस्त्वं (रव्यावारैः) त्वया
 मानससूर्येणाच्छादितैर्वागाद्यत्विभिः सह (परि) परिगच्छ
 सिहे (अङ्गिरस्तम्) समाहिप्राण। प्राणो वा ३ अङ्गिरा श० ६। १।
 २। ५ (त्वम्) (विप्रः) मेधावी (अभवः) भवसि (नेः) अस्मदीयं
 (यज्ञम्) यज्ञपुरुषं (मध्वा) प्राणेन श० १४। १। ३। ३ (मिमिक्षा)
 सिञ्च ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्मप्रतिविंबु २ जागरणशील ३ वाक् आदिऋत्विजों का प्रिय ४ शोध्य
 मानस ५ तुभ्यमानससूर्यसे आच्छादितवाक् आदिऋत्विजों के साथ ६
 चलते हो ७ हे समाहि प्राण ८ मेधावी ९ हो १० हमारे ११ यज्ञपुरुष को १२
 प्राणसे १४ सींचे ॥ ६ ॥ विनियोगः पूर्ववत्-

इन्द्राय^३ पवते^३ मदः^३ सोमो^३ मरुत्वते^३ सुतः^३ । सहस्र^३
 धारा^३ अत्यव्य^३ मर्षतितमी^३ मृजन्त्या^३ यवः^३ ॥ ५४
 (सुतः) अभिषुतः (मदः) मद्रूपः (सोमः) आत्मप्रतिविंबु (मरु
 द्वते) वागाद्यत्विग्वते (इन्द्राय) आत्मारूपयजमानाय (पवते)
 गच्छति कथं (सहस्रधाराः) प्रकाशक धारा रूपः (अव्यम्) मा
 नसंसूर्यस्थानं मानसकमलं (अति) अतिक्रम्य (अर्षति) ग
 च्छति (तम्) (आयवः) प्राणाः (मृजन्ति) शोधयन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ अभिषुत २ मद्रूप ३ आत्मप्रतिविंबु ४ वाक् आदिऋ

त्विजवाले ५ आत्मारूपयजमानकेलिये ६ जाता है ७ प्रकाशक धारा रूप
८ मानस सूर्यके स्थान मानस कमल को ९ अतिक्रमण कर १० जाता है
११ उसको १२ प्राण १३ शोधन करते हैं—॥ १० ॥

विनियोगः पूर्ववत्

^{१ ३} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २}
पवस्त्ववाजसातमाभिविश्वा निवाय्या । त्वं

^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २}
समुद्रः प्रथमे विधमन्देवभ्यः सोममत्सरः ११ ५५

हे (सोम) आत्म प्रतिविंब (वाजसातमः) प्राणोन्द्रिय रूपान्नादा
ता (देवभ्यः) (मत्सरः) मयान्नर्यामिना प्रेरित (समुद्रः) मनो-
रूपः (त्वं) (विश्वा नि) सर्वाणि (वाय्या) वरणीयानि देवस्थान-
कमलानि (अभि) अभिलक्ष्य (प्रथमे) मुख्ये (विधर्मन्) विशेषे
षेण धारके गगन मण्डले (पवस्व) गच्छ ॥ ११ ॥

भाषार्थः— १ हे आत्म प्रतिविंब २ प्राण इन्द्रिय रूप अन्तों के दाता
३ देवताओं के लिये ४ मुझ अन्नर्यामी से प्रेरित ५ मनरूप ६ तुम ७ सब ८
वरणीय देवस्थान कमलो को ९ देख कर १० मुख्य ११ विशेष धारक गगन
मंडल में १२ जाओ ॥ ११ विनियोगः पूर्ववत्

^{१ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २}
पवमाना अस्तसन्त पवित्र मति धारया । मरुत्व
न्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रया ११ ५६

च ॥ १२ ॥ ५६

(मरुत्वन्तः) प्राणैर्युक्ताः (मत्सराः) मयान्नर्यामिना प्रेरिताः
(इन्द्रियाः) इन्द्रियरूपाः (हयाः) अश्वाः (मेधाम्) योगलक्ष
णां प्रज्ञां (च) (प्रियांसि) देवस्थान कमलानि (अभि) अभि-
लक्ष्य (पवमानाः) शोध्यमानाः सन्तः (धारया) (पवित्रम्)

प्राणं (१२) अतीत्यं (१३) आत्मनि स्तज्यन्ते ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ प्राणों से युक्त २ मुक्त अन्न र्यामी से मेरित ३ इन्द्रिय रूप ४ घोड़े ५ योगलक्षणा प्रज्ञा को ६, ७ और देवस्थान कमलों को ८ देखकर ९ शोध्यामान होने १० धारा से ११ प्राण को १२ अतिक्रमण कर १३ आत्मा में गिरते हैं ॥ १२ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनुज्वालामसादशर्म्य विरचिते सोमवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य पंचमः खण्डः ५

अथ षष्ठः खण्डः

उशाना ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

प्रनुद्रवपरि^{१२}कोषनिषीद^{२२}न्तृभिः पुनानो^३ अभिवा^{१२}
जमर्ष। अश्वन्त्वा^३ वाजिन^३ मर्ज^३ यन्तो^३ च्छावही^३
रशनाभिर्न^३ यन्ति ॥ १ ॥ ५७

हे आत्मप्रतिविंब (नु) क्षिप्रं (प्रद्रव) प्रगच्छ (कोशम्) गगनम
एड (परिनिषीद) निषण्णो भव (न) च (नृभिः) नेतृभिः प्राणैः (पु-
नानः) शोध्यामानः (वाजिनम्) विराड् रूपान्न आत्मारूप यजमा-
नार्थं मुद्दिश्य (अभ्यर्ष) अभिगच्छ यस्मात् (वाजिनम्) बलव-
न्तं (अश्वम्) मानससूर्यं (त्वाम्) (अर्जयन्तः) शोधयन्तः प्रा-
णाः (रशनाभिः) नाडीभिः (वाहिः) सुषुम्णां प्रति (अच्छो) आ-
भिमुख्येन (नयन्ति) प्रापयन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थः - हे आत्मप्रतिविंब १ शीघ्र २ दौड़ो ३ गगन मंडल में ४ पहुँ-
चो ५ और ६ नेता प्राणों से ७ शोध्यामान ८ विराड् रूप अन्न को आत्मारूप
यजमान के लिये उद्देश करके ९ प्राण करों जिस कारण १० बलवान ११ प्रा-

नससूर्य १२ तुमको १३ शोधन करते प्राण १४ नाड़ीद्वारा १५ सुपुष्पा के १६
सन्मुख १७ प्राप्त करते हैं ॥ १ ॥

दृषगणो वासित ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः ऋजी वाराहो देवता-

१ २२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ ३
प्रकाव्यमुशन्ववु वाणो देवो देवानां जानिमा
विवक्ति। महि व्रतः भुचिवन्धुः पावकः पदा वरा
हो अभ्येति रेभन् ॥ २ ॥ ५८ ॥

(उशना) भुक्ः (इव) (काव्यं) स्तोत्रं (वुवानः) उच्चारयन्
(देवः) वेदाभिमानि देवः (देवानाम्) अवताराणां (जानिमा) ज
न्मानि (प्रविवक्ति) प्रकर्षणावदति (महि व्रतः) पृथिव्या धार-
कः दृभृतौ (भुचिवन्धुः) दीमतेजस्कः (पावकः) पापानां शोध
कः (वराहः) ऋजी वाराहावतारः (रेभन्) शब्दं कुर्वन् (पदा) पा
देन (अभ्येति) देवानां समीपे गच्छति ॥ २ ॥

भाषार्थः - १, २ भुक् जी की सन्तान ३ स्तोत्र को ४ उच्चारण करता
५ वेदाभिमानि देवता ६ अवताररूप देवताओं के ७ जन्मों को ८ कहता है
भूमि को धारण करने वाले ९ महानेजस्वी १० पापनाशक ११ ऋजी वारा-
ह १२ शब्द करते १३ पदानि १४ देवताओं के समीप जाते हैं ॥ २ ॥

वि.

पराशर ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

ति गोवाचैर् इर यति प्रवन्दि ऋतस्य धीतिव्र
ह्मणो मनीषाम्। गोवा यन्ति गोपातिं पृच्छमा
नोः सोमं यन्ति मतयो वावशानोः ॥ ३ ॥ ५९ ॥

(वन्दिः) भूमेर्वीढा ऋजी वाराहावतारः (तिस्त्रेः) (वाचः) ऋ-
ग्यजुः सामान्तिकाः तथा (ऋतस्य) विष्णोः (धीतिम्) पाल-

नकर्म (ब्रह्मणाः) (मनीषाम्) स्तष्टि कर्त्री बुद्धिं (प्रेरयति) तस्मि
 न्काले (गावः) इन्द्रिय रूपात्मांशवः (एच्छमानाः) गुरुं प्रच्छ-
 न्तः सन्तः (गोपतिम्) आत्मानं (यन्ति) गच्छन्ति (वावशानाः)
 कामयमानाः (मतयः) बुद्ध्यः (सोमम्) आत्म प्रतिविंवं (यन्ति)
 गच्छन्ति ॥३॥

भाषार्थः - १ भूमिके धारक श्रीवाराहजी २३ ऋग्यजुसामरूप-
 वचनों को तथा ४ विष्णु के ५ पालन कर्म ६ और ब्रह्माजी की ७ स्तष्टि कर्त्री
 बुद्धिको ८ प्रेरणा करते हैं उस समय ९ इन्द्रियरूप आत्मांश १० गुरुको पूछ-
 ते ११ आत्माको १२ माप्त करने हैं १३ कामयमान १४ बुद्धियां १५ आत्म प्रति-
 विंवको १६ प्राप्त करती हैं - ॥३॥ वसिष्ठ ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समष्ट
 ऋरसम् । सुतः पवित्रं स्पृशति रभन्मि तव सद्यप
 भुमन्ति होता ४ ॥ ६०

(अस्य) महापुरुषावतारवराहस्य (प्रेषा) प्रकर्षेच्छया (देवः)
 सूर्यः (हेमना) हिमजलेन (देवेभिः) मेघैश्च (रसम्) समष्टं
 भूमौ समयोजयति तदा (पूयमानः) शोध्यमानः (सुतः) अभिपु-
 त आत्म प्रतिविंवः (रेभन्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कुर्वन् (पवि-
 त्रम्) प्राणं (स्पृशति) परिगच्छति (इव) यथा (मिती) मनुष्यः
 (होता) देवानामाह्वानात्कृत्विक् (पभुमन्ति) (सद्य) सद्यः
 निवस्य गृहान् ॥४॥ **भाषार्थः**

१ महापुरुषावतारवराहजीकी २ इच्छासे ३ सूर्यदेवता ४ हिमजल ५ और
 मेघोंके द्वारा ६ रसको ७ भूमिपर प्राप्त करता है ८ तव शोध्यमान ९ अभिपु-

तश्चात्मप्रतिविंब १० अहं ब्रह्मास्मि शब्द करता ११ प्राण को १२ प्रात करता है
 १३ जैसे १४, १५ देवताओं का आह्वाना मनुष्यऋत्विज १६, पशुमान १७ यज्ञ
 शालाओं को—॥४॥ प्रतर्दनऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महा पुरुषो देवता-

सोमः पवते जनिता मतीनाञ्जनिता दिवोजनि
 ता एथिव्याः । जनिताग्नेजनिता सूर्यस्य जनिता
 इन्द्रस्य जनिता त विष्णोः ५-६१

(मतीनाम्) विद्यानां (जनिता) जनयिता (दिवः) द्युलोकस्य-
 (जनिता) (एथिव्याः) (जनिता) (अग्नेः) (जनिता) (सूर्यस्य)
 (जनिता) (इन्द्रस्य) (जनिता) (उत) (अपिच) विष्णोः (जनि
 ता) (सोमः) महापुरुषो महानारायणः (पवते) भक्तानां हृदये
 मासो भवति ॥ ५ ॥ **भाषार्थः**

१ विद्याओं का २ उत्पादक ३ स्वर्गलोक का ४ जनिता ५ एथिवी का उत्पन्न
 करने वाला ७ अग्निका ८ सृष्टा ९ सूर्य का १० जनक ११ इन्द्र का १२ रचने वा
 ला १३ और १४ विष्णु का १५ प्रकट करने वाला १६ महापुरुष महानाराय-
 ण १७ भक्तों के हृदय में मास होता है ॥ ५ ॥

वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विराट् पुरुषो देवता-

अभिन्निष्टष्ट वृषणा वयोधामङ्गोपिणामवाव
 शान्तवाणीः । वनावसानावरुणानसिन्धुवि
 रत्नधादयते वायीणि ॥६॥ ६२

(त्रिष्टुष्टं) भूम्युन्नरिस्तस्वर्गारव्यानिष्टष्ठानि यस्यनं (वृषणाम्)
 वर्षकं (वयोधाम्) अन्नस्य धारकं (अङ्गोपिणाम्) अंगे विराट् रूपः
 देहेऽपिणं वसन्तं पुरुषं (वाणीः) वेदवाचः (अभ्यवाव शान्त)

काम यन्नेसु (रत्नधाः) रत्नानां धारकः (वार्याणि) वननीयानि
 धनानि (दयते) स्तोत्रभ्यः प्रयच्छति (ने) यथा (वरुणः) (सि-
 न्धुः) च (वना) वनानि उदकानि (वसानः) धारयन् रत्नानि प्र-
 यच्छति ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ भूमि अन्नरिक्त स्वर्गनाम एषु वाले २ वृष्टि कर्त्ता ३ अन्नधारक ४ विराट्
 देहमें बसने वाले पुरुष को ५ वेदवाणी ६ चाहती हैं ७ वह रत्नधारक पुरुष
 ८ काम्यधनों को ९ स्तोत्राओं के लिये देना है १० जैसे ११ वरुण १२ सोम
 समुद्र १३ जलों को १४ धारण करते रत्नों को देते है ॥ ६ ॥

पराशरः ऋषिः पृष्णो ब्रह्मन्द्महापुरुष पुरुषो देवते.

अक्रात्समुद्रः प्रथमे विधर्मज्जनयन् प्रजाभुव-
 नस्य गोपाः । वृषा पवित्रे अधिसानो अथ्ये वृह-
 त्सोमो वा वृधे स्वानो अद्रिः ॥ ७ ॥ ६३

यदा (समुद्रः) यस्मात्सुन्दरान्नि देवादयः स (गोपाः) गोलोक
 पतिर्नहा पुरुषः (भुवनस्य) ब्रह्माण्डस्य (प्रथमे) मुख्ये (विध-
 र्मन्) विधर्मनि विधारके गोलोके (प्रजाः) (जनयन्) उत्पा-
 दयन् (अक्रान्) सर्वव्याप्नोति तदा (वृषा) वर्षिता (स्वानः) आ-
 त्मरथः (वृहत्सोमः) वृहत्सोमरूपः (अद्रिः) सूर्यः (अथ्ये) सूर्य
 योग्ये (पवित्रे) समष्टिमाणे (अधिसानः) अभिषिच्यमानः
 (वा वृधे) वद्धते ॥ ७ ॥

भाषार्थः

१ जब सबके प्रादुर्भाव का स्थान २ गोलोकपति महापुरुष ३ ब्रह्माण्डके ४
 मुख्य ५ विधारक गोलोकमें ६ प्रजाको ७ उत्पन्न करता ८ सब को व्याप्त कर
 ता है तब ९ वृष्टिकर्त्ता १० आत्मरथस्य ११ वृहत्सोमरूप १२ सूर्य १३ सूर्यसं-
 बन्ध

न्धी १४ समाप्तिप्राणमें १५ अवसिच्यमान १६ वृद्धि पाता है ॥७॥

प्रस्ताएव ऋषिः स्वित्पुष्पं छन्दो विष्णुर्देवता-

कानिकान्ति हरिरास्त्यमानः सीदन्वनस्य
जदरे पुनानः । नृभिर्यतः कृणुते निणिजङ्गाम
तोमतिज्जनयत स्वधाभिः ॥ ८ ॥ ६४

(वनस्य) जलस्य क्षीर समुद्रस्य (जदरे) (सीदन्) (पुनानः) पञ्च
नत्रयो देवा देह रूपा रथा यस्य स क्षीर शायी (आस्त्यमानः) सं-
स्तूयमानः (हरिः) विष्णुः (कानिकान्ति) उपदेशति (यतः) (गाम्)
पृथिवीं (नृभिः) (निणिजं) रूपवतीं (कृणुते) करोति (स्यतः) (म-
तिम्) स्तुतिं (स्वधाभिः) हविर्भिः सह (जनयत) उत्पादयत कुरुत
भाषार्थः - १ जलक्षीर समुद्रके २ जदरेमें ३ विराजमान ४ विदेवरू-
पवाला क्षीर समुद्रशायी ५ भले प्रकार स्तूयमान ६ विष्णु ७ उपदेश करता है
८ जिस कारण ९ पृथिवीको १० मनुष्यों सहित ११ रूपवती १२ करता है १३ उ-
सकारण १४ तुम स्तुति को १५ हविषों सहित १६ प्रकट करो ॥ ८ ॥

उशना ऋषिः स्वित्पुष्पं छन्दो देवता-

एषस्यते मधुमाथं इन्दुसोमो वृषो वृषोः परिप
वित्रे अक्षाः । सहस्रदाः शतदाभूरिदो वा भवत्तम
स्वहिरावाज्य स्यात् ॥ ९ ॥ ६५

हे (इन्दु) परमेश्वर (वृषोः) धर्मार्थकाममोक्षाणां वर्षकस्य (ते)
तव (एषः) (मधुमान्) ब्रह्मज्ञानी (वृषो) वर्षकः (स्यः) समाप्तिप्रा-
णः (पवित्रे) वायौ । अयं वै पवित्रं योऽयं पवतेश ० १।१। ३।२ (पर्य-
क्षाः) पर्यस्रवत् (यः) (सहस्रदाः) सहस्रसङ्ख्याकस्य धनस्य

दाता (शतदाः) (वा) (भूरिदाः) (वाजी) सूर्यः श० ६।३।१।२।८।
 (शाश्वतमम्) अतिशयेन पुराणं (वाहिः) लोकं। अयं लोको व-
 हिः श० १।४।१।२४ (अस्थान्) अधितिष्ठति ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ चारों पदार्थ के दाता ३ आपका ४ यह ५
 ब्रह्मज्ञानी ६ दृष्टि कर्ता ७ समष्टि सूर्य ८ वायु में स्थित हुआ ९ जो ११ स
 हस्र संख्या वाले धन का दाता १२ शत संख्या वाले धन का दाता १३ वा १४
 बहुदाता १५ सूर्य १६ अतिशय पुराण १७ लोक में १८ स्थित होता है - ॥ ८ ॥

प्रतर्दन ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

पवस्व सोम मधुमा १२ ३ १ २ ३ ३ २ ३ १ २ २ ३ ३ ३
 सानो अय्ये । आव द्रोणानि घृतं वन्ति रोह मदि
 न्तमो मत्सर इन्द्र पानः ॥ १० ॥ ६६ ॥

हे सोम) आत्म प्रतिविंब (अपः) इन्द्रियान्तरिक्षाणि (वसानः) आ-
 च्छाद्यन् (अय्ये) मानस कमले (अधिसानः) अभिपिच्यमानस्त्व
 (मधुमान्) ब्रह्मज्ञानी सन् (पवस्व) ऊर्ध्वगच्छ पुनः (मदिन्तमः)
 अतिशयेन मदकरः (इन्द्र पानः) परमेश्वरेण पातव्यः (मत्सरः)
 मयान्तर्यामिना मेरितस्त्वं (घृतं वन्ति) रसवन्ति (द्रोणानि) क-
 मलानि (अवरोह) ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे आत्म प्रतिविंब २ इन्द्रियान्तरिक्षों को ३ आच्छादन करते
 ४ मानस कमल में ५ अभिपिच्यमान तुम ६ ब्रह्मज्ञानी होते ७ ऊपर को चलो
 फिर ८ अतिशय मद कर्ता ९ परमेश्वर के पान योग्य १० मुझ अन्तर्यामी से मेरि
 त तुम ११ संवत् १२ कमलों में १३ उतरों ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनुज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सामवे-

दीयवह्नभायेछन्दोव्याख्यानेपञ्चमस्याध्यायस्यपष्ठःखाण्डः६,

अथसप्तमःखाण्डः

प्रतर्दनऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःश्रीकृष्णोदेवता

प्रसेनानीभूरोग्रथानाङ्गव्यन्नेतिहर्षितस्य
सेनाभद्रान्कृएवन्निन्द्रहवात्सखिभ्यःआसा
मोवस्त्रारभसानिदत्ते॥१॥६७

(सेनानी) भक्तसेनानामयेनेता (भूरः) असुरगुणांवाधकः काम
जयीवा (सोमः) श्रीकृष्णरूपः परमेश्वरः (गव्यन्) इच्छन् (रथा-
नां) वृक्षाणां (अग्रे) (प्रैति) प्रकर्षेण गच्छति (अस्य) (सेना)
गोपीसेना (हर्षिते) हृष्यति (सखिभ्यः) गोपीभ्यः (इन्द्रहवान्) ता
भिः कृतानि परमेश्वरस्य व्रतादीनि (भद्रान्) कल्याणानि यथा
थीनि (कृएवन्) (रभसा) वेगेन (वस्त्रानि) (आदत्ते) गृह्णाति। १

भाषार्थः

- १ भक्तसेनाओंकानेता २ असुरोंकावाधकवाकामजयी ३
श्रीकृष्णरूपपरमेश्वर ४ चाहता ५ वृक्षाके ६ अग्रपर ७ चढताहै ८ इसकी
गोपकन्यारूपसेना ९ हर्षित होतीहै १० गोपकन्याओंकेलिये ११ उनव्रतों
को १२ कल्याणरूपसाफल १३ करता १४ वेगसे १५ वस्त्रोंको १७ गृह्णाणक
रताहै॥१॥ पराशरऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःसोमोदेवता-

प्रतधारा मधुमतीरस्तग्रनवारयत्पूना अत्यथ्य
व्यम्। पवमानपवसेधामगानाञ्जनयत्सूयमपि
त्वो अंकेः॥२॥६८

है (पवमान) शोधमानात्मप्रतिविंब (यद्) यदा (पूतः) पवित्र
भूतस्त्वं (अव्यम्) तवमानससूर्यस्य योग्यं (वारम्) सुपुमां (आ

न्येपि) मात्रोपितरा (गोनाम्) रश्मीनां (धाम) ब्रह्म (पवसे) ग-
च्छसि (सूर्यम्) (जनयन्) उत्पादयन् (अर्केः) अर्चनीयैः स्वतेजो
भिः (अपिन्वः) पूरयसि ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे शोधमान आत्मप्रतिविंब २ जव ३ पवित्रतुम ४ तुम्ह-
मानस सूर्यके योग्य ५ सुपुष्णा को ६ प्राप्त करते हो ७ तव किरणों के धाम ब्रह्म
को ८ प्राप्त करते हो ९ सूर्यको १० प्रकट करते ११ अपने तेजों से १२ पूर्ण करते
हो ॥ २ ॥ इन्द्रममतिर्वासिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

प्रगायताभ्यर्चामदेवात्सोमं हि नोतमहते
धनाय । स्वादुःपवतामतिवारमव्यमसीदतुक
लशन्देवइन्दुः ॥ ३ ॥ ६६

हेवागाद्यात्विजः (सोमम्) आत्मप्रतिविंबं (प्रगायते) प्रकर्षणाभि
ष्टुतवेदावयं (देवान्) महापुरुषपुरुषान् (अभ्यर्चामः) अभिष्टुमः
(महते) (धनाय) योगैश्वर्याय (हि नोत) आत्मप्रतिविंबं (स्वादुः)
मधुर आत्मप्रतिविंबः (अव्यम्) मानससूर्ययोग्यं (वारम्) सुष
मणां (अतिपवताम्) आभिसुरव्येन गच्छतु (देवः) विद्वान् (इन्दुः)
आत्मप्रतिविंबः (कलशम्) प्रजापतिं परमेश्वरं । प्रजापतिर्वेद्गोणा-
कलशः ४।३।१।६६ आसीदतु) आभिसुरव्येन तिष्ठतु ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे वाक् आदि ऋत्विजो १ आत्मप्रतिविंबको २ स्तुत करो ह-
मवेदभी ३ महापुरुष पुरुषोंको ४ स्तुत करते हैं ५, ६ योगैश्वर्यके लिये ७
आत्मप्रतिविंबको प्रेरित करो ८ मधुर आत्मप्रतिविंब ९ मानससूर्यसम्बन्धी
१० सुपुष्णाको ११ सन्मुखप्राप्त करो १२ विद्वान् १३ आत्मप्रतिविंब १४ प्र-
जापतिपरमेश्वरकी १५ सायुज्यको पाओ ॥ ३ ॥

वासिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

^१ ^२ ^३ ^१ ^२ ^३ ^१ ^२ ^३ ^१ ^२ ^३ ^१ ^२ ^३ ^१ ^२ ^३
 प्रहिन्वानो जनि तारो दस्यो रथानवाजं थं स
 निषन्नयासीत् । इन्द्रं च्छन्नायुधासं थं शि
 शानो विश्वावसु हस्तयारो दधानः ॥ ४ ॥ ७०

(रोदस्योः) स्थूलसूक्ष्मदेहयोः (जनितो) (प्रहिन्वानेः) वागाद्य
 त्विभिः प्रेर्यमाण आत्म प्रतिविंबः (वाजम्) देह रूपान्नं देवेभ्युः
 (सनिषन्ने) सम्भजमानः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गच्छन्) (आयुधाः)
 आयुधानि ज्ञानानि (सांशि शानः) सम्यक् तीक्ष्णी कुर्वन् (विश्वा
 वसुं) योगैश्वर्याणि (हस्तयोः) (आदधानः) धारयन् (प्रायासी
 त) प्रगच्छति (न) यथा (रथः) ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ स्थूल सूक्ष्मदेह का २ उत्पादक ३ वाक् आदि ऋत्विजों से प्रे-
 रित आत्म प्रतिविंब ४ देह रूप अन्नको ५ देवताओं के लिये विभाग करता ६ परमे
 श्वरको ७ प्राप्त करता ८ ज्ञाना युधों को ९ तीक्ष्ण करता १० सब ११ योगैश्वर्यों
 को १२, १३ प्राप्त करता १४ जाता है १५ जैसे १६, रथ ॥ ४ ॥

सृडीको वासिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

^३ ^२ ^३ ^१ ^२ ^३ ^१ ^२ ^३ ^१ ^२ ^३ ^१ ^२ ^३ ^१ ^२ ^३
 तस्य दी मनसा वनतो वाग्ज्येष्ठस्य धर्मन्दुदा
 र्नीके । आदीमायन्वरमावावशाना जुष्टम्पति
 इन्द्रशो गाव इन्द्रम् ॥ ५ ॥ ७१

(यदी) यदा (वाक्) (धर्मन्) धारके योग यज्ञे (ज्येष्ठस्य) (द्युक्षाः)
 मानस स्वर्गस्थ स्यात्मनः (अनीके) ममुखे (वेनतः) कामयमानस्य
 (मनसः) (तस्य) संस्कारं करोति (आ) अनन्तरमेव (गावः) इन्द्र
 याणि (वरम्) वरणीयं (जुष्टम्) मनसा सेवितं (पतिम्) (इन्द्रं) परा

रूपं (इन्द्रम्) १६ आत्मप्रतिविंबं (वावशानाः) १७ कामयमानाः (कलशे) १८
मनासि (आयन्) १९ आगच्छन्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ जव २ वाक् ३ धारक योगयज्ञमें ४, ५ मानसी स्वर्गस्य आ-
त्माके ६ मुखमें ७ कामयमान ८ मनका ९ संस्कार करता है १० तदनंतरही ११
इन्द्रियां १२ वरणीय १३ मनसे सेवित १४ यति १५ परारूप १६ आत्म प्रतिविंब-
को १७ चाहती १८ मनमें १९ प्रवेश करती हैं ॥ ५ ॥

नौधाऽऽपिष्टिषुषु चन्दः सोमो देवता

साक मुक्षी मर्जयन् स्वसारो दशधीरस्य धीनयो
धनुत्रीः । हरिः पर्यद्वज्जाः सूर्यस्य द्रोणं नक्ष
अत्यो नवाजी ॥ ६ ॥ ७ ॥

(साक मुक्षः) सह सेचनशीलाः । उक्ष सेचने (स्वसारः) परमेश्वर ग
तिशीलाः (धीरस्य) प्राज्ञस्य (धनुत्रीः) रक्षकः (दशधीनयः) दश
महाविद्याः । धीवृद्धिस्तां तनोतीति धीतिः धीनयो महाविद्याः
(मर्जयन्ते) आत्मप्रतिविंबं शोधयन्ति ततः (हरिः) मानस सूर्यः
(सूर्यस्य) सर्वप्रेरक परमेश्वरस्य (जाः) अपत्य रूपान्कमलस्य
न्देवान् नि० २।२ (पर्यद्वज्) परितो गच्छति (अत्यः) अतन शी
लः (अश्वः) सूर्यः (न) इव (द्रोणं) गगनमण्डलं (नक्षत्रे) प्रा-
प्नोति नक्षत्रव्याप्तिकर्मानि० २।१८।२ - ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ साधसीचनीवाली २ परमेश्वर में गतिशील ३ ज्ञानीकी
रक्षक ४ दश महाविद्या ६ आत्मप्रतिविंब का शोधन करती हैं तदनन्तर ७
मानस सूर्य ८ सर्वप्रेरक परमेश्वरके ९ सन्तान रूपकमलस्य देवताओं को
१० प्राप्त करता है ११ गतिशील १२, १३ सूर्यकी समान १४ गगन मंडलको

१५ व्याप्तकरता है ॥६॥ काएवञ्चरपिः शेषं पूर्ववत् :

अधियेदास्मिन्वाजिनीवभ्रुभस्पद्धन्तोधियः सूर
 नाविशः। अपोवृणानः पवते कवीयान्त्रजन्नपभ्रु
 वर्द्धनायमन्म ॥७॥७३

(यद्) यदा (अस्मिन्) (वाजिनि) मानससूर्ये (इव) आत्मप्रतिविं
 वे (भ्रुभधियः) महाविद्याः (अधिस्यद्धन्ते) अहं पुरस्ताच्छोधयाम्य
 हं पुरतः शोधयामीत्यहमि कया उपतिष्ठते (न) यथा (विशः) प्रजा
 (सूर) सूर्ये तदा (कवीयान्) कविरिवाचरन्नात्मप्रतिविंवः (अपः)
 कमलान्तरिक्षाणि (वृणानः) आच्छादयन् (पवते) गच्छति (न)
 यथा (मन्म) मननीयं बोद्धव्यं रक्षितव्यं (वजम्) गवां गोष्ठं (पभ्रु
 वर्द्धनाय) गोपालः परिगच्छतीति शेषः ॥७॥

भाषार्थः - १ जव २ इस ३, ४ मानससूर्यरूप आत्म प्रतिविंव के निकट

५ महाविद्या ६ में पहिले शोधन करूं इस स्पर्धी के साथ स्थित होती हैं ७ जे
 से ८ प्रजा ९ सूर्य के सन्मुख १० तव मेधावी न्नात्म प्रतिविंव ११ कमलान्त-
 रिक्षों को १२ आच्छादन करना १३ चलता है १४ जैसे १५ रक्षा योग्य १६ गोष्ठ
 को १७ पभ्रुवृद्धि के लिये गोपाल ॥७॥

मन्युर्वीसिष्ठञ्चरपिः शेषं पूर्ववत्

इन्दुवाजीपवतेगोन्योघा इन्दु सामः सह इन्व
 न्मदायहान्तरिक्षावाधतपयरातिवारिवस्त्वाव
 न्चजनस्य राजा ॥८॥७४

(वृजनस्य) योगवलस्य (राजा) ईश्वरः (इन्दुः) क्षरणशीलः
 (गोन्योघाः) गोइन्द्रियाणि (अन्य) बुद्धिर्मनश्चतेषामोघायं

स्मिन्स (वाजी) मानससूर्यरूपः (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (मदा-
य) अहंब्रह्मास्मीति मदाय (सहः) स्वात्मज्योतिः (इन्द्रे) परमे-
श्वरे (इन्वन्) प्रेरयन् (पवते) ऊर्ध्वं गच्छति (वरिवः) योगधनं (क-
एवन्) कुर्वन् (रक्षः) रक्षः कुलं क्रोधादि समूहं (हन्ति) हिनस्ति
(अरातीः) शत्रून् कामादीन् (परिवाधते) परितः संहरति ॥ ८ ॥

भाष्यः - १ योगवल का २ स्वामी ३ क्षरणशील ४ इन्द्रियमनबु-
द्धिसे युक्त ५ मानससूर्यरूप ६ आत्मप्रतिविंब ७ अहंब्रह्मास्मि मदकेलिये-
८ अपनी आत्मज्योति को ९ परमेश्वरमें १० प्रेरण करता ११ ऊपरको चलता
है १२ योगधनको १३ प्राप्त करता १४ राक्षसकुल क्रोध आदि को १५ मारता
है १६ शत्रुकाम आदि को १७ सब ओरसे संहार करता है ॥ ८ ॥

कुत्सऋषिः शंभुं पूर्ववत्

अयापवापवस्वनावसानिमाश्च श्रुत्व इन्दोस
रसिप्रधन्व ब्रध्नाश्चिद्यस्यवातान् जूतिम्युरुमेधा
श्चित्तकवेनरन्धात् ॥ ९ ॥ ७५

हे (इन्दो) आत्मप्रतिविंब (अयो) अ आत्मा य योगः आत्म योगरू-
पया (पवा) श्रुद्ध्या पूशोधे (एना) एनानि (वसानि) योगधनानि
(पवस्व) क्षर (मांश्रुत्वे) सूर्यरूप शिवसम्बन्धिने नि० (सरसि) क-
मलस्थाने भृकुटि मण्डले (वातः) प्राणः (ने) इव (प्रधन्व) प्रग-
च्छ (यस्य) (तकवे) गच्छतः । [तकतिर्गति कर्मसु पठितः । अस्मा
दौणादिक उन्प्रत्ययः यस्येति (२, ३, ३७)] (जूतिम्) वेगं (वृद्धः)
(चित्) सूर्योपि (पुरुमेधाः) (चित्) महापुरुषोपि (ने) (रन्धात्)
नाहिं स्यात् न दूषयेत् ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ आत्म योगरूप ३ बुद्धिद्वारा ४ इन
५ योगधनों को ६ प्रगट करो ७ सूर्यरूपशिवसम्बन्धी ८ कमलस्थानभृकुटि
मंडलमें ९, १० पाणकीसमान ११ चलो १२ जिस १३ चलते के १४ वेगको १५,
१६ सूर्यभी १७, १८ और महापुरुषभी १९, २० नहीं रोके ॥९॥

पराशरऋषिः शेषं पूर्ववत्

^{३ १२} महत्तसोमो ^{२ २} महिषश्च ^{३ १} कारोपायद्गर्भो ^{२ ३} वृणीत
^{३ ३} देवान् । ^{१ ३} अदधादिन्द्र ^{३ ३ १ ३} पवमानं ^{३ १ २} भोजजनयत्सूर्य
^{३ ३ २} ज्योतिरिन्दुः ॥ १० ॥ ७६

(महिषः) योगभूमेः सूर्यः (अपाङ्गर्भः) कमलान्तरिक्षाणां गर्भभूतः
(पवमानः) योगेन शुद्धः संस्कृतः (इन्दुः) क्षरणशीलः (सोमः)
आत्मप्रतिविंबः (ततः) (महत्) कर्म (चकार) (यत्) देवान् (कम
लस्थान् (वृणीत) समभजत (भोजः) सामर्थ्यशक्तिं (इन्दुः)
परमेश्वरे (अदधात्) न्यधात्ततः (सूर्ये) (ज्योतिः) तेजः (अज
नयत्) ॥ १० ॥

भाषार्थः

१ योगभूमिके सूर्य २ कमलान्तरिक्षोंके गर्भरूप ३ योगसे शुद्ध संस्कृत ४ क्ष
रणशील ५ आत्मप्रतिविंबो ६ उस ७ महत्कर्मको ८ किया ९ जो १० कमलस्थ
देवताओंको ११ सेवनकिया १२ सामर्थ्यशक्तिको १३ परमेश्वरमें १४ स्थापन
किया फिर १५ सूर्यमें १६ तेजको १७ मकटकिया ॥ १० ॥

कश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्

^{१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २} असजिवकारथ्ये यथाजो धियामनीता मथमा
^{२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३} मनीषा । दशस्वसाराः अधिसानो अव्यमृजन्ति
^{३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३} वान्दिथं सदनेष्वच्छे ॥ ११ ॥ ७७

(वका) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दाय माना (मनोतो) यस्य मनो ब्रह्म-
 णि प्रोतंसा (प्रथमा) आद्या (मनीषा) ज्ञान स्वरूपा जीवरूपा परा
 (यथा) (रथ्ये) योगरथाहं (आजौ) अजन्तिकर्मार्थं मृत्विज इति
 आजिर्यस्तः तस्मिन् योग यज्ञे (धिया) योग क्रियया (असर्जि) स्त
 ज्यते तथा (दशस्वसारः) आत्मनिसरण शीला महा विद्या (सदनेषु)
 कमलेषु मध्ये (अव्ये) मानससूर्यसम्बन्धिनि (सानौ) शिखरे
 मानस कमले (वद्विम्) देहस्य बोद्धारमात्म प्रतिविवं (अच्छ) आ
 भिमुख्येन (आधि मृजन्ति) आधिकं शोधयन्ति ॥११॥

भाषार्थः - १ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को करती २ मन को ब्रह्म में धारण कर
 ने वाली ३ आद्या ४ ज्ञान स्वरूपा जीवरूपा परा ५ जिस प्रकार ६ योगरथ योग्य
 योग यज्ञ में ७ योग क्रिया द्वारा ८ कमलों में जाती है उसी प्रकार ९ आत्मामें
 गति शील महा विद्या १० कमलों के मध्य ११ मानस सूर्य सम्बन्धी १२ शिखर
 मानस कमल में १३ देहधारक आत्म प्रतिविंव को १४ सन्मुख होकर १५ अ-
 धिक शोधन करती हैं ॥११॥

प्रक्ता एव त्रयपिस्त्रिषुपच्छन्दो महा विद्या देवताः

अपामिव दमयस्तनुराणाः प्रमेनीषा इरते सो
 ममच्छ । नमस्यन्ती रूपचयन्ति सञ्चा च विश
 न्त्युशतीरुशन्तम् ॥१२॥ ७८

(अपाम्) (ऊर्मयः) (इव) (तनुराणाः) त्वरमाणाः (मनीषाः) म-
 हा विद्याः (सोमम्) आत्म प्रतिविवं (इत्) एव (अच्छ) आभिमु-
 ख्येन (प्रेरयन्ति) (च) (नमस्यन्तीः) नमस्यन्तः ब्रह्माणां योज
 यन्त्यः सत्यः तं (उपयन्ति) समीपे गच्छन्ति (च) (संयान्त) सङ्ग

छन्ते^{१५}(च)^{१६}(उशतीः) कामयमानाः महाविद्याः^{१७}(उशन्तं) काम
यमानमात्मप्रतिविंबं^{१८}(आविशन्ति) प्रवशन्ति ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ जलों की २ लहरों के ३ समान ४ शीघ्र गामी ५ महाविद्या
६ आत्म प्रतिविंब को ७ ही ८ सन्मुख ९ प्रेरणा करती हैं १० और ११ ब्रह्म में
संयोजित करती १२ समीप जाती हैं १३ और १४ मास होती हैं १५ और १६
कामयमान महाविद्या १७ कामयमान आत्म प्रतिविंब में १८ प्रवेश कर
ती हैं - ॥ १२ ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसाद
शर्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने पंचमस्याध्यायस्य
सप्तमः खण्डः ॥ ७ ॥ **अथाष्टमः खण्डः**

भ्यावाञ्च ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता

^३पुरोजिती^३वो^३भ्रन्धसः^३सुताय^३मादयित्त्ववे^३। अप
^३श्वानथं^३श्नथिष्टनसखाये^३दीर्घजिह्वाम्^३। ७^३दु
हे^३(सखायः) वागाद्यत्विजः^३(दे) परारूपः^३(वे) निवृत्तात्मा^३(आत्
सः) भूतात्मनः^३(पुरोजितं) पुरां स्थूलसूक्ष्मकारणदेहानां जेता
तस्मात्^३(सुताय) अभिपुताय^३(मादयित्त्ववे) अत्यन्तं मदकराया
त्मप्रतिविंबाय^३(दीर्घजिह्वाम्) (श्वानम्) कामं^३(अपश्नथिष्टन)
अपश्न थयत् अपवाधध्वम् ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे वाक् आदि ऋत्विज रूप सखाओ २ परारूप ३ निवृत्तात्मा
४ भूतात्माके ५ स्थूलसूक्ष्मकारणदेहों का जेता है उस कारण ६ अभिपुत ७
अत्यन्त मदकर आत्म प्रतिविंब के लिये ८ दीर्घजिह्वावाने ९ कामको १० ताड
गाकरो - ॥ १ ॥ ययानिनाइप ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता

^३अयम्पू^३पाराय^३भगः^३सामः^३पुनानो^३अर्षति^३। पति^३

^१विश्वस्य^२भूमनो^३व्यख्यद्रोदसी^४उभे^५॥२॥८०

(अयम्) (भगः) परमेश्वरस्यैश्वर्यरूपः (रयिः) परमेश्वरस्य धनरूपः (पूषा) सूर्यः (पुनानः) वायु संस्कृतः सन् (अपति) गच्छति (विश्वस्य) सर्वस्य (भूमनः) भूतजानस्य (पतिः) पालयिता (सोमः) सूर्यः (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (व्यख्यत्) स्वतेजसा प्रकाशयति हे आत्मप्रतिविंबतथैव त्वमपि गच्छेत्यर्थः ॥२॥

भाषार्थः - १ यह २ परमेश्वर का ऐश्वर्यरूप ३ परमेश्वर का धनरूप ४ सोमसि माणमें संस्कृत होता ६ चलता है ७ सब ८ प्राणि समूह का ९ स्तानी १० सूर्य ११ दोनों १२ पृथिवी स्वर्ग को अपने तेज से प्रकाशित करता है हे आत्मप्रतिविंब उसी प्रकार नुम भी गगन मंडल को चलो यह अभिप्राय है

॥२॥ ययातिर्नाहुपञ्चरपिरत्तुपुच्छन्दः सोमा देवताः

^३सुता^२सोम^३धुमत्तमाः^४सोमा^५इन्द्राय^६मन्दिनेः^७

^१पवित्रवन्तो^२अक्षरन्देवान्^३गच्छन्तु^४वामदाः^५॥३॥८१

(मधुमत्तमाः) अतिशयेन विज्ञानोपेताः (मन्दिनेः) परमेश्वरस्य स्तोतारः नि० (सुतासः) अभिपुताः (पवित्रवन्तः) माणावन्न आत्मप्रतिविंबाः (इन्द्राय) परमेश्वराय (क्षरन्) कमलेषु क्षरन्ति हे आत्मप्रतिविंबाः (वः) युष्माकं (मदाः) (देवान्) (गच्छन्तु) ॥३॥

भाषार्थः - १ अत्यन्त विज्ञान युक्त २ परमेश्वर के स्तोता ३ अभिपुत ४ माणावान् आत्मप्रतिविंब ५ परमेश्वर के लिये ६ कमलों में जाते हैं आत्मप्रतिविंबो ७ नुम्हारे ८ मद ९ देवताओं को १० प्राप्त हों ॥३॥

मनुः सांवरणः ऋषिः शेषं पूर्ववत्

^३सोमाः^२पवन्त^३इन्द्रवो^४स्मभ्यङ्गानु^५वित्तमाः^६।मित्राः^७

स्वानां अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥४॥ ८२ ॥

महापुरुष पुरुषाणामुपदेशः (मित्राः) भक्ताः यद्वा हिंसा भून्यत्वेन
 सर्वेषां मित्राः (स्वानाः) आत्मरथाः (अरेपसः) निष्पापाः (स्वाध्यः)
 आत्मध्यानतत्पराः (स्वर्विदः) सर्वज्ञाः (गातुविन्तमः) योगमार्गज्ञाः
 (इन्द्रवः) दीमाः (सोमाः) आत्मप्रतिविंवाः (अस्मभ्यम्) (पर्वन्ते)
 सुपुमणा मार्गे गच्छन्ति ॥४॥

भाषार्थः - महापुरुष पुरुषोक्ता उपदेश - १ भक्तवाहिसानकरनेवाले सब
 के मित्र २ आत्मरथस्य ३ निष्पाप ४ आत्मध्यानमें तत्पर ५ सर्वज्ञ ६ योगमार्गज्ञ
 ७ दीम ८ आत्मप्रतिविंवा ९ हमारे लिये १० सुपुमणा मार्गसे जाते हैं ॥४॥

अम्बरीष इति भवानौद्धारयन्नुपपूच्छन्दः सोमो देवता

अभीनां वाजसातमं रथिर्मर्षशतस्पृहम् । इन्द्रो सहस्रभर्णसन्तु विद्युन्मन्विभो सहम् ॥५॥ ८३

हे (इन्द्रो) दीप्यमानपरमेश्वर (वाजसातमम्) अन्नस्य विराड्
 रूपान्नस्यातिशयेन दातारं (शतस्पृहम्) बहुभिः स्पृहणीयं (सह
 स्रभर्णसं) बहुविधभरणं । अनेकपोषणयुक्तं (तुविद्युन्मन्) बहु
 यशो युक्तं (विभासहं) महतः प्रकाशस्याभिभविनारं (रथिम्) धनं
 योगधनम्वा (नः) अस्मभ्यं (अभ्यर्षं) अभिगमय ॥५॥

भाषार्थः - हे दीप्यमानपरमेश्वर २ अन्नवा विराड् रूपसन्नके दाता ३ व
 हुतसे स्पृहणीय ४ अनेकपोषणयुक्त ५ बहुयशयुक्त ६ महाप्रकाशके अभि
 भवित ७ धनवा योगधनको ८ हमें ९ प्राप्त कराओ ॥५॥

अम्बरीष इति भवानौद्धारयन्नुपपूच्छन्दः सोमो देवताः

अभीनवन्ते अद्रुहः प्रियामिन्द्रस्य काम्यम् । व

^{२ ३} ^{२ १ २ २} ^{३ १} ^३ ^{३ १ २}
^१त्सन्नं^२पूर्व^३आयुनिजातं^४रिहन्ति^५मातरः^६॥६॥ ८४
 (अद्रुहः) अद्रोहाः महावाचः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (काम्यम्)
 (प्रियम्) (जातम्) संस्कृतमात्मप्रतिविम्बं (आभिनवते) आभि
 गच्छन्ति नवतिर्गति कर्माणि ० २। १४ (न) यथा (मातरः) गावः
 (वत्सम्) (पूर्व) (आयुनि) प्रथमे वयसि (रिहन्ति) लिहन्ति ॥६॥

भाषार्थः - १. द्रोहशून्य महावाक् २ परमेश्वरके ३ काम्य ४ प्रिय ५ सं-
 स्कृत आत्मप्रतिविम्बको ६ प्राप्त करते हैं ७ जैसे ८ गौर्दवच्छेको ९ बाल्य
 ११ अवस्थामें १२ चाटती हैं ॥ ६॥

सोमो गुर वश्व देवताः शेषं पूर्ववत्-

^{१ २ ३ १ २ ३} ^{३ १ २} ^३ ^{३ १ २}
^{१ २ ३} आहृयताय धृषावे धनुष्वन्विषो^४ थं^५स्यम्^६।
^{१ २ ३} शुक्तावयन्त्यसुराय निणिजे विषामय मही
^१ युवः ॥७॥ ८५

(विषाम्) मेधाविनां (महीयुवः) योगभूमौ योजका गुरवः (अग्रे)
 आदौ) निणिजे) स्वरूपशोधनार्थं (हृयताय) परमेश्वरेण स्पृ-
 हणीयाय (धृषावे) कामादीनां धर्षणशीलाय (असुराय)
 योगवलवने शिष्याय (पौंस्यम्) पुरुषार्थसाधकं (धनुः) प्रणवा
 ख्यं (आतन्वति) धनुषि ज्यां कुर्वन्ति तथा (शुक्ता) शुक्लानि
 वस्त्राणि (वयन्ति) आच्छादयन्ति ॥७॥

भाषार्थः - १ मेधावी पुरुषोंके २ योगभूमिमें योजक गुरुजन ३ आदि
 में ४ स्वरूपशोधनार्थ ५ परमेश्वरके स्पृहणीय ६ काम आदिके धर्षण शी-
 ल ७ योगवलवान् शिष्यके लिये ८ पुरुषार्थसाधक ९ प्रणवनाम धनुषको
 १० ज्यायुक्त करते हैं ११ नवानुक्त वस्त्रोंको १२ धारण करते हैं ॥७॥

ऋजिश्चाम्बरीपावृषीवृहती छन्दः सोमो देवता

^{३ ३ १}परित्य^२ थं ^{२ ३ १२}हर्यतं थं ^{२ ३ १}हरिम्बभ्रु^३ म्युनन्ति ^{३ १ २}वारेणा॥यो

^{३ ३ ३}देवान्विश्वा^३ थं ^{२ ३}इत्परिमदेन ^{३ १ २ ३}सह^३ गच्छति ॥८॥८६

(त्यम्) तं (हर्यतम्) सर्वैः स्पृहणीयं (हरिम्) हरितवर्णं (वभ्रुम्) वभ्रुवर्णं सोमम् (वारेण) वालेन पवित्रेण (परि पुनेन्ति) परिशोधयन्ति (यः) (विश्वान्) सर्वान् (देवान्) (इत्) एव (मदेन) मदकरणसेन (सह) (परिगच्छति) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ उ स २ स व से स्पृहणीय ३ हरितवर्ण ४ वभ्रुवर्ण सोमको ५ वाल पवित्रसे ६ शोधन करते हैं ७ जो सोम ८ स व ९ देवताओंको १० ही ११ मद कर रसके १२ साथ १३ प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् (त्यम्) तं। यकारो योग द्योतकः (हर्यतम्) परमेश्वरेण स्पृहणीयं (वभ्रुम्) योगे गति शीलं। वभ्रुगतौ (हरिम्) मानस सूर्य (वारेण) सुपुण्याया (परि पुनेन्ति) परिशोधयन्ति (यः) मानस सूर्यः (विश्वान्) सर्वान् (देवान्) (इत्) एव (मदेन) मदकरणेन्द्रियरूपरसेन (सह) (परिगच्छति) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ उ स २ परमेश्वर से स्पृहणीय ३ योगमें गति शील ४ मानस सूर्यको ५ सुपुण्यासे ६ शोधन करते हैं ७ जो मानस सूर्य ८ स व ९ देवताओंको १० ही ११ मद कर इन्द्रिय रूप रसके १२ साथ १३ प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

मजापतिर्ऋषिः पितृषु छन्दः सोमो देवता

^{१ २ ३ १२}प्रसुन्वानाया^{२ २ ३ ३ १ २ ३ १२ २२}न्धसा^३ मत्तानवष्ट^३ तद्वृचः। अ^३प

^{१ २ ३ १ २ ३ ३ १२ २२}श्चानमरोधसं^३ थं हता^३ मखन्त^३ भृगवः ॥ ९ ॥ ८७

(मर्तः) देहाभिमानी मनः (अन्धसः) देह रूपात्नात् (सुन्वानाय)

अभिपूयमाणाय^४ आत्मप्रतिविंवाय^५ (तत्) (वचः) भक्तियोगसम्ब^६
धि^७नं वचनं (न) (प्रवष्ट) नाकामयतूतस्मात् (अराधसम्) नि^८
र्धनं (अमरवम्) ईशान्चीरहितं (श्वानम्) कामं (भृगवः) (न)
भार्गवाद्भव (अपहत) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ देहाभिमानि मनने २ देहरूप अन्नसे ३ अभिपूयमाण आ
त्मप्रतिविंके लिये ४ उस ५ भक्ति योग सम्बन्धी वचनको ६, ७ नहीं चाहा ८
उसकारण निर्धन ९ ईशान्चीहीन १० कामको ११, १२ भृगु वंशियों की समान
१३ मारो - ॥ ८ ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते साम
वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने पंचमाध्यायस्याष्टमः खण्डः ॥ ८ ॥

अथ नवमः खण्डः

कविर्भार्गवः ऋषिर्जगती छन्दः सोमो देवताः

अभिप्रियाणि पवते च नो हितो नामानि यद्वा
धियेषु वद्धते । आसूर्यस्य वृहते वृहन्नधि रथवि
ष्वञ्च मरुह द्विचक्षणाः ॥ १ ॥ ८ ८

(चनः) अन्नरूपः (हितः) निहितः योगमार्गे स्थापितः (विचक्ष
णाः) सर्वस्य द्रष्टा (यद्वा) समाधिभावापन्नः (वृहन्) महानात्म
प्रतिविंके (प्रियाणि) भक्तानां प्रियाणि (नामानि) नमनशी
लानि कमलानि (अभिपवते) अभितो गच्छति (येषु) कमलेषु
(आधि वद्धते) आधिकं प्रवृद्धो भवति (वृहते) महतः (सूर्यस्य)
महापुरुषस्य (विष्वञ्चम्) सर्वां (रथम्) लोकं (आधि) उप
रि (आरुहते) आरोहति ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ अन्नरूप २ योगमार्गमें स्थापित ३ सबका इष्टा ४ समष्टि भा
वापन्न ५ महान् आत्म प्रतिविंब ६ भक्तोंके प्रिय ७ कमलोंको ८ प्राप्त करता है
९ जिन कमलोंमें १० अधिक वृद्धि पाता है ११-१२ महासूर्यरूप महा पुरुषके
१३ सर्वगत १४ लोकके १५ ऊपर १६ चढ़ता है ॥१॥

विनियोगः पूर्ववत्

^३अ^१चो^२द^३सो^२नो^३ध^२न्व^३न्त्वि^२न्द^३वः^२प्र^३स्वाना^२सो^३वृ^२ह
^३ह^२व^३पु^२ह^३र^२यः^३वि^२चि^३द^२श^३ना^२ना^३ड^२ष^३यो^२अ^३रा^२त^३यो^२यो
नः^३स^२न्तु^३स^२नि^३ष^२न्तु^३नो^२धि^३यः ॥२॥ ८८

(नः) अस्माकं (स्वनासः) सूयमानाः (इन्दवः) आत्मांशवः (अचो
दसः) अनन्यमेरितः (हरयः) प्राणाः (वृहदेवपु) महा पुरुष पुरुषे
पु (प्रधन्वन्तु) प्रगच्छन्तु धन्वति गतिकर्मानि० २।१४।६५ कि-
ञ्च (नः) अस्माकं (अरातयः) दानरहिताः (अर्यः) स्वामिनः कामा
दयः (इषयः) विषयनिच्छन्तः (चित्) अपि (व्यश्नोनाः) (विगतवि
पयाः) (सन्तु) (नः) अस्मान् (धियः) प्रज्ञाः (सनिषन्त) सम्भज
न्तु ॥२॥

भाषार्थः

१ हमारे २ अभिपूयमाण ३ आत्मांशरूप ४ अनन्यमेरित ५ प्राण ६ महापु-
रुषपुरुषोंमें ७ जानो और ८ हमारे ९ अदाता १० विषयेच्छु ११ स्वामीरूप-
काम आदि १२ भी १३ विषयभून्य १४ होओ १५ तुमको १६ बुद्धियां १७ से
वनकरो ॥२॥

विनियोगः पूर्ववत्

^३ए^२ष^३प्र^२को^३श^२म^३धु^२मा^३थं^२अ^३चि^२क्र^३द^२दि^३न्द्र^२स्य^३व^२ज्जा
^३व^२पु^३षा^२व^३पु^२ष्ट^३मः^२अ^३भ्य^२त^३स्य^२सु^३दु^२घो^३घृ^२त^३श्रु^२तो^३वा
आ^३अ^२ष^३न्ति^२प^३य^२सा^३च^२ध^३न^२वः ॥३॥ ८९

(एयः) (सधुमान्) विज्ञानी (इन्द्रस्य) यजमानस्य (वज्रः) कामना
 शाय वज्र रूपः (वपुषः) देहात् (वपुष्टमः) ऋष्ट देह रूप आत्म प्रति-
 विंबः (कौशे) मनासि भृकुट्यां वा (प्राचि कदत्) प्रकर्षेण शब्दं
 चकार यत्र शब्दे (ऋतस्य) सत्यभूतस्य वेदस्य (सुदुघः) फ-
 लानां सुदु दोग्ध्यः (घृतश्वृतः) रसस्य क्षार विज्यः (वाग्नाः) का-
 मयमानाः (धेनवः) महा वाचः। वाग्वाक्का वाग्दश वागनन्तो
 वाक्पराधी वाचमेव तद्देवा धेनुम कुर्वन्त श० ६। १। २। १७ (अभ्य-
 र्षन्ति) अभिगच्छन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ इन्द्र विज्ञानी ३ यजमानको ४ कामना शार्थ आयु-
 धरूप ५ देहसे ६ ऋष्टदेह रूप आत्म प्रति विंबने ७ मनवा भृकुटिमे ८ महा-
 नशब्द किया जिस शब्द में ९ सत्यरूप वेदके १० फलोंको दोहने वाली श-
 रसदाना १२ कामयमान १३ महावाक् १४ सन्मुख प्राप्त होती हैं ॥ ३ ॥

अपि गणाः अपि शेष पूर्ववत्

प्रो अयासी दिन्द्रिन्द्रस्य निष्कतं सर्वा स-

ख्युन् प्राप्तिनाति साङ्गिरम्। मय इव युवतिभिः

समर्षति सोमः कलशे शत यामना पयो ॥ ४ ॥ ८२

(इन्द्रः) दीप्त आत्म प्रति विंबः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (निष्कतम्)
 संस्कृतं परमंधाम (प्रो) प्रकर्षेणैव (अयासीत्) गच्छन्ति (सर्वा)
 (सख्युः) परमेश्वरस्य (साङ्गिरम्) संस्कृतं वाचं (न) (प्राप्तिनाति)
 नहिस्ति (स) (शतयामना) बहुसाधनवता (पयो) योग मा-
 र्गेण (कलशे) प्रजापतौ परमेश्वरेश ० ४। ३। १। ६ (समर्षति)
 सङ्गच्छते (इव) यथा (मयः) मनुष्यः नि० २। ३ (युवतिभिः) ॥ ४ ॥

भाषार्यः - १ दीप्तज्ञात्मप्रतिविंब २ परमेश्वरके ३ संस्कृत परमधाम
को ४ मकर्षताके साथ ५ प्राप्तकरता है ६ सखा भक्त ७ सखा परमेश्वरकी ८
सस्कृत वाणी को ९, १० हिंसित नहीं करता है ११ वह १२ बहुसाधन वाले १३
योगमार्ग द्वारा १४ परमेश्वरमें १५ संयोग को पाता है १६ जैसे १७ मनुष्य १८
युवतीस्त्रियोंके साथ ॥ ४ ॥ काविक्रपिः शेषपूर्ववत्

धृत्तादिवः पवते कृत्यारसादक्षो देवानामनु
माद्यो नृभिः । हरिः स्तजानो अत्यो न सत्वभि वृथा
पाजां सि कृणुषे नदीष्व ॥ ५ ॥ ६२

(धृत्ता) देहस्थधारकः (कृत्यः) योगयन्तार्हः (रसः) सारभूतः
(देवानाम्) इन्द्रियाणां (दक्षः) बलरूपः (नृभिः) नेत्राभिर्वागा
द्युत्विग्भिः (अनुमाद्यः) अनुमादनीयः स्तुत्यो वा (हरिः) मानससूर्यः
(सत्वभिः) सत्वगुणैः (स्तजानः) स्तज्यमानः (दिवः) मानस
कमलात् (अत्यः) समष्टिसूर्यः (ने) इव (पवते) ऊर्ध्वगच्छति
(पाजांसि) अन्नामि (नदीषु) इन्द्रियेषु (वृथा) निष्फलानि (कृ
णुते) कुरुते ॥ ५ ॥ भाषार्यः

१ देहकाधारक २ योगयन्तयोग्य ३ सारभूत ४ इन्द्रियोका ५ बलरूप ६ नेता
वाक्शादित्रयत्वजोसे ७ अनुमादनीय वास्तुतियोग्य ८ मानससूर्य ९ सत्व
गुणोसे १० युक्त होता ११ मानसकमलसे १२ १३ समष्टिसूर्यकी समान १४
ऊपरकोजाता है १५ औरविषयोंको १६ इन्द्रियोंमें १७ निष्फल १८ करता है

॥ ५ ॥

स्त्रिगणक्रपिः शेषपूर्ववत्

वृषामतीनाम्पवते त्रिचक्षणाः सोमो अहो अत्र
रीतोषसान्दिवः । माणासिन्धूनां कलशां अचि

१ कददिन्द्रस्यहाद्यानिशन्मनीषिभिः ॥६॥ ६३
 (मतीनाम्) मत्तानां (वषो) वर्षकः (विचक्षाणाः) विदद्या (अह्नाः)
 पितृदेवयानसम्बन्धिदिवसां (उषसां) (दिवः) स्वर्गस्य च (प्रत
 रीता) मतरिता (सिन्धूनाम्) इन्द्रियाणां (प्राणा) प्रकर्षेणान्चेष्ट
 यिता (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (पवते) ऊर्ध्वगच्छति (मनीषिभिः)
 मेधाविभिर्वागाद्यत्विग्भिः सह (इन्द्राय) परमेश्वराय (हार्द) ४
 स्नेहे (आविन्) प्रविशन् (कलशान्) कमलरूपगृहान् (आभिः)
 अभिलक्ष्य (अचिक्रदत्) स्तुतिशब्दं करोति ॥ ६॥

भाष्यार्थः - १ मत्ताओंकी २ वृष्टिकरनेवाला ३ विशेषदृष्टा ४ पितृयान
 देवयानसम्बन्धीदिनों ५ उषाकालों ६ औरस्वर्गका ७ मतरिता ८ इन्द्रियोंको
 ९ चेष्टा देनेवाला १० आत्मप्रतिविंब ११ उपाकोजाताहै १२ मेधावीवाक्शादि
 ऋत्विजोंकेसाथ १३ परमेश्वरके १४ स्नेहमें १५ प्रवेश करता १६ कमल
 रूपग्रहोंको १७ देखकर १८ स्तुतिशब्दकोकरताहै ॥६॥

रेणुर्ऋषिर्जगतीच्छन्दः सोमो देवता

त्रिस्मैसमर्धेनवोदुदुह्निरेसत्यामाशिरम्परमे
 व्योमनि चत्वायन्त्याभुवनानिणिजे चारूणि
 चकेयदुतैरवर्द्धत ॥७॥ ६४ नि

(यद्) यदा (अ) आत्मारूपयजमानः (ऋतैः) योगयज्ञैः (अव-
 र्द्धत) तदा (त्रिः) प्रातः मध्याह्न सायं सवनानि (सप्त) योगभूमय
 (सस्मै) आत्मारूपयजमानाय (शिरम्) मानससूर्यश० १४।१।१
 १० (परमे) (व्योमनि) भृकुट्पत्तुरिक्षे (दुदुह्निरे) दुहन्ति (अन्या)
 (सत्या) (मा) पराशक्तिः (निणिजे) मानससूर्यस्य परिशोधना

य(चत्वारि) (भुवनानि) जागृत्स्वप्नसुषुप्तिंतुरीयारव्यानि(चारु
 णि) कल्याणानि(चक्रै) करोति ॥७॥

भाषार्थः - १ जव २ आत्मारूपयज्ञमानने ३ योगयज्ञोंसे ४ वृद्धिपाईत-
 व ५ प्रातः मध्याह्न सायंकालकेसवन ६ औरसप्तयोगभूमि ७ इसआत्मा
 रूपयज्ञमानकेलिये ८ मानससूर्यको ९ १० भृकुटिकेअन्तरिक्षमें ११ देह
 तेहैं १२ दूसरी १३ सत्यरूपा १४ पराशक्ति १५ मानससूर्यकेशोधनार्थ १६ १७
 जागृत्स्वप्नसुषुप्तिनुर्यानानामभुवनोंको १८ कल्याणरूप १९ करतीहै ॥७॥

वेनोभार्गवञ्जरापिर्जगतीछन्दः सोमोदेवता-

इन्द्रायसोमसुषुतः परिस्त्रवापामीवाभवतुर्
 ससासह । मातरसस्यमत्सतद्व्याविनाद्रव
 णस्वन्तइहसन्त्विन्दवः ॥८॥ ६५

हे(सोम) आत्मप्रतिविंवत्वं(सुषुतः) सन्(इन्द्राय) परमेश्वरा
 य(परिस्त्रव) परिगच्छ(अमीवा) संसाररोगः(रक्षसा) कामे
 न(सह)(अपभवतु) अपगतोवियुक्तोभवतु(द्व्याविनः) द्वैता
 बलम्बिनोदेहादयः(ते) नव(रसस्य)(मा)(मत्सत) त्वदीयेन
 रसेनमामद्यन्तु(इन्दवः) इन्द्रियरूपा रसाः(इह) योगयज्ञे
 (द्रविणस्वन्तः) योगधनवन्तः(सन्तु) भवन्तु ॥८॥

भाषार्थः - १ हेआत्मप्रतिविंवतुम २ अधिपुतहोते ३ परमेश्वरकेलिये
 ४ ऊपरकोचलो ५ संसाररोग ६ कामके ७ साथ ८ तुमसेवियोगकोपाप्पो ९
 द्वैताबलम्बीदेह आदि १० तेरे ११ रससे १२ १३ मदकोमतपाओ अर्थात्तूउन
 सेअसंगहो १४ इन्द्रियरूपरस १५ इसयोगयज्ञमें १६ योगधनवाले १७ हों

असाविसामो अरुषा वृषा हरि राजे वदस्मो अभि
गा अचिक्रदत्। पुनानो वारमत्येष्यव्ययथं श्ये
नानयोनितुतवन्तमासदत् ॥ ८ ॥ ८६ ॥

(अरुषः) रूपवान् (नि० ३।७ (वृषा) धर्मरूपः (हरिः) कामहरण
शीलः (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (असावि) अभिपुतो भूत् (राजा)
योगिराजः (इव) (दस्मः) दर्शनीयः सन् (गाः) महावाचः (अभि)
अभिलक्ष्य (अचिक्रदत्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कृतवान् (श्येनः)
(ने) इव (वृत्तवन्तम्) अमृतवन्तं (योनिसु) स्थानं गगनमंडलं
(आसदत्) प्राप्तवान् हे आत्मप्रतिविंबत्वं यूस्मात् (पुनानः) शो
ध्यमानः (अव्यम्) मानससूर्ययोग्यं (वारम्) सुषुम्णां (अत्यपि)
अतिक्रम्य गच्छसि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ रूपवान् २ धर्मरूप ३ कामहरणशील ४ आत्मप्रतिविंब ५
अभिपुत हुआ ६ ७ योगिराजकी समान ८ दर्शनीयने ९ महावाक् को १० देख
कर ११ अहं ब्रह्मास्मि शब्द किया १२ १३ श्येन की तुल्य शीघ्र गामीने १४ अ-
मृतवान् १५ स्थान गगनमंडल को १६ प्राप्त किया १७ वह शोध्यमान १८ ना
नससूर्ययोग्य १९ सुषुम्णाको २० अतिक्रमण कर जाता है - ॥ ८ ॥

वत्सञ्जयिः शेषं पूर्ववत्

प्रदेवमच्छामधुमन्तुन्दवोसिष्यदन्तगावशा
नधनवः। वहिषदो वचनवन्त ऊधोभिः परिस्तुत
मुखि योनैर्णिजन्धिरे ॥ १० ॥ ८७ ॥

(मधुमन्तः) प्राणवन्तः श० १४।१।३।३० (इन्द्वे) इन्द्रियात्म
प्रतिविंबाः (देवम्) परमेश्वरं (अच्छ) आप्तुं (प्रासिष्यदन्त) प्रक

र्षणागच्छन्ति (न) युधा (धेनवः) (गावः) (वर्हिषदः) सुपुमामा
 र्गणासीदन्तः (वचनवन्तः) (उस्त्रियाः) गोरूपावेदाः (ऊधभिः) स्व
 धास्वाहादिरूपैः (परिस्त्रुतं) निर्णीजम्) शुद्धतत्वमसीति महा वाचं
 (धरे) दधिरे यजमानार्थं धारयन्ति ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ प्राणवान् २ इन्द्रियआत्मप्रतिविंब ३, ४ परमेश्वरकी मामि
 को ५ प्रकर्षाके साथजातेहैं ६ जैसे ७ दुग्धदाता ८ गौ ९ सुपुमामा मार्गमें विराज
 मान १० वचनवान् ११ गौरूपवेद १२ स्वधास्वाहा आदिस्त्रनोंसे १३ निकले
 हुए १४ शुद्धतत्वमसीमहावाक्को १५ यजमानकेलिये धारण करतेहैं ॥ १० ॥

अत्रिन्द्ररपिः शेषं पूर्ववत्

अज्जते व्यज्जते सम्भज्जते क्रतुं थं रिहन्ति मध्वो
 भ्यज्जते सिन्धो रुच्छा सेपत यन्त मुक्षणां थं हिर
 एयपावाः पशुमेषु गृभाते ॥ ११ ॥ ६८

आत्मप्रतिविंबः (अज्जते) इन्द्रियैः सह प्रयुज्यते। अनजमिज्ञाणे
 (व्यज्जते) माणौ विशेषेण प्रयुज्यते (सम्भज्जते) अन्तः करणैः
 सम्यक् युज्यते कमलस्थादेवाः (क्रतुम्) योग कर्त्तारं (रिहन्ति)
 लिहन्ति आस्वादयन्ति (मध्वो) ज्ञानेन श० १४। १५। १६ (सम्य
 ज्जते) समन्तान्मिअयन्ति (हिरएयपावाः) स्वकीयज्योतिषा पु
 नन्तः कमलस्थादेवाः (सिन्धोः) मनसः। मनोवैसमुद्रः श० ७
 १। २। ५२ (उच्छासे) उच्छ्रिते देशे मृकुल्पादिकमलसमूहे (पत
 यन्तं) गच्छन्तं (उक्षणां) सेक्तारं (पशुम्) आत्मप्रतिविंबं। ए
 तावान्वै पशुर्यावान्प्राण आत्मान् च श० ६। ६। २। ७ (अपशु) कम
 लान्तरिक्षेषु (गृभाते) गृह्णन्ति ॥ ११ ॥

भाषार्थः - आत्मप्रतिविंबं १ इन्द्रियों से संयोग पाता है २ प्राणों से संयुक्त होता है ३ अन्तःकरणों से संयोग करता है कमलस्थ देवता ४ योगी को ५ प्यार करते हैं ६ ज्ञानसे ७ मिश्रित करते हैं ८ अपनी ज्योतिसे पवित्र करने कमलस्थ देवता ९ मनके १० उच्छ्रित देशभृकुटि आदिकमल समूहमें ११ जाते १२ सेना १३ आत्मप्रतिविंबको १४ कमलान्तरिक्षोंमें ग्रहण करते हैं ॥ १२ ॥

पवित्रकरपिर्जगती छन्दो ब्रह्मणस्पतिर्देवता
 पवित्रन्ते वितन्ब्रह्मणस्पते प्रभुगोत्राणि पर्येषि
 विश्वतः । अतसतनूनतदामो अभ्युते श्रुतासइ
 वहन्तः सन्तदाशत ॥ १२ ॥ ६६

हे (ब्रह्मणस्पते) महावाक् स्वामिन्नात्मप्रतिविंब (ते) तव (पवित्रम्) प्राणं (विततम्) सर्वत्रविस्तृतं (प्रभुः) समर्थस्त्वं (विश्वतः) सर्वतः (गात्राणि) परमेश्वरस्यांगानि (पर्येषि) परिगच्छसि (अतसतनूः) तपोहीनशरीरः (आमः) अपरिपक्वो ऽ संस्कृतो जीवात्मा (न) (अभ्युते) नप्राप्नोति (श्रुतासः) परिपक्वाः संस्कृता भक्तायोगिनः (इत्) एव (वहन्तः) भक्तिं योगम्वाधारयन्तः (तत्) सायुज्यं (समासत) सम्यक् प्राप्नुवन्ति असगतौ ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ हे महावाक् स्वामिन् आत्मप्रतिविंब २ तेरा ३ प्राण ४ सर्वत्रविस्तृत है ५ समर्थतुम ६ सब ओरसे ७ परमेश्वरके अंगोंको ८ प्राप्त करते हो ९ तपभ्रून्शरीरवाला १० अपरिपक्व असंस्कृत जीवात्मा ११, १२ नहीं पाता है १३ परिपक्व संस्कृत भक्त योगी १४ ही १५ भक्ति योगको धारण करते १६ उस सायुज्यको १७ प्राप्त करते हैं ॥ १२ ॥

इति श्रीभृगुवंशार्चनसंज्ञीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते साम

वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य नवमः खण्डः ६

इतिजागतम्

इन्द्रमच्छेति खण्डेः स्मिन् ऋचोद्वादशसंस्थिताः

सकलाउणिहस्तत्र वक्ष्यन्ते ऋषयः पृथक् ॥

अथदशमः खण्डः

अग्निभ्रासुपऋषिरुष्णिक् छन्दः सोमादेवताः

^३इन्द्र^३मच्छे^३सुता^३इमे^३वृषणां^३यन्तु^३हरयः^३। ^३भ्रुष्टे^३

जातासइन्द्रवः स्वर्विदः ॥१॥ १००

(भ्रुष्टे) आत्मनाव्याप्ते कारणारव्ये शरीरे । भ्रुगतौ (जातासः) जा
ताः (सुताः) अभिपुताः (इन्द्रवः) दीप्ताः (स्वर्विदः) आत्मनो ज्ञान
रः (इमे) (हरयः) मानससूर्याः (वृषणां) धर्मकामार्थ मोक्षाणां
वर्धितारं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अच्छे) आसुम् (यन्तु) गच्छन्तु । १
भाषार्थः - १ आत्मासेव्याप्रकारणा शरीरमे २ उत्पन्न ३ अभिपुत ४ दी
प्त ५ आत्मज्ञाना ६ ये ७ मानससूर्य ८ चारोपदार्थके दाता ९ परमेश्वरकी १०
भामिकेलिये ११ गगनमंडलको चलो ॥१॥

चसुर्मानवऋषिः शोपंपूर्वैवत्

^३प्र^३ध^३न्वा^३सो^३म^३जा^३गृ^३वि^३रि^३न्द्रो^३ये^३न्द्रो^३परि^३स्व^३वा^३द्यु^३
^३मन्तं^३शु^३प्म^३मा^३भर^३स्व^३र्विद^३म् ॥२॥ १०१

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (जागृविः) जागरणशीलस्त्वं (प्रधन्व
प्रकर्षणा गच्छ हे (इन्द्रो) प्रदीप्त (इन्द्राय) परमेश्वराय (परिस्व
व) कमलेषु गृच्छ (द्युमन्तं) दीप्तियुक्तं (स्वर्विदम्) आत्मनो ल
म्भकं (शुप्मम्) योगवलं (आभर) आहरधारय ॥१॥

भाषार्थः - १ हे आत्म प्रतिविंब २ जागरणशीलतुम ३ ऊपरकोचलो ४ हे महातेजस्वी ५ परमेश्वरके लिये ६ कमलोंमें जाओ ७ दीप्ति युक्त ८ आत्म मापक ९ योगबलको १० धारण करो - ॥ २ ॥

पर्वतनारदासृष्याणिकच्छन्दःस्रत्विजोदेवताः

सखाय^१ आनि^२धीदत^३ पुना^४नोय^५प्रगायत^६।शि^७
मुन्न^८यज्ञैः^९ परिभूषत^{१०}अिये^{११} ॥ ३ ॥ १०२

हे (सखायः) वागाद्यत्विजः (आनिधीदत) स्नोतु मुपविशत (पु-
नानाय) पूयमानाय शोधमानाय आत्म प्रतिविंबाय (प्रगायत)
प्रकर्षेण गायत (अिये) योगलक्ष्म्यर्थ (यज्ञैः) (परिभूषत) प-
रितोऽलङ्कृत (न) यथा (शिभुम्) वालंपितर आभरणैरलङ्क-
र्वन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः

१ हे वाक् आदिऋत्विजसखाओ २ स्तुति करने कों वैठो ३ शोधमान आ-
त्म प्रतिविंबके लिये ४ गाओ ५ योगलक्ष्मीके लिये ६ योग यज्ञों से ७ अल-
ङ्कृत करो ८ जैसे ९ बालकको माताप आभरणों से अलंकृत करते हैं ॥ ३ ॥

पर्वतनारदासृषी शेषं पूर्ववत्-

तवः^१ सखायो^२ मदाय^३ पुनानं^४ मभि^५गायत^६।शिभु^७
नहव्यैः^८ स्वदयन्त^९ गूर्तिभिः^{१०} ॥ ४ ॥ १०३ ॥

हे (सखायः) भक्तायोगिनः (वः) युष्माकं (मदायु) अहं ब्रह्मा-
स्मीति मदार्यं (पुनानं) पूयमानं शोधमानं (तम्) आत्मप्रति-
विंबे (शिभुम्) (न) इव (अभिगायत) अभिघृत (हव्यैः) इन्द्रि-
यैः (गूर्तिभिः) स्तुतिभिश्च (स्वन्दयन्त) स्वादू कुरुत ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे भक्त योगियो २ तुम्हारे ३ अहं ब्रह्मास्मि मद्के लिये ४

शोधमान ५ उत्स आत्म प्रति विवको ६, ७ वालक की समान ८ स्तुत करो ९ इन्द्रियों १० और स्तुतिओं से ११ स्वादिष्ट करो ॥ ४ ॥

विन ऋषि रुषिणक् छन्दः सोमो देवता-

^{३ १२ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
 प्राणाशिभुम्म हीनां ७ हिन्वन्वृतस्य दीधितम् ।
 विश्वा परिप्रिया भुवदधाहिता ॥ ५ ॥ १०४

(अथ) अथ (महीनाम्) योगभूमिनां (प्राणा) चेष्टयिता (ऋतस्य) सत्यस्य ब्रह्मणाः (शिभुः) (हिता) द्वैतावलम्बी । आत्मप्रतिविंबुः (दीधितम्) स्वकीयं ज्योतिः (हिन्वन्) ब्रह्मणि प्रेरयन् (विश्वा) विश्वानिसर्वाणि (प्रिया) प्रियाणि भौमदिव्यान्जानि (परिभुवन्) तिरस्करेति ॥ ५ ॥

भाष्यः - १ तदनन्तर २ योगभूमियो को ३ चेष्टा देने वाला ४, ५ ब्रह्म पुत्र ६ द्वैतावलम्बी आत्म प्रतिविंब ७ अपनी ज्योति को ८ ब्रह्म में प्रेरणा करता ९ सब १० प्रिय भौमदिव्यविषयों को ११ तिरस्कार करता है ॥ ५ ॥

मनु ऋषिः शेष पूर्ववत्-

^{१ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
 पवस्व देव वीतये इन्दो धारोभिरोजसा । आक
 लशम्भधुमात्सोमनःसदः ॥ ६ ॥ १०५

हे (इन्दो) दीमिमन् (सोम) आत्म प्रतिविंब (मधुमान्) ब्रह्म ज्ञानीत्वं (देववीतये) देवस्य परमेश्वरस्य भक्षणाय (ओजसा) योगवलेन (नः) अस्माकं (धारोभिः) इन्द्रियशक्तिरूप धारोभिः सह (पवस्व) ऊर्ध्वगच्छ (कलशं) गगनमण्डलं प्रजापतिम्वा (आसदः) आसीद ॥ ६ ॥

भाष्यः - १ हे दीमिमन् २ आत्म प्रतिविंब ३ ब्रह्म ज्ञानी तुम ४ परमे

म्बरकी तृमि कैलिये ५ योगबलद्वारा ६ हमारी ७ इन्द्रियशक्तिरूपधाराओं के साथ ८ ऊपरको चलो ९ गगन मंडल वापरमे म्बर को १० प्राप्त करे ॥ ६ ॥

अग्निर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

सोमः पुनान ऊर्मिणा व्यवार विधावति । अग्नेवा
चः पवमानः कानि कदत् ॥ ७ ॥ १०६

(पवमानः) पूतः (पुनानः) शोध्यमानः (सोमः) आत्म प्रतिविंबः
(वाचः) तत्वमसीति महावाचः (अग्ने) (कानि कदत्) अहं ब्रह्मा
स्मीति शब्दं कुर्वन् (ऊर्मिणा) वेगेन (अव्यम्) मानस सूर्य यो-
ग्यं (वारम्) वाल तुल्यां सुपुम्णां (विधावति) ॥ ७ ॥ १०६

भाषार्थः - १ पवित्र २ शोध्यमान ३ आत्म प्रतिविंब ४ तत्वमसि महा-
वाक्के ५ आगे ६ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को करता ७ वेगसे ८ मानस सूर्य यो-
ग्य ९ वाल तुल्य सुपुम्णा की १० ओर दौड़ता है ॥ ७ ॥

द्वित्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

प्रपुनानाय वेधसे त्सा माय वच उच्यते । भृति
न्भरामेति भिजु जोषते ॥ ८ ॥ १०७ ॥

(पुनानाय) शोध्यमानाय (वेधसे) मेधाविने (मतिभिः) प्रज्ञा
भिः (जुजोषते) प्रीयमाणाय (सोमाय) आत्म प्रति विंबाय (वच-
तत्वमसीति (प्रोच्यते) (न) यथा (भराः) स्वामिनः (भृतिन्)
भृतकाय सम्पाद यन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ शोध्यमान २ मेधावी ३, ४ प्रज्ञाओं से प्रीयमाण ५ आ-
त्म प्रतिविंब के लिये ६ तत्वमसि वाक् ७ उच्चारण किया जाता है ८ जैसे ९
स्वामीजन १० भृति को भृतक के लिये देता है - ॥ ८ ॥

पर्वतनारदा वृषी शेषं पूर्ववत्

गोमन्त्र इन्दो अश्ववत्सुतः सुदक्ष धनिव । शु
चिञ्चवर्णो माधि गोषु धारय ॥ ६ ॥ १०८

हे (सुदक्ष) सुवल (इन्दो) आत्मप्रतिविंब (सुतः) अभिषुतस्व
(नः) अस्मभ्यं वागा द्यात्विग्भ्यः (अश्ववत्) महा सूर्य वन्तं श
(गोमन्त्र) गोलोकं (धनिव) प्रापयनि २२ २३ २४ (च) (शुचिम्)
दीप्यमानं (वर्णम्) (गोषु) इन्द्रियेषु (आधिधारय) अधिकं प्रा
पय ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ हे सुवल २ आत्मप्रतिविंब ३ अभिषुतनुम ४ हमवाक् आदि ऋत्विजों के
लिये ५ महासूर्यवान ६ गोलोक को ७ प्राप्त कराओ ८ और ९ दीप्यमान १०
वर्णों को ११ इन्द्रियों में १२ प्राप्त कराओ ॥ ६ ॥

पर्वतनारदा वृषी शेषं पूर्ववत्

अस्मभ्यन्त्वा वसुविदं माभिवाणीरनूषत् । गो
भिष्टकणीमभिवासयामसि ॥ १० ॥ १०९

हे आत्मप्रतिविंब (अस्मभ्यम्) अस्माकमथीय (वाणीः) वेद
वाचः (वसुविदं) योगधनस्य ज्ञातारं (त्वा) (अभ्यनूषत्) अ
भिष्टवन्ति । नूस्तवने वयमात्मारूपयजमानाः (ते) तव (वर्ण
म्) (गोभिः) इन्द्रियशक्तिभिः (अभिवासयामसि) अभिवास
यामः अभित आच्छादयामः ॥ १० ॥

भाषार्थः - हे आत्मप्रतिविंब १ हमारे लिये २ वेदवचन ३ ४ तुम्हें योगध-
नज्ञाना को ५ स्तुत करते हैं हम आत्मारूप यजमान ६ तेरे ७ वर्णों को ८ इन्द्रि-
यों की शक्तिसे ९ सब ओरसे आच्छादन करते हैं ॥ १० ॥

आग्निश्चाक्षुषः शेषं पूर्ववत्
 पवते ह्यतो हरिरतिहरो थं सिरै थं ह्यो अभ्य
 षस्तोत्तभ्यो वीरवद्यशः ॥ ११ ॥ ११०

(हर्यतः) परमेश्वरेण स्पृहाणीयः (हरिः) मानस सूर्यः (रं ह्यौ) वेगेन। (ह्योसि) अधोमुखानि कमलानि (स्यतिपवते) अतीत्य गच्छति हे आत्म प्रति विंव (वीरवत्) त्वं (स्तोत्तभ्यः) वागाद्यत्विगम्यः (यशः) (अभ्यर्ष) अभिगमय प्रयच्छ ॥ ११ ॥

भाषार्थः - १ परमेश्वरका स्पृहाणीय २ मानस सूर्य ३ वेगसे ४ अधो मुखकमलोंको ५ सति क्रमण कर जाता है हे आत्म प्रति विंव ६ वीरकीस मानतुम ७ हमवाक् आदि स्तोताओं के लिये ८ यशको ९ दो ॥ ११ ॥

द्वितः ऋषिः शेषं पूर्ववत्

परिको शोश्मधुश्चूतं थं सोमः पुनानो शेषति।
 अभिवाणी ऋषीणां थं समानूषत ॥ १२ ॥ १११

(पुनानः) शोध्यमानः (सः) मानस सूर्यः (मधुश्चूतम्) ब्रह्म ज्ञानस्य व्यावितारं (कोशम्) गगनमंडलं (पर्यर्षति) परि गच्छति तं (ऋषीणाम्) वागाद्यत्विजां सप्त (वाणीः) सम छन्दांसि (अभ्यनूषत) अभिषुवन्ति नूस्तवने ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ शोध्यमान २ मानस सूर्य ३ ब्रह्म ज्ञान के दाता ४ गगन मंडलको ५ जाता है उसको ६ वाक् आदि ऋत्विजों की ७ सम छन्द रूपवाणी ८ स्तुत करती हैं ॥ १२ ॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनारयणस्य सप्तम्यां लाप्रसादशर्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्यानपंचमस्याध्यायस्य दशमः खण्डः ॥ १० ॥ इत्यौषाहम्

अथैकादशखाण्डः

गौरिवीति ऋषिः ककुप छन्दः सोमो देवता-

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोमक्रतु वित्तमो मदः ।

महिद्युस्तमो मदः ॥ १ ॥ ११२

हे (सोम) आत्मप्रतिविवृ (मधुमत्तमः) विज्ञानी (क्रतुवित्तमः) योग्य
 गयज्ञस्य प्रज्ञाता (मदः) हृष्टः (द्युस्तमः) अत्यन्त दीप्तः (महि
 मदः) अहं ब्रह्मास्मीति मदयुक्तस्त्वं (इन्द्राय) परमेश्वराय (प
 वस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविव २ विज्ञानी ३ योग्यज्ञ का ज्ञाता ४ हृष्ट
 ५ अत्यन्त दीप्त ६ अहं ब्रह्मास्मि मदयुक्ततुम ७ परमेश्वरके लिये ८ सुषुम्णा
 मार्गसेचलो ॥ १ ॥ ऊर्ध्वसदा ऋषिः शेषपूर्ववत्

आभिद्युन्नन्वृहद्यश इषस्पते दि दीहि देवदेव
 युम् । वीकोशमध्यमं युव ॥ २ ॥ ११३

वागाद्यृत्विजां मार्यना हे (इषस्पते) देहरूपान्नस्य स्वामिन् (दे
 व) विद्वन्नात्मप्रतिविवृत्वं (देवयुम्) देवेन परमेश्वरेणामि
 यितारं युमिञ्जणो (द्युन्नम्) योगधनं (वृहत्) महत् (यशः) वि
 राड् रूपान्नं (आभिदीदिहि) आभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्य
 र्थः किञ्च (मध्यमम्) (कोशम्) भृकुटिकमलं (वियुव) प्राप
 य ॥ २ ॥

भाषार्थः

वागाद्यृत्विजोकी मार्यना - १ हे देह रूपान्नके स्वामी २ विद्वान् आत्म प्रति
 विवतुम् ३ परमेश्वरसे मिलाने वाले ४ योगधन ५ वृहत् और विराट् रूप महा अ
 न्नकोटी और ८ भृकुटिकमलको ९ प्राप्त करणो ॥ २ ॥

ऋषिः ककुपूळन्दः ऋषिः ककुपूळन्दः ऋषिः ककुपूळन्दः ऋषिः ककुपूळन्दः

आसोता परि पिञ्चता भ्वन्नेस्तो मममुरं रं रज
स्तुरम् । वनप्रक्षमुदमुतम् ॥ ३ ॥ ११४

हेवागाद्यत्विजः (अमुरम्) मानसान्तरिक्षे वेगवन्तं (रजस्तुर-
म्) हृदयान्तरिक्षे वेगवन्तरं (वनप्रक्षम्) भृकुट्यन्तरिक्षे निवा-
सशीलं (उदमुतम्) गगनान्तरिक्षे गुच्छन्तं (अभ्वम्) मानस
सूर्यं श० ६।३।१।२६ (न) च (स्तोमम्) प्राणं । श० ८।१।४
(आसोत) अभिषुत । पुञ् अभिषवे (परिपिञ्चत) स्वकीयश-
क्तिभिः सिञ्चत ॥ ३ ॥ भाषार्थः

हेवाक् आदि ऋषिः १ मानसान्तरिक्षे वेगवान् २ हृदयान्तरिक्षे वे-
गे वेगवान् ३ भृकुटि अन्तरिक्षे निवास शील ४ गगनान्तरिक्षे न जाने वा-
ले ५ मानससूर्यं ६ सौर ७ प्राणको ८ अभिषवन करो ९ अपनी शक्तियों से
सींचो ॥ ३ ॥ कृतयशा ऋषिः ककुपूळन्दः सोमो देवता

एतमुत्पम्मदच्युतं सहस्रधारं वृषभन्दिवा
दुहम् । विश्वो वसूनि विभ्रतम् ॥ ४ ॥ ११५

आत्मारूपयजमानोऽहं (त्यम्) तं यकारो योगद्योतकः (एत-
म्) (मदच्युतम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदेन देहात्पृथग्भूतं (सह-
स्रधारम्) बहुधारं (वृषभम्) अमृतवर्षिकं (विश्वो) सर्वाणि
(वसूनि) योगधनानि (विभ्रतम्) धारयन्त मात्मप्रतिविंबं (उ-
द्व) (दिवः) मनसः (अदुहम्) ॥ ४ ॥

भाषार्थः - आत्मारूपयजमानमेने १ उत २ इत् ३ अहं ब्रह्मास्मि
द्वारा देह से असंग ४ बहुधारावाले ५ अमृतवर्षिकर्ता ६ ७ ८ सवयोगध-

अथैकादशखाण्डः

गौरिवीतिऋषिः ककुपच्छन्दः सोमो देवता-

१ २ ३ २ २ ३ २ ३ ३ २ ३ ३ २ ३ ३ २ ३ ३
पवस्त्वमधुमत्तमइन्द्राय सोमक्रतुर्वित्तमो मदः।२ ३ ३ २ ३ ३ २ ३ ३ २ ३ ३ २ ३ ३ २ ३ ३
महिद्युस्तमो मदः ॥ १ ॥ ११२हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (मधुत्तमः) विज्ञानी (क्रितुर्वित्तमः) यो
गयत्तस्य प्रजाता (मदः) दृष्टः (द्युस्तमः) अत्यन्त दीप्तः (महि
मदः) अहं ब्रह्मास्मीनि मदयुक्तत्वं (इन्द्राय) परमेश्वराय (प
वस्व) सुपुत्रा मार्गेण गच्छ ॥ १ ॥**भाषार्थः** - १ हे आत्मप्रतिविंब २ विज्ञानी ३ योगयत्तका ज्ञाता ४ दृष्ट
५ अत्यन्त दीप्त ६ अहं ब्रह्मास्मीनि मदयुक्ततुम् ७ परमेश्वरके लिये ८ सुपुत्रा
मार्गसेचलो ॥ १ ॥ ऊर्ध्वसदा ऋषिः शेषपूर्ववत्३ ३ ३ २ ३ ३ ३ ३ ३ ३ २ ३ ३ ३ २ ३ ३ ३
आभिद्युन्नन्वृहद्यशोर्इषस्पतेदिदीहि देवदेव
युम्। विकाशमध्यमयुव ॥ २ ॥ ११३वागाद्यत्विजां भार्यना हे (इषस्पते) देहरूपान्नस्य स्वामिन् (दे
व) विद्वन्नात्मप्रतिविंबत्वं (देवयुम्) देवेन परमेश्वरेण मिष्ठा
यितारं युमिष्ठाणो (द्युन्नम्) योगधनं (वृहत्) महत् (यशः) वि
राड् रूपान्नं (आभिदीदिहि) आभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्प
र्थः किञ्च (मध्यमम्) (कोशम्) भृकुटिकमलं (वियुव) प्राप
य ॥ २ ॥**भाषार्थः**वागाद्यत्विजोकी भार्यना - १ हे देहरूपान्नके स्वामी २ विद्वान् आत्मप्रति
विंबतुम् ३ परमेश्वरसेमिन्नानेवान् ४ योगधन ५ वृहत् और विराटरूप महा
न्नकोटो और ८ भृकुटिकमलको ९ प्राप्तकारणो ॥ २ ॥

ऋजिष्वाऋषिः ककुपच्छन्दः ऋत्विजो देवताः

आसोता परिषिञ्चता भ्वन्नस्तो ममसुरं रज
स्तुरम् । वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥ ३ ॥ ११४

हेवागाद्यत्विजः (ऋमुरम्) मानसान्तरिक्षे वेगवन्तं (रजस्तुरम्) हृदयान्तरिक्षे वेगवन्तरं (वनप्रक्षम्) भृकुत्पन्तुरिक्षे निवासशीलं (उदप्रुतम्) गगनान्तरिक्षे गच्छन्तं (ऋभ्वम्) मानससूर्यं श० ६।३।१।२९ (न) च (स्तोमम्) माणां। श० ८।१।४ (आसोत) अभिषुत। षुञ् अभिषवे (परिषिञ्चत) स्वकीयशक्तिभिः सिञ्चत ॥ ३ ॥ भाषार्थः

हेवाक् आदिऋत्विजो १ मानसान्तरिक्षमे वेगवान् २ हृदयान्तरिक्षमे वेडेवेगवान् ३ भृकुटि अन्तरिक्षमे निवासशील ४ गगनान्तरिक्षमे जानेवाले ५ मानससूर्य ६ ऋषी ७ माणाको ८ अभिषवन करो ९ अपनी शक्तियों से सींचो ॥ ३ ॥ कृतयशाऋषिः ककुपच्छन्दः सोमो देवता

एतमुत्त्यम्मेदच्युतं सहस्रधारं वृषभन्दिवा
दुहम् । विश्वा वसूनि विभ्रतम् ॥ ४ ॥ ११५

आत्मारूपयजमानोऽहं (त्यम्) तं यकारो योगद्योतकः (एतम्) (मदच्युतम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदेन देहात्पृथग्भूतं (सहस्रधारम्) बहुधारं (वृषभम्) असृत वर्षकं (विश्वा) सर्वाणि (वसूनि) योगधनानि (विभ्रतम्) धारयन्त मात्म प्रति विवं (उ) एष (दिवः) मनसः (अदुहम्) ॥ ४ ॥

भाषार्थः—आत्मारूपयजमानमेने १ उस २ इस ३ अह ब्रह्मास्मिमदद्वारदेह से मंग ४ बहुधारावाले ५ असृतदृष्टि कर्ता ६, ७, ८ सब योगध

नके धारक आत्म प्रतिविंब को ऽ ही १० मनसे ११ दोहा ॥ ४ ॥

ऋणव ऋषि र्यव मध्या छन्दः सोमो देवता-

^{१२}समुन्व^३यो^३वसूना^{२२}यो^३राया^{२२}मानेता^२यड्डा^२नाम् ॥

^१सोमो^३यः^३सुक्षिती^३नाम् ॥ ५ ॥ ११६

(यः) (वसूनाम्) योगधनानां (मानेता) (यः) (श्याम्) योगै
श्वर्याणा मानेता (यः) (ड्डानाम्) योगार्हान्नामानेता (यः)
(सुक्षितीनाम्) योगभूमीनामानेता (सः) (सोमः) आत्म प्र-
तिविंबः (सुन्वै) आत्मारूप यजमानेनाभिषुतो बभूव ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ जो २ योगधनों का ३ प्रापक है ४ जो ५ योगैश्वर्यों का
प्रापक है ६ जो ७ योगार्ह अर्हों का प्रापक है ८ जो ९ योगभूमियों का प्रापक है
१० वह ११ आत्म प्रतिविंब १२ आत्मारूप यजमान द्वारा अभिषुत हुआ ॥ ५ ॥

शक्ति ऋषिः ककुप् छन्दः सोमो देवता-

^३त्वे^२थ^२ह्या^२इ^२द्व्यम्प^२वमान^३जानि^३मानि^३द्युमत्त^३

मः ॥ अमृतत्वाय घोषयन् ॥ ६ ॥ ११७

हे (पवमान) शुद्धात्म प्रतिविंब (त्वम्) (हि) (द्व्यम्) भगवत्-
तार सम्वन्धीनि (जानिमानि) जन्मानि (अमृतत्वाय) मोक्षा-
य (अङ्ग) क्षिप्रं (घोषयन्) भक्तेषु आवयन् (द्युमत्तमः) अतिश-
येन दीप्तिमान् भवसि ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे शुद्ध आत्म प्रतिविंब २ तुम ३ ही ४ भगवत् अवतार संव-
धी ५ जन्मों को ६ मोक्ष कं लिये ७ शीघ्र ८ भक्तों को सुनाते ९ अतिशय दीप्ति-
मान होते हो ॥ ६ ॥ उरु ऋषिः योषं पूर्ववत्-

^२ए^२पस्य^२धारया^२सुतो^३व्यावा^३रेभिः^३पवते^३मदि^३न्मः ॥

न्द्रियालयोंमें स्थित ४ इन्द्रियोंकी शक्तिको ५ योगं बलसे ६, ७ मानस सूर्यके
मध्य ८ प्रासकियावहनुम ९ इन्द्रियसम्बन्धी १० प्राणसम्बन्धी ११ देहको १२
सब शोरसे व्याप्त करते हैं १३ हेशत्रु धर्षण शीलतुम १४, १५ कवचीके समान
१६ काम आदिको मारो—॥८॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनु ज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते साम
वेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमोऽध्याय समाप्तः ॥५॥

इति पष्ठः प्रपाठकः समाप्तः

सौम्यं पावमानं वापर्वं काण्डं वा समाप्तम्

इति तृतीयं पर्व

अथारण्यं पर्व

वाहस्पत्य भरद्वाज ऋषि र्द्विती छन्द इन्द्रो देवता

अथ षष्ठीऽध्याय आरभ्यते

इन्द्र ज्येष्ठम् आभरं षोडशम् पुं पुं ऋवः ।

यदिष्टक्षेमवज्रहस्त रोदसी उभे सुशिप्र प

प्राः ॥ १ ॥ १

हे (वज्रहस्त) वज्रवाहो ज्ञानवज्र धरवा (सुशिप्र) शोभन हनु
कसाकारवा (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वरवा (षोडशम्) अतिशये
नवल करं (पुं पुं) पूरकं (ज्येष्ठम्) (ऋवः) अन्नं विराड् रूपा-
न्नं वा (नः) अस्मभ्यं (आभरं) आहुरप्रयच्छयेन (उभे) (रोदसी
यावा षथिव्यौ (प्राः) पूर्यासि (यत्) अन्नं (दिष्टक्षेम) धार-
यितुमिच्छेम ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे वज्रवाहो वा ज्ञानवज्र धर २ शोभन हनु वाले वासांकी

र३ इन्द्रवापरमेश्वर४ महावलकर५ पूरक६७ ज्येष्ठान्नवाविराटरूपअन्न
को८८ हमें९दो१० जिससे१० दोनों११ पृथिवीस्वर्गको१२ पूर्ण करते हैं१३
जोअन्न१४ हमधारण करना चाहते हैं—॥१॥

मैत्रावरुणोवसिष्ठःअपिस्त्रिषुपुत्रन्दुन्द्रोदेवता-
इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामाधिष्मता विश्व
रूपयदस्य। ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोददा
धउपस्तुतश्चिदवाक् ॥२॥२

(इन्द्रः) परमेश्वरः (ऋषिनामाधि) ब्रह्माण्डमध्ये (जगतः) सर्व
स्य जगतः (चर्षणीनाम्) कृताकृतज्ञानवतां भूक्तानाञ्च (रा-
जा) ईश्वरः (अस्य) (यत्) (विश्वरूपम्) (ततः) रूपात् (दा-
शुषे) हविर्दत्तवते यजमानाय (वसूनि) धनानि (ददाति) (उ-
पस्तुतं) सम्यक् स्तुतं (राधः) योगधनं (चित्) अपि (अवाक्)
अस्मदाभिमुखं (चोदत्) प्रेरयति ॥२॥

भाषार्थः - १ परमेश्वर २ ब्रह्माण्डके मध्य ३ सब जगत का ४ और कृत
अकृत ज्ञान वाले भक्तों का ५ स्वामी है ६ इसका ७ जो ८ विश्वरूप है ९ उससे
१० हविर्दत्ता यजमान के लिये ११ धनोंको १२ देता है १३ भले प्रकार स्तुत १४
योगधनको १५ भी १६ हमारे सन्मुख १७ प्रेरण करता है ॥२॥

वामदेवः (गौतमः) ऋषिर्गायत्री चन्द्र इन्द्रो देवता-
यस्यैतमारजोयुजस्तु जजनं वनं स्वः। इ-
न्द्रस्य रन्त्यम्बुहत् ॥३॥३

(यस्य) (रजोयुजे) ज्योतीरूपस्य (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (इ-
न्द्रम्) (वनम्) जलं (स्वः) स्वर्गः (रन्त्यम्) रमणयोग्यमन्नानि

सं (तुजे) दातारि नि० ३।२०।६ (जने) (वृहत्) महत् (आ) स
मन्ता इवति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ जिस २ ज्योतिस्वरूप ३ परमेश्वर का ४ यह ५ जल ६ स्त
र्ग ७ रमाणा योग्य अन्न रिक्त ८ दाता ९ मनुष्य समूह में १० महान् ११ होता
है ॥ ३ ॥ अन्नः शेष इति अतुष्याद्वायवी छन्दो वरुणो देवता-

उत्तमवरुणो पाशमस्मद्विधमविमध्यमं
अथाय । अथादित्य व्रतवयन्वो नागसोऽ
दितयेस्याम ॥ ४ ॥ ४

हे (वरुण) (उत्तमम्) उत्कृष्टं शिरसि वद्धं (पाशम्) (अस्मद्)
अस्मभ्यम् (उच्छ्रथाय) उत्कृष्टं सिधिलं कुरु (अधमम्) निकृ
ष्टं पादेऽवस्थितं पाशं (अवअथाय) अवाधुस्तात् सिधिली कु
रु (मध्यमम्) नाभिदेशगतं पाशं (विअथाय) वियुज्याशि-
थिली कुरु (अथ) अन्नन्तरं हे (आदित्ये) आदितेः पुत्रवरुण
(वयम्) (तव) (आदितये) अखाण्डिते (व्रते) (अनागसेः) अ
पराधरहिताः (स्याम) भवेम ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे वरुण २ उत्कृष्ट अर्थात् शिर में बंधी ३ पाशको ४ ह-
मारे लिये ५ ऊंचे से शिथिल करो ६ निकृष्ट पाद में अवस्थित पाश को ७ नी-
चे से शिथिल करो ८ नाभिदेश में वर्तमान पाशको ९ हटाकर शिथिल करो-
१० तदनंतर ११ हे आदित्य पुत्र १२ हम १३ तेरे १४ अखाण्डित १५ व्रत में १६ अपराध
रहित १७ होंगे ॥ ४ ॥

द्वितीयोर्थः

हे (वरुण) संसारसमुद्रस्य स्वामिन् परमेश्वर (उत्तमम्) (पाशम्)
देवशरीररूपं (अस्मद्) (उच्छ्रथाय) (अधमम्) पशुपति देह-

रूपं प्राशं (अवभृथाय) (मध्यमम्) नरदेह रूपं प्राशं (विभ्रथा
 य) (अथ) अनन्तरं हे (आदित्य) पराशक्तेः पुत्रपरमेश्वर (वयं
 म्) तव भक्ताः (तव) (आदित्ये) अखंडिते (व्रते) अनागसः
 निरपराधाः (स्याम) भवेम ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे संसार समुद्र के स्वामी परमेश्वर २ ३ देवशरीर रूप पा
 शको ४ हमारे लिये ५ ऊपर से शिथिल करो ६ पशुपती देह रूप पाशको ७ नी
 चे से शिथिल करो ८ नरदेह रूप पाशको ९ विद्युक्त कर शिथिल करो १० नद
 नन्तर ११ हे पराशक्ति के पुत्र ईश्वर १२ हम तेरे भक्त १३ तेरे १४ अखंडित
 १५ व्रतमें १६ निरपराध १७ होवें ॥ ४ ॥

गृत्समदः (साङ्घिरसः) ऋषिश्चतुष्पाङ्गायत्री छन्दः सोमादयो देवताः

त्वया वयम्पुर्वमानेन सोमभरे कृतविचिनुया
 मशश्वत् । तन्नो मित्रावरुणो मामहन्तो मादि
 तिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ५ ॥ ५ ॥

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (वयम्) योगिनः (त्वया) (पुर्वमाने
 न) पवित्रेण सह (भरे) कामसंग्रामे (शश्वत्) बहु (कृतम्)
 कर्तव्यं कर्म (विचिनुयाम) विशेषेण कुर्याम (नः) अस्माकं
 (तत्) कर्म (मित्रः) प्राणः (वरुणः) अपानः (आदितिः) बुद्धिः
 (सिन्धुः) मनः (पृथिवी) योगभूमिः (उत) अपिच (द्यौः) भृकु
 टिश्च (मामहन्ताम्) पूजयन्तु ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ हमयोगी ३ तुम्ह ४ पवित्रके साथ ५
 कामसंग्राममें ६ बहुत ७ कर्तव्यकर्मको ८ विशेषकर ९ हमारे १० उसकर्म
 को ११ प्राण १२ अपान १३ बुद्धि १४ मन १५ योगभूमि १६ और १७ भृकुटि

१८ स्तुतकरो ॥ ५ ॥

गौतमो वामदेवः ऋषिरेकपाद्गायत्री छन्दो वरुणादयो देवताः

^{३ २२ २३} इमं वर्षणं ^{३ २३ ३} कृणुत ^३ कामिन्मान् ॥ ६ ॥ ६

हे पूर्वमन्त्रोक्ता देवाः (इमम्) (वर्षणम्) वर्षकमात्मप्रतिविं
वं (मा) मामात्मानं (इत्) अपि (एकम्) अभिन्नं (कृणुत)
कुरुत ॥ ६ ॥

भाषार्थः - हेमंत्रोक्तदेवतासो १ इत् २ वृष्टिकर्ता आत्मप्रतिविंवको
३ सौरमुक्तआत्माको ४ भी ५ अभिन्न ६ करो ॥ ६ ॥

अमहीयुः (आङ्गिरसः) ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता

^{२ ३ २ ३ २ ३ ३ २ ३} सन इन्द्राय यज्ये ^{३ २ ३} वरुणाय मरुद्भ्यः ^३ वरिवो
^{२ २ ३} विन्परिस्त्रव ॥ ७ ॥ ७ ॥

हे आत्मप्रतिविंव (वरिवो वित्) योगधनस्य लम्बकः (सः) मान
ससूर्यस्त्वं (नैः) अस्माकं (यज्ये) यष्टव्याय (इन्द्राय) पूरते
राय (वरुणाय) अन्नर्यामिने (मरुद्भ्यः) प्राणोभ्यः (परिस्त्रव)
परिगच्छ ॥ ७ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

^{३ २ २ २ ३ ३ ३ २ ३} एना विश्वान्यय आद्युन्नानि मानुषाणाम् ।

^३ सिषो सन्तो वनामहे ॥ ८ ॥ ८ ॥

(एना) एनेनात्मप्रतिविंवेन (मनुष्याणां) सनकादीनां (विश्वानि) सर्वाणि (द्युन्नानि) योगधनानि (अर्यः) अभिगच्छंतः ।
ऋगतौ (आसिपसन्तः) सम्भक्तमिच्छन्तो वागाद्यत्विजो
वयं (वनामहे) भजामहे ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ इत् आत्मप्रतिविंवके द्वार २ सनकादिमहर्षियोंके ३

सर्वयोगधर्मोको ५ भासं करते ६ औरविभागकरना चाहतेवाए, आदिचर-
विजहम ७ सेवन करते है ॥८॥

आत्माऋषिऋषिपुच्छन्दो नंदैवतम्
^{३ १ ३} अहमास्मि ^{३ २} प्रथमजा ^{३ २} ऋतस्य ^{३ २} पूर्वन्देव ^{३ २} भ्यां ^{३ २} अमृतस्य ^{३ २} नाम्ना ^{३ २} । ^{३ २} यामा ^{३ २} ददाति ^{३ २} सद्द्व ^{३ २} भावदह ^{३ २} मन्त्रं ^{३ २}
 मन्त्रं मन्त्रं न्तं मन्त्रि ॥८॥८॥

(अहम्) (अहम्) आत्मप्रतिविंवरूपान्नं (देवोभ्यः) इन्द्रिये-
 स्यः (पूर्वम्) आस्मि (अमृतस्य) विनाशरहितस्य (ऋतस्य)
 सत्यस्य परब्रह्मणः (प्रथमजा) पराशक्तिः (नाम) (आस्मि)
 (यः) आत्मारूपयजमानः (मां) मां (ददाति) ब्रह्मणो ददा-
 ति (सः) (इत्) एव (एवम्) परिदृश्यमानप्रकारेण (आवृत्)
 अवति प्राणोन्द्रियादीनिरक्षति (अन्नम्) अन्नरूपः (अहम्)
 आत्मप्रतिविंवरूपः (अन्नम्) विषयं (अदन्तं) भक्षयन्तं प्राणोन्द्रि-
 यसमूहं (आद्यं) भक्षयामि संसारबंधनेन विनाशयामि ॥८॥

भाषार्थः - १ मे २ आत्मप्रतिविंवरूपान्नं ३ इन्द्रियोंके लिये ४ आद्यहं
 ५ आविनाशी ६ परब्रह्मकी ७ पराशक्ति ८ नाम ८ हं १० जो आत्मारूपयजमा-
 न ११ मुझको १२ ब्रह्मार्पण करता है १३, १४ वही १५ परिदृश्यमान प्रकार
 से १६ प्राणइन्द्रिय आदि को रक्षा करता है १७ अन्नरूप १८ मे आत्म प्रति विं-
 व १९ विषय २० भक्षक प्राणइन्द्रिय समूह को २१ भक्षण करता हूं अर्थात्
 संसारबंधनसे विनाश करता हूं ॥८॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नारायणसुनु ज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते साम-
 वेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्यानपञ्चाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥१॥

अथद्वितीयः स्वएडः २

श्रुतकक्षऋषिर्गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमेतदधारयः कृष्णा सुरोहिणीषु च । परुषाणी
षुरुशत्पयः ॥ १ ॥ १० ॥

हेपरमेश्वर (त्वम्) (कृष्णासु) कृष्णावर्णासु (च) (परुषाणीषु)
पर्ववतीषु नाना वर्णासु (रोहिणीषु) गोषु । इन्द्रियेषु वा (रुशे-
त्) दीप्यमानं (पयः) क्षीरं प्राणम्वा । प्राणः पयः श० १२८ । १।
२० (अधारयः) धारयसि ॥ १ ॥

भाषार्थः - हेपरमेश्वर १ तुम २ कृष्णावर्णा ३ और ४ नाना वर्णावनी
५ गौवा इन्द्रियों में ६ दीप्यमान क्षीरवा प्राण को ७ धारण करते हो ॥ १ ॥

पवित्र ऋषिर्जीगती छन्दः सूर्यो देवता-

अरुरुचुत्पसः प्रश्निरग्निः उक्षा मिमेति भुव
नेषु वाजयुः । मायाविनो मामिरे अस्य मायया
नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥ २ ॥ ११ ॥

तदा (उपसः) सम्बन्धी (एग्निः) मानससूर्यः नि० २। १४ (अग्नि-
यः) अग्नौ मुख्यः सन् (अरुरुचुत्) देहं प्रकाशयति (उक्षा) स्वा-
सुभिः सेक्ता मानससूर्यः (वाजयुः) अन्नमिच्छन् (मिमेति)
शब्दं करोति (मायाविनुः) इन्द्रियाणि (अस्य) मानससूर्य-
स्य (भायया) प्रज्ञया (मामिरे) विषयान्निर्मितवन्तः (नृचक्ष-
सः) नृणां दृष्टारः (पितरः) मनोवृत्तयः मनः पितरः श० १४। ४।
३। १३ (गर्भम्) कामं (आदधुः) धारयन्ति ॥ २ ॥

भाषार्थः - तव १ उपासम्बन्धी २ मानससूर्य ३ मुख्य होना ४ देह को प्रका-

शकरता है ५ अपनी किरणों से सींचने वाला मानस सूर्य ६ अन्न को चाइता ७ शब्द को करता है ८ इन्द्रियों ने ९ इस मानस सूर्य की १० प्रजा शक्ति से ११ विशेषों का निर्माणा किया १२ द्रष्टा १३ मनो रत्नियां १४ काम रूप गर्भ को १५ धारण करती हैं - ॥२॥

द्वयोर्मधुच्छन्दा वैश्वामिनः ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्र इन्द्रयोः सचा सम्मिश्र आवचो युजा ।

इन्द्रो वृज्जी हिरण्ययः ॥ ३ ॥ १२

(इन्द्रः) (इन्द्र) परमेश्वर एव (वचो युजा) महावाचा युज्यमानयोः (हययोः) जीवेशयोः (सचा) सहयुगपत् (आसम्मिश्रः) सर्वतः सम्यङ्मिथ्यायिता (इन्द्रः) परमेश्वरः (वृज्जी) ज्ञानवन्न युक्तः (हिरण्ययः) ब्राह्मज्योती रूपः । ज्योतिर्वै हिरण्ययं श० ६।७।१।२ - ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १, २ परमेश्वर ही ३ महावाक् द्वारा युज्यमान ४ जीव ईश्वर का ५ साथ ६ संयोग करने वाला है ७ परमेश्वर ८ ज्ञानवन्न युक्त ९ ब्राह्मज्योती रूप है ॥ ३ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

इन्द्रो वाजपुनो वसहस्रं प्रधनेषु च । उग्र उग्राभिः
स्तीभिः ॥ ४ ॥ १३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (उग्रः) शिव रूपस्त्वं (उग्राभिः) अप्रधृष्याभिः (ऊतीभिः) रक्षाभिः (सहस्रधनेषु) योगैश्वर्येषु (नः) (वाजेषु) कामयुद्धेषु (नः) अस्मान् (प्राव) प्रकर्षेण रक्ष ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ शिव रूप तुम ३ अप्रधृष्य ४ रक्षाओं से ५ योगैश्वर्यो ६ और ७ काम युद्धों में ८ हमको ९ रक्षा करो - ॥ ४ ॥

प्रथमऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विश्वेदेवा देवताः

प्रथमश्च यस्य सप्रथमश्च नामानुष्टुभस्य हविषो
हवियत्। धातुद्यतानात्सवितुश्च विष्णोरथन्तः।
रमाजभारो वसिष्ठः ॥ ५ ॥ २४

(यस्य) (हविषः) स्वात्मानि हवनीयस्य (अनुष्टुभस्य) वेदस्य
वागुनुष्टुप् श० १०। ३। १। १ (यत्) (हविः) महावाक् (च)
(प्रथः) विख्यातः (प्रथः) (नाम) (च) अस्ति (स) (वसिष्ठः)
वाग्देवता। वाग्वै वसिष्ठः श० १४। १। २। २ (धातुः) ब्रह्मणाः
(सवितुः) शिवस्य (च) (विष्णोः) (द्युतानात्) द्योतमानात्-
नामतः (रथन्तरं) (साम) (आजहार) आहृतवान् ॥ ५ ॥ २४

भाष्यार्थः - १ जिस २ अपनी आत्मा में हवन योग्य ३ वेद का ४ जो ५
महावाक् है ६ और ७ विख्यात प्रथम नामवाला १० है ११ उस १२ वाग्देवता ने १३
ब्रह्मा १४ शिव १५ और १६ विष्णु के १७ प्रकाश मान नामसे १८ रथन्तर
१९ सामको २० गाहरण किया - ॥ ५ ॥

गृत्समदऋषिर्गायत्री छन्दो वायुर्देवता-

नियुत्वान्वायवा गृह्यथं भुक्तो अयामितो।
गन्तासि सुहृन्तो गृहम् ॥ ६ ॥ २४

हे (वायो) (नियुत्वान्) नियुतवाहनैर्युक्तस्त्वं (आगाह्यु) आ-
गच्छ (अयम्) (भुक्तः) दीप्यमानः सोमः (ते) तुभ्यं (अयामि)
गृह्णामि। अयुगतौ त्वं (सुहृन्तः) सोमाभिपवं कुर्वतो यज-
मानस्य (गृहम्) (गन्ता) (असि) ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ हे वायुदेवता २ नियुतनाम वाहनों से युक्ततुम ३ आ-

सो ४ ग्रह ५ दीप्यमान सोम ६ त्रेलिये ७ ग्रहण करता हूं तुम ८ सोमाभिपव
कर्त्ता यजमान के ९ गृहमें १० जाने वाले ११ हो—॥ ६॥

अथाध्यात्मम् हे (वायो) प्राण श० ७।१।२।७ (नियुत्वा
न्) नियोजितेन्द्रिय युक्तस्त्वं (आर्गाहि) हृदयं प्राप्नुहि (अयम्)
(भुक्तः) मानससूर्यः श० ४।३।१।२६ (ते) तुभ्यं (अयामि)
गृह्णामि यस्त्वं (सुवृतः) अभिषवं कुर्वतो ममात्मनः (गृहम्)
हृदय (गन्ता) (आसि) ॥ ६॥

भाषार्थः - १ हे प्राण २ नियोजित इन्द्रियोंसे युक्त तुम ३ हृदयको प्रा
प्त करो ४ इस ५ मानससूर्यको ६ त्रेलिये ७ ग्रहण करता हूं ८ तुम अभिप
वकर्त्ता मुझ आत्माके ९ गृहहृदयमें १० जाने वाले ११ हो—॥ ६॥

वृमेधपुरुमेधौ द्वावृष्यनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

यज्जायथा अपूर्व्यं मघवन् वृत्रहत्याय । तत्
पृथिवीमप्रथयस्ते दस्तभ्ना उती दिवम् ॥ ७ ॥ १६

हे (अपूर्व्य) त्वत्तो व्यतिरिक्तेन पूर्वेण वर्जित (मघवन्) धनव
न् परमेश्वरत्वं (वृत्रहत्याय) भक्तानां पापनाशाय मोक्षदा
नाय । पाप्मावै वृत्रः श० ६।४।२३ (यत्) यदा (जायथाः) प्रा
दुर्भूतः (तत्) तूदा (पृथिवीम्) (अप्रथयः) दृढामकरोः (उत)
आपिच (दिवम्) द्युलोकं (अस्तभ्नाः) निरुद्धाम काशीः ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ अपने पूर्वसे रहित २ धनवन् हे परमेश्वर तुम ३ भक्तों
के पापनाश और मोक्षदानके लिये ४ जब ५ प्रकट हुए ६ तब ७ तुमने पृथि
वीको ८ दृढकिया ९ और १० स्वर्गको ११ निरुद्धकिया ॥ ७ ॥

इति श्रीभृगुवंशावनंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते-

सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः २

अथ तृतीयः खण्डः

वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः प्रजापतिर्देवता-

मायि वच्चा अथो यशो यो यज्ञस्य यत्पयः। पर
मेष्टी प्रजापतिर्दिविद्यामिबुदृथं हतु ॥ १ ॥ १७

(परमेष्टी) परमलोके स्थितः (प्रजापतिः) परमेश्वरः (मायि)
(वच्चा) ब्राह्मतेजः (दृथं हतुः) वर्द्धयतु (अथ) (यशः) (उ) अ-
पि (अथ) (यज्ञस्य) (यत्) (पयः) रसोऽमृतं फलं (उ) तदापि
मायि दृथं हतु (इव) यथा (दिवि) द्योतमाने स्वर्गे (द्याम्)
द्योतमानां क्रान्तिं ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - १ परमलोकमें स्थित २ परमेश्वर ३ सुभक्त ४ ब्राह्मतेज-
को ५ वच्चाओ ६ तदनन्तर ७ यशको ८ भी वच्चाओ ९ तदनन्तर १० यज्ञ का
११ जो १२ रस अमृत फल है १३ उनको भी दृढ करो १४ जैसे १५ द्योतमान
स्वर्गमें १६ द्योतमान क्रान्ति को ॥ १ ॥

गौतम ऋषिर्द्विष्टुप् छन्दः सोमो देवता

सन्तं पयां थं सिंसमु यन्तु वाजाः संवृषायान्य
भिमानि पाहः। आप्यायमानो अमृताय सोम
दिवि अर्वा थं स्युन्तं मानिधिष्व ॥ २ ॥ १८

हे (सोम) आत्म प्रतिविंव (ते) तव (पयांसि) प्राणाः श० १२
८। १। २० (संयन्तु) सङ्गुहन्ताम् (वाजाः) अन्नानीन्द्रिया-
णि (समे) संयन्तु (वृषायानि) सन्तः करणानि (उ) आपि (सं-
संयन्तु (अभिमानि पाहः) शत्रूणां कामादीनां हन्ता (अमृता

य) मोक्षाय (आप्यायमानः) समन्ताद्दृष्टमानस्त्वं (उत्तमो
 नि) (अवांसि) अन्नानि प्राणोन्द्रियाणि श० १२। ८। १। २०
 (दिवि) भृकुटिमण्डले (धिष्व) धारय ॥२॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ तेरे ३ प्राण ४ समाधिमें चलो ५ अ
 न्नरूप इन्द्रियां ६ समाधिमें चलो ७ अन्तःकरण ८ भी ९ समाधिमें चलो
 १० शत्रु काम आदि के नाशक ११ मोक्ष के लिये १२ सब ओरसे वर्द्धमान-
 तुम १३, १४ उत्तम अन्न रूप प्राण इन्द्रियों को १६ भृकुटिमंडल में १६ धा
 रण करो ॥ २ ॥

विष्णुच्छन्दः सोमो देवता

त्वमिमांशोपधीः सोमविभ्रवास्त्वमपो अजन
 यस्त्वद्गु। त्वमातनोरुवा अन्तरिस्त्वज्यो
 तिषा वितमो विवर्थ्य ॥३॥ १८

हे (सोम) परमेश्वर (त्वम्) (इमाः) (विभ्रवाः) सर्वाः (शोपधीः)
 (अजनयः) उत्पादितवानसि (त्वम्) (अपः) उदकानि (त्वम्)
 (गाः) पशुनुत्यादितवान् (त्वम्) (उरुम्) विस्तीर्णं (अन्तरि
 स्) (आतनोः) विस्तारितवानसि (त्वम्) (ज्योतिषा) सूर्यज्यो
 तिषा (तमः) अन्धकारं (विवर्थ्य) विगतकृतवानसि। वृज्व-
 राणे ॥३॥ **भाषार्थः** - १ हे परमेश्वर २ तुमने ३ इन ४ सब ५

शोपाधियो को ६ उत्पन्न किया ७ तुमने ८ जलो को उत्पन्न किया ९ तुमने
 १० पशुओं को उत्पन्न किया ११ तुमने १२ विस्तीर्ण १३ अन्तरिस् को १४ वि-
 स्तारित किया १५ तुमने १६ सूर्यज्योतिसे १७ अंधकार को १८ दूर किया ॥३॥

मधुच्छन्दाः ऋषि गीयत्री छन्दोः मिर्देवता

आग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। हो

तार^२त्त्न^३धातमम्^२ ४ ॥ २०

(पुरोहितं) देवानां पुरोहितं (यज्ञस्य) देवानां यज्ञस्य (ऋत्विजम्) (होतारम्) (स्तनधातमम्) अतिशयेन स्वज्योतिषारत्नानां पोषयितारं सर्वव्यापित्वात् (देवम्) (अग्निम्) (ईडे) स्तौमि ॥ ४ ॥

भाषार्थः

१ देवताओं के पुरोहित २ देवयज्ञ के ३ ऋत्विज ४ और होता ५ अपनेज्योतिसे स्तनों के पोषक ६, ७ अग्निदेवता को ८ स्तुत करता हूँ ॥ ४ ॥

अथाध्यात्सुम् - (पुरोहितम्) पुरां व्याप्ति समाप्ति देहानां हितकरं (यज्ञस्य) योग यज्ञस्य (ऋत्विजम्) (होतारम्) (स्तनधातमं) योगैश्वर्याणां धारकं (देवम्) माया कीडन कैः कीडनशीलं (अग्निम्) आत्माग्निं (ईडे) स्तौमि ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ व्याप्ति समाप्ति देहों के हितकारी २ योग यज्ञ के ३ ऋत्विज ४ और होता ५ योगैश्वर्यों के धारक ६ माया के खिलोंने से कीडणशील ७ आत्माग्नि को ८ स्तुत करता हूँ ॥ ४ ॥

सामदेव ऋषिष्विष्टुषु चन्दो ब्रह्माग्निर्देवता-

तमन्वत^२प्रथमन्नाम^३गोना^३न्तिः^३सप्त^२परम^३

न्नाम^३जानन्^३ताजान^३तीर^३म्यन्^३पत^३क्षा^३आ

विभुव^३न्नरुणी^३र्यश^३सा^३गावः^३ ॥ ५ ॥ २१

(ते) सनकृदयो महर्षयः (गोनाम्) वेदवाचां (प्रथमम्) मुख्यं (नाम्) प्रणवं (अमन्वत) अजानन् पुनः (विः) विपदां गायत्री (सप्त) व्याहृतीः (परमम्) (नाम्) (जानन्) अजानन् (ताः) वाचः (जानतीः) सर्वजानत्यः (क्षाः) योगभूमीः

(अभ्यर्चयत) अस्तु वन्ततः (यशसा) विष्णुना । आदित्ये
 यशः श० १४। १। १। ३२ सूर्यो वै सर्वे देवाः श० १३। ७। १। ५
 (आरुणीः) तेजोमय्यः (गावः) वेदवाचः (आविर्भूवन्) मा
 दुरभूवन् ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ उनसनकादिब्रह्मर्षिने २ वेदवचनों के ३ मुख्य ४ नाम
 प्रणव को ५ जाना फिर ६ त्रिपदा गायत्री ७ तमव्याहृती को ८ परमनाम
 ९ जाना १० उनवचनोंने ११ सर्वज्ञ १२ योगभूमियों को १३ स्तुत किया
 १४ फिर विष्णुजी से १५ तेजोमय १६ वेदमंत्र १७ प्रकट हुए ॥ ५ ॥

गुत्समद्वारापिस्त्रिपुषु छन्दो ब्रह्माग्निर्देवता
 समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वन्द्य
 स्पृणान्ति । तम् शुचिं ३ शुचयो दीर्वां ३ से
 मपान्नपातमुपयन्त्यापः ॥ ६ ॥ २२ ॥

(अन्याः) (आपोः) आत्मप्रतिविंवरूपरसाः (सम्) महापुरु-
 षम् (यन्ति) वासुदेवः सर्वमिति ज्ञानयोगेन प्राप्नुवन्ति (अ-
 न्याः) आत्मप्रतिविंवाः (उपयन्ति) भक्तियोगेन समीपे ग-
 च्छन्ति साकारस्य सामिप्यं प्राप्नुवन्ति (नद्यः) इन्द्रियाणि
 (समानम्) सर्वत्रतुल्यं (ऊर्वम्) महान्तं विस्तृतमात्माग्निं
 (प्रणान्ति) प्रीणयन्ति । प्रणप्रीणने (तम्) (उ) एव (अपोम्)
 आपोज्योतीरसो मृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो मिति मंत्रं काथितापां
 (नपातम्) पौत्रं (शुचिम्) निर्मलं (दीर्वांसम्) दीप्यमान
 मात्माग्निं (शुचयः) शुद्धाः (आपोः) आत्मप्रतिविंवरूपरसाः
 (उपयन्ति) योगेन प्राप्नुवन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः १२ कोई आत्म प्रति विवरूपरस ३ महा पुरुष को ४ मास कर
ते हैं ५ दूसरे आत्म प्रति विव ६ भक्ति योग से सामिष्य को पाते हैं ७ इन्द्रियां ८
सर्वत्र तुल्य ९ महान् आत्माग्नि को १० तृप्त करती हैं ११, १२ उसी १३ ब्रह्मज्यो
तिरूप जलों के १४ पौत्र १५ निर्मल १६ दीप्यमान आत्माग्नि को १७ शुद्ध
१८ आत्म प्रति विवरूपरस १९ योग से प्राप्त करते हैं ॥ ६ ॥

द्वितीयोर्थः

(अन्याः) वृष्टि भवाः (आपः) (संयन्ति) भूम्यां सङ्गच्छन्ते (अ
न्याः) पूर्वतन्नावस्थिताः (उपयन्ति) उपगच्छन्ति ताः सर्वा आ
पः (समानम्) सह (नद्यः) नदी भूत्वा (ऊर्वम्) समुद्र मध्ये
वर्तमानं वडवानलं (पृणन्ति) प्रीणयन्ति (तम्) (उ) एव (अ
पान्न पातम्) (शुचिं) निर्मलं (दीदिवांसम्) दीप्यमानं वड
वानलं (शुचयः) शुद्धाः (आपः) (उपयन्ति) समीपे गच्छ
न्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ दूसरे वर्षाजनित २ जल ३ भूमि में संयोग को पाते हैं ४ दूसरे वहां ही पूर्व
स्थ ५ वर्षाजल में मिलते हैं वे सब जल ६ साथ ७ नदी होकर ८ समुद्र मध्य
वर्तमान वडवानल को तृप्त करते हैं १०, ११ उसी १२ जलों के पुत्र १३ नि
र्मल १४ दीप्यमान वडवानल को १५ शुद्ध १६ जल १७ समीप प्राप्त कर
ते हैं ॥ ६ ॥

वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दो रात्रिर्देवता-

आप्रा गाद्गद्वा युवाति रन्हः केतुत्समीत्सानि ।

अभूद्ददो निवेशनी विश्वस्य जगता रात्रिः । १७-२३

(भद्रा) सांसारिक सुखकुरी (युवाति) तमसाऽ ज्ञानेन वामिष्ठा
यिञ्जी । युमिष्ठाणो (रात्रिः) रात्रिरुत्थानावस्थावा (आप्रा गात्)

आभिमुख्येन प्रगच्छति (अन्तः) दिवसस्य समाधेर्वा (के
 तून) रश्मीन् प्रज्ञाः वा (समीर्त्सति) सस्य कक्षे मुमिच्छ-
 ति ईरक्षेपे च (भद्रा) कल्याणी (रात्रिः) रात्रिरुत्थाना-
 वस्थावा (विश्वस्य) सर्वस्य (जगतः) निवेशनी (निवेश
 कारिणी (अभूत्) भवति ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ संसारी सुख की दाता २ अज्ञान में युक्त करनी वाली
 ३ रात्रि वा उत्थान अवस्था ४ सन्मुख प्राप्त होती है ५ दिवस वा समाधि की
 ६ किरण वा प्रज्ञा को ७ भले प्रकार फेंकना चाहती है ८ कल्याणी ९ रात्रि-
 वा उत्थान अवस्था १० तक ११ जगत की १२ निवेश कारिणी १३ होती है ॥ ७ ॥

वाहस्यत्यो भरद्वाज ऋषिर्जगती छन्दोभिर्देवता-

प्रक्षस्य वृषाणो अरुषस्य नमहः प्रनोक्त्वो विद-
 धा जात वेदसो वैश्वानराय मतिन् नव्यं स भु-
 चिः सोम इव प्रवृते चारु रग्ने ॥ ८ ॥ २४

(नः) अस्माकं (प्रक्षस्य) समृक्तस्य व्याप्तस्य (वृषाणः) सेक्त-
 (अरुषस्य) आरोचमान स्यात्प्रतिविंवस्य (महः) पूजायु-
 क्तं (भुचिः) निर्मलं (मतिः) मननीयं (क्वचः) क्वचनं (न) क्षि-
 प्रं (विदधा) योगयज्ञेन (जातवेदसे) सर्वज्ञाय (नव्यसे) सं-
 स्कृताय (वैश्वानराय) ईशाग्रये (प्रवृते) प्रकर्षेण गच्छ-
 ति (इव) यथा (चारुः) कल्याणरूपः (सोमः) आत्म प्रतिविं-
 वः (अग्ने) आत्माग्रये गच्छति ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हमारे २ व्याप्त ३ सेक्ता ४ आरोचमान आत्म प्रतिविं-
 वका ५ पूजायुक्त ६ निर्मल ७ मननीय ८ क्वचन ९ शीघ्र १० योगयज्ञ-

द्वारा ११ सर्वज्ञ १२ संस्कृत १३ ईशामिके लिये १४ जाता है १५ जैसे १६
कल्याणरूप १७ आत्म प्रतिविंब १८ आन्मागिके लिये जाता है ॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विश्वे देवा देवताः

विश्वे देवा मम भ्राएवन्तु यज्ञ मुभे रोदसी अपा
न्नपाञ्च मन्म । मा वो वचो थं सि परिचक्ष्याणि
वोच थं सुम्नाष्विदो अन्तमामदेम ॥ ८ ॥ २५ ४

(विश्वे) सर्वे (देवाः) (अपान्नपात्) मध्यस्थानोभिः (च)
(उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (मम) मदीयं (मन्म) मन
नीयं (यज्ञम्) जपयज्ञं (भ्राएवन्तु) हे (देवाः) (वः) युष्माकं
(परिचक्ष्याणि) परिवर्जनीयानि यानि (वचांसि) स्तोत्राणि
(मा) (वोचम्) (वः) युष्माकं (अन्तमोः) भक्ता वयं (सुम्नेषु)
सुखेषु (इत्) इव (मदेम) मोदेम ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ सब २ देवता ३ मध्यस्थानवाला आभि ४ और ५ दोनों ६
पृथिवी स्वर्ग ७ मेरे ८ मननीय ९ जपयज्ञ को १० मुनों ११ हे देवताओ १२ तुम्ह
रे १३ जिन परिवर्जनीय १४ स्तोत्रों को १५, १६ उच्चारण नहीं करूं १७ तुम्हा
रे १८ अन्तम भक्त हमें १९ सुखों में २० ही २१ मोद को पावं ॥ ८ ॥

वामदेव ऋषिर्महा पांक्ति छन्दो देवा देवताः

यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्र बृहस्पती ।
यशो भृगस्य विन्दतु यशो मा प्रति मुच्यताम् ।

यशस्व्यः ३ः स्याः स थं सदाह म्रवादिता स्याम् १० २६
हे (द्यावापृथिवी) (यशः) (मा) मां स्तोत्रारं (विन्दतु) लभतं
प्राप्नोतु हे (इन्द्र बृहस्पती) इन्द्र बृहस्पती नरनारायणो वा-

(यशः) (मां) मं विन्दन्तु किंच (भगूस्य) योगैश्वर्यस्य (यशः)
 (मां) मं विन्दतु (मां) न (प्रतिमुच्यताम्) प्रमुच्यतां (यशः)
 स्वी) (अहम्) (अस्याः) (संसदः) योगभूमेः (प्रवदिता) प्रव-
 क्ता (स्याम्) भूयासम् ॥ २० ॥

भाषार्थः - १ हे एधिर्वा स्वर्ग २ यश ३ मुक्तस्तोता को ४ प्रामको
 ५ इन्द्र वृहस्पतिवानर नारायण धिभक्तको यश ७ प्राप्तको और ८ योगैश्वर्य
 का यश १० मुक्तै प्राप्त करो ११ मुक्तै मत १२ त्यागो १३ यशस्वी १४ मे १५ इस १६
 योगभूमिका १७ प्रवक्ता १८ होऊ ॥ २० ॥

द्विरण्यस्य पञ्चपि खिपुषु छन्द इन्द्रो देवता-
 इन्द्रस्य नवीर्याणि प्रवाच यानि च कार प्र
 यमानि वज्री । अहन्निहि मन्व पस्ततद् प्रव
 क्षणा अभिनत पर्वतानाम् ॥ २१ ॥ २७

(इन्द्रस्य) (प्रथमानि) मुख्यानि (वीर्याणि) पराक्रम यु-
 क्तानि कर्माणि (नु) क्षिप्रं (प्रवचम्) प्रवचीमि (यानि)
 (वज्री) वज्रधरः (चकार) (अहम्) मेघानि ० २। २० (अहन्)
 वृष्टपर्यहनवान् (अनु) पश्चात् (अपः) (तदद्) भूमौ पातित
 वान् (पर्वतानाम्) सम्बन्धिनीः (वक्षणाः) नदीनि ० २। २३
 (आभिनत) कूलद्वय कर्षणेन प्रवाहित वान् ॥ २१ ॥

भाषार्थः - १ इन्द्रके २ मुख्य ३ पराक्रम युक्त कर्मो को ४ शीघ्र
 कहताहं ५ जिमको ७ वज्रधारी ने ८ किया ९ मेघको १० वर्षाके लिये ता
 डणाकियां ११ पश्चात् १२ जलों को १३ भूमिपर गिराया १४ पर्वतसम्ब
 धी १५ नादियों को १६ कूलद्वय कर्षण से प्रवाहित किया ॥ २१ ॥

अथाध्यात्मम् - (इन्द्रस्य) आत्मारूपयजमानस्य-
 (प्रथमानि) मुख्यानि (वीर्याणि) वलानि (नु) क्षिप्रं (प्रवृ-
 चम्) प्रववीमि (यानि) (वृत्री) ज्ञानवज्रधरः (चकार) (अ-
 हिम्) कामं पापम्वा (अहन्) हतवान् (अनु) पश्चात् (अप-
 कमलान्तरिक्षाणि) (तदद्) स्वकीय प्रवेशेन हिंसितवान्।
 तद्देहिंसायां (पर्वतानाम्) इन्द्रियगोलकानां (वक्षणाः) इ-
 न्द्रियाणि (प्राभिनत्) मनसि प्रवेशाय प्रवाहितवान्। मनो वै
 समुद्रः श० ७। ५। २। ५२ - ॥ ११ ॥

भावार्थः - १ आत्मारूपयजमानके २ मुख्य ३ वलों को ४ शीघ्र ५
 कथनकरता हूं ६ जिनको ७ ज्ञानवज्रधारीने ८ किया ९ कामवापापको
 १० मारा ११ पीछे १२ कमलान्तरिक्षोंको १३ अपने प्रवेशसे व्याप्त किया १४
 इन्द्रियगोलकोंकी १५ इन्द्रियोंको १६ मनमें प्रवेशकेलिये पड़चाया। ११

विष्णामित्रः अपि खिप्रुच्छन्द आत्माग्नेर्देवता-

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३
 २ २ ३ २ ३ १ ३ ३ १ २ ३ ३ ३ १ २ ३
 ३ ३ ३ १ २ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
 आग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतम्म चक्षुर
 मृतम्म आसन्। त्रिधानुरक्षोरजसो विमानो
 जस्वज्ज्यातिह विरस्मि सर्वम् ॥ १२ ॥ २८

योगारूढः ब्रूते (जन्मना) योगसंस्कारेण (जातवेदाः) सर्व-
 ज्ञः (सग्निः) आत्माग्निः (आस्मि) (मे) मूम (चक्षुः) (घृतम्)
 (मे) मम (आसन्) आस्येमुखे (अमृतम्) वायूपम मृतम्-
 (त्रिधातुः) ब्रह्मविष्णु महेश रूपोऽग्नि वायु सूर्य रूपो वा (अर्कः)
 अर्चनीयः (रजसः) ब्रह्माण्डस्य (विमानः) आधारभूतो महा-
 पुरुषः (अजत्वम्) नित्यं (ज्यातिः) ब्रह्म (हविः) भोग्यं (सर्वम्)

(२६) अहमास्मि यथा भगवद्वाक्यं ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्म
मौ ब्रह्मणा हुतम् ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिनेति-

॥१२॥

भाषार्थः

योगारूढ कहना है १ मैं योग संस्कार से २ सर्वज्ञ ३ आत्मा मि ४ हुं ५ मेरा
६ चक्षु ७ घृत है ८ मेरे ९ मुख में १० वाक् रूप अमृत है ११ ब्रह्मा विष्णु महेश
रूप वा आ मि वायु सूर्य रूप १२ पूजनीय १३, १४ ब्रह्माण्ड का आधार रूप महा
पुरुष १५, १६ नित्य ब्रह्म है १७, १८ सब भोग्य १९ मैं ही हुं ॥ १२ ॥

विश्वामित्र ऋषिः पितृपुत्रं छन्दोऽग्निं देवना-

पात्याग्निविषो अग्रस्पदकपाति यद्द्व्यचरणां ॐ
सूर्यस्य । पातिनाभासमशीर्षाणा माग्निः पाति
देवानामुपमादमृष्वः १३-॥२६॥

(विषः) मेधावीनि० (आग्निः) आत्माग्निः (वैः) जीवात्मारूप-
मुपर्णास्यु । वेतेर्गानि कर्मणो रूपं नै० २। १४। १८ (अग्रम्) मु-
ख्यं (पदम्) स्थानं भृकुटि मण्डलं (पाति) रक्षति (यद्द्व्यः)
महान्नात्माग्निः (सूर्यस्य) अन्नयामिनः (चरणाम्) हादी-
न्तरिक्षं चरत्यनेनेति चरणमन्तरिक्षं (पाति) (नाभा) नाभौ
(सप्तशीर्षाणां) पंचेन्द्रियमनो बुद्ध्याख्यसप्ततेजोभिर्युक्तं जी-
वात्मानं । ऋषिर्वैशिरः श० १। ४। ५। ५ (पाति) (ऋष्वः) सर्व-
दर्शीनि० १। २०-२०, २६-२२। ३७-२४। २३ (आग्निः) आत्मा-
ग्निः (देवानाम्) इन्द्रियाणां (उपमादम्) उपमादकं विषय
ग्रहणशक्तिं (पाति) ॥ २३ ॥

भाषार्थः - १ मेधावी २ आत्माग्नि ३ जीवात्मा रूप पक्षी के ४ मुख्य

५ स्थान भृकुटि मंडल को ६ रक्षा करता है ७ महान् आत्माग्नि ८ अन्त-
र्यामीके ९ हार्दान्तरिक्ष को १० रक्षा करता है ११ नाभि में १२ पंच इन्द्रि-
य मन बुद्धि नाम सात तेज से युक्त जीवात्मा को १३ रक्षा करता है १४
सर्वदर्शी १५ आत्माग्नि १६ इन्द्रियों की १७ उपमादक विषय ग्रहण श-
क्ति को १८ रक्षा करता है ॥१३॥

द्वितीयोर्थः

(विषेः) मेधावी (आग्निः) (वेः) सर्वत्र व्याप्ता या भूम्या (अग्निम्) ४
उपरिभागं (पदं) स्थानं (पाति) रक्षति (यहः) महान्नाभिः
(सूर्यस्य) (चरणम्) मार्गस्वर्गं (पाति) (नाभौ) नाभौ मध्ये
अन्तरिक्षे (सप्तशीर्षाणां) समूहाणां मरुद्गणां (पाति) (ऋष्यः) ४
दर्शनीयोऽयं (आग्निः) (देवानाम्) (उपमादम्) उपमादकं य-
ज्ञं (पाति) ॥१३॥

भाषार्थः

१ मेधावी २ अग्नि ३ सर्वत्र व्याप्त भूमिके ४ उपरिभाग ५ स्थान को ६ रक्षा
करता है ७ महान् अग्नि ८ सूर्यके मार्गस्वर्गको ९ रक्षा करता है १० अन्त-
रिक्षमें ११ सप्त गण मरुद्गण को १२ रक्षा करता है १३ यह दर्शनीय १४
अग्नि १५ देवताओं के १६ उपमादक यज्ञको १७ रक्षा करता है ॥१३॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूगम सूनु ज्वाला मसाद शर्म विरचिते
सामवेदीयब्रह्म भाष्ये चन्द्रो व्याख्याने षष्ठ्याध्यायस्य तृतीयः खंडः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

द्वयोर्वा मदेव ऋषिः पंक्तिश्चन्द्रोऽग्निर्देवता

भोजेन्त्यग्नेसामिधान् दीदिवो जिह्वा चरत्यु
न्तरोसनि। सत्वन्ना अग्नेपयसा वसुविद्रयि

वञ्चादृशदोः १॥ ३०

हे (सामिधान) वागाद्यत्विग्भिः सामिध्यमान (दीदिवः) दीम
 (अग्ने) आत्माग्ने (आसनि) आस्ये मुखे (अन्तः) मध्ये (भा
 जन्ती) प्रकाशमाना (जिह्वा) महावाक् नि २१ २२ चरति
 गच्छति वर्त्तते (अग्ने) हे आत्माग्ने (सः) (वसुवित्) भक्ति ध-
 नस्य लम्भकः (त्वम्) (दृशे) महा पुरुष दर्शनाय (नेः) अस्म
 भ्यं (पूयसा) अमृतेन सह (रथिम्) भक्ति धनं (वर्चः) तेजश्च
 (अदाः) देहि ॥ २॥

भाष्यार्थः - १ हे वाक् आदि ऋत्विजों से भले प्रकार प्रज्वलित २ दी
 म ३ आत्माग्ने ४, ५ मुख के मध्य ६ प्रकाशमान ७ महावाक् ८ वर्त्तमान है
 ९ हे आत्माग्ने १० वह ११ भक्ति धन के मापक १२ तुम १३ महा पुरुष के द-
 र्शनार्थ १४ हमारे लिये १५ अमृत सहित १६ भक्ति धनको १७ और तेज
 को १८ दीजिये ॥ २॥

द्वितीयोर्थः

(सामिधान) ऋत्विग्भिः सामिध्यमान (दीदिवः) दीम (अग्ने)
 (आसनि) तव मुखे (अन्तः) मध्ये (भाजन्ती) प्रकाशमाना
 (जिह्वा) (चरति) हवींषि भक्षयति हे (अग्ने) (सः) (वसुवित्)
 धनलम्भकः (त्वम्) (दृशे) दर्शनाय (नेः) अस्मभ्यं (पूयसा)
 अन्नेन सह (रथिम्) रमणीयं धनं (वर्चः) तेजश्च (अदाः)
 देहि ॥ २॥

भाष्यार्थः १ हे ऋत्विज द्वारा प्रज्वलित २ दीम ३ अग्ने ४ तेरे मुखके ५ म
 ध्य ६ प्रकाशमान ७ जिह्वा ८ हवींषों को भक्षण करती है ९ हे अग्ने १० वह
 ११ धनमापक १२ तुम १३ दर्शन के लिये १४ हमको १५ अन्न सहित १६ र

माणीयधनको १७ औरतेजको १८ दीजिये ॥१॥

वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः ऋग्वेदेवना-

^३वसन्त^{२२}इन्नु^{३२}रन्त्यो^३ ग्रीष्म^३इन्नु^{२२}रन्त्यः^३ वर्षा^३एय^{२२}
^{२२}नु^३शरदो^{२२}हेमन्तः^३ शिशिर^३इन्नु^{२२}रन्त्यः^३ ॥२॥३१

(वसन्तः) (इन्नु) एव चैत्र वैशाख रूपो वसन्त एव (रन्त्यः) (२) ईशामिः (अन्तं) स्वरूपं। ईशामि रूपस्यः (ग्रीष्मः) (इन्नु) ज्येष्ठा पाद रूपो ग्रीष्म एव (रन्त्यः) ईशामि रूपस्यः (वर्षाणि) ऋग्वेदाभाद्रपद रूपेणावयवी भूतः प्राचद ऋतुः (अनु) पञ्चातुः (शरदः) आश्विन कार्तिक रूपेणावयवी भूत ऋतुः (हेमन्तः) मार्गशीर्ष पौष रूपु ऋतुः (शिशिरः) माघ फाल्गुन रूप ऋतुः (इन्नु) अपि (रन्त्यः) ईशामि रूपस्यः यथा श्रुतिः सम्बन्तसरो वैमजापतिरामिः १०।४।३।१-॥२॥

भाषार्थः - १.२ चैत्र वैशाख रूपवसन्तही ३ ईशामि रूपमें स्थित है ४.५ ज्येष्ठापाद रूप ग्रीष्म ही ६ ईशामि रूपमें स्थिति है ७ ऋग्वेदाभाद्रपद रूपवर्षा ऋतु ८ तथा ९ आश्विन कार्तिक रूप शरद ऋतु १०, ११ तथा मार्गशीर्ष पौष रूप शिशिर ऋतु १२ भी १३ ईशामि रूपमें स्थित हैं अर्थात् सब उसके संग है ॥२॥

नारायण ऋषिः परनुषु चन्दः पुरुषो देवता-

^३सहस्र^२शीर्षाः^३ पुरुषः^३ सहस्राक्षः^३ सहस्रपात्^३। सभू^२
^२मिथु^३ सर्वतो^३ वृत्वा^३ त्यतिष्ठ^३ दृशा^३ इत्नम् ॥३॥३२

अथ विराट् पुरुषस्य कारणां महा पुरुषं स्तोतियः (पुरुषः) सर्वलोकेषु व्याप्तो महानारायणः (सहस्र शीर्षा) सर्वात्मरूप

त्वादनन्तानि शीर्षाणि यस्य सः (सहस्राक्षः) अनन्तान्यक्षी
 णि यस्य सः (सहस्रं पात्) अनन्ताः पादा यस्य (सः) (भूमिम्)
 व्याप्तिसमाप्तदेह रूपं स्थानं (सर्वतः) तिर्यक् ऊर्ध्वमधश्च (सृ
 त्वा) व्याप्य (दशाङ्गुलम्) नाभेः सुका दशाङ्गुल परिमितं दे
 शं हृदयं (अति) अतिक्रम्य (अतिष्ठत्) अन्तर्यामि रूपेणा
 वास्थितः ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - सब विराट् पुरुषके कारण महा पुरुष की स्तुति करते
 हैं १. सब लोकों में व्याप्त महानारायण २. सर्वात्म होने से अनन्त सिर वा
 ला ३. अनन्त नेत्र वाला ४. अनन्त पाद वाला है ५. वह ६. व्याप्तिसमाप्तिरू
 पस्थान को ७. सब ओर नीचा ऊंचा निरच्छा ८. व्याप्त करके ९. नाभि से दश
 अंगुलि परिमित देश हृदय को १०. पाकर ११. अन्तर्यामी रूपसे स्थित हुआ ॥ १ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

त्रिपादोऽद्वैतपुरुषः पादोऽस्य हा भवत्पुनः

तथा विष्वङ् व्यक्रामदशानाशने अभि ४। ३३

(त्रिपात्) त्रिपादिसूतिरूपः (पुरुषः) महापुरुषः (ऊर्ध्वः) ब्रह्मा
 ण्डादूर्ध्वं (उद्वैत्) उत्कर्षेण स्थितवान् (पुनः) (अस्य) सृष्ट्वा
 नारायणस्य (पादः) चतुर्थांशः (इह) ब्रह्माण्डे (अभवत्)
 व्याप्तोऽभवत् (ततः) ब्रह्माण्डप्रवेशान्तरं (विष्वङ्) विषुस
 र्वत्राञ्चतीति विष्वङ् देवतिर्यगादिरूपेण धिविधः सग (सा
 शानाशने) अशनेन सह वर्तमानं साशनं । अशनादिव्य
 वहारोपेतं चेतनप्राणं ज्ञातमशनं तुद्रहितमचेतनं गिरिन
 द्यादिकं (अभि) अभिलक्ष्य (व्यक्रामत्) व्याप्तवान् यथाभ

गवद्वाक्यं विष्टभ्याहामिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगादिति
॥४॥

भाषार्थः

१ त्रिपाद विभूतिरूप २ महापुरुष ३ ब्रह्माण्ड से ऊपर ४ प्रत्यक्ष रूपसे स्थि
त हुआ ५ फिर ६ इस महानारायण का ७ चतुर्थांश ८ इस ब्रह्माण्ड में ९
व्याप्त हुआ १० ब्रह्माण्ड प्रवेश के पीछे ११ देवता मनुष्य आदि रूपसे नाना
प्रकार का होता १२ जड़चैतन्य को १३ देखकर १४ उन्हें व्याप्त किया ॥४॥

विनियोगः पूर्ववत्

१२ ३ २३ ३ २ २ १ २ १ २
पुरुष एवदं सर्वं यदन्तर्व्यञ्जं भाव्यम् । पादो

स्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ५ ३ ४

(इदम्) (सर्वम्) (पुरुषः) महानारायणः (एव) (यत्) (भू
तम्) अतीत ब्रह्म संकल्पजं जगत् (च) (यत्) (भाव्यम्)
भाव्यं ब्रह्म संकल्पजं जगत् (विश्वं) विश्वानि सर्वाणि
(भूतानि) ब्रह्माण्डानि (अस्य) महानारायणस्य (पादः)
चतुर्थांशः (दिवि) महानारायणलोके (अस्य) (त्रिपादे) त्रि
पाद विभूतिरूपं स्वरूपं (अमृतम्) विनाश रहितं यस्मादनन्तं
ब्रह्मैव स्वभागे स्वकीयज्योतिषा महानारायणरूपमभव
त् ॥ ५ ॥

भाषार्थः

१ यद् २ सर्व ३ महानारायण ४ ही है ५ जो ६ अतीत ब्रह्म संकल्पज जगत् है
७ और ८ जो ९ भाव्य ब्रह्म संकल्पज जगत् है १० और ११ ब्रह्माण्ड १२
इस महानारायण का १३ चतुर्थांश है १४ महानारायण लोक में १५ इस
का १६ त्रिपाद विभूतिरूप स्वरूप १७ विनाश रहित है जिस का १८
ब्रह्म ही अपने भाग में अपनी ज्योतिसे महानारायण रूप हुआ ॥ ५ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

तावानस्य महिमा ततो ज्यायो ऽथ ऽश्वपूरुषः।

उत मृतत्वस्य शानो यदून्ननातिरोहति। ६। ३५।

(अम्य) महानारायणस्य (महिमा) (तावान्) तावती (च) इति न (पुरुषः) महानारायणाः (ततः) महिम्नः (ज्यायान्) अतिशयेनाधिकोऽस्ति ब्रह्मनाम्नाऽनन्तत्वात् (उत) अपि च समहानारायणः (अमृतत्वस्य) अमराणाधर्मस्य (ईशानः) ईश्वरः (यत्) यस्मात् (अन्ने) ब्रह्माण्डे। अन्नं वै विराट् श० १२। २। ४। ५। (न) (अतिरोहति) आसक्तो न भवति किन्तु स्वकीयपराशक्त्या व्याप्नोति ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ इस महानारायण की २ महिमा ३ उतनी है ४ यह नही ५ महानारायण ६ उस महिमा से ७ अत्यन्त अधिक है क्योंकि ब्रह्मनामसे अनन्त है ८ और वह महानारायण ९ मोक्षधर्मका १० स्वामी है ११ जिस कारण १२ ब्रह्माण्ड में १३, १४ आसक्त नहीं होता है किन्तु अपनी शक्तिपरासे व्याप्त करता है ॥ ६ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

ततो विराड् जायत विराजोऽधिपूरुषः। सजा

तोऽत्यरिच्यत पञ्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ७ ॥ ३६।

(ततः) महानारायणात् (विराट्) विराट् देहस्तथा (विराजो) तद्देहाभिमानी (पुरुषः) (अधि) तदेव देहमाधिकुरणं कृत्वा (सजायत) (सः) (ज्ञानः) विराजः (अत्यरिच्यत) अनिरिक्तश्रेष्ठोऽभूत् (पञ्चात्) (भूमिम्) ससर्ज (अथ) (उ) तदनन्तरमेव (पुरः) देवमनुष्यादीनां शरणाणां समजं ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ उम महानारायण मे २ विराट् देह ३ तथा उंस देह का
सभिमानी ४ पुरुष ५ उसी देह को अधिकरण करके ६ उत्पन्न हुआ ७ वह ८
उत्पन्न विराट् पुरुष ९ श्रेष्ठ हुआ १० पीछे ११ भूमि को उत्पन्न किया १२, १३
मदनंतर ही १४ देव मनुष्य आदि के शरीरों को उत्पन्न किया ॥ ७ ॥

वामदेव ऋषिरुपरिहा ज्योतिश्चन्द्रोद्यावापृथिवीदेवते

मन्येवान्द्यावापृथिवीसुभोजसौ + येऽप्र
थेथा ममितमभि योजनम् । द्यावापृथिवीभ
वतं स्योनतेना मुञ्चतमं हंसः ॥ ८ ॥ ३७

हे (द्यावापृथिवी) द्यावापृथिव्यौ (वाम्) युवां (सुभोजसौ)
सुष्टु प्रकाश वलौ (मन्ये) अहं जानामि (ये) युवां (अमित
म्) अपरिमितं (योजनम्) ब्रह्मणि युज्यते पुरुषोऽनेनेति
योजनं ब्रह्मज्ञानं (अभ्यप्रथेथाम्) अभिविस्तारयतम् हे
(द्यावापृथिवी) द्यावापृथिव्यौ युवा मस्माकं (स्योने) सु
खरूपे (भवतम्) (न) अस्मान् (अहंसः) पापात् (मुञ्च
तम्) मोचयतम् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे पृथिवी स्वर्ग २ तुम दोनो को ३ अच्छे प्रकाश वल वा
ला ४ जान्ता हू ५ जो तुम ६ अपरिमित ७ ब्रह्म ज्ञानको ८ विस्तार देते हो
९ हे पृथिवी स्वर्ग १० हमारे सुख रूप ११ हजिये १२ हमको १३ पापसे १४
छुटाओ ॥ ८ ॥ वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

हरीत इन्द्रमभूत्पुनोते हरिता हरी । तन्वा
स्तु वान्ति कवयः पुरुषा सो वनगवः ॥ ८ ॥ ३८

हे (इन्द्र) महानारायण (हरी) शिवविष्णु (ते) तव (अमर)

पि) पुरुषज्ञापकरूपाणि (उतो) अपिच (हरितो) व्यष्टिस
 माष्टिसूर्यो (ते) नव (हरी) किरणौ (वनर्गवः) वननीयाः सम्भ
 जनीया वेदवचः (कवयः) मेधाविनः (पुरुषासः) पुरुषाश्च
 (तम्) (त्वा) त्वां (स्तुवन्ति) ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हेमहानारायण २ शिवविष्णु ३ तेरे ४ पुरुषज्ञापक
 रूपहै ५ और ६ व्यष्टि समाष्टि सूर्य ७ तेरी ८ किरण हैं ९ संभजनीय वेदवच
 न १० और मेधावी ११ पुरुष १२ उस १३ तुम्हको १४ स्तुत करते हैं ॥ ६ ॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप् छन्द आत्मा देवता

यद्ब्रह्मो हिरण्यस्य यद्वावच्चो गवामुत। सत्य

स्य ब्रह्मणो वच्च स्तेन मांसं च स्तजामसि। १०। ३६

ह्यात्मन् (हिरण्यस्य) पराज्योतिषः। ज्योतिर्वै हिरण्यं श० ६। ७
 १। २ (यते) (वच्चः) तेजोऽस्ति (वा) (गवाम्) वैदिक मंत्राणां
 (यते) (वच्चः) तेजोऽस्ति (उत) अपिच (सत्यस्य) (ब्रह्मणः) य
 त् (वच्चः) तेजोऽस्ति (तेन) तेजसा (मां) मां (संस्तज) संयो
 जयत्वं (अम्) ब्रह्म (आसि) ॥ १० ॥

भाषार्थः - हे परमेश्वर १ पराज्योति का २ जो ३ तेज है ४ अथवा ५
 वैदिक मंत्रों को ६ जो ७ तेज है ८ और ९ सत्य १० ब्रह्म का ११ जो तेज है १२
 उस तेजसे १३ तुम्हको १४ संयुक्त करो तुम १५ ब्रह्म १६ हो - ॥ १० ॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता

सहस्रं च इन्द्रं दध्याजि। इशस्यस्य महतो विर
 पाशिन। क्रतुन्न नृणां च स्थविरञ्च वाज वृ
 त्तेषु शत्रून् सहना कधीनः ॥ ११ ॥ ४०

हे (विरपाशिनं) विविधवेदशास्त्राणां वक्तः महापुरुष (इन्द्र) परमेश्वर (ततः) (सहः) शत्रूणामभिभवनरूपं (शोभः) वलं (नः) अस्मभ्यं (दक्षि) देहि [ददातेश्छान्दसुरूपं लोडि हेर्द्धिभावादिना] (अस्य) (महतः) वलस्य (देश) ईश्वरो भवासि (स) त्वं (नः) अस्माकं (कृतुम्) यज्ञं (नृणाम्) धनं (चः) (वाजम्) वलं (स्थावरं) अतिशयेन प्रवृद्धं (काधि) कुरु (वृत्रेषु) पापपुरुषेषु वर्तमानान् (नः) अस्माकं (शत्रून्) (हन) नाशय ॥ ११ ॥

भाषार्थः - १ हे विविधवेदशास्त्रो के वक्ता महापुरुष २ परमेश्वर ३ वह ४ शत्रुजयी ५ वल ६ हमें ७ दो ८ इस ९ महान् वल के १० स्वामी हो ११ वह नुम १२ हमारे १३ यज्ञ १४ धन १५ और १६ वलको १७ अत्यन्त प्रवृद्ध १८ करो १९ पापपुरुषो मे वर्तमान २० हमारे २१ शत्रुओं को २२ मारो ॥ ११ ॥

सामदेवत्रापरिनुष्टुप् छन्दो गावो देवता.

सहर्षभाः स्सहवत्सा उदेत विष्वा रूपाणि वि
ध्रती द्विधीः । उरुः एथुरयवो अस्तु लोक इमाश्च
पसु प्रपाणा इह स्तु ॥ १२ ॥ ४२ ॥

हे वैदिकवायुपधेनवः (विष्वा) सर्वाणि (रूपाणि) (विध्रती) विध्रत्यः (द्विधी) आधिदेवाध्यात्मरूपौ स्तनौ यासांताः । यूयं (सहर्षभाः) प्राणरूपवृषभेण सहिताः (सहवत्साः) मनोवत्से नसहिताः (उदेत) आगच्छत (अयम्) (उरुः) महान् (एथु) विस्तीर्णः (लोकः) ब्रह्मपुर देहः (वे) युष्माकं (अस्तु) (इमाः) (आपः) कमलान्तरिक्षाणि (सुप्रपाणाः) सुरवेन प्रकथेण

पानुं प्राप्नुं योग्यानि सन्ति (इह) (स्त) भवत उपविशत यथा
 ऋतिः वाचं धेनुमुपासीत तस्याः प्राणः ऋषभो मनो वत्सः श०
 १४।८।टी १—॥१२॥

भाषार्थः - हे वैदिक वाक् रूप गौशो १ सव २ रूपों को ३ धारण कर
 रती ४ आधिदेवाध्यात्म स्तन वाली तुम ५ प्राण रूप वृषभ ६ और मन रूप
 वछड़ा के साथ ७ आशो ८ यह ९ महान् १० विस्तीर्ण ११ ब्रह्मपुर शरीर
 १२ तुम्हारा १३ हो १४ ये १५ कमलान्तरिक्ष १६ सुखसे प्राप्ति योग्य हैं १७
 यहां १८ हैरो—॥१२॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सनु ज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सा
 मवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठ्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४॥

अथ पञ्चमः खण्डः

वैखानस ऋषयोजगती छन्दोभिर्देवता

अग्नायूँषिपवसे आसुवोजमिषञ्चनः।

आरे वाधस्व दुच्छुताम् ॥१॥ ४२

हे (अग्ने) आत्माग्नेत्वं (आयूँषि) प्राण रूपान्नानि । अयमनि
 रुक्तः प्राणः सोऽस्यैष आयुरेव श० ४।२।३।१ अन्नं हि प्राणः
 श० ३।८।४।८ नि० २।७ (पवसे) शोधयसि । पूशोधे (नः) अ
 स्मभ्यं (ऊर्जम्) विराड् रूपान्नं (चू) (द्वयम्) अमृत वृष्टिं (आ
 सुव) आभिमुख्येन प्रेरय (दुच्छुताम्) कामादीनां (आरे)
 प्राप्तौ । ऋगतौ (वाधस्व) सम्पीडय ॥१॥

भाषार्थः - १ हे आत्माग्ने तुम २ प्राण रूप अन्नों को ३ शोधन करते
 हो ४ हमारे लिये ५ विराट् रूप अन्न ६ और ७ अमृत वर्षा को ८ सम्मुख

मेरणा करो षी कामशादि की १० प्राप्तिमें ११ पीडित करो ॥ १॥

विभ्राट् ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता-

विभ्राड्वृहत्पिवतुसोस्यम्मध्वायुद्वध्वज
पतावविहृतम् । वातजूतीयोऽभिहृतम्
नाप्रजाः पिपार्तिवहुधा विराजति ॥ २ ॥ ४३

(विभ्राट्) विभ्राजमानः विशेषेण दीप्यमानः सूर्यरूपः परमे-
श्वरः (यज्ञपतौ) यज्ञमाने (अभिहृतम्) अकुटिलं अखंडितं
द्वृकौटिल्ये (आयुः) आयुरन्तवा (दधत्) धारयन्तन्ते (वृहत्
महत् (सोस्यम्) आत्मप्रतिविंबं (मधु) प्राणं श० १४। १। ३।
३० (पिवतु) (युः) (वातजूतः) समाष्टिप्राणेन सेवितः सूर्यरूपः
परमेश्वरः (त्मना) आत्मन् आत्मानि (प्रजाः) (पिपार्ति) वृष्ट्य
दिप्रदानेन पालयति (वहुधा) नाना रूपेण (विराजति) स
र्वात्मकत्वात् ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ विशेषदीप्यमानसूर्यरूपपरमेश्वर २ यज्ञमान में ३
अखंडित ४ आयुवाअन्त को ५ धारण करता अन्त में ६ महान् ७ आत्मप्र
तिविंब को ८ और प्राण को ९ पान करो १० जो ११ समाष्टिप्राण से सेवित सूर्य
१२ अपने आत्मा में १३ प्रजाओं को १४ वृष्टिप्रदान आदि से पालन करता
है १५ और नाना रूप से १६ विराजमान है सर्वात्मा होने से ॥ २ ॥

कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता-

चित्रन्दवानामुदगादनीकञ्चसुमित्रस्य
वरुणस्याम्नः । आप्राद्यावापथिवी अन्तरि
क्षथं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुष्व ॥ ३ ॥ ४४

(देवनाम्) समष्टीन्द्रियाणां (अनीकम्) जीवनसाधनं। अन्
जीवने अनित्यनेन अन- ईकन् (चित्रम्) आश्रयं करं (मि
त्रस्य) समष्टिप्राणस्य (वरुणस्य) समस्य पानस्य (अग्नेः)
वैश्वानरस्य (चक्षुः) दर्शनसाधनं सूर्यमण्डलंतत्रस्थं
(जगतः) जङ्गमस्य (च) (तस्थुषुः) स्थावरस्य (आत्मा) (सू
र्यः) सूर्यरूपः परमेश्वरः (उदगोत्) प्रादुरभवत् (द्यावापृथि
वी) द्यावापृथिव्यौ (अन्तरिक्षम्) (आपः) आपूरितवान्

॥३॥

भाष्यः

१ समष्टिन्द्रियोंका २ जीवनसाधन ३ आश्रयकर्ता ४ समष्टिप्राण-
का ५ समष्टिअपानका ६ और वैश्वानर अग्निका ७ दर्शनसाधनसूर्यमं
डलहै उसमेंस्थित ८ चर ९ और १० अचरका ११ आत्मा १२ सूर्यरूपपरमे
श्वर प्रकट हुआ १३ और १४ पृथिवीस्वर्ग १५ अन्तरिक्षको १६ अपनेते
जसे पूर्ण किया ॥ ३ ॥

सार्पराज्ञीनाम ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता

आयङ्गैः पृश्निर्कमीदसदन्मातरम्पुरः।

पितरञ्च प्रयत्स्वः ॥ ४ ॥ ४५

(अयम्) (गौः) विराडात्मा। विराड्वैगौः श० ७। ५। २। १६ (पृश्निः)
सूर्यः नि० २। १४ (पुरः) उदयाचलात् (प्रयन्) प्रकर्षेण शी
घ्रं गच्छन् (मातरम्) दक्षिणायने भूलोकं (च) उत्तरायणे
(पितरम्) वृष्ट्यादिद्वारा सर्वस्य पालकं (स्वः) स्वर्ग (असदन्)
प्राप्नोति (आक्रमीत) सुमेरुना कामति प्रदक्षिणं करोतीत्य
र्थः ॥ ४ ॥

भाष्यः

१यह २विराडात्मा ३ सूर्य ४ उदयाचलसे ५ शीघ्रचलता ६ दक्षिणायन
में भूलोक को ७ और उत्तरायण में ८ दृष्ट्यादि से सबके पालक ९ स्वर्ग-
को १० प्राप्त करता है ११ सुमेरु को प्रदक्षिण करता है ॥ ४ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

^{३ १ २}अन्तश्चरति ^{३ ३३}रोचनास्य ^{३ १ २}प्राणादपानती ^{३ २ २२}व्य

^३ख्यन्महिषा ^{३ ३}दिवम् ॥ ५ ॥ ४६

(अस्य) सूर्यस्य (रोचना) ज्योतिः (प्राणात्) प्राणनंनाड़ी
भिरूर्ध्व वायोर्निगमनंतथा विधात्प्राणादनन्तरं (अपानती)
अपाननंनाड़ीभिरवाङ्मुखं वायोर्नयनंतत कुर्वन्ती (अन्तः)
द्यावापृथिव्योर्मध्ये (चरति) गच्छतिस (महिषः) महान्स
महि मूर्तिः सूर्यः (दिवम्) स्वर्गमन्नरिक्षञ्च (व्यख्यत्) प्र-
काशयति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ इस सूर्य की २ ज्योति ३ पूरक के पीछे ४ रेचक को क
रती ५ पृथिवी स्वर्ग के मध्य ६ वर्तमान है वह ७ महान्समहि मूर्ति सूर्य
८ स्वर्ग और अन्नरिक्ष को ९ प्रकाशित करता है ॥ ५ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

^३त्रिंशद्भामविराजति ^{३ ३३}वाक्पतङ्गायधीय

^{३ ३ ३}ने। प्रतिवस्तारहद्युभिः ॥ ६ ॥ ४७

(वस्तुः) वस्तयाचने वस्त्यते याच्यते भक्तैर्वस्तः परमेश्वरः
(रहद्युभिः) (२) अग्निः (३) अर्कमण्डलं (ह) सोममण्डलं
तेषां दीप्तिभिः (त्रिंशद्भाम) त्रिंशन्मुहूर्त्तात्मक महो रात्रं (वि-
राजति) विविधं प्रकाशयति। राजदीप्तौ तस्मै (पतङ्गाय)।

परमेश्वराय । पतङ्गोऽश्वः नि० १।२४ असौवा आदित्य एषोऽश्वः
श० ६।३।१।२६ सूर्यो वै सर्वदेवाः श० १३।७।१।५ (वाक्) च
ग्रीरूपा (प्रतिधीयते) प्रतिमुखं धार्यते ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ भक्तों से या अन्य मान परमेश्वर २ षाड्भिः सूर्य चन्द्रमा की दी
सिद्धारा ३ त्रिंशत् मुहूर्त्तरूप दिनरात्रिको ४ बहुविधसे प्रकाशित करता है ५
उस परमेश्वर के लिये ६ त्रिवेद रूपवाक् ७ प्रत्येक मुखमें धारणा किया जा
ता है ॥ ६ ॥ वैखानसाऽऽरपयो गायत्री छन्दो नक्षत्राणि देवतानि

अपत्यं ता यवो यथा नक्षत्रायन्त्यक्तुभिः । सू
राय विश्वं चक्षसे ॥ ७ ॥ ४८

(त्ये) ते यकारो योग द्योतकः (नक्षत्राणि) देवानां गेह रूपा
णि (अक्तुभिः) रात्रिभिः सह (विश्वं चक्षसे) सर्व प्रकाश का
य (सूराय) सूर्याय प्रजाभ्यः सूर्यदर्शनलाभाय (अपत्यन्ति)
प्रजादृष्टिभ्योऽ दर्शनं प्राप्नुवन्ति (यथा) (तायवः) चौराः
॥ ७ ॥

भाषार्थः

१ वे २ नक्षत्रजो कि देवताओं के गृहरूप हैं रातों के साथ ४ सर्व प्रकाशक ५ सू
र्यके लिये ६ प्रजा दृष्टि से अदर्शन को पाते हैं ७ जैसे ८ चौर ॥ ७ ॥

सूर्यदेवता शेषं पूर्ववत्

अदृशन्नस्य केतवो विरश्मयोजनां अन्तु
भ्रजन्तो अग्नयो यथा ॥ ८ ॥ ४९

(अस्य) सूर्यस्य (केतवः) मानसज्योती रूपाः (रश्मयः)
(जनान्तु) प्राणिनां मनसि (व्यदृशन्) विविधरूपा दृश्य
न्ते (यथा) (भ्रजन्तः) दीप्यमानाः (अग्नयः) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ इससूर्यकी २ मानसज्योतीरूप ३ किरणों ४ प्राणियों के मनमें ५ नानारूपवाली दीखती हैं ६ जैसे ७ दीप्यमान ८ आशियां ॥ ८ ॥

विनि योगः पूर्ववत्

^{३ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३}
 त्रैणो विश्वदर्शितो ज्योतिष्कृत्सि सूर्य। वि
^{३ ३ ३ ३ ३}
 श्वमाभासि रोचनम् ॥ ८ ॥ ५०

हे (सूर्य) त्वं (विश्वदर्शितः) सर्वैः प्राणिभिः साक्षात्कर्तव्यः (ज्योतिष्कृत्) बाह्यन्तः प्रकाशकः (त्रैणः) संसारसागरात्तारणा यनौकारूपः (आसि) (विश्वम्) सर्व (रोचनम्) प्राणिनां नेत्रसमूहं लस्यस्त्वं (आभासि) समन्तात्प्रकाशयसि व्याप्ति समाप्ति मानससूर्यरूपेण ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हेसूर्यनुम २ सबप्राणियोंसे साक्षात् करने योग्य ३ बाहरभीतरप्रकाशक ४ संसारसागरसे पारकरनेकेलियेनौकारूप ५ नौ ६ सब ७ प्राणियोंकेनेत्रसमूहको ८ सबओरसेप्रकाशितकरतेहोव्याप्ति समाप्ति मानससूर्यरूपसे ॥ ८ ॥

विनि योगः पूर्ववत्

^{३ २ ३ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ ३ २ २}
 प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ् दुर्दधिमानुषान्।
^{३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
 प्रत्यङ् विश्वं स्वदृश ॥ ९ ॥ ५२

हेसूर्यरूपपरमेश्वरत्वं (देवानाम्) (विशः) समाप्तिप्राणान् (प्रत्यङ्) प्रतिगच्छन्। इगतौ (उदधि) उदयं प्राप्नोषि (मानुषान्) व्याप्तिप्राणान् (प्रत्यङ्) प्रतिगच्छन् (उदधि) मानससूर्यरूपेणोदयं प्राप्नोषि (विश्वम्) कमनान्तरिक्षसमूहं (स्व) स्वर्गलोकं (प्रत्यङ्) अभिगच्छन्नुदयं प्राप्नोषि ॥ ९ ॥

भाषार्थः - हेसूर्यरूप परमेश्वरतुम १,२ समाष्टि प्राणों को ३ प्राप्त करते ४ उदय होने हो ५ व्याष्टि प्राणों को ६ प्राप्त करते ७ मानस सूर्यरूप उदय हो ते हो ८ कमलान्तरिक्ष समूह ९ स्वर्गलोक को १० प्राप्त करते उदय को पाते हो

॥१०॥

विनियोगः पूर्ववत्

येना^१ पावक^२ चक्षसा^३ भुरायन्^४ ज्ञाना^५ थं^६ अने^७
त्व^८ वरुणा^९ पश्यासि ॥११॥ ५२

हे (पावक) सूर्यस्य शोधक (वरुणा) अनिष्टवारक (अ) सूर्य (त्वम्) (ज्ञानान्) प्राणिनः (तम्) (भुरायन्) जीवरूप सुप्राणि ज्ञ (येन) (चक्षसा) प्रकाशेन (अनुपश्यासि) अनुक्रमेण प्रकाशयसितं प्रकाशं स्तुम इति शेषः ॥११॥

भाषार्थः - १ हे सवके शोधक २ अनिष्टवारक ३ सूर्य ४ तुम ५ प्राणियोंके ६ उस ७ जीवरूपपक्षीको ८ जिस ९ प्रकाशसे १० अनुक्रम पूर्वक प्रकाशित करते हो उस प्रकाश की हम स्तुति करते हैं यह अभिप्राय है - ॥११॥

विनियोगः पूर्ववत्

उद्या^१ मधि^२ रजः^३ पृथ्व^४ हामि^५ मानो^६ अक्तुभिः^७ ष^८
श्य^९ ज्ञान्मानि^{१०} सूर्य ॥१२॥ ५३

हे (सूर्य) त्वं (पृथ्वीनि) (अक्तुभिः) रात्रिभिः सह (मिमानुः) उन्मानयन् (ज्ञानानि) अवताराणां जन्मानि (पश्यन्) (पृथु) स्थूलं (रजः) भूलोकं (द्याम्) स्वर्गलोकं (उदधि) उदयेन प्राप्नोषि ॥१२॥

भाषार्थः

१ हे सूर्यतुम २ दिनों को ३ रातों के साथ ४ निर्माण करते ५ अवतारों के जन्म को ६ देखते ७ भूलोक ८ और स्वर्गलोक को ९ उदयसे प्राप्त करने हो ॥१२॥

विनियोगः पूर्ववत्

^{२ २} अयुक्तसप्त ^{३ ३} भुन्ध्युवः ^{२ ३} सूर्यो रथस्य ^{३ करर} नस्यः ^२ । ता
^३ भिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥१३॥ ५४

(सूर्यः) सर्वस्य प्रेरकः सूर्यः रूपः परमेश्वरः (रथस्य) (नस्यः) न
 पातयिञ्चः याभिर्युक्तो रथो याति न पतति ता दृश्यः (सप्त) स
 प्तसङ्ख्याकाः (भुन्ध्युवः) शोधकाः रश्मयः (अयुक्त) सूर्य
 मण्डले योजितवान् (स्वयुक्तिभिः) स्वकीय योजनेन सूर्य
 मण्डले सम्बद्धाभिः शक्तिभिरेव (याति) गच्छति स्वयन्त्व
 चल इत्यर्थः ॥१३॥

भाषार्थः - १ सवके प्रेरकसूर्यरूपपरमेश्वरने २ रथकी ३ धारक
 ४ सात संख्या वाली ५ शोधक किरणों को ६ सूर्यमंडल में संयुक्त किया
 ७ अपने मंडल में सम्बद्ध शक्तियों से चलता है आपतौ अचल है यह अ-
 भिप्राय है ॥१३॥

विनियोगः पूर्ववत्

^{३ १} सप्तत्वाहरितो रथं वहन्ति देवसूर्यशोचिष्के
^{२ ३} शंविचक्षणा ॥१४॥ ५५

हे (देव) द्योतमान (विचक्षणे) सर्वस्य प्रकाशयितुः (सूर्य)
 (शोचिष्केशं) शोचीं पितेजां स्येव केशा यस्य तं (त्वां) त्वां (सि
 म्) (हरितः) रसहरणशीलाः रश्मयः शक्तयो वा (वहन्ति)
 द्वादशराशिषु प्रापयन्ति स्वयन्त्वचलाः सि ब्रह्मरूपत्वात् १४
भाषार्थः - १ हे द्योतमान २ सर्वप्रकाशक ३ सूर्य ४ किरणरूपकेश
 वाले ५ तुमको ६ सात ७ रसहरणशील किरणों वा शक्तियों ८ बारह राशि में
 प्रामकरती है आपतौ ब्रह्मरूप होने से अचल हो यह अभिप्राय है ॥१४॥

इति श्री भृगुवंशावतंसं श्रीनाथूराम सूनुज्वाला प्रसादशर्मापिरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठोऽध्यायः समाप्तः ॥

समाप्तं भार्गव्यं पर्वं भार्गव्यकाण्डं वा
इति चतुर्थं स्पर्वं

सामवेदसंहितायां छन्दोऽर्चिकः समाप्तः

एताः प्रकृतितस्त्रिस्तु उपसर्गैस्तु संयुताः नवसंख्या इति भाद्रवैदाध्ययनशास्त्रे
तासामुपसर्गैः सह शकरी छन्दो देवता अथवा भजापति ऋषिराचीं पं
क्तिश्छन्दो देवता-

अथ महानाम्न्यार्चिकः

विदा^३मघवन्^१विदा^२गातु^३मनु^३शं^३शिषो^३दिशो^३
शिषो^३शचीनाम्पते^३पूर्वाणा^३स्युरूवसो^३ ॥१॥

हे (मघवन्) धनवन परमेश्वर (विदाः) वेदितव्यं विद्धि (गातुम्) भक्ति योग यज्ञं (विदाः) प्रापय (दिशः) मोक्ष मार्गान् (अनु-
शंसिषुः) उपदिश हे (पूर्वाणाम्) बह्वीनां (शचीनाम्) प्रजा-
नां (पते) स्वामिन् (स्युरूवसो) प्रभूत धन (स्य) परमेश्वर-
शिषो) स्वात्मानं देहि । शिषोतिर्दात कर्मानि ० ३।२०।८-॥१॥

भाषार्थः - १ हे धनवन परमेश्वर २ जान्ने योग्य को जानो ३ भक्ति योगयज्ञ को ४ प्राप्त कराओ ५ मोक्ष मार्गों को ६ उपदेश करो ७ हे बह्वन् ८ प्रजाओं के ९ स्वामिन् १० बहुधनी ११ परमेश्वर १२ अपने आत्मा को १३ दो-॥१॥ भजापति ऋषि भुरिणाथत्री छन्दो देवता-

प्रभिषु^३सोभिषु^३भिः^३स्वा^३ ३ न्नी^३शुः^३ । प्रचेत^३
न प्रचेत यन्दु^३न्ना^३यन^३इषे^३ ॥२॥

(त्वम्) (आभिः) इदानीं क्रियमाणाभिः (ओभिष्टिभिः) (अभ)
 देहस्तस्योष्टिभिः प्रकृतौ होमैः स्वात्मानं देहीति पूर्वेणान्वयः
 हे (प्रचेतन) प्रशस्तज्ञान (इन्द्र) परमेश्वर (स्वैः) सूर्यः (न)
 इव (संशुः) व्यासस्तुं (द्युम्नाय) योगधनलाभाय (इषे)
 अमृतवृष्टयैच (प्रचेतय) अस्मदीयां भक्तिमवधारय जानी
 हि ॥२॥

भाष्यः

१ तुम २ अवक्रियमाणा ३ प्रकृतिमें देह के होमों से अपने आत्मा को दोष
 हेमहाज्ञानी ४ परमेश्वर ५, ७ सूर्यकी समान ८ व्यासतुम ९ योगधनके-
 लाभार्थ १० और अमृत वर्षा के लिये ११ हमारी भक्ति को जानो ॥२॥

प्रजापति ऋषि रषी ब्रह्मती छन्द इन्द्रो देवता-

एवा^३हि^{३३} श^३क्तौ^३ रा^३य^३ वा^३जा^३य^३ व^३ज्जि^३वः । श^३वि^३ष्ट^३व
 जि^३न्तु^३ज्ज^३स^३मं ७ हि^३ष्ट^३ व^३ज्जि^३न्तु^३ज्ज^३स^३ आ^३या^३
 हि^३ पि^३व^३ म^३त्स्व^३ ॥ ३ ॥ १

(हि) यस्मात् हे (वज्रिवैः) वृज्रधरेन्द्ररूप (शविष्टे) अतिश-
 येन बलवनविष्णुरूप (वज्रिन) ज्ञानवज्रधर (महिष्टे) अ-
 तिशयेन दानशीलशिवरूप (वज्रिन) विद्यावज्रधर (ब्रह्मा
 रूप) (अ) परमेश्वरत्वं (एव) (शक्तः) अभीष्टदाने समर्थः (रौ
 ये) योगधनाय (ऋज्जसे) अस्माभिः प्रसाध्यसे । ऋज्ज-
 तिः प्रसाधनकर्मानि० ३।५।८ (वाजाय) विराडरूपान्नाय-
 (ऋज्जसे) प्रमाध्यसे (आयाहि) प्रादुर्भव (पिवै) आत्मप्र-
 निर्विंविपिव (मत्स्व) दृष्टोभव ॥ ३ ॥

भाष्यः - १ जिस कारण २ हे वज्रधारी इन्द्र रूप ३ महाबलीविष्णु

रूप ४ ज्ञान वज्रधर ५ महादानी शिवरूप ६ विद्या वज्रधर ७ ब्रह्मरूप पर-
मेश्वर तुम ८ ही ९ सभी दानमें समर्थ हो १० योगधनके लिये ११ हमसे सा-
धन किये जाते हो १२ विराट् रूप अन्न के लिये १३ सिद्ध किये जाते हो १४
प्रकट हुआ जिये १५ आत्म प्रतिविंब को पान करो १६ हृष्ट हुआ जिये—॥३॥

प्रजापति ऋषि राची त्रिषुप छन्द इन्द्रो देवता-

विदोराय सुवीर्यम्भुवो वाजोनाम्पातिवशां
अनु। मं हिष्ठ वज्जिन्नुज्जसे यः शविष्ठः भू
राणाम् ॥ ४ ॥

हे (मं हिष्ठ) अति शयेन दानशील (वज्जिन्) ज्ञान वज्रधर
परमेश्वर (यः) (भूराणाम्) (शविष्ठ) वृत्तवत्तरः स (वाजो-
नाम्) विराट् रूपान्नानां (पातिः) त्वं (राय) योगधनाय (ऋ-
ज्जसे) अस्माभिः साध्यसे (सुवीर्यम्) योगबलं (विदोः) ल-
म्भय प्रापय (वशान्) वशवर्त्तिनो भक्तान् (अनुभुवः) अनु-
भवगतो भव ॥ ४ ॥

भावार्थः - १ हे वड़े दानशील २ ज्ञान वज्रधर परमेश्वर ३ जो ४
भूरीमें ५ महाबली है वह ६ विराट् रूप अन्नों के ७ स्वामी तुम ८ योगधन
के लिये ९ हमसे सिद्ध किये जाते हो १० योगबल को ११ प्राप्त कराओ १२
वशवर्त्ती भक्तों को १३ अनुभव में प्राप्त हो ॥ ४ ॥

प्रजापति ऋषि राची ब्रह्मती छन्द इन्द्रो देवता-

योऽमं हिष्ठो मघोनामं सुन्नशोचिः। चि
कित्वोऽभिन्नो नयन्दो विदेत मुस्तुहि ॥ ५ ॥

(यः) (मघोनाम्) धनयतांमध्ये (मं हिष्ठः) अति शयेन दा

ताः (सृष्टुः) सूर्यः (न) इव (शोक्तिः) दीप्तः (इन्द्रः) परमेश्वरः (विदे) विद्यते सर्वे ज्ञायते (तम्) (उ) एव (स्तुहि) स्तुतिं कुरु हे (चिकित्से) ज्ञान स्वरूप (ने) अस्मान् (आभ) अभिलक्ष्य (नय) स्वात्मानं प्रापय ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ जो २ धनवानों के मध्य ३ महादानी ४, ५ सूर्य की समा न ६ दीप्त ७ परमेश्वर ८ विद्यमान है सब से जाना जाता है ९, १० उसी की ११ स्तुति करो १२ हे ज्ञान स्वरूप १३ हमको १४ देखकर १५ अपने आत्मा को प्राप्त कराओ ॥ ५ ॥

प्रजापतिर्ऋषिर्भुरिगापी वहती छन्द इन्द्रो देवता-

इंशो हि शक्रस्तमृतयुहवामहे जेतारमपरा
जितम्। सनः स्वपदनिहिषः क्रतुश्छन्द इन्द्र
तम्वहत् ॥ ६ ॥ २

(हि) यस्मात् (शक्रः) सर्वशक्तिमान् परमेश्वरः (इंशो) इं-
श्वरोऽस्ति तस्मात् (तम्) (जेतारम्) असुराणां जेतारं (अप-
राजितम्) (हवामहे) आह्वयामहे (सः) (क्रतुः) यज्ञ पुरुषः
(छन्दः) वेद रूपः (इन्द्रम्) सत्य स्वरूपः (वहत्) महान् पर-
मेश्वरः (ने) अस्माकं (हिषः) द्वेषन् (अति स्वर्षत्) अत्यर्थ
मुपतपतु विनाश यतु। स्व शब्दोपतापयोः ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ जिस कारण २ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ३ इंश्वर है उ-
स कारण ४ उस ५ असुरों के जेता ६ अपराजित को ७ हम आह्वान करने हैं
वह ८ यज्ञ पुरुष ९ वेद रूप १० सत्य स्वरूप ११ महान् परमेश्वर १२ हमारे
१३ द्वेषणों को १४ अत्यन्त विनाश करो ॥ ६ ॥

प्रजापतिर्ऋषिराची जगती छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ ३} इन्द्रन्धनस्य सातये हवामहे ^{३ ३ ३ ३ ३ ३} जेतारम पराजितम्।

सनः स्वर्षदाति द्विषः सनुः स्वर्षदाति द्विषः ॥७॥

(जेतारम्) (अपराजितम्) (इन्द्रम्) परमेश्वर (धनस्य) (सातये) (यु) गधनस्य लाभाय (हवामहे) (सः) (नः) अस्माकं (द्विषः) द्वेषन् (अतिस्वर्षत) (सः) (नः) (द्विषः) कामादीन् (अतिस्वर्षत) ॥७॥

भाषार्थः - १ जेतार २ अपराजित ३ परमेश्वर को ४ ५ योग धन के लाभार्थ ६ हम आह्वान करते हैं ७ वह ८ हमारे ९ द्वेषियों को १० विनाश करो ११ वह १२ हमारे १३ द्वेषी काम आदि को १४ अत्यन्त विनाश करो - ७ ॥

प्रजापतिर्ऋषिर्भूरिगापी पांक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ ३} पूर्वस्य युन्ने आद्रिवो ^{३ ३ ३ ३} सुमदाय -

सुन्न आद्रिवो वसो पुत्तिः शोविष्ट शस्यते। वशीहि

शक्तौ नूनन्त नव्ये सन्ध्यसे ॥८॥

हे (आद्रिवः) ज्ञानवचन (वसो) वासुदेव (पूर्वस्य) पुरातनस्य (ते) तव (यत) (अमु) मानससूर्यः (मदाय) अस्तित (नः) अस्मान् वागा द्युत्विजश्च (सुम्ने) मोक्षसुखे (द्रोहि) स्थापयहे (शोविष्ट) बलवृत्त म (पुत्तिः) जीवात्मना तव पुत्तिः (शस्यते) स्तूयते (हि) यस्मात् (नूनन्) अश्रयं (वशी) सर्वस्य नियन्ता (शक्तः) सर्वशक्तिमानसि (नेत) तस्मात् (नव्यम्) संस्कृतात्म प्रतिविंव (सन्ध्यसे) त्वयि प्राक्षिपामि। अ सुक्षेपणै ॥८॥

भाषार्थः

१ हे ज्ञानवचन २ वासुदेव ३ ४ तुम्ह पुरातन का ५ जो ६ मानससूर्य ७ मदके लिये है उसको ८ और हम वाक् आदि त्र्यल्लिजों को ९ मोक्षसुखमें १० स्थापन करो ११ हे महाबली १२ जीवात्मा से जो तेरी पुत्ति है वह १३ स्तुति की जाती है १४ जिस कारण १५ अवश्य १६ सबके नियन्ता १७ सर्वशक्तिमान हो १८ उस कारण १९ संस्कृत आत्म प्रतिविंव को २० तुममें प्रकृता हं ॥८॥

प्रजापतिर्ऋषिरार्थं नृपुष्प छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ ३ ३ ३} प्रभाजनस्य वृद्धसमुर्योषु ब्रवावहे। शूरो यागो ^{३ ३} पु गच्छति सर्वा सुशोवा अहसुः ॥९॥ ३

